अनुभव की आँखें

पत्रकारो द्वारा उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी से
विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयो पर आधृत साक्षात्कार

प्रकाशक

साहित्य भारती प्रकाशन
गुप्तिसागर धाम, जी टी रोड, गन्नौर (हरियाणा)

अनुभव की ऑखें

उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

सम्पादन
सिद्धान्तरत्न ब्र सुमन शास्त्री
डॉ नीलम जैन

प्रकाशक
साहित्य भारती प्रकाशन
गुप्तिसागर धाम, गन्नौर (हरियाणा)

पावन प्रसग
प्रथम सस्करण 1000 प्रतियाँ
आगामी प्रकाशन सहयोग राशि साठ रुपये

प्राप्ति स्थान
जैनतीर्थ श्री गुप्तिसागर धाम
जी टी रोड, गन्नौर, जिला-सोनीपत (हरियाणा)
दूरभाष 0130-2461961

अर्थ सौजन्य
पचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति
जागृति एन्क्लेव, दिल्ली-92

मुद्रण
के टी सी, गन्नौर

Anubhav Ki Aankhan

Upadhya Guptisagar Muni

Editors
Sidhantratana Bhramcharni Suman Shashtri
Dr Neelam Jain

Publisher
Sahitya Bharti Prakashan
Guptisagar Dham Ganour (Haryana)

Holi Subject
First Edition 1000 Copies
Contribution Amount for Next Issue Rs Sixty

Books Available
Jain Tirth Shri Guptisagar Dham
G T Road Ganour Distt Sonipat (Haryana)
Tel 0130 2461961

Sponsored
Panchkalyanak Prathistha Mahotsav Samiti
Jagriti Enclave Delhi 92

Printing
K T C, Ganour

दिव्य गुणों के पुंज: उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी

प्रात स्मरणीय परम पूज्य उपाध्याय 108 श्री गुप्तिसागर जी महाराज ऐसे सभी गुणो से परिपूर्ण है जो पूर्णिमा के चन्द्र की भाति दूसरो को शीतलता प्रदान करते है। वे एक सन्त है, प्रकाण्ड विद्वान है, सशक्त लेखक एव उच्चकोटि के कवि है। उनका जीवन एक खुली पुस्तक है। उनके आभामण्डल मे प्रवेश कर हर कोई अपने अनुकूल समाधान प्राप्त करता हे। वे राष्ट्र सन्त है। राष्ट्र की विभिन्न समस्याओ पर उनके अनेक समाधान परक आलेख प्रकाशित है। उनके प्रवचनो को पत्रकार जन-जन हेतु प्रकाशित करते रहे हे। अनेक टी वी चैनल से उनके प्रवचनो का जनहित मे सीधा प्रसारण भी किया है। उनके ज्ञान के अक्षय भण्डार एव विस्तृत शब्दकोश ने साहित्यकारो, विद्वानो, रचनाकारो को प्रेरित किया है। अनेक भव्य साहित्यिक सेमिनार उपाध्यायश्री के सान्निध्य मे हुए है जिनमे राष्ट्र के शताधिक विद्वानो ने अपनी सहभागिता दर्ज करायी।

गुरुवर का कथन है। इक्कीसवी शताब्दी 'वात्सल्य शताब्दी' बने, दमन और शोषण की प्रक्रिया से दूर दया और उपकार की डगर पर चले। दूसरो की पीडा अपनी पीडा समझे और अपना सुख सबका सुख। बॉट दे हर्ष अपना सभी के लिए है उचित बस यही आदमी के लिए' - अहिसा और शाकाहार के लिए अनुक्षण समर्पित सन्त प्रवर उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी से अट्ठाईस पारदर्शी इन्टरव्यू। मुनि के अट्ठाईस मूलगुण भी है। कहे अट्ठाईस तरह से अपने को जागृत रख अन्तर्मुख होना।

जाहिर है बिना अन्तर्मुख हुए अन्तर की अभिव्यक्ति असम्भव है। 'इन्टरव्यू' के मायने है - व्यक्ति को गहरे खोजने, उसे जर्रा-जर्रा जानने की एक दिलचस्प विद्या। एक ऐसी अद्भूत/अपूर्व पद्धति जिसमे प्राश्निक और उत्तरदाता दोनो की दुधारी तलवार पर चलाना होता है। 'इन्टरव्यू' अर्थात् बातचीत मे प्रश्नकर्त्ता अपनी गैती कुछ इस तरह चलाता है कि सामने बैठे व्यक्ति की तमाम अन्तर्दशाएँ दिगम्बर हो पडती है।

'इन्टरव्यू' की तर्ज पर एक नया शब्द भी काम मे लाया जा सकता है - 'अन्तर्व्यूह'।

दोनों शब्दो मे ध्वनिसाम्य तो है ही इत्तफाकन् अर्थसाम्य भी है 'व्यक्ति की अन्तरङ्ग सरचना या बनावट। 'ऊह' के मायने 'विचार आन्तरिक गठन पर विभिन्न सन्दर्भो मे ऊहापोह (तर्क-वितर्क) करता है और उसके अन्तर्पट के ताने-बाने स्पष्ट करता है, तब फिर ऐसा कुछ नही बच रहता जिसके द्वार जाने-अनजाने खुल न गये हो, अथवा खुलवा न लिये गये हो। वस्तुत 'इन्टरव्यू' की अपेक्षा अन्तर्व्यूह अधिक सार्थक और व्यञ्जक शब्द है।

उपाध्याय मुनिश्री गुप्तिसागर जी से लिए गये विविध विषयो पर ये 'अन्तर्व्यूह' यद्यपि सक्षिप्त हे, तथापि उनके मन-मानस की सकल झॉकी पेश करने मे समर्थ है। इसमे बगैर सन्-सम्वत् के 'नवीन कुमार' से 'उपाध्याय गुप्तिसागर' तक के तमाम सोपान सहज उपलब्ध है। 4 दिसम्बर 1957 को बुन्देलखण्ड के गढाकोटा नगर मे जन्मे उपाध्यायश्री का व्यक्तित्व अत्यन्त कर्मठ, सृजनोन्मुख और विदग्ध है। ब्रह्मचर्यव्रत (1978) से लेकर ऐलक (1980), मुनित्व (1982) तथा उपाध्याय (1991) तक की उनकी तीर्थयात्रा जैन धर्म/दर्शन की तीर्थयात्रा भी है, जो कालजयी और युगधर्म-सम्प्रेरक है।

हिमाचल की वादियो मे जैन मुनि (1998) उनके आध्यात्मिक प्रव्रजन का एक जीवन्त दस्तावेज है। 'महायोगी गुप्तिसागर' (सुरेश सरल/2000) उनकी जीवन-गाथा का पूर्वार्द्ध है, जिसमे होकर हम उनके अन्त सघर्षो तथा ध्रुव सकल्पो की झलक पा सकते है। 'महावीर समय के हस्ताक्षर' (2001) उनकी एक अतिविशिष्ट कृति है।

उनकी लगभग ढाई दर्जन कृतियो मे सूक्तियो का दरिया तो जैसे उमड पड रहा है, मसलन - 'मृदुता वह पाठशाला हे, जहॉ मिटना सिखाया जाता है।' 'भाग्य क्या हे? पहले का परिश्रम'। 'पुरुषार्थ करो अधिकारो की शीशी मे मादकता मत घोलो, नही तो नशा उतरने का नाम ही न लेगा' कर्त्तव्यो को छोड एकमात्र अधिकारो की दुनिया मे जीने वाले कभी शान्ति हासिल नही कर सकते, इत्यादि बोधक सूक्तियो द्वारा उपाध्यायश्री जी ने राजनेताओ से लेकर आम नागरिको को निम्न वार्त्ताओ से कराया है -

1 कविता, भावनाओ का दीप

2 व्यसनो से मुक्ति, लोक जीवन का निर्मलीकरण

3 नारी, मानव सभ्यता की आत्मा भी, शिल्पी भी

4 विकट समस्या, जनसख्या विस्फोट

5 कत्लखाने, भारत के भाल पर कलङ्क

6 पत्रकारिता, जनमानस की अभिव्यक्ति

7 सूचना प्रौद्योगिकी, राष्ट्र एव जन कल्याणक

8 महके जीवन, आचार-विचार से

9 शाकाहार, मानव सभ्यता की प्रथम सुबह

10 सद्कर्मो से होता है, दिव्यता का जन्म

11 युवक राष्ट्र का मेरुदण्ड

12 राजनीतिज्ञ समझे, नैतिक जिम्मेदारियॉ

13 भूकम्प की वजह, प्राकृतिक आपदा या कत्लखाने

14 धूमपान हरता प्राण

15 बढता शहरीकरण, उजडते गॉव

16 राष्ट्र प्रगति का आधार दीर्घ कालिक विकासनीति

17 कपटपूर्ण चाल, अण्डो को कहना शाकाहार

18 हिन्दी, भावाभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम

19 विवेक, उत्थान का मार्ग

20 तपस्या, शान्ति का मार्ग

21 जैन और बौद्ध धर्म मे निर्वाण की अवधारणा

22 आत्माभिषेक का हेतु, महामस्तकाभिषेक

23 एड्स नाशक है, ब्रह्मचर्य की टैबलेट

24 राष्ट्र का विकास, ससाधनो का सदुपयोग

25 साधु-सस्था, प्रकाश-स्तम्भ की भूमिका निभाये

26 धर्म क्रिया काण्ड नही, जीवन जीने की कला

27 जीवन का उद्देश्य, परम पवित्र हो

28 कन्या भ्रूण हत्या समाज राष्ट्र विकास मे बाधक

इत्यादि सामयिक सन्दर्भो पर, देश व्यापी समस्याओ पर उपाध्यायश्री से पत्रकारो ने भी समय-समय पर इत्यादि सामयिक सन्दर्भो पर, देश व्यापी समस्याओ पर वार्त्ता की। इन वार्त्ताओ मे भूपेन्द्र कुमार जैन, पत्रकार नवभारत टाइम्स रुडकी, गोपाल नारसन,

सवाददाता पजाब केसरी, स्वय मैने ब्र सुमन शास्त्री (सम्पादक श्री गुप्तिसन्देश), डॉ नीलम जैन (सम्पादक जैन महिला दर्श), ब्र रजना शास्त्री (सह सम्पादक श्री गुप्ति संदेश), बलदेव भाई शर्मा, डिप्टी एडीटर, अमर उजाला, नोएडा, हरेन्द्र कुमार रापडिया, ब्यूरो चीफ, अमर उजाला, सोनीपत, नरेन्द्र शर्मा 'परवाना', पत्रकार दैनिक भास्कर, गन्नौर, डॉ नेमिचन्द जैन, सम्पादक तीर्थङ्कर, श्रेष्ठी धर्मचन्द जैन, सुधी श्रावक सतेन्द्र कुमार जैन, ने अपनी जिज्ञासाओ का समाधान किया। ये सभी वार्त्ताएँ समाज के सभी वर्गो के लिए महत्त्वपूर्ण है, उपयोगी है अत इनको प्रकाशित किया जा रहा है। हिमालय की शत-शत धाराओ की भांति प्रत्येक वार्त्ता मे उनकी बहुमखी प्रतिभा न जाने कितने-कितने रग-रूपो मे बिखरी है।

हमे विश्वास है यह अनमोल कृति 'अनुभव की ऑखे' समाज एव राष्ट्र की पथ-प्रदर्शक बनेगी।

शुभ भावनाओ सहित।

ब्र सुमन शास्त्री

आलोक पुरुष : उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी

युग पुरुष, तपोनिधि डॉ उपाध्यायश्री 108 गुप्तिसागर जी महाराज श्रमण सस्कृति के मूर्त्त रूप है। बहुआयामी प्रतिभा से समृद्ध है। निर्भीकता, त्याग, तपस्या, नि स्पृहता और जागृति के साथ वैचारिक सम्पदा से जगतीतल को कृतार्थ कर रहे हैं। अध्ययनशीलता, कल्पनाशीलता और मौलिक चिन्तन उनके अन्य उल्लेखनीय गुणो मे से है। उनकी ज्ञानदायिनी स्वरलहरी जगत के कोलाहल को भेदकर अवनि और अम्बर मे छा जाती है। उनकी दिव्यता सार्वकालिक और सार्वजनीन प्रभाव की सृष्टि करती है। वर्तमान मे जब भौतिक प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता ने जटिलताओ तथा तनावो की जगल झाडियॉ उत्पन्न कर दी है, हमारा अस्तित्व सिकुड सा गया है, आत्मबोध बौना होता जा रहा है, हमारी चेतना की सभी खिडकिया और दरवाजे बन्द होते जा रहे है, अपने सकुचित व असुर स्वार्थ के लिए हम खण्ड-खण्ड होते जा रहे है आज राजनीति भी मनुष्य के दर्पण धवल चित्त पर विभेद की धूल छिडक कर स्वार्थ साधन मे लिप्त है, उसकी प्रकृति मन से कुछ वाणी से कुछ व्यवहार मे कुछ की है। ऐसे मे मन, वाणी और कर्म से जोडकर एक इन्सान की रचना करने वाले निस्पृही सन्त की भूमिका बडी गहन और गरीयसी हो गई है क्योकि वही अखण्ड मनुजता, एक राष्ट्र और एक विश्व की एकात्मकता के प्रहरी है। सत विश्व की निधि है। वह सकीर्णताओ के पाशो मे कभी निबद्ध नही हो सकता। व्यापकता उसका स्वभाव है और क्षुद्रताओ के प्रति सघर्ष उसकी नियति। जैसे-जैसे अधकार घना होता जा रहा है वैसे-वैसे आलोक पुरुष का दायित्व बढ़ता है। उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी भी ऐसे ही सत है जिनका चिन्तन, अध्ययन, लेखन, सर्वस्पर्शी भले ही न हो बहुस्पर्शी अवश्य है। उनकी तलस्पर्शी दृष्टि गहराई तक जाती है और सृष्टि को सद्य प्रस्फुटित इदीवर की आभा से विलसित कर देती है। उनके प्रवचनो को सुनते समय भी उत्कण्ठा की कली की एक-एक पखुडी खिलने को आतुर हो उठती है। बीच-बीच मे उनके सकेत और सूत्र महनीय आर्ष चिन्तन को उजागर करते है।

उनकी रचनाए प्रथम चरण मे पठनीय और दूसरे चरण मे अनुशीलनीय हो जाती

है। विषयवस्तु की प्रत्यग्रता के कारण उनकी शैली भी नवता से विभूषित होती है। उनकी हाथ की लेखनी ने कुछ भी तो नहीं छोडा - साहित्य, अध्यात्म, धर्म, स्थूल, सूक्ष्म, विज्ञान, नीति, राजनीति तथा अन्य समाजोपयोगी विषय, युगधर्म सभूत या कोई सहज अन्त प्रेरणा उन्हे इच्छित लिखने को विवश कर देती है। किसी कवि की यह उक्ति " **"लिखता हूँ तो मेरे आगे सारा ब्रह्माण्ड विषय भर है"**, युक्ति सगत है। वे दिशा देते है जीवन के समग्र समन्वित, उदात्त और आदर्श जीवन की। निर्मल हृदय के निश्छल उद्गार है उनके ग्रन्थ। उनकी ज्ञान मन्दाकिनी के तट पर जो भी आया तृप्त होकर गया, राजनेता हो या समाजनेता, विद्यार्थी हो अथवा शिक्षक, श्रेष्ठी या श्रीमान अथवा धीमान, पत्रकार अथवा साहित्यकार सभी गुरुवर के चिन्तन मे एक दिव्यदृष्टि देखते है न जाने कितनो की भवर मे डूबती नैय्या को किनारे लगाने वाले, डूबते हुओ को बचाने वाले है।" गुरुवर के दिशा निर्देश उनकी समसामायिक प्रासगिक व्याख्याए स्वतन्त्र भारत को एक नई राह दिखाने मे सक्षम है यही कारण है समय-समय पर न जाने कितने पत्रकार और साहित्यकार उनके विविध विषयो पर चिन्तन मोती बटोरते है और जन-सामान्य के बीच बाट देते है। अनुभव अध्येताओ ने उनके चिन्तन की भूरि-भूरि प्रशसा की। अनेक सुधी पत्रकारो ने देखा आज स्वतन्त्र भारत की धरती पर अनेकानेक प्रश्नो के कॉटे नागरिको के मन को बीध रहे है, राष्ट्रव्यापी समस्याओ का कही कोई निराकरण नही दिखता।

प्रज्ञा के धनी पूज्य गुरुवर के बहुआयामी व्यक्तित्व एव जनकल्याणी भावना को देखते हुए हेमवतीनन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने डी लिट् की मानद उपाधि प्रदान की। भारत के राष्ट्रपति महामहिम माननीय ए पी जे अब्दुल कलाम जी के मुख्य आतिथ्य में एव मुख्यमन्त्री श्री एन डी तिवारी उत्तराचल प्रदेश की उपस्थिति में महामहिम माननीय सुदर्शन अग्रवाल, राज्यपाल, उत्तराचल प्रदेश ने उपाध्यायश्री की प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित ब्र बहन सुमन शास्त्री जी एव ब्र रजना शास्त्री जी को उपाधि-पत्र प्रदान किया। उनके पीयूषधर्मी वैज्ञानिक आत्मस्वरूप के सम्मुख सम्पूर्ण जैन समाज गौरवान्वित एव नतमस्तक हुआ। **उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी डी लिट्** हुए।

वीतरागता की सूक्ष्मवायु तरगो से तरगित अनेकान्त के मणिदीप से प्रकाशित शलाका पुरुष के नाम के साथ सम्पादक ही प्रयत्न करते है कि डी लिट् सलग्न किया जाए पर महामना तो इसे नाम के साथ खुरदरापन मानकर पृथक ही कर दते है। ऊर्जा के पुञ्ज राष्ट्र के प्रथम डी लिट् प्राप्त दिगम्बर सन्त ईश्वर आराधन मे रत रहते हुए भी राष्ट्र कल्याण का चिन्तन करते है उनकी दिव्य अवधारणा के मूल मे अहिसा है,

शान्ति है प्राणिमात्र के लिए करुणा है इसीलिए उन्हे राष्ट्र सन्त कहते है।

आज आवश्यक है जिन विष बुझे तीरो के बीच जनता जी रही है उन्हे पूज्य गुरुवर के अमृत बिन्दु प्रदान किये जाए उनके चिन्तन बीज इस धरा मे बोए जाए। पत्रकारो ने इस ओर प्रयास किया निवेदन किया गुरुदेव से जिन प्रश्नो पर मुख्यतया चर्चा की वे हम सब की पीडा थे। जैसे - क्या गरीब को वे सब साधन उपलब्ध हो रहे है जो उसे मिलने चाहिए थे? क्या प्रतिभा और पुरुषार्थ, जो किसी स्वतन्त्र राष्ट्र की पूजी होते है उनके साथ न्याय हो रहा है? क्या साम्प्रदायिक अन्धता और जातीय सकीर्णता से जनमा विद्वेष हमे भीतर-ही-भीतर काट नही रहा है? क्या उत्साह के फूल असमय ही मुरझाते नही चले जा रहे है? क्या राजनीति नि स्वार्थ जनसेवा का माध्यम रह गई है? सत्ता सेविका है या कि उच्छ्रखल मदोमत्त स्वामिनी? राजनेता कितना सिद्धान्तवादी ओर मन-वचन-कर्म से एक है? शासन कितना अनुशासित है और प्रशासन कितना सवेदनशील? दलाली एक सहज धन्धा नही बन गया है? क्या प्रतिभाए परीक्षाए और प्रतियोगिताए आसू नही बहा रही है? प्यार, मैत्री और आत्मीयता की दिशाए कितनी सात्विक रह गई है? एकता और अखण्डता के जोरदार नारे रस्मी ढोल नही बन गए है? हिसा का क्रूर नृत्य घटा है या बढा है? असन्तोष दावाग्नि नही बन रहा है क्या? क्षुद्र लिप्सा की जीभ नही लपलपा रही है? मानक स्तर कितने स्थिर है? इन सदर्भो मे क्या अन्धापन बढ नही रहा है। या बहरापन कम हो रहा है? क्या सर्वविध कार्यालयो मे नियम कानून की जगह उनको धता बताकर रिश्वत कार्य-निष्पादन का कामयाब जरिया बनती नही चली जा रही है?

प्रश्नो की इस लम्बी श्रृखला को समय-समय पर पत्रकारो ने इन महामनीषी के सामने रखा उनके विशद ज्ञान के आलोक मे उत्तर भी मिला। प्रश्न और उत्तर की यह विधा साक्षात्कार चिन्तन का नवनीत होती है साथ ही उत्तर प्रदाता की मनीषा का निकष भी। ये उत्तर सूत्र होते है जो अध्ययन और अनुभव की व्यापकता के कुतुबनुमा है। ये ही व्यक्तित्व का दर्पण होते है और इन्ही से व्यक्तित्व की गहराई को नापा जाता है। प्रश्नकर्त्ता भी जितना प्रबुद्ध होगा उतना ही खोद-खोद कर वह निर्मल जल प्राप्त कर लेगा। प्रश्न और उत्तर का यह सवाद वर्षायोग 1996-2006 के मध्य सम्पन्न हुआ। ऐसे उत्तर प्राप्त हुए जिन्हे हम मानवता के अनश्वर श्लोक कह सकते है जिन्हे पढकर प्रतीत होता है ये ही सफल एव सक्षम समाधान है हमारी सर्वविध समस्याओ के। इनका प्रकाशन निश्चित रूप से राष्ट्र को एक दिशा देगा, चिन्तन को झकझोरेगा। रुग्ण होकर जर्जरता की ओर बढ रहे समाज को नया आरोग्य देगा। निष्कर्ष यही है अर्थ सचय और

भौतिक उपलब्धिया तो हो पर उनसे धर्म का पहरा नही उठना चाहिए। जब-जब धर्म का अनुशासन तोडकर धन सचित किया गया ओर भोग भोगे गए तब-तब अनर्थो का जन्म हुआ। जिस प्रकार सागर अपने जल को मर्यादित रखता है उसी प्रकार धर्म के महासागर मे अर्थ जल कभी मूल्यो के तट को नही तोडता। यदि भौतिकवाद के पात्र मे अध्यात्म का दीपक नही जलाया गया तो हम तो रहेगे पर कोई हमारा दृष्टिगोचर नही होगा।

सवाद की इस धारा को जन-जन के मन तक पहुचाने मे राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओ के सम्पादको, सवाददाताओ का प्रशसनीय योगदान रहा। श्री गुप्तिसन्दश की सम्पादिका सिद्धान्तरत्न ब्र सुमन शास्त्री, श्री भूपेन्द्र जैन (नवभारत टाइम्स) रुडकी, श्री गोपाल नारसन (पजाब केसरी) आदि श्रेष्ठ बुद्धिजीवी भक्तो न समाजोपयोगी, राष्ट्रोपयोगी अनेक विषयो पर वार्त्ता की। ये वार्त्ताएँ सुविचारो स सम्पन्न हे पाठकगण जब पढेगे तो उन्हे एक दृष्टि प्राप्त होगी। अनेक जिज्ञासाओ का समाधान प्राप्त होगा साथ ही साधुजीवन की अन्तरगता और उनके विशद ज्ञानालोक स भी साक्षात्कार होगा। इन्ही सन्तो ने चेतना के स्तर पर राष्ट्र को एक सूत्र मे बॉधा है ओर चेतनागत एकता ही सच्ची एकता होती है।

हम पुन करबद्ध पूज्य डॉ उपाध्यायश्री जी के श्री-चरणो मे नतशीश है जिन्होने अपना अमूल्य समय प्रदान कर हमारी जिज्ञासाओ का समाधान किया। उनकी साधना सूर्य से अज्ञान के मेघो का पलायन होगा और ज्ञान उषा किरण की प्रखरता और बढेगी।

वे चिरकाल तक अमृत वर्षण करते रहे इन्ही मगल भावनाओ के साथ -

डॉ नीलम जैन
273/1/1, आदर्श नगर
गुडगाव-122 009

अन्तस्तत्व

हिन्दी : भावाभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम

वास्तव मे हिन्दी मे अपनत्व का गुण है, जो भी इसके निकट आता है, उसे हिन्दी आश्रय देती है और उसकी होकर रह जाती है। हिन्दी के भजनो, गीतो की सगीत धुनो पर विदेशियों का झूम उठना हिन्दी के आकर्षण और माधुर्य का प्रमाण है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे कोई न जानते हुए भी समझ लेता है। हिन्दी की आत्मा, मानव हृदय एव भाव-भगिमा के समान है, तभी तो हिन्दी को समझना बेहद आसान है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

17 फरवरी 1993, इन्दौर (म प्र)

हिन्दी भारत माँ के भाल की बिन्दी है, हिन्दी वह गगा है जो सभी भाषाओ के साथ सहायक नदियो की भाँति मिल-जुल कर बहती है। राष्ट्र सन्त उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी का कथन है कि हिन्दी सरल सुबोध एव वैज्ञानिक भाषा है। हमे हिन्दी का गौरव अक्षुण्ण रखना चाहिए। हिन्दी के अतीत वर्तमान मे हिन्दी की स्थिति और भविष्य मे हिन्दी के स्वरूप को लेकर प्रखर विद्वान उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी से मैने अनेक जिज्ञासाओ का समाधान किया तो अनेक रहस्यपूर्ण परते खुली दिखाई पडी। प्रस्तुत है वार्ता के कुछ प्रमुख अश - **सिद्धान्तरत्न ब्र सुमन शास्त्री,** *सम्पादक 'श्री गुप्ति सन्देश*

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री, हिन्दी का सम्बन्ध मानव चेतना से माना गया है। आप इसे किस रूप मे सोचते है?*

समाधान बच्चा पैदा होते ही रोता है, उसके रोने को गहनता से सुनिए तो लगेगा जैसे उसके रुदन मे हिन्दी के स्वर गूज रहे हो। ऐसा अन्य भाषाओ के साथ नहीं है। तभी तो हिन्दी को चेतना प्रदत्त भाषा कहा गया है। सर्वविदित है सम्पूर्ण ससार मे

नवजात शिशुओ की रुदन अभिव्यक्ति एक ही तरह है, कोई बदलाव दा भिन्न भाषी देशो के शिशुओ मे दिखाई नही पडता। जब शिशु रुदन करता है तो उसके रुदन की आवाज मे जर्मनी, फ्रेंच, अग्रजी, अरबी, उर्दू किसी भाषा की प्रस्तुति नही झलकती अपितु हिन्दी भाषा के स्वर व्यजना का समावेश अवश्य ही परिलक्षित होता है। इस दृष्टि से हिन्दी का आकलन करे तो हिन्दी विश्वभाषा कही जा सकती है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री अगर सम्पूर्ण विश्व की आरम्भिक भाषा शिशु रुदन के रूप मे हिन्दी है तो फिर हिन्दी इतनी सिमट क्यो गई?*

समाधान इसका कारण स्वय हम लोग है। हम हिन्दी को अपनी वपौती मान बैठे है, जब भी किसी वस्तु अथवा विचार पर कोई वर्ग या फिर स्थान विशेष के लोग अपना अधिकार जताने लगेगे, तभी अमुक वस्तु या विचार सकटग्रस्त हो जाएगा। न उसका प्रसार हो सकेगा, न ही उसमे वह अपनापन रहेगा जो होना चाहिए। चूकि हमने हिन्दी को भारत मे राष्ट्रभाषा तक सीमित करना चाहा है, इसीलिए हिन्दी की आज दुदशा है। भारत मे भी हिन्दी क्षेत्रवाद मे बँटकर रह गई है। उत्तरी भारत के हिन्दी भाषी लोग, दक्षिण भारत के लोगो को हिन्दी का दुश्मन मानते है, जबकि वास्तव मे ऐसा नही है हिन्दी सम्पूर्ण भारत की ही नही सम्पूर्ण विश्व के जनमानस की भाषा है, आवश्यकता हिन्दी को खुला छोड रखने की है ताकि प्रत्येक मनुष्य अपनी पहली भाषा, शिशु रुदनकाल की भाषा को सहजता से अपना सके।

जिज्ञासा *मनुष्य की प्रथम भाषा हिन्दी होने पर भी अग्रेजी का वर्चस्व क्यो है विश्व के अधिकाश देश ऐसे है जो गैर हिन्दी भाषी है*

समाधान शिशु जैसे-जैसे बडा होता है, वैसे-वैसे आसपास के वातावरण, सस्कार, बोलचाल की भाषा ग्रहण करता है। इसी कारण अहिन्दी भाषी क्षेत्रो मे शिशु अहिन्दी भाषा ही सीख पाता है, यदि शिशु को थोडी भी हिन्दी सिखा दी जाय तो वह हिन्दी को सहजता से स्वीकार कर लेगा परन्तु प्रतिकूल वातावरण अच्छे सस्कार तक को भुला देता है, यह तो फिर भी भाषा है। आग्ल भाषा का पनपना भी रहन-सहन मे इसका बढता प्रयोग है परन्तु यह कहना अधिक उचित नही कि आग्ल भाषा वर्चस्व मे है।

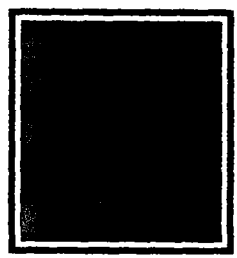
विश्व मे अनेक देश ऐसे है जहाँ आग्ल भाषा का नामो-निशान तक नही है। अलबत्ता भारत मे अवश्य ही अँग्रेजी मानसिकता के शिकार हो गए है। जिसका कारण पाश्चात्य सस्कृति की बढती होड है। आधुनिक बनने और दिखने के प्रयास मे अपनी

सस्कृति को भूलते जा रहे है फिर भला सम्वेदनाओ से जुडी हिन्दी कब तक सुरक्षित रह पायगी? आवश्यकता है पाश्चात्य का लबादा उतार फेकने की, ताकि भारतीय सस्कृति की पुन प्रतिष्ठा कायम हो सके और मानवमूल्यो, सस्कारो की रक्षा हो सके।

जिज्ञासा *विदेशो मे हिन्दी किस वजूद मे है?*

समाधान भले ही भारत मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप म अपेक्षित सम्मान न मिल पाया हो परन्तु जो भारतीय मूल के लोग विदेशो मे बसे हुए है, व आज भी हिन्दी से जुड़ हुए है और विदेश मे रहकर भारत की राष्ट्रभाषा का न सिर्फ प्रचार-प्रसार कर रहे है बल्कि पुरजोर रूप से हिन्दी को बुलन्दियो तक पहुँचाने के लिए वकालत कर रहे है। उन्ह आज भी हिन्दी भाषा स जुड रहन का फक्र है और व शान से गैर हिन्दी भाषियो को हिन्दी क उत्थान के लिए हिन्दी बोलना-लिखना-पढना सिखाते है। अनेक देशो मे हिन्दी क अनेक लेखको की कृतियो का अनुवाद हुआ है।

अन्य भाषाओं से हर तरह के भाव रहस्य को समझने मे न सिर्फ कठिनाई होती है अपितु भाषा की कमजोरी भी झलकती है। एकमात्र हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो मनुष्य के जन्म से मृत्यु-पर्यत तक हमेशा उसकी सासो की तरह साथ निभाती है क्योंकि हिन्दी विचारो के साथ-साथ आत्मा की भी भाषा है जिसका सीधा सम्बन्ध हृदय की गहराईयो से है और जो मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण दिखाई पडती है।



जिज्ञासा *हिन्दी मे आप ऐसा क्या पाते है, जो अपनी तरफ, आकर्षित करती है?*

समाधान वास्तव मे हिन्दी म अपनत्व का गुण है, जो भी इसके निकट आता है, उसे हिन्दी आश्रय देती है और उसकी होकर रह जाती है। तभी तो हिन्दी की महत्ता गीत-सगीत तक मे दिखाई पडती है। हिन्दी क भजनो, गीतो की सगीत धुनो पर विदेशियो का झूम उठना हिन्दी के आकर्षण और माधुर्य का प्रमाण है। हिन्दी ही एक भाषा है जिसे कोई न जानते हुए भी समझ लेता है। हिन्दी की आत्मा, मानव हृदय व भाव-भगिमा के समान है, तभी तो हिन्दी को समझना बेहद आसान है। भारत की धार्मिक सस्कृति ने हिन्दी की बदौलत ही भारतीय सीमाए लाघकर विदेशो मे अच्छी-खासी

लोकप्रियता पाई है। भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सहज और सरल माध्यम है। भाषा अगर ऐसी हो तो सरलता से समझी, पढी व लिखी जा सके तो उसे सहज ही अपना लिया जाता है। हिन्दी भी एक ऐसी ही भाषा है, जिसका सम्बन्ध मानव उत्पत्ति से जुडा है।

जिज्ञासा *हिन्दी हमारे अतीत से भी जुडी रही है। उस समय इसकी स्थिति क्या थी?*

समाधान निश्चित ही हिन्दी हमारे अतीत की अनोखी धरोहर है जो जीवन की साँसो की तरह सदव हमारे साथ रही है। हमारे जितने भी धर्मग्रन्थ है वे या तो सस्कृत-प्राकृत, पाली मे है या हिन्दी मे जिनका मूल एक ही है। इन धर्मग्रन्थो मे सबसे पहले विदेशियो ने रुचि दिखाई और उन्हे इन धर्मग्रन्थो तक पहुँचने के लिए हिन्दी एव अन्य भारतीय भाषाओ तक आना पडा। हिन्दी एव अन्य क्षेत्रीय भारतीय भाषाओ को जानने-समझने के बाद ही वे धर्मग्रन्थो का ज्ञान पाए। हालांकि बाद मे इन धर्मग्रन्थो का अनुवाद गैर भारतीय भाषाओ मे हुआ परन्तु शुरुआत हिन्दी से ही हुई, जिसके अस्तित्व को आज भी विदेशी स्वीकारते है।

जिज्ञासा *हिन्दी को दूसरी दृष्टि से देखे तो इसमे क्लिष्टता का आभास होता है?*

समाधान यह सत्य है कुछ लोग हिन्दी को एक जटिल कठोर भाषा के रूप मे प्रचारित करते है। जिसका एक बडा कारण वे इस भाषा मे सर्वाधिक अक्षर बताते है परन्तु यथार्थ यह है अक्षरो की अधिकता के कारण ही हम इस भाषा से हर भाव रहस्य



अँग्रेजो ने जानबूझ कर षडयन्त्र रचकर हिन्दी, सस्कृत व प्राकृत भाषा पर प्रहार किया और आजादी के बाद भी इग्लिश-परस्त लोग अँग्रेजी की वकालत करते हैं। वे हिन्दी के विरुद्ध नित नये षडयन्त्र अपनी उसी मानसिकता के कारण करते नहीं थकते। भाषा जातीय जीवन और उसकी सस्कृति की सर्व प्रधान रक्षिका है, वह उसके शील का दर्पण है, वह उसके विकास का वैभव है। भाषा जीती तो सब कुछ जीत लिया फिर जीतने के लिए कुछ शेष नहीं बचता।

को स्पष्ट रूप से प्रकट करने मे सफल हो जाते है जबकि ऐसा अन्य भाषाओ के साथ नही है, आग्ल भाषा के साथ तो बिल्कुल ही नही। अन्य भाषाओ से हर तरह के भाव रहस्य को समझने मे न सिर्फ कठिनाई होती है अपितु भाषा की कमजोरी भी झलकती है। एकमात्र हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो मनुष्य के जन्म से मृत्यु-पर्यत तक हमेशा उसकी सॉसो की तरह साथ निभाती है क्योकि हिन्दी विचारो के साथ-साथ आत्मा की भी भाषा है जिसका सीधा सम्बन्ध हृदय की गहराईयो से है और जो मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण दिखाई पडती है। सचमुच हिन्दी ही अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ सहज-सुलभ माध्यम है।

जिज्ञासा *हिन्दी को लेकर राजनीति और दुष्प्रचार का जो दौर लम्बे समय से चल रहा है क्या उससे हिन्दी अधिक समृद्ध हुई है?*

समाधान ऐसा कुछ नही है। हिन्दी को लेकर राजनीति और दुष्प्रचार का इतिहास 50 वर्ष पुराना है लेकिन आज भी यह बहद सवेदनशील और अॅग्रेजी के वकालत करने वालो के हाथ मे सबसे धारदार हथियार है। यह ऐतिहासिक और निर्विवाद तथ्य है कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। यह गौरव हिन्दी को हिन्दी भाषियो का दिया हुआ नही है अपितु सविधान लागू होने से बहुत पहले भारत के सन्तो, समाज सुधारको, अहिन्दी विद्वानो और स्वतन्त्रता सघर्ष के सेनानियो ने राष्ट्रीय एकता और स्वाभिमान जागृत करने के लिए हिन्दी को चुना था। महर्षि दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ, केशवचन्द्र सेन, महर्षि अरविन्द घोष, महात्मा गॉधी, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, सुभाष चन्द्र बोस, बाल गगाधर तिलक, कन्हैयालाल, मानकलाल मुशी जैसे प्रखर देशभक्तो ने एक राय से यह माना था कि विविध भाषाओ के इस देश मे हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रीय अखण्डता व सामाजिक एकता को एक सूत्र मे बाधे रख सकती है।

मातृभाषा के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन मे लगे कार्यकर्त्ताओ को मातृभाषा के साथ हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य था। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति माध्यम से पचास हजार से अधिक लोग उस जमाने मे दक्षिण भारत मे हिन्दी सीखते थे। सविधान सभा मे बाबू पुरुषोत्तम टण्डन से इस दुष्प्रचार का पर्दाफाश कर दिया था कि दक्षिण भारत मे लोग हिन्दी का विरोध करते है।

ईसवी सन् 1834 मे जब मैकाले कमेटी ऑफ इस्ट्रैक्शन का चेयरमेन बन कर आया तो भारत मे अग्रेजी को थोपने और हिन्दी - सस्कृत, प्राकृत जो देश को जोडे थी, को हटाना निश्चित हो गया था। ईसवी सन् 1767 मे जब चार्ल्स ग्राट भारत आया था

ता उसने यह आशा व्यक्त की थी कि हिन्दुओ को अँग्रेजी के द्वारा उनकी सस्कृति और धर्म पर घात लगाकर काबू मे लाया जा सकता है इसलिए अँग्रेजी को ब्रिटिश सरकार ने भारत मे थोपन के लिए पूरी ताकत लगा दी। उसने भारतीय भाषाओ और सस्कृत प्राकृत को बेहूदगी, अन्धविश्वास और अज्ञान का भण्डार कहा। वह मातृभाषाओ को प्रोत्साहन देने के पक्ष मे नही था। वह जानता था कि विदेशी भाषा तब ही मातृभाषा का स्थान ले सकती हे जब उसके अस्तित्व को ही मिटा दिया जाये। हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह और हिन्दी पखवाडा आदि के रूप मे साल-दर-साल इसी पाखण्ड की पुनरावृत्ति हो रही हे। किसी भी देश के साहित्य मे उस दश की जनता जनादन के हृदय से निकले उद्‌गारो का योगदान बहुत महत्वपूर्ण होता है। जनता जनार्दन के मुखारविन्द से निकली क्षण-क्षण की भावनाओ मे उसका हृदय जेसे निकल पडता दिखायी दता है। यह सब हिन्दी भाषा से ही सम्भव है।

जिज्ञासा *राजनीतिक पराधीनता किसी भी देश की भाषा पर सबसे अधिक प्रहार करती है क्या ऐसा ही भारत के साथ हुआ?*

समाधान यह बिल्कुल सच हे। अँग्रेजो ने जानबूझ कर षडयन्त्र रचकर हिन्दी, सस्कृत व प्राकृत भाषा पर प्रहार किया और आजादी के बाद भी इग्लिश-पस्त लाग अँग्रेजी की वकालत करते हे। वे हिन्दी के विरुद्ध नित नय षडयन्त्र अपनी उसी मानसिकता के कारण करते नही थकते। भाषा जातीय जीवन और उसकी सस्कृति की सर्व प्रधान रक्षिका है, वह उसके शील का दर्पण है, वह उसके विकास का वैभव है। भाषा जीती तो सब कुछ जीत लिया फिर जीतने के लिए कुछ शेष नही बचता। पराई भाषा चरित्र की दृढता का अपहरण कर लेती है, मौलिकता का विनाश कर देती हे ओर नकल करन का स्वभाव बना करके उत्कृष्ट गुणो और प्रतिभा से विमुख कर देती हे। अँग्रेजो ने इन सब बातो को ध्यान मे रखकर सबसे पहले प्रहार बहुत धीमे-धीमे योजना बनाकर हमारी भाषा पर किया और एक विशेष अँग्रेजी-परस्त कैडर तेयार किया था। स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रतीक गणेशशकर विद्यार्थी ने कहा है कि यदि मेरे सामने एक ओर देश की स्वाधीनता रखी जाये और दूसरी ओर मातृभाषा फिर मुझसे पूछा जाये कि इन दोनो मे से किसे चुनोगे तो मै नि सकोच मातृभाषा ले लूँगा। इसके बल पर मै देश की स्वाधीनता को प्राप्त कर लूँगा। राजनीतिक पराधीनता ने भारतवर्ष मे भाषा विकास के मार्ग मे रोडे अटकाये। हिन्दी को इससे सबसे अधिक हानि पहुँची।

पत्रकारिता :
जनमत की अभिव्यक्ति

किसी भी अच्छे समाचार पत्र का उद्देश्य जन-चेतना को जागृत करना और सार्वजनिक दोषों को प्रकट करना है। समाचार पत्र प्रशासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करते है। जनता की समस्याओं से शासन/प्रशासन को अवगत कराने में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। शासन की उपलब्धियाँ भी समाचार पत्र ही जनता तक पहुँचाते है, जिससे सरकार की साख बनती है तथा जनता में सरकार के प्रति विश्वास जागृत होता है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

वर्षायोग, 10 जुलाई 2000, वहलना, मुजफ्फरनगर

समाचार पत्र जनतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ है। पत्रकार की ऑख मे सब कुछ दिखलाई देता है। समाज को सजग रखने मे पत्रकारो की प्रमुख भूमिका है। प्रबुद्ध सन्तप्रवर उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी ने पत्रकारो का आह्वान करते हुए कहा है कि पत्रकारो को पीत पत्रकारिता से बचकर खोजी पत्रकारिता को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाना चाहिए। मैने गुरुदेव से पत्रकारिता के सन्दर्भ मे स्वतन्त्रता आन्दोलन व स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की भूमिका पर लम्बी चर्चा की। प्रस्तुत है उसके प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन**।

जिज्ञासा *स्वतन्त्रता प्राप्ति और लोकतांत्रिक परम्परा की स्थापना मे प्रेस की क्या भूमिका रही?*

समाधान स्वतन्त्रता प्राप्ति आन्दोलन मे हिन्दी व अन्य भाषाओ के पत्रकारो की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पत्रकारो के उस समय ऊँचे आदर्श थे तथा उनकी नस-नस मे

राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा का व्रत समाया हुआ था। बडी-बड़ी यातनाये, प्रलोभन किंचित भी उन्हे आजादी प्राप्त करने के मिशन से डिगा नही पाये। अपनी देशभक्ति के लिए उस समय के अनेक पत्रकार बडे प्रख्यात रहे। अपने कर्मक्षेत्र के प्रारम्भ मे महात्मा गॉधी व बाल गगाधर तिलक भी पत्रकारिता मे जुडे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद प्रजातन्त्र मे समाचार पत्र जनमत की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

"समाचार जानकर पाठकों की प्रतिक्रिया होती है किसी का वे समर्थन करते है या किसी का विरोध, इस तरह के खण्डन-मण्डन या प्रशसा-निन्दा से जनमत का निर्माण होता है। समाचार पत्र इस जनमत को प्रतिबिम्बित करते हैं। जनमत को विशेष दिशा देना, उसे सशक्त और सगठित करना, उसमें प्रभाव व ओज पैदा करना। यह काम समाचार पत्रों को समाज का पथ-प्रदर्शक और राष्ट्रीय हितों का सजग प्रहरी बना देता हे।"



जिज्ञासा *क्या वास्तव मे सामाचार पत्रो से स्थिति परिवर्तन सम्भव है?*

समाधान क्यो नही, परतन्त्रता के समय देश के पत्रकारो ने सिपाही की भॉति कार्य किया। सर्वश्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालमुकन्द गुप्त, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, मदनमोहन मालवीय, रुद्रदत्त शर्मा, ईश्वरीप्रसाद शर्मा, अम्बिकाप्रसाद वाजपेई, लक्ष्मण नारायण तथा अमरशहीद गणेशशकर 'विद्यार्थी' आदि अनेक एसे पत्रकार थे जिन्होने स्वाधीनता सग्राम को आगे बढाने मे तत्कालीन अॅग्रेजी नौकरशाही को जड-मूल से उखाड फेकने मे अनन्य सहयोग दिया। इसी परम्परा मे सर्वश्री माखनलाल चतुर्वेदी, कृष्णकान्त मालवीय, बाबूराव, विष्णु पराडकर, हरीभाऊ उपाध्याय, श्रीकृष्ण पालीवाल, इन्द्र विद्यावाचस्पति, रामवृक्ष बेनपुरी, सत्यदेव विद्यालकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' आदि के नाम स्मरणीय है। इन महानुभाव पत्रकारो ने गोरी सरकार से लोहा लिया तथा अपनी लेखनी के माध्यम से जनजागरण का उद्घोष किया। इतना ही नही पुरस्कार स्वरूप कारावास भोगा तथा अनेक नृशस यातनाये सहीं। ये नररत्न श्रद्धा के पात्र है। जैन प्रदीप के सम्पादक ज्योति प्रसाद जैन के पत्र पर तो ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्ध लगाया था।

जिज्ञासा . *समाचार पत्र का उद्देश्य क्या होना चाहिये?*

समाधान . किसी भी अच्छे समाचार पत्र का उद्देश्य जन-चेतना को जागृत करना और सार्वजनिक दोषो को प्रकट करना है। समाचार पत्र प्रशासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करते है। जनता की समस्याओ से शासन/प्रशासन को अवगत कराने मे भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। शासन की उपलब्धियॉ भी समाचार पत्र ही जनता तक पहुॅचाते है, जिससे सरकार की साख बनती है तथा जनता मे सरकार के प्रति विश्वास जागृत होता है।

जिज्ञासा *क्या समाचार पत्र/पत्रकार अपना दायित्व पूरा कर रहे है?*

समाधान स्वतन्त्रता प्राप्ति की लडाई के दौरान पत्रकार का एक लक्ष्य था स्वतन्त्रता प्राप्ति। वे इसके लिए समर्पित थे। पैसे कमाना, सुविधा जुटाना या फिर समाज मे उच्च स्थान प्राप्त करना उनका उद्देश्य नहीं था। अनेक पत्रकारो ने इस उद्देश्य को अपना सब कुछ बेचकर भी पूरा किया। पिछले 50 वर्षो मे पत्रकारिता का भी व्यवसायीकरण हो गया है। आज पत्रकारो का एक बडा वर्ग इसे मिशन नहीं मानता अपितु इसे सबमिशन (आज्ञानुकूलता/ओबिडियन्स टू आर्थेरिटी) के रूप मे परोस रहा है। प्रेस मालिको के लिए प्रोफेशन उद्योग बन गया है।

समाचार पत्रो/पत्रकारो का एक महत्पूर्ण सूत्र है - विश्सनीयता। पाठको को ऐसा लगना चाहिए कि जो समाचार वह पढ रहा है उसमे सदेह की कोई गुजाइश नही। उक्त समाचार पत्र से जुडे सवाददाता/पत्रकार पूरी खोजबीन व अन्वेषण के बाद निष्पक्ष होकर समाचार छापते है।

यह बडे दु ख की बात है आज यह देखने मे आता है कि समाचार पत्रो के पाठक हिन्दी मे कोई समाचार पत्र पढने के बाद सदिग्ध रहते है, जब तक वे उसकी पुष्टि ॲग्रेजी के समाचार पत्रो से न कर ले। प्रतियोगिता के क्षेत्र मे भी अधिकाशत हिन्दी समाचारो का अनुवाद ॲग्रेजी समाचारो से होता है। पिछले दो दशक मे विशेष रूप से हिन्दी समाचार पत्रो की सख्या बढी है। अभी भी अग्रेजी समाचार पत्रो की अपेक्षा हिन्दी समाचार पत्रो के लिये करने को बहुत कुछ शेष है। हिन्दी समाचार पत्रो के इस पक्ष को मै उसका स्वर्ण पक्ष मानता हूॅ कि जहॉ हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये भाषाविद लडते-झगड़ते रहे वहीं समाचार पत्र शिक्षित वर्ग के साथ-साथ साधारण जनता को हिन्दी और वह भी परिमार्जित हिन्दी सिखाते रहे। आज साधारण-से-साधारण व्यक्ति

प्रशासन, शासन, अधीक्षक अभियन्ता, सज्ञान, सस्तुति, आरक्षण, प्रजातन्त्र आदि कठिन शब्द अपनी रोजमर्रा की भाषा मे प्रयोग करने का पूर्ण अभ्यस्त हो चुका है।

जिज्ञासा *क्या वर्तमान मे पत्रकारिता के मानदण्डो मे गिरावट नही आई है?*

समाधान पत्रकारिता के मानदण्डो मे गिरावट तो निश्चित रूप से आयी है। इसका एक बड़ा कारण हमारी जीवन शैली, सस्कृति व सभ्यता का अवमूल्यन है। प्राय नागरिको की नसो मे भ्रष्टाचार व अधिक-से-अधिक बिना परिश्रम/पुरुषार्थ के अपने चारो ओर सुख-सुविधाये जुटाने की आज होड है। फिर पत्रकार भी इससे कैसे अछूते रह सकते है। आज कुकुरमुत्ते की तरह स्वयभू पत्रकारो की विशाल फौज है जो भ्रष्ट राजनेता/अधिकारी के दोष छुपाकर, उनकी चाटुकारिता करते फिरते है और उनकी शान मे बडे-बडे कसीदे छापकर सुबह-सुबह समाचार पत्र की प्रति लेकर उनके निवासो/कार्यालयो पर पहुँच जाते है और चलते समय उनसे छोटे-मोटे सिफारशी काम करा लाते है अर्थात् दलाली करते है। एक दूसरा वर्ग भी है जो इससे अधिक सयाना है वह अधिकारियो की कमजोरियो/अनैतिक आचरणो की पूरी टोह रखते है या फिर उनके द्वारा आर्थिक गोलमाल की जानकारी के बलबूते पर उन्हे ब्लैक मेल कर बडे काम कराते है व धन कमाते है। थानो, तहसीलो व अन्य विभागो मे पत्रकारिता के नाम पर केवल दलाली करते है। ऐसे वर्ग ने पत्रकारिता जैसे प्रतिष्ठित कार्य को सर्वत्र बदनाम कर दिया है। सच्चे और अच्छे पत्रकार की सब जगह वैसे ही प्रतिष्ठा है उसके काम चुटकी बजाते हो जाते है फिर अधिकारियो व राजनेताओ की हुजूरी मे रोज हाजरी बजाने की कहाँ आवश्यकता है।

जिज्ञासा *हम समाचार-पत्र को अपने जीवन मे इतना महत्व क्यो देते है?*

समाधान समाचार-पत्रो से जनता को विविध घटनाओ की नवीनतम व विस्तृत जानकारी बिना किसी विलम्ब के मिलती है, इससे समाचार पत्र का जीवन मे विशेष महत्व है।

जिज्ञासा *समाचार पत्र समाज निर्माण मे किस प्रकार सहायक है?*

समाधान समाचार जानकर ही पाठको की प्रतिक्रिया होती है किसी का वे समर्थन करते है या किसी का विरोध, इस तरह के खण्डन-मण्डन या प्रशसा-निन्दा से जनमत का निर्माण होता है। समाचार पत्र इस जनमत को प्रतिबिम्बित करते है।

जनमत को विशेष दिशा देना, उसे सशक्त और सगठित करना, उसमे प्रभाव व

ओज पैदा करना। यह काम समाचार पत्रों को समाज का पथ-प्रदर्शक और राष्ट्रीय हितो का सजग प्रहरी बना देता है।

सूचना देने, जनमत प्रतिबिम्बित करने और लोकमत का नेतृत्व करने के अतिरिक्त समाचार पत्र मनोरजक सामग्री देकर पाठको की सतुष्टि करते है। समाचार पत्र व पत्रकार एक-दूसरे के पूरक है, क्योंकि समाचार पत्र ही पत्रकारो के परिश्रम का मूर्त रूप है।

जिज्ञासा · *समाचार पत्र निकालने का मकसद जीविकोपार्जन है या जनसेवा?*

समाधान : लदन टाइम्स के पूर्व सम्पादक विखेमस्टीड का मत था कि पत्रकारिता एक कला भी है, वृत्ति भी और जनसेवा भी। पत्रकार का यह भी कर्त्तव्य है कि अपने उत्तरदायित्वो की पूर्ति के लिये भी प्रयास करे क्योंकि उसे बल पत्र की व्यापारिक और व्यवसायिक स्थिति से ही मिलेगा। समाचार पत्रो के आर्थिक हितो की रक्षा तो आवश्यक है किन्तु इसका दुरुपयोग न हो इसके लिये सम्यक् सतर्कता परम आवश्यक है। पत्रकार केवल समाचार बेचने वाला व्यापारी नही वह इससे कुछ अधिक और अलग भी है। वह समाचार बेचता है अपना सिर हथेली पर रखकर।

विदित रहे' उपाध्यायश्री (हस कर) कहते है कि सत भी निर्भीक होता है और अच्छा पत्रकार भी, इसीलिये मै पत्रकारो का सदैव सम्मान करता हूँ तथा उन्हे प्रेरित करता हूँ कि वे पीत-पत्रकारिता से दूर रहे।

जिज्ञासा *गुरुदेव' इस वार्त्ता की अन्तिम जिज्ञासा है। भारतीय पत्रकारिता का उद्भव कौन से समाचार पत्र के साथ किसके द्वारा हुआ?*

समाधान भारतीय पत्रकारिता के वास्तविक जन्मदाताओ मे राजाराम मोहनराय (1772-1833) का नाम विशेष उल्लेखनीय है जहॉ तक मुझे ज्ञात है उन्होने 1821 मे बगला मे 'सवाद कौमुदी' और फारसी मे 'मिरातुल' अखबार शुरू किया। 30 मई 1826 को कोलकाता से हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'उदन्तमार्तण्ड' प्रकाशित हुआ, यह साप्ताहिक था। सन् 1854 मे कोलकाता से ही 'सुधावर्षण' हिन्दी का पहला दैनिक निकला।

कविता : भावनाओं का दीप

"

सद्‌भावों की जीवन रक्षा कविता का महद् उद्देश्य है। कविता दिलों को जोड़ती है और जडता की कारा को तोडती है इसलिए जब कोई भक्तिसागर में अवगाहन करता है उसके स्वर काव्यमयी ही होते हैं। प्रभु की वन्दना स्तुति सब काव्यमय सृजना है कविता की तरगें भावों की उत्प्रेरक है। कविता हृदय से ही प्रस्फुटित होती है और हृदय को ही छूती है। सम्प्रेषण की अद्‌भुत क्षमता कविता की ही होती है। सन्त कवियों ने अपनी कविता से यदि भक्तिरस बरसाया तो वीर रस के कवियों ने अगारे बरसाकर शोणित को गर्म किया। कविता ने युद्ध में जोश दिया तो जीवन में होश - यह काव्यमय सृजना ही ससार मे कोमलता करुणा एव सवेदना का विस्तार करती है।

उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

बसत पचमी, 2005, पीतमपुरा, दिल्ली

उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी मुनिराज दिगम्बर सन्त है, मनीषी है, प्रखर वक्ता एव प्रबुद्ध चिन्तक है। सवेदनशील है, सहृदय एव वात्सल्य रत्नाकर है। कविता उनकी सहज स्वभाविक परिणति है। उनकी कविताओ मे विचारो और सवेगो की जबरदस्त सान्द्रता है। पद विहारी है, जन-जन से परिचित है अत उनके पास असख्य परिदृश्यो प्रसगो, मनस्थितियो का गुफन है, भाषा की अनेक लय और अनेक शेड्स है उनकी कविता मे मनुष्य का एक सघन वन है। मैने उनकी कविताओ मे नए काव्यार्थ की सम्भावनाओ को घटित देखा है अत जिज्ञासा स्वाभाविक भी थी वर्तमान युग मे जब कविता से आम आदमी बचकर निकल रहा है तब उपाध्यायश्री की कविता जन-सामान्य से कैसे जुड सकती है और उनका कविता लेखन के पृष्ठ मे क्या उद्देश्य है। इस विषय पर गुरुदेव से की गई वार्त्ता के कुछ अश प्रस्तुत है - **डॉ नीलम जैन** *'सम्पादक' 'जैन महिला दर्श'*

जिज्ञासा : *साधु जीवन मे कविता की रचना भी क्या जनमगल मे कारण बनती है?*

समाधान · हाँ, हाँ - क्यो नही, मैने कही एक कविता पढी थी -

ससार में कविता अनेकों क्रान्तिया है कर चुकी।
मुरझे मनों में वेग की विद्युत प्रभायें भर चुकी।।
है अन्ध-सा अर्न्तजगत कविरूप सविता के बिना।
सद्भाव जीवित रह नहीं सकते सुकविता के बिना।।

कविता अर्न्तदृष्टि है। करुणा के साथ कविता का सिद्ध सम्बन्ध है सन्तो की काव्य रचना का सुदीर्घ इतिवृत्त है। हमारे पुरा चिन्तको ने यश, अर्थप्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अनर्थ निवारण, सद्य परनिर्वृत्ति और कान्ता सम्मित उपदेश लाभ को कविता का प्रयोजन बताकर कविता की विश्वरूपता को निर्देशित करने की चेष्टा की है। सद्भावो की जीवन रक्षा कविता का महद् उद्देश्य है। कविता दिलो को जोडती है और जडता की कारा को तोडती है इसीलिए जब भी कोई काव्य सागर मे अवगाहन करता है उसके स्वर काव्यमयी ही होते हे प्रभु की वन्दना स्तुति सब काव्यमय सृजना है।

अत साधु जीवन और कविता मे सापेक्षता है। आदिकवि ऋषभदेव को ही कहा जाता है - उन्होने लौकिक कलाओ का बोध कराया पश्चात् भगवान बने।

जिज्ञासा *गुरुदेव! पूर्व आचार्यो ने अपनी रचनाएँ छन्दो मे लिखी है किन्तु वर्तमान मे ऐसा नही है - छन्द की कविता से इस उदासीनता को आप क्या कहेगे?*

समाधान छन्द श्लोक कण्ठ म बनते है।। जो छन्द लिखेगा वह छन्द के गणित को भी जानता है। पहले रचनाकार व्याकरण छन्द को सीखते थे और साचे मे कविता ढालते थे। आज ऐसा नही है। मै अपनी बात कहूँ मैने अनेक छन्द, अलकार आदि का ज्ञान किया, तत्पश्चात् सस्कृत प्राकृत बगला, हिन्दी मे कई रचनाएँ लिखी मै जब अपने गुरुदेव आचार्य विद्यासागर जी को कविता सुनाता था तो कहना नही पडता था यह छन्द कौन सा है - धीरे-धीरे मेने देखा आचार्यकृत रचनाएँ वन्दना/स्तुति/स्तोत्र बहुत है। आज जीवन को बहुविध कोणो से देखना परखना पडता है और ऐसे मे अतरग से जो भाव निकलते है यदि उन्हे छन्दोबद्ध कर दे तो मौलिकता शुष्क लगती है। अत अब छन्द मुक्त कविता का दौर चल पडा है लोग लिखकर आत्म सतुष्टि अनुभव करते है। लेकिन जानिए! छन्द मुक्त कविता का भी सौन्दर्य बिलकुल अलग है।

जिज्ञासा *अच्छे साहित्य के पाठको का वर्तमान मे एक अकाल-सा दीखता है? टी वी के युग मे भी क्या साहित्य का स्थान है?*

समाधान · आज भूमण्डलीकरण के युग मे सभी कुछ उलट-पुलट हुआ है। इस तेजी से बदलते परिवेश मे हमारा समाज, पारिवारिक विसगतियों, आर्थिक विषमताओं और आर्थिक अन्तर्द्वन्दो से ग्रस्त दिखाई दे रहा है। शास्त्र कुछ कहते है, व्यवहार मे कुछ और करना पड़ता है या फिर आज व्यक्ति सास्कृतिक परम्पराओ की दुहाई देते हुए स्वय ही अध-विश्वास, सतही कर्मकाण्ड और दिखावो मे पडता रहता है। आज भी जडो से जुड़ने के लिए चिन्तन की आवश्यकता है। ऐसा नही है कि टी वी के आ जाने से साहित्य का महत्त्व कम हो जाता है। साहित्य का अपना स्थान व महत्व है और टी वी का अपना अलग। टी वी का कार्यक्रम भी साहित्य पर ही आधारित होता है। पहले साहित्य आता है और फिर टी वी कार्यक्रम। साहित्य की उपयोगिता व महत्व को टी वी के आने पर नकारा नही जा सकता। जहॉ टी वी कार्यक्रम बहुत कुछ बाह्य साधनो पर निर्मित है व अपव्यायि व अधिक खर्चीला है, वही साहित्य सस्ता, सरल व स्वय मे आत्मनिर्भर है। साहित्य पहले से आज तक व आने वाले समय मे भी भावो व विचारो की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है और रहेगा। हॉ टी वी आदि अन्य माध्यम इसको रोचक व नाटकीय रूप प्रदान कर अधिक प्रभावी बना सकते है। मनुष्य विचारो का भिन्न-भिन्न माध्यमो से आदान-प्रदान करता है। इस आदान-प्रदान के बीच साहित्य ही जीवित रहता है।

जिज्ञासा *क्या कविता और धर्म का कोई सम्बन्ध है?*

समाधान क्यो नहीं। अभिव्यजना और परम्परा को नए रूपो मे बढाने का कार्य सर्वप्रथम कविता ने ही किया। कविता विश्वधर्म के रूप मे अग्रगामी पक्ति मे दिखाई देती है। कविता मनो को जोडती है मनोविकारो को दूर करती है। कविता कवि और श्रोता के बीच का सेतु है अथवा यू कहे वह अकेली नही रह सकती। वह सब की होती है सबके लिए होती है। धर्म की भी तो यही भूमिका है। जिस प्रकार कविता बडे-बडे विचारो व भावो की अभिव्यक्ति को बडे सूक्ष्म व सक्षिप्त शब्दो मे पिरोकर लिखी जाती है और पाठक कविता पढने पर उन विचारो व भावो को अपने अनुभव व अपने क्षेत्र से जोडकर उसका आनन्द उठाता है। उसी प्रकार धर्म वस्तु का स्वभाव है और उस स्वभाव को अनेकान्तवाद व स्याद्वाद से समझकर सभी अपनी-अपनी विचार धारा, सोच समझ व अनुभव से उसका आनन्द व लाभ उठा सकते है।

हमने अपने पौराणिक शास्त्रो मे देखा है कि अधिकतर साहित्य, कविता व पद्य रूप मे पाया गया है। जिसकी टीका व्याख्या व स्पष्टीकरण अनेक सन्तो ने अपने विचारो से करने की कोशिश की है फिर भी उस मूलभाव की अनन्त शक्ति को समझाने

मे वह साहित्य परिपूर्ण नही है जो वह मौलिक साहित्य है।

इस प्रकार जब धर्म, न्याय व नीति को काव्य का रूप दे दिया जाता है तब समझिये कि वहाँ गागर मे सागर भर दिया गया है।

जिज्ञासा · *इसका अर्थ यह हुआ कविता सस्कृति की सरक्षिका भी है?*

समाधान सस्कृति का शाब्दिक अर्थ है जागतिक सन्दर्भ से जोडना। सत्य, अहिसा अपरिग्रह आदि सभी शाश्वत मूल्य है। ये मूल्य ही हमारी सस्कृति को सरक्षित करते है। कविता अपना युगानुरुप स्वरूप बनाने मे अग्रगामी रहती है। कविता मे से हमे सब ज्ञात हो जाता है कवि का मन सर्वदा "सत्य शिव सुन्दरम्" के लिए आकुल-व्याकुल रहता है। कविता कवि का निजी दस्तावेज नही अपितु प्राणिमात्र के कर्म का गहन अनुभव है। जैसा कि मैने आपको पूर्व मे भी कहा है कि कविता बहुत कम शब्दो मे बहुत कुछ कहने की क्षमता रखती है। जिसकी अभिव्यक्ति व व्याख्या किसी समय, क्षेत्र विचार, स्थिति परिस्थिति की सीमाओ मे बाधी नही जा सकती है। इस प्रकार यदि कविता के इस गुण के सन्दर्भ से सस्कृति को देखा जाये तो हम यह कह सकते है कविता, सर्वकृति को बचाने व सरक्षण का एक उचित माध्यम है। जो आने वाले सभी कालो मे समय, स्थान व स्थिति के अनुरूप उसकी व्याख्या करने मे सक्षम रहेगी।

जिज्ञासा *टूटते हुए मूल्यो के बीच कविता की क्या भूमिका हो सकती है?*

समाधान इस समाज के मूल्यबोध आयातित नही होते वे सहज एव परिस्थितिजन्य है। यहाँ सयुक्त परिवारो की टूटन तो है पर समाप्ति, सम्बन्धो मे ठण्डापन एव अलगाव नही है, मूल्यो मे गिरावट तो है पर मूल्यहीनता नही, इसलिए हम यह कहे सब कुछ समाप्त हो गया है उचित नही। कविता की गुनगुनाहट मन की ग्रथियो पर एक्यूप्रेशर की तरह प्रभाव डालती है। हम मे कब, किस प्रकार, भाव रस का प्रवाह हो जाए कहा नही जा सकता और हमारी कविता का तो अभिप्राय ही मूल्य है। अवमूल्यन के इस दौर मे कविता मूल्यवती है। आप तन्मयता से अतरग की गहराइयो से अपनी कविता किसी को सुनाइए अवश्य ही प्रभावित होगा। यह मेरा अपना किया हुआ सफल प्रयोग है।

कविता एक निरन्तर यात्रा है। यह यात्रा विचारो की है, समय की है, आगत, अनागत और वर्तमान की है।

जिज्ञासा *क्या कविता के सौन्दर्य के लिए गूढ साहित्यिक शब्दो को स्थान देना आवश्यक है?*

समाधान देखिए। भाषा और सम्प्रेषण एक प्रकार से दोनो एक-दूसरे के पूरक और

पर्याय है, किन्तु सम्प्रेषणीयता को मै रचना की पहली शर्त मानता हूँ। भाषा तो उसके अनुकूल होती है और इसका उद्देश्य है कि पाठको पर क्या प्रतिक्रिया हुई? सामान्य बोलचाल के शब्द भी काफी प्रभावी हो जाते है। भूधरदास, द्यानतराय, दौलतराम, सूर, रहीम, मीरा, रसखान कबीर आदि ने काव्य को अपने रोजमर्रा की जीवन की बोली मे लिखा। जिसे उनके साहित्य का गुण ही माना गया, दोष नही।

"पैसे को ईश्वर मान लेना, सारे ससार की समस्याओं की जड़ है। हमें इससे बचाव के लिए भारतीय सस्कृति की जो परम्परा है उससे जुडना होगा। महापुरुषों ने इस ससार में रहकर जिस रूप में जीवन जिया वह एक उदाहरण है हम स्वय को आधुनिक बना सकते है लेकिन नकल करके नहीं, नकल करने से उसमें भारतीयता नहीं रहेगी। इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी खिड़कियॉ बन्द रखें, हमे चारो ओर से प्रेरणा लेना चाहिए।"



जिज्ञासा *क्या इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने प्रिण्ट मीडिया पर आक्रमण किया है?*

समाधान पाठको के कम होने के पीछे इलैक्ट्रॉनिक मीडिया नही अपितु इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का दुरुपयोग कारण लगता है। जिस उपभोक्ता सस्कृति को वह जन्म दे रहा है उसमे मूल्यो को कोई स्थान नही हे और जहॉ मूल्य नही होगे वहॉ कविता बे-मायने हो जाएगी। कविता मूल्य आधारित "वैल्यू ओरिएण्टेड" होती है। कविता का सीधा रिश्ता पाठक से होता है यही उसकी शक्ति है। आज भी कविता का पाठक वर्ग है। अच्छा पाठक वर्ग है - साहित्य आज भी लोगो की धरोहर है। मैने अनेक युवाओ को देखा है अच्छे साहित्य की तलाश मे रहते है। गुप्तिधाम सागर के पुस्तकालय से लोग ऐसी पुस्तके पढने के लिए भी ले जाते है।

जिज्ञासा *सामाजिक धरातल पर कविता को आप किस रूप मे लेगे?*

समाधान कविता भौतिक एव बाह्य विकास की चक गौर म आत्मिक एव नैतिक विकास की वर्तिका है। निरन्तर प्रदीप्त, प्राकृतिक आपदाओ मे जब समस्त मानवीय व्यवस्थाए ठप्प हो जाती है, विद्युत प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है तब एक दीए के आलोक मे हम रास्ता तय करते है। कविता भावनाओ का दीप है हृदय का निर्मल दर्पण है उस

पर मनोविकारो की धूल नहीं होनी चाहिए। कविता मेरे लिए मानसिक अवकाश के लिए नहीं है बल्कि जीवन और उसके अनुभवो से कही गहरे तक जुड़ी है, यह सृजन मेरा स्वय से सवाद भी है और एक गहरी सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास भी कराता है क्योकि उसमे सामाजिक सरोकार है।

जिज्ञासा *कविता और साधु जीवन क्या कभी-कभी टकरा तो नही जाते?*

समाधान (मुस्कुराकर) कविता स्नेहिल होती है वह कहॉ टकराती है वह तो टकराए हुओ को भी जोडती है मिलाती है, जेनेश्वरी दीक्षा का अपना सविधान है वह हमारी प्राथमिकता है उसकी परिपालना करते है हम पूर्ण तन-मन से, इस बीच ही चिन्तन की धारा कब हाथ मे कलम थमा देती है हमे ज्ञात नही रहता। सन् 1997 मे हमने हिमालय की यात्रा की, वहॉ प्राकृतिक दृश्य इतने लुभावने थे कि जब तक हम दो-तीन दोहा अथवा कविता उन पर नही लिख लेते तो यात्रा की पूर्णता नही होती थी।

जिज्ञासा *गुरुदेव आप तो निरन्तर ही यात्रा मे रहते है तब तो कविता चलती* ही रहती होगी।

समाधान हॉ, हॉ, काफी कविताएँ लिखी गई है - **खुली किताब, बिम्ब-प्रतिबिम्ब, लौट आ नि स्वार्थ की निश्रा मे, शिवशाला, सजीवनी शतक, वीरोदय शतक, विद्याजलि** आदि।

जिज्ञासा *आप विश्व को क्या सदेश देना चाहेगे?*

समाधान पेसे को ईश्वर मान लना, सारे ससार की समस्याओ की जड है। हमे इससे बचाव के लिए भारतीय सस्कृति की जो परम्परा है उससे जुडना हागा। महापुरुषो ने इस ससार मे रहकर जिस रूप मे जीवन जिया वह एक उदाहरण है हम स्वय को आधुनिक बना सकते है लेकिन नकल करके नही, नकल करने से उसमे भारतीयता नही रहेगी। इसका अर्थ यह नही कि हम अपनी खिडकियॉ बन्द रखे, हमे चारो ओर से प्रेरणा लेना चाहिए।

जिज्ञासु प्रणाम गुरुवर सचमुच आपकी कविताएँ जनजीवन को जीवन्त प्राणवन्त कर रही है। हम समाधान पाकर धन्य हो गये।

धूम्रपान : हरता प्राण

“

आज भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता की तर्ज पर विभिन्न नशे के रूप में मीठा जहर खाने का अभ्यासी बनाया जा रहा है, जिससे देश की युवा पीढ़ी उन्मुक्त, गैर-जिम्मेदार, काहिल, रोगी व नशे के लिये धन जुटाने हेतु विभिन्न अपराध करने को विवश हो जाये। इसका खुला रूप आज सर्वत्र देखने को मिलता है कि भ्रष्टाचार, आतकवाद, अराजकता, लूट, अपहरण जैसे अपराध अपनी चरम सीमा पर है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

”

महावीर जयन्ती 1998 अम्बाला (हरियाणा)

समतामूलक चिन्तन, विद्या, विनय एव विवेक की साकार प्रतिमा, श्रद्धास्पद उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनि जी आप शाकाहार प्रवर्तक है और धूम्रपान एक भयकर व्यसन के रूप मे बढता जा रहा है। हम युवा पीढी को धूम्रपान से कैसे बचाए इस विषय पर उपाध्यायश्री से प्राप्त जानकारी के कुछ अश - **सतेन्द्र कुमार जैन,** दिल्ली

जिज्ञासा *क्या तम्बाकू के उत्पादो का बढता चलन जन-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नही है?*

समाधान तम्बाकू का ऐसा कोई भी उत्पाद नही है जो जानलेवा, महँगा और खर्चीला न हो। इन उत्पादो की एक और खासियत है कि ये जिसके एक बार मुँह लग गये वह इनका गुलाम होकर रह जाता है और अन्तिम श्वास तक इन्हे छोड नही पाता।

जिज्ञासा *जब सिगरेट-बीडी, गुटका व जर्दा आदि अनेक बीमारियो के घर है। तब भारत सरकार इन पर पूर्ण प्रतिबन्ध क्यो नही लगाती?*

समाधान सरकार के नीति-निर्धारको का तर्क है कि बीडी-सिगरेटो पर यदि पूर्ण

प्रतिबन्ध लगा दिया जाये तो उसके खजाने को भारी घाटा उठाना पडेगा। जबकि नशा विरोधी विभिन्न सामाजिक सस्थाओ का मत है कि यदि सरकार तम्बाकू के तमाम उत्पादो पर प्रतिबन्ध लगा दे तो उसे अस्पतालो पर जो खर्च करना पड रहा है, वह आधे से कम हो जायेगा किन्तु सरकार इस दिशा मे ऐसा कोई कदम नही उठायेगी। इसलिये देश के नागरिको को ही आगे आकर अपने-अपने हानि-लाभ पर विचार कर ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा कि युवा पीढी और भावी पीढियॉ इस व्यसन से मुक्त रह सके। ससार मे जितने भी धर्म है उन सभी ने धूम्रपान को त्यागने के लिए कहा है।

आज भारतीयो को पाश्चात्य सभ्यता के तर्ज पर विभिन्न नशे के रूप मे मीठा जहर खाने का अभ्यासी बनाया जा रहा है, जिससे देश की युवा पीढी उन्मुक्त, गैर-जिम्मेदार, काहिल, रोगी व नशे क लिये धन जुटाने विभिन्न अपराध करने को विवश हा जाये। इसका खुला रूप आज सर्वत्र देखने को मिलता है कि भ्रष्टाचार, आतकवाद, अराजकता, लूट, अपहरण जैसे अपराध अपनी चरम सीमा पर है। बीडी-सिगरेट से लेकर यह आदत अन्य नशीले पदार्थो भाग, चरस, अफीम, गाजा और न जाने कौन-कौन से नशे तक पहुँचती है।



“ यह भारत के लिये कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश के अर्थतन्त्र व लोक स्वास्थ्य के साथ खिलवाड की जा रही है। ''सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'' की वैधानिक चेतावनी जारी कर देने के बाद सरकार कैसे अपने को अपराध-मुक्त/निर्दोष अनुभव करती है, जबकि प्रत्येक वर्ष तम्बाकू द्वारा होने वाली बीमारियो के इलाज पर तम्बाकू उद्योग से होने वाली आय से करीब 8 सौ करोड़ रुपये अधिक खर्च करती है। ”

जिज्ञासा *धूम्रपान से क्या हानियाँ है?*

समाधान भारत मे तम्बाकू उत्पादन मे 73 लाख लोग कार्यरत हैं, जो वर्ष मे 55 करोड किलोग्राम तम्बाकू पैदा करते है। यदि तम्बाकू-गुटका जैसे जहरीले पदार्थो का प्रसार इस रफ्तार से बढता रहा तो देश को जन-स्वास्थ्य के रूप मे भारी हानि होगी। भारत मे प्रतिवर्ष 6 लाख लोग फेफडे के कैसर से मरते है। जिसमे से 90 प्रतिशत

सिगरेट या बीडी पीने वाले होते है। निकोटीन तम्बाकू मे पाये जाने वाले विषो मे सर्वाधिक भयकर और जानलेवा जहर हे। तम्बाकू मे 33 जहर होते है।

जिज्ञासा *33 जहर, क्या इनकी जानकारी सामान्य नागरिको के लिए मिल सकती है?*

समाधान क्यो नही, आप चाहे तो नोट कर ले। मेरे पास सूची उपलब्ध है। तम्बाकू मे - निकोटीन, प्रुसिक एसिड, कार्बनमोनाआक्साईड, पिराडीन बेसेस, पोलोनियम, एकरोलीन, फुर-फूरल, कोनिडीन, कार्बोलिक एसिड, अमोनिया, गजोलिन, पाईरीन, रेडियम, सखिया, कृमिनाशक जहरीला घोल, साइनोजान, मार्शगेस, कार्बनडाई-आक्साईड, कोलटार, मैथिलामीन सल्फरटेड, हाइड्रोजन, पारबालिन, कारीडीन, पायकोलिन, लुटीडीन, रुबीडीन, विरिडीन मोनोसाइनाइडस, साइनाइडस, पाइगल, फार्मिक एल्डीहाइड, हाइड्रासाइनिक एसिड व फनोल्स।

जिज्ञासा *ये जहर शरीर के लिए किस तरह घातक है?*

समाधान उपरोक्त सब पदार्थ शरीर को किसी-न-किसी रूप मे हानि पहुँचाते हे। इनमे से कुछ का उल्लेख कर रहा हूँ।

सिगरेट-बीडी या चिलम मे तम्बाकू के जलने से जो धुँआ उत्पन्न होता है, उसमे कार्बन मोनो आक्साईड काफी मात्रा मे होती है जो फेफडो मे फैल कर रक्त के लाल कणो (हीमोग्लोबिन) को नष्ट कर देती हे। इस गैस के असर से लकवा, दमा व हृदय रोग होते देखे गये हे

पिराडीन बेसेस ऑतो को खुश्क बनाने तथा कब्ज को जन्म देने वाला जहर है। इसके कुप्रभाव से पाचन तन्त्र अनियमित हो जाता है।

पोलोनियम यह तम्बाकू मे 80 प्रतिशत तक होता है। यह फेफडो के कोमल भागो को जला देता है। यह प्राय कैसर को जन्म देने लगता है।

फुर-फरल एक भयकर जहर है, जो विर्जीया सिगरेट के धुँए मे 2 औस विस्की जितनी मात्रा मे जहर होता हे उतना पाया जाता है। यह एल्कोहल की अपेक्षा अधिक विषैला होता है इससे शरीर मे जलन व कम्पन होती है। इसके कुप्रभाव से धूम्रपायी हृदय रोग तथा कैसर का शिकार हो जाते है।

एकरोलीन रक्त को दूषित करता है। इसके प्रभाव से स्नायु-कोष और ज्ञान

तन्तु विघटित हो जाते है, नतीजतन धूम्रपान करने वाले का स्वभाव चिडचिड़ा हो जाता है।

कार्बोलिक एसिड इससे अनिद्रा रोग व सिर दर्द आदि हो जाते है।

अमोनिया अमोनिया का असर जीभ पर खासतौर से होता है इससे जीभ खुरदरी, मोटी तथा खुश्क हो जाती है। यह स्वादाणुओ को नष्ट करता है।

रेडियम रेडियम से फेफडो का कैसर होता हे। सिगरेट मे प्रयुक्त तम्बाकू मे रेडियम अधिक होता है।

कोलटार यह दाहक और केसरोत्पादक विष है। यह मुख, कण्ठ और श्वास नली को दूषित करता है।

कार्बन-डाई-आक्साईड इससे कौन परिचित नही है। यह हृदय और फेफडो को विकृत कर उनकी स्वाभाविक गतिविधि मे बाधा डालती है।

धूम्रपान से होने वाली अन्य हानिया मे - यदि आप रोज 20 या 20 से अधिक सिगरेट (बीडियाँ) पीते है तो 40 वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते मोतियाबिन्द की शिकायत हो जाती है।

बीडी-सिगरेट दाँतो को खराब करते है। उनका स्वाभाविक रग नष्ट कर देते है तथा दाँत पीले पड जाते है। मुँह से बदबू आने लगती है।

जिज्ञासा *भारत मे कितने व्यक्ति धूम्रपान करते है?*

समाधान विश्व स्वास्थ्य सगठन (डब्लू एच ओ) के अनुसार वर्ष 2020 तक समृद्ध देशो मे धूम्रपायियो का प्रतिशत 28 से घटकर 15 रह जायेगा जबकि तीसरी दुनियाँ के देशो मे यह प्रतिशत 72 से बढकर 85 हो जायेगा। भारत तीसरी दुनियाँ मे परिगणित मुल्क है।

भारत मे 14 करोड 20 लाख से अधिक पुरुष तथा 3 करोड 70 लाख स्त्रियाँ सिगरेट पीती है। इसके अतिरिक्त 40 लाख बच्चे (15 वर्ष से कम उम्र के) तम्बाकू का नियमित सेवन करते है। भारत के सिगरेट उपभोक्ता प्रतिवर्ष लगभग 23 हजार करोड रुपयो की सिगरेट फूक डालते है।

वर्ष 1997-98 मे तीन बडी सिगरेट फर्मो ने 257 करोड रुपया विज्ञापन पर खर्च किया। तम्बाकू के कारण भारत मे हर साल 6 लाख से अधिक मौते होती है। कैसर

के 33 प्रतिशत रोगी धूम्रपान या तम्बाकू से सम्बन्धित है।

विश्व स्वास्थ्य सगठन ने विश्व बैक की एक रिपोर्ट के हवाले से बताया है कि यदि धूम्रपान की प्रवृत्ति इसी रफ्तार से जारी रही तो आगामी तीस सालो मे विकासशील देशो मे एड्स, टी बी और प्रसव सम्बन्धी जटिलताओ के कारण जितने लोगो की मृत्यु होती है, उससे कही अधिक मौते धूम्रपान के कारण होगी।

विश्व मे धूम्रपान करने वालो की सख्या एक अरब दस करोड से अधिक है। दुनियॉ मे हर साल छह हजार अरब सिगरेट पी जाती है तथा धूम्रपान जनित रोगो से 30 लाख से अधिक मौते हो जाती है।

जिज्ञासा *क्या यह सही नही है कि विदशो मे धूम्रपान को कम करने की दिशा मे कुछ कदम उठाये गये है। इस परिप्रेक्ष्य मे भारत की स्थिति क्या है?*

समाधान श्रीलका सरकार ने जनवरी 1999 से तम्बाकू/शराब कम्पनियो पर समाचार-पत्र और इलेक्ट्रानिक माध्यम से विज्ञापन करने पर प्रतिबन्ध लगाया है।

यह भारत के लिये कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश के अर्थतन्त्र व लोक स्वास्थ्य के साथ खिलवाड की जा रही है। "सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" की वैधानिक चेतावनी जारी कर देने के बाद सरकार कैसे अपने को अपराध-मुक्त/निर्दोष अनुभव करती है। जबकि प्रत्येक वर्ष तम्बाकू द्वारा होने वाली बीमारियो के इलाज पर तम्बाकू उद्योग से होने वाली आय से करीब 8 सौ करोड रुपये अधिक खर्च करती है। यद्यपि पश्चिम देशो मे धूम्रपान उत्तरोत्तर कम हो रहा है किन्तु भारत मे विशेषत युवा वर्ग मे यह लगातार बढ रहा है। **रूस का सात्सकी शहर पहला धूम्रपान मुक्त शहर है, जहाँ सार्वजनिक स्थलो और गली-कूचों तक में धूम्रपान वर्जित है।** आइसलैण्ड, इटली, सिगापुर तथा अन्य अनेक देशो मे धूम्रपान पर प्रतिबन्ध है। गत 15 वर्षो मे अमेरिका मे 3 करोड लोगो ने धूम्रपान छोडा है। अमेरिकी अब यह मानने लगे है कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए पूर्णतया घातक है। भारत मे सिगरेट कम्पनियो ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओ के माध्यम से धूम्रपान का जम कर प्रचार किया है। यह राष्ट्र के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड है।

जिज्ञासा *धूम्रपान के स्थान पर खालिस तम्बाकू का उपयोग निरन्तर बढ रहा है। इसके क्या परिणाम होगे?*

समाधान वर्ष 1994 मे 70 लाख टन खालिस तम्बाकू का प्रयोग किया गया है।

अब तम्बाकू के भक्षण का प्रयोग बढ रहा है। धूम्रपान की तुलना मे तम्बाकू का उपयोग अधिक जानलेवा है।

विश्व स्वास्थ्य सगठन ने कहा है कि धूम्रपान को अब एक "सार्वभौम" स्वास्थ्य सकट घोषित कर देना चाहिए। **धूम्रपान करने के लिए माचिस की जिन तीलियों का उत्पादन होता है, वे हर वर्ष 15 हजार एकड में खड़े वृक्षों को हजम कर जाती है।**

सरकार की सोच है कि उसे सिगरेट उद्योग प्रत्येक वर्ष 8 अरब रुपये कमा कर देता है किन्तु इस उद्योग के कारण कैसर के इलाज पर हर साल 30 अरब रुपये से अधिक खर्च करने पड़ते हैं। सिगार-सिगरेटो से अधिक खतरनाक होता है। कुछ लोग इसे पीना स्टेटस सिम्बल समझते है।

जिज्ञासा *धूम्रपान पर अकुश लगाने के लिए आपके सुझाव?*

समाधान एक सुझाव कुछ समय से देश मे जोर पकड रहा है कि यदि देश की समस्त शिक्षा-सस्थाओ के इर्द-गिर्द के 100 मीटर क्षेत्रफल मे धूम्रपान पर प्रतिबन्ध कडाई से लागू किया जाये तो देश का एक बहुत बडा भाग धूम्रपान से बच जायेगा।

जिज्ञासु नमस्कार गुरुदेव! आपके वैज्ञानिक उत्तरो को सुनकर मुझे बडा अच्छा लगा। इस विचार सगोष्ठी को यही विराम दे।

व्यसनों से मुक्ति: लोक जीवन का निर्मलीकरण

"

व्यसन है आदत का बन्धन व लत की दासता, बुरी लत व्यक्ति को गहरे अन्धकार में ले जाती है। व्यसनो से ग्रस्त व्यक्ति अपने परिवार, समाज, देश व सस्कृति के भाल पर कलक है। व्यसन चाहे नशे का हो, जुए का, चोरी का, व्यभिचार का या अन्य दूसरे व्यसन वे सब मानव जीवन में क्रोध, निराशा, दरिद्रता, तनाव और आशका उत्पन्न करते है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

व्यसन मुक्ति सम्मेलन, मार्च 1999, सोनीपत, हरियाणा

आज मानव चुनौती के उस दोराहे पर खडा है जहाँ उसे निर्णय करना है कि वह व्यसना की भौतिकता के सरपट चिकने रास्ते पर चले या अध्यात्म के कटकाकीर्ण मार्ग पर चलकर जीवन दीप प्रज्ज्वलित करे? एक विनाश का मार्ग है तो दूसरा विकास का मार्ग, निर्णय की इस गुत्थी को धार्मिक दृष्टि से उपाध्यायश्री गुप्तिसागर ने सुलझाया है उनका चिन्तन हमारे जीवन को शुभ और सुन्दर बना सकता है।

महायोगी उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी ऐसे मनीषी सन्त है, जो भारतीय जन-जीवन की गुणवत्ता के सरक्षण के लिए सतत प्रयत्नशील है। भारतीय सस्कृति के बदलते परिवेश और विभिन्न व्यसनो की ओर बढती युवा पीढी की सोच से प्रेरित होकर मैने व्यसन मुक्ति पर उपाध्यायश्री से चर्चा की। प्रस्तुत है वार्तालाप के प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन**, *नवभारत टाइम्स, रुडकी।*

जिज्ञासा *भारतीय जन-जीवन मे आज अनेक ऐसी बुराईयाँ/व्यसन प्रवेश कर चुके है जिससे उसका नैसर्गिक जीवन वचित होता जा रहा है। इस पर आपकी प्रतिक्रिया क्या है?*

समाधान वह समाज और राष्ट्र सौभाग्यशाली माना जाता है जिसका नागरिक/युवा

पीढी व्यसन मुक्त (बुरी आदतो से दूर) है। इस तथ्य की उपेक्षा नही की जा सकती कि आज भारतीय सस्कृति तथा मानवीय मूल्यो का बड़ा ह्रास व्यसनो के कारण हो रहा है। इस पर पाश्चात्य सस्कृति की भोगवादी सस्कृति ने और अधिक कोढ मे खाज का कार्य किया है। सम्प्रति नागरिक बुराईयो के शिकजो मे पूरी तरह जकडने जा रहे है। पुरातन युग मे जो एक नैतिक/सास्कृतिक सकोच था वह लुप्त होता जा रहा है इसलिए सास्कृतिक ढाचे (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की नींव ही खिसकती जा रही है।

व्यसन वह असत् प्रवृत्ति है जो मानव को निरन्तर उत्तम स जघन्य की ओर ले जाती है। जो मनुष्य को कल्याण मार्ग से भ्रष्ट कर कुपथ पर ले जाये वह व्यसन/लत/बुराई है यहा व्यसन से अर्थ है मानव जीवन की बुराईयॉ जो मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले जाती है। व्यसन है आदत का बन्धन व लत की दासता, बुरी लत व्यक्ति को गहरे अन्धकार मे ले जाती है। व्यसनो से ग्रस्त व्यक्ति अपने परिवार, समाज, देश व सस्कृति के भाल पर कलक है। व्यसन चाहे नशे का हो, जुए का, चोरी का, व्यभिचार का या अन्य दूसरे व्यसन, वे सब मानव जीवन मे क्रोध, निराशा, दरिद्रता, तनाव और आशका ही उत्पन्न करते है। **धर्म गुरुओं की अपनी सीमायें व मर्यादाए होती हैं, किन्तु जब पूरे देश का अस्तित्व व मानव सभ्यता ही दाव पर लग जाये तो वे चुप कैसे बैठ सकते है। जीवन को सुसस्कृत बनाना, विषयों में सुसुप्त चेतना को जागृत करना व दिशाबोध देना उनका कर्तव्य बनता है।**

जिज्ञासा *विश्व के और दूसरे देशो के साथ-साथ भारत मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के 52 वर्षो मे व्यसन बहुत तेजी से बढे है क्या आप इससे सहमत है?*

समाधान यह सच है। इन वर्षो मे समाज मे व्यक्ति बहुत उठे भी है तो बहुत गिरे भी है उठने का मानदण्ड भौतिकता रहा है और गिरने का पैमाना 'आध्यात्मिकता' रही है। बदलते मूल्यो ने समाज पर अपना तीव्रगामी प्रभाव छोडा है। सरकार आश्वस्त है कि वह प्रकाश की किरणो से लोक जीवन को समृद्ध एव समुन्नत कर रही है। सडके चमचमा रही है। राजमार्ग चमक रहे है। भौतिक लोक का बाह्य कलेवर चमक रहा है लेकिन अन्तर्जगत शून्य हो रहा है। स्पष्ट दिख रहा है कि मनुष्य के जीवन मे शनै शनै गहन अधकार प्रवेश करता जा रहा है। बढते हुए व्यसनो व बुरी आदतो के बढते चलन के कारण जीवन दिशा-शून्य हो रहा है और वह एक मशीन की तरह मशीन के सहारे चल रहा है, जिसमे तेल तो है लेकिन बाती नही है। सफलता का मापदण्ड केवल इसे ही तो नही माना जा सकता। यदि यही प्रगति का सूचक है तो फिर लूट, चोरी,

डकैती, अपहरण, बलात्कार, अराजकता, आतकवाद, हिसा, क्रूरता क्यो है? जिस तेजी से अपराध बढे है ओर मनुष्य की सवेदनशीलता, भाईचारा, परस्पर सहयोग की भावना का अवमूल्यन हुआ है इसने 52 वर्ष के विकास पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। लगता ह कि मनुष्य अपन माग स भटक गया है। यह भटकाव इतना द्वन्द्वपूण है कि परित कुछ दिखाई ही नही द रहा और यदि कुछ दिखाई दे रहा है तो जीवन लिप्सा का एक अज्ञात स्पर्द्धात्मक वातावरण, जिसमे मनुष्य स्वय नही जानता कि उसे कहाँ पहुँचना है।

जिज्ञासा *गुरुदेव! बाह्य वातावरण स भी तो प्रगति का आकलन होता है?*

समाधान ऊपर स लग रहा है कि जीवन भौतिक युग की उपलब्धियो से प्रकाशमान हा रहा है पर सच्चाइ यह है अन्तर मे वह आग की तरह जल रहा है। यह भभकता हुआ असन्तोष व अशान्ति की ज्वाला कही कल क विद्रोह की आशकाओ मे उद्वेलित तो नही है, इस पर हम विचार करना होगा तथा अपन जीवन से उन बुराईयो को उखाड फकना होगा जो हमारी सस्कृति, सभ्यता और भारत की अखण्डता के लिए चुनौती बन चुक है। आज कहीं भी परितोष नही है। समृद्धि बिखर रही है। जीवन के कुछ क्षेत्र अवश्य विकासमान हुए है किन्तु मनुष्य आत्म प्रकाश स वचित हा रहा है और यही इन वर्षो की विडम्बना ह जा हमारी पूरी प्रगति पर अट्टहास कर रही है।

जिज्ञासा *क्या जुआ शराब, शबाब, धूमपान, मासाहार परस्त्री प्रेम आदि व्यसनो के बाह्य आडम्बर से प्रभावित जीवन शेली सामाजिक जीवन को अकमण्यता और प्रदर्शनप्रियता जैसे दुर्गणो की ओर ले जा रही है?*

समाधान निश्चित रूप स, "हाथी के दिखाने क दातो को मनुष्य ने जीवन मे अभिव्यक्ति देना शुरू कर दिया है। इस भयानक नेतिक ह्रास ने नेतिकता क दिव्य, शाश्वत और सर्व सुलभ आदर्शो को गोण कर दिया हे। भारतीय आध्यात्मिक सस्कृति के नायक सदैव ही तप-त्याग, करुणा, क्षमा आदि उच्चादर्शो के साकार प्रतिरूप रहे है। किसी भी धर्म ने इन व्यसनो को मान्यता प्रदान नही की है, किन्तु आज के मानव को इसकी फिक्र नही हे। हमारा आध्यात्मिक आदर्श सदैव ही जन मानस का उपकारक रहा है।

जिज्ञासा *गुरुवर! क्या इस प्रवृत्ति से समाज मे वर्ग भेद नही बढेगा?*

समाधान भौतिक सुविधाओ की अनाप-शनाप दोड, उसके लिए किये गये अनैतिक कार्य और उसकी गोद मे पलने वाले व्यसनो ने मध्यम वर्ग के जीव (जो बहुसख्यक है)

को निराश कर दिया है तथा समाज मे भेदभाव की एक गहरी खाई पैदा कर दी है। जब वे पैसे वालो को बगलो से बी एम डब्ल्यू गाडी से निकल कर आलीशान पाच सितारा होटलो मे डिनर और लच करते देखते है तो उनका धैर्य चूक जाता है। उनकी नैतिकता छटपटाती है, बिलखती है और यहीं से नैतिक आदर्शो का पतन प्रारम्भ हो जाता है। प्रदर्शनप्रियता के इस युग ने हमारी पूरी प्रगति को तार-तार करके रख दिया है। आज का मनुष्य श्रम करने से कतराता है। वह अनैतिक तरीके अपनाकर रातो-रात सारी भौतिक सुविधाये और विश्व का सारा धन जुटा लेना चाहता है। जिस धर्म ने सदैव मन क दायरे को दरिया बनाया है उसे वह भूल चुका है, या भुलाने की कोशिश मे है, क्योकि आज पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव मे वह अपन प्राचीन आध्यात्मिक मूल्यो (जो जीवन के मुकुट मणि रूप हे) को अन्ध-विश्वास, रुढिवादिता और पाखण्ड आदि कहकर कोसते है। जिन्हे हम कोसते-नकारते है, उन्ही को जीवन मे अवकाश देना होगा और इसकी पहली शर्त होगी व्यमन मुक्त जीवन की शेली, तभी मानव सौम्य, चुस्त, सावधान और परिश्रमी हो पायेगा। इसी से वर्ग भेद भी समाप्त होगा।

जिज्ञासा *व्यक्ति व्यसनी कैसे हो जाता है?*

समाधान व्यसन आरम्भिक अवस्था मे रुई मे दबी-ढकी आग की तरह धीरे-धीरे सुलगते हे फिर समूच जीवन, शान्ति, सम्पदा के उपवन को दग्ध-विदग्ध कर देते है। व्यमन वह महामारी हे जिसके कारण व्यक्ति अपने गहने, बर्तन, कपडे, मकान यहाँ तक कि अपनी प्रिया का सुहाग चिह्न "मगल-सूत्र" तक बेच डालता है और हो जाता है दाने-दाने के लिए मोहताज।

जिज्ञासा *व्यसन कौन-कौन से है?*

समाधान जुआ, शराब, मासाहार, अभिसारिका (वेश्या), आखेट (शिकार), स्तेय (चोरी) तथा परस्त्री प्रम ये सप्त व्यसन है।

जिज्ञासा *जुआ से जन-जीवन मे कौन-कौन सी समस्याएँ पैदा हो सकती है?*

समाधान मनुष्य को जितना अधम जुआ बनाता है, उतना कोई दूसरा नही। आज ससार मे जुआ अनेक प्रकार का है। जुआ सप्त व्यमनो मे सम्पूर्ण अनर्थो का मुखिया है। यह त्याज्य है। जुआरी मे धर्नाजन की कोमल, मीठी-मीठी गुदगुदाहट करवटे बदलती रहती है। फलस्वरूप उससे लोभ उत्पन्न होता है। जिस क्रिया या खेल मे अक्ष-पाश आदि डालकर धन की हार-जीत होती है, वे सब जुए की श्रेणी मे आते है। जुआ -

आलस्य, मदान्धता एव निकम्मेपन का नशा है। जुए से न केवल आत्मा का पतन होता है, बल्कि राष्ट्र और समाज मे भयकर दुराचारो को प्रश्रय देने की सौ-सौ सम्भावनाओ की कतारे आ खडी होतीं है।

जिज्ञासा *वर्तमान मे जुआ के अन्तर्गत किन खेलो को लिया जा सकता है?*

समाधान वर्तमान मे "कौन बनेगा करोडपति, सवाल दस करोड का" आदि जो अन्तर्राष्ट्रिय स्केल के खेल है। ये भी एक प्रकार के जुए है। यद्यपि खिलाडी इनमे एक भी पैसा नही लगाता फिर 50 लाख तक जाकर भी करोडपति बनने के ख्वाब मे अन्तिम प्रश्न पर अन्तिम दम तक जूझता रहता है लेकिन पचास लाख की सवारी पर बैठी लक्ष्मीश्री उसका ज्ञान नेत्र आसानी म नही खुलने देती और प्रतियोगी गलत जवाब देकर तीन लाख बीस हजार तक गिर जाता है तब उसक चहरे के हाव-भाव देखिए। उसकी उदासी का अध्ययन कीजिए। वह यह कम सोच पाता है कुछ किये बिना तीन लाख बीस हजार मिला। वरन् यह अधिक सोचता हे मे 17 लाख हार गया। जरा-सी सावधानी बरतता (कमबख्त माइण्ड जरा-सा साथ द देता) ता करोडपति बन जाता। यही हार-जीत का मनोभाव इस खेल को जुएँ की श्रेणी मे लाकर खडा कर देता है। आजकल ता कैशिनो, लाटरी, लक्की ड्रा, मैच फिक्सिग न जाने कितने प्रकार के आधुनिक जुआ तैयार हा गए है।

जिज्ञासा *इसके साईड एफेक्ट विद्या और व्यापार पर क्या हो सकते है?*

समाधान इससे लोगो को अकर्मण्यता पैदा होती हे व व्यापार, धन्धे, नौकरी-पेशे मे कम, इधर अधिक ध्यान देने लगते है किन्तु यह किस्मत का चक्र सभी का साथ नही देता। सचमुच, जुआ निन्दा का स्थान है, दु खदायक है, नर्क मार्ग मे अग्रगामी है, इसीलिए मनुष्य को जुआ जैसे भयानक रोग से मुक्त ही रहना चाहिए।

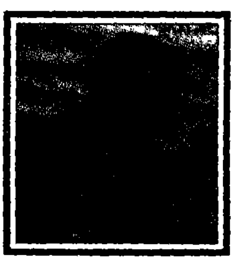
जिज्ञासा *शराब से शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक एव अध्यात्मिक दृष्टि से क्या नुकसान हो सकता है?*

समाधान मादक द्रव्यो मे चाय और तम्बाकू के बाद मदिरा का नाम आता है। यह एक ऐसा विष हे, जो मौत को समय से पूर्व आमन्त्रण देता है। शराब-अभिमान, भय, ग्लानि, हास्य, अरति, शोक, काम, क्रोधादिक न जाने कितने वैकारिक भावो को जन्म देता है। इसके निर्माण मे असख्य सूक्ष्म जीवो का घात होता है। शरीर और अध्यात्म दोनो मे ही मदिरा सेवन बाधक है। धार्मिक दृष्टि से तो मदिरापान निषिद्ध है ही।

सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक दृष्टि से भी इसके भारी नुकसान है। इससे स्मरण शक्ति कुण्ठित होती है। विवेक और बुद्धि शिथिल हो जाती है। मानसिक सतुलन बिगड जाता है। शराब पीने वाले केवल अपनी ही हानि नही करते उसके परिणाम उनके परिवार वालो को भी भुगतने पडते है। वर्तमान मे पाउच सस्कृति ने मादकता को इसी प्रकार बढावा दिया कि जब चाहे जहॉ चाहे वह अपनी लत को शान्त कर लेता है। कोल्ड ड्रिक्स, एल्कोहल युक्त होते हुए भी इस प्रकार विज्ञापित किए जाते है कि युवा पीढी इन्हे अपने जीवन का अभिन्न अग समझने लगी। परिणाम सामने है गुटखा-जर्दा आज प्रत्येक पॉकेट मे है। शराब नारी-शोषण, गृह-क्लेश और आर्थिक समस्याओ की जन्मदाता है। कुत्सित भावनाओ, शैतानियत, लूट, अपहरण, बलात्कार सब मद्यपान की देन है।

जिज्ञासा *जगत गुरु भारत मे शराब को राष्ट्रिय मान्यता मिलना क्या उचित है?*

समाधान नही, देश का दुर्भाग्य है आज शराब आधुनिकता और विलासिता तथा राजस्व वृद्धि का प्रमुख साधन बनकर आदर पा रही है। मद्यपान एक सामाजिक बुराई है। अत इसका परित्याग राष्ट्रिय मच पर आवश्यक है, क्योकि यह पतन की पहली पायदान है लेकिन किसी कवि ने कहा है न - ''**दारू जैसे जहर का बिकना आखिर बन्द कराए कौन? हर ठेके पर जब लिखा हो यह ठेका सरकारी है।**'' सरकार भी इस व्यसन का बढावा दे रही है।



"परस्त्री वह व्यसन है जो सस्कृति और समाज को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। कहना न होगा सातो व्यसनों का केन्द्र आज परस्त्री/परपुरुष सेवन व्यसन है। इससे सामाजिक अपयश व धन-वैभव की हानि तो होती ही है साथ-साथ घर-ससार उजड़ जाता है। इस प्रवृत्ति को दूर से ही नमस्कार कर लेना चाहिये अन्यथा आप स्वय ही अपने सर्वनाश के निमन्त्रक होंगे।"

जिज्ञासा *मासाहार मनुष्य के लिए अप्राकृतिक है ऐसा आपने प्रवचन मे कहा था, तो जानना चाहता हूँ इससे नुकसान क्या है?*

समाधान जो व्यक्ति अपने आहार मे विवेक या मर्यादा नही रखता वह खुद विकारो

जिज्ञासा *स्तेय के गुण-धर्मो के सन्दर्भ मे भी रोशनी डालने की कृपा करे?*

समाधान बिना स्वामी की अनुमति के किसी भी पदार्थ को चाहे वह सजीव हो या निर्जीव ग्रहण करना स्तेय है। 'चोरी, डकैती, लूट-खसोट, राहजनी, रिश्वतखोरी, करवचन, झूठे दस्तावेज, भू-अतिक्रमण, मिलावट आदि सभी इसके अन्तर्गत है। चोरी निर्दयता की पराकाष्ठा है। चोरी और स्तेय, है तो पर्यायवाची शब्द, किन्तु अभिव्यक्तियाँ अलग-अलग है। ताला तोडना, किसी वस्तु को उसके स्वामी की अनुमति के बिना लेना, लावारिस वस्तु का आहरण करना, चोरी के प्रयोग बतलाना, चोरी की वस्तु क्रय-विक्रय करना, उसका समर्थन करना, टेक्स, कस्टम आदि मे बचना सब चोरी के अन्तर्गत आते है। जबकि अस्तेय का व्यापक सन्दर्भ मे देखा जाता है। आवश्यक-अनावश्यक, सार्थक-निरर्थक सदर्भ मे से अनावश्यक और निरर्थक की छटनी अत्यन्त अनिवार्य होती है क्योकि जिस वस्तु की आवश्यकता नही उसे उसके स्वामी की आज्ञापूर्वक लेना भी स्तेय है। अस्तु, इस दुर्गुण से मुक्त होने का सतत प्रयास करना चाहिये।

जिज्ञासा *परस्त्री से क्या तात्पर्य है?*

समाधान जिसके साथ धर्मानुकूल विवाह सस्कार होता है, वह है स्वस्त्री। अन्य सभी स्त्रिया 'चाहे कुमारिया हो या विवाहिता' वर्जनीय है। पर-नारी और पर-पुरुष से अवैध शारीरिक सम्बन्ध जीवन को कलह मे बदलने के लिए प्रखर झझावात है।

जहा ये एड्स जेसी जानलेवा बीमारी को जन्म देती है वही सुख-शान्ति के उपवन मे आग लगा देती है। आज समाज मे सर्वाधिक और सर्वव्यापी व्यसन यही है। टी वी धारावाहिको ने समस्त मर्यादाओ का मटियामेट कर दिया। एक स्त्री का पति होते हुए भी दूसरे के प्रति आकर्षण। पिता कोई, माता कोई, माता कहीं, पिता कही चारो ओर यही सब हो रहा है। पति-पत्नी सम्बन्ध का समस्त विश्वास समर्पण धराशायी हो गया है फलत सन्तान भी कुपथगामी हो रही है। युवा पीढी के नैतिक पतन मे ऐसे परिवार ही जिम्मेदार है।

यह वह व्यसन है जो सस्कृति और समाज को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। कहना न होगा सातो व्यसनो का केन्द्र आज परस्त्री, परपुरुष सेवन व्यसन है। इससे सामाजिक मर्यादा व धन-वैभव की हानि तो होती ही है साथ-साथ घर-ससार उजड जाता है। इस प्रवृत्ति को दूर से ही नमस्कार कर लेना चाहिये अन्यथा आप स्वय ही अपने सर्वनाश के निमन्त्रक होगे।

का गुलाम हो जाता है। मासाहार को सभी सभ्य समाज, धर्मो ने त्याज्य कहा है। मासाहार अप्राकृतिक आहार है तथा अनेक भयानक रोगो का जनक है। मास को प्राप्त करने के लिए नित्य प्रति करोडो मूक जीवो का वडी बर्बरतापूर्वक वध किया जाता है। जिसके कारण मासाहार करने वाले व्यक्तियो मे करुणा, सवेदनशीलता, ममता, दया आदि गुणो का अभाव हो जाता है। मासाहार इन्द्रियो को उछृखल करने वाला एक उत्तेजक पदार्थ है, इससे वासना और उत्तेजना बढती है, कोमल सद्भावनाओ का विनाश होता है। क्रोध और मानसिक तनाव बढता है। इतना ही नही, प्रदूषण एव असतुलन भी मासाहार की देन है। याद रखिए! भारतीय संस्कृति सदैव से ही अहिसक शैली मे आस्था रखती आई है। व्यसन मुक्त जीवन पथ पर एक कदम और आगे बढाते हुए मासाहार का परित्याग करना चाहिये।

जिज्ञासा *अभिसारिका के मायने क्या है?*

समाधान अभिसारिका अर्थात् वेश्या। इस दुर्व्यसन मे ग्रस्त मानव के पैर तारुण्य, जवानी, यौवन मे तग गलियो की ओर स्वत ही बढ जाते है। मनुष्य का चचल मन काम वेग शान्त करने के लिए उन्हे देह व्यापार करने वाली वेश्याओ तक पहुँचा देता है। इससे धीमे-धीमे मनुष्य का धन, वैभव, गृह-शान्ति, सत्य, सयम, सदाचार, सौन्दर्य, लज्जा, सकोच, मर्यादा व चारित्र आदि तमाम सम्पदाओ का विनाश हो जाता है। ये वेश्याये धन-लोभ के कारण अपने पास आये आगुतको का सब-धन, शारीरिक बल निचोड कर उन्हे वैसे ही छोड देती है जैसे पुण्यक्षीण होने पर लक्ष्मी पुरुष को। वेश्या का सग साक्षात विष से भी अधिक भयानक है। वेश्या सग मे बचने के लिए कभी उस राह मे कदम ही नही देना चाहिए।

जिज्ञासा *शिकार के क्या दुष्परिणाम हो सकते है?*

समाधान जहाँ शिकार है वहाँ अनुकम्पा स्वय अनुपस्थित हो जाती है। जिस प्रकार आपको अपना जीवन प्रिय है, उसी प्रकार प्रकृति के प्रत्येक प्राणी को अपने प्राण प्रिय है। निर्दोष, मूक पशु-पक्षियो को मारना सर्वथा अनुचित निन्दनीय कर्म है। बढता मासाहार और श्रृगार प्रसाधन चमडे के वस्त्र एव अन्य उपभोग सामग्री इन पशुओ की ही तो हत्या का घृणित रूप है। इस बर्बरतापूर्ण शिकार कर्म से बचे तथा इसका जमकर विरोध करे तभी मानव करुणा और कृपा से निहाल हो सकेगा। ज्ञात रहे! शिकारी पशु-पक्षियो की दुर्लभ जाति समाप्त कर डालते है - जो पर्यावरण एव मानव जाति के लिए खतरनाक है।

शाकाहार :
मानव सभ्यता की सुबह

सार्थक जीवन के लिए शाकाहार एक प्रामाणिक हकीकत है। शरीर व मन का नियन्त्रक तत्त्व तो वास्तव में आहार ही है। इसी आहार के परिणामस्वरूप जीवन का समग्र विकास होता है। शाकाहार मैत्री-मूलक रचनात्मक जीवन दर्शन है। शाकाहार सिर्फ आहार नहीं स्वय मे एक अद्भुत चिकित्सा शास्त्र भी है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

शीतयोग, 2002 बेक एन्क्लेव, दिल्ली

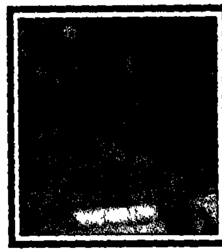
आज इन्सान स्वाद लोलुप हो गया है जिह्वा के लिए वह क्रूर, हिसक और खुदगर्ज बनता जा रहा है। अपने सुख और शोक के खातिर उसने करुणा और सवेदना का स्रोत शुष्क कर दिया है। अहिसा एव करुणा को आदमी ने अपने दुष्कृत्यो से बे-आबरू कर दिया है। श्रद्धेय गुप्तिसागर जी ने स्पष्ट कहा है मासाहार का प्रचलन हमारे सामने वीभत्स चुनोती है इससे मानव और मानवीय मूल्य दोनो का अस्तित्व सकट मे है। हमे समय रहते इसका सामना करना होगा अन्यथा भविष्य मे कोई भी परिवर्तन असम्भव ही होगा। प्रस्तुत है शाकाहार प्रवर्तक उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज से वार्त्ता के प्रमुख अश - **डॉ धनजय गुण्डे,** *कोल्हापुर (महाराष्ट्र)*

जिज्ञासा *शाकाहार किसे कहते है। क्या साग-भाजी दाले व फल आदि खाने को ही शाकाहार कहते है?*

समाधान मानव ससार की अनुपम कृति है। परोपकार, करुणा, प्रेम, अहिसा आदि मानवता के सवश्रेष्ठ गुण है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। भोजन का उद्देश्य मात्र उदर पूर्ति करना ही नही है, अपितु मनुष्य का मानसिक व चारित्रिक विकास करना भी है। आहार का सम्बन्ध हमारे आचार-विचार तथा व्यवहार से भी है। हमे ऐसा भोजन करना चाहिये जो स्नेह, प्रेम, दया, शान्ति आदि गुणो को उत्पन्न करे। मासाहार करने

वाले व्यक्ति मे उक्त मानवीय सद्गुणो का अभाव रहता है। इस पर शाकाहार भोजन पौष्टिक, सस्ता व रोगो से दूर रखने वाला होता है केवल भोजन मे शाक-भाजी, फल व दाले खाना मात्र ही शाकाहार नही कहलाता अपितु शाकाहार, मानवीय सवेदना पर आधारित ठोस जीवन शैली है। सार्थक जीवन के लिए शाकाहार एक प्रामाणिक हकीकत है। शरीर व मन का नियन्त्रक तत्त्व तो वास्तव मे आहार ही है। इसी आहार के परिणामस्वरूप जीवन का समग्र विकास होता है। शाकाहार मैत्री-मूलक रचनात्मक जीवन दर्शन है। शाकाहार सिर्फ आहार नही स्वय मे एक अद्भुत चिकित्सा शास्त्र भी है।

मानव सभ्यता के मगलमय भविष्य के लिये शाकाहार गौरव यात्रा की शान्त, मौन, अहिसक क्रान्ति में एक सक्रिय, तेजस्वी, धारदार भागीदार बनें। आहार की सोच मे परिवर्तन तो अवश्यभावी है किन्तु प्रश्न यह है कि आप इसमें कितना योगदान देंगे? आपके सहयोग से ही इस अहिसक क्रान्ति की लपटें लोक हृदय मे धधकेगीं और एक रचनात्मक भूचाल का आकार ग्रहण करेगीं।



जिज्ञासा *उपाध्यायश्री इसे थोडा और स्पष्ट कीजिएगा कि आहार के साथ विकारो, व्यसनो ओर इन्द्रिय सयम का क्या रिश्ता है?*

समाधान हर एक नागरिक पुरुष हो या स्त्री अपने मन मे सोचे कि हमे दूसरे के दु ख दूर करके जीना है या दूसरो का दु ख दूर करने के लिए जीना हे तो इस चिन्तन मे जीवन की सारी क्रान्ति आ जाती हे। भोजन के सन्दर्भ मे किया गया मनोविश्लेषण इस बात का साक्षी हे कि झूठ, चोरी व समस्त व्यसनो का मुख्य कारण जिह्वा का स्वाद और उस पर नियन्त्रण न होना है। जिह्वा पर यदि नियन्त्रण हो जाये तो बुराइयो का रास्ता ही बन्द हो जाये। अति आहार और सरस आहार को शास्त्रकारो ने वासना का भी उद्दीपक माना है। आहार से रस, रस से रुधिर, रुधिर से मास, मास से मज्जा, मज्जा से शुक्र उपचय होता है। शुक्र की अधिकता वायु को बढाती है। वायु से जनेन्द्रिय मे स्तब्धता पेदा होती है। वासना के भाव जागते है। इससे यह ज्ञात होता है कि इन्द्रिय और आहार का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। अधिक रस सेवन करने से उन्माद, उन्माद से कामुकता जागती है। आहार के साथ इन्द्रिय सयम का गहरा नाता है। प्रश्न सारा आसक्ति का है। आसक्ति एक ऐसा आवर्त है जिसके कारण प्राणी विषयान्ध बनता

है। इन्द्रियो के प्रति आकर्षण जागता है। आधुनिक सभ्यता और शिष्टता के साथ भोजन की मीमासा की जाय तो आश्चर्य होगा यह जानकर कि आज किस कदर आहार के प्रति अविवेक का आचरण हो रहा है। आहार के प्रति सयम का न जागना इन्द्रियो की आसक्ति का एक परिणाम है। यह आसक्ति अनैतिकता के रास्ते खोलकर मनुष्य का भटकाव देती है। आहार की शुद्धि बिना हमारा शरीर, विचार, चिन्तन, भाव सभी बिखर जायेगे। हम अपने आहार के प्रति सदा ही सचेत रहना चाहिये और इतना ही नही अमल की जिन्दगी जीना चाहिए। अन्धेरे को कोसने के बजाए एक मोमबत्ती जलाना कही बेहतर है। इन्द्रियो को उत्तेजित करने वाला तामसिक आहार कदापि न करे।

जिज्ञासा *शाकाहार के लाभ बताये?*

समाधान विश्व स्तर पर मासाहार से जुडे मास माफिया ने व्यापक प्रचार कर यह भ्रॉति फैलायी है कि मासाहारी लोग अधिक शक्तिशाली है। आज तो पाश्चात्य देश भी यह स्वीकार करने लगे है कि शाकाहार भोजन ही सर्वश्रेष्ठ भोजन है किन्तु आज भारतीयो को जीवन का हर पहलू पश्चिम के चश्मे से देखने की आदत हो चुकी है। आप पश्चिम के अनुकरण को स्टेटस सिम्बल के रूप मे देखने लगे है। अनेक शोधकर्त्ताओ ने जापान मे यह सिद्ध किया है कि शाकाहारी अधिक शक्तिशाली, परिश्रमी अधिक भार उठाने की क्षमता वाले, शान्त स्वभावी, खुशमिजाज, स्वस्थ, निरोगी व दीर्घजीवी होते है। ब्रिटेन मे 10 लाख से भी अधिक लोग शाकाहारी है। विदेशो मे जगह-जगह शाकाहार क्लब खुल रहे है जबकि विश्व को अहिंसा का सदेश देने वाले भारत मे एक अनुमानानुसार 65 प्रतिशत लोग मासाहारी है। आर्थिक दृष्टि से भी शाकाहार सस्ता आहार है।

ब्रिटेन मे राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा द्वारा कराए गये सर्वेक्षण मे पाया गया कि एक औसत शाकाहारी की स्वास्थ्य सेवाओ पर जीवन भर मे सरकार को जो राशि खर्च करना पडती है वह 12 हजार 340 पोड है (सर्वेक्षण के समय) जबकि मासाहारी नागरिको के औसत स्वास्थ्य पर इसकी तुलना मे काफी राशि खर्च करना पडती है, जो कि लगभग पाच गुनी है। यह भी पाया गया कि शाकाहारी लोग मासाहारी की तुलना मे सिर्फ 22 प्रतिशत समय ही अस्पतालो मे बिताते है।

जर्मनी मे स्वास्थ्य अधिकारियो ने 1904 प्रौढ व्यक्तियो के स्वास्थ्य की 11 साल तक सतत निगरानी की तथा पाया कि जो लोग मास मछली नही खाते वे अधिक सेहतमन्द है। यह बात भी देखने मे आयी कि जो अधिक मास खाते है, वे कैसर के रोग को स्वय बुलाते है हैडलवर्ग के कैसर अस्पताल मे जॉच से पाया गया कि मास

खाने से गैलिक एसिड ज्यादा मात्रा मे बनता है। इससे दिल की बीमारी बढने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। शाकाहारी प्राय इस बीमारी से अछूते रहते है।

ब्रिटेन के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ बी मार्गेटस ने वर्ल्ड काग्रेस आन क्लिनिकल न्यूट्रशियन मे कहा कि जो लोग शाकाहारी होते है, वे किसी भी उच्च रक्तचाप के खतरो को अपेक्षाकृत कम आमन्त्रित करते है। डॉक्टरो ने उच्च रक्तचाप के मरीजो को छह सप्ताह तक शाकाहारी भोजन दिया तो रक्तचाप नियन्त्रण मे रहा तथा मासाहारी भोजन करते ही रक्तचाप बढ गया।

हेल्थ एजूकेशन काउसिल के अनुसार विषाक्त भोजन से होने वाली 90 प्रतिशत मृत्यु का कारण मासाहार हे। अमेरिका के हृदय रोग विशषज्ञ डॉ विलियम सी गबर्ट का मत हे कि अमेरिका मे मासाहारी लोगो मे दिल के मरीज अधिक है।

जर्मनी के प्राफेसर एग्नर बर्ग के अनुसार अण्डे से 51 83 प्रतिशत कफ पेदा होता हे। वह शरीर के पोषक तत्त्वो को असतुलित कर देता है।

जिज्ञासा *धार्मिक दृष्टिकोण से शाकाहर को किस प्रकार समझा जा सकता है?*

समाधान यदि धामिक दृष्टिकोण से शाकाहार व्यवस्था की मीमासा करे तो शाकाहार से अच्छा आहार हो ही नही सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे कहा हे कि मासाहार से मनुष्य का स्वभाव हिसक हो जाता है। मासाहार को बिल्कुल त्याज्य, दाषपूर्ण, आयुक्षीण करन वाला तथा पाप योनियो मे ले जाने वाला बताया गया है।

इस्लाम के सभी सूफी सतो ने भी नेक जीवन जीने, दया, गरीबी व सादा भोजन की राय दी है। इसी प्रकार ईसामसीह ने कहा है तुम जीव हत्या नही करोगे। मद्रास से 13 कि मी दूर व्यस्त राज्यमार्ग के साथ बसे चन्द्रप्रभ गॉव मे सभी पूर्ण शाकाहारी हे।

इजराईल के असरिम गॉव मे अब से 48 वर्ष पूर्व शाकाहार का प्रयोग साप्रदायिक सद्भाव के लिये किया गया। इससे वहॉ 200 मुस्लिम, यहूदी व इसाई परिवार आपसी भेदभाव मिटाकर अभिन्न मित्र बन गये थे। तब यह सिद्ध हुआ कि भोजन भी दुश्मनी को दोस्ती मे बदल सकता हे।

शाकाहार बुराई पर भलाई, बदी पर नेकी, दु ख पर आनन्द, क्रूरता पर करुणा, शोषण पर पोषण और अज्ञान पर ज्ञान की विजय का जीवन्त प्रतीक है। वह जीवन की गुणवत्ता को उत्तरोत्तर सुदृढ करने वाली जीवन शैली है, जो प्राणिमात्र के व्यक्तित्व का सम्मान करती है और शरीर को रोगो से मुक्त रखने की सशक्त पहल करती है।

जिज्ञासा *गुरुदेव! कहते है पाषाण युग मे मनुष्य पहले जगलो मे पशुओ के साथ रहता था तो क्या मूलत मनुष्य की शारीरिक सरचना और प्रकृति मे कही पाशविकता*

तो नही है?

समाधान मनुष्य की ऑते शाकाहार के लिये है। उनकी बनावट मनुष्य के बौद्धिक और भौतिक सरचना के अनुरूप हे। ये कोलेस्टेरोल ओर वसा (फैट) को नियन्त्रित करने में असमर्थ है। अधिक लम्बाई के कारण ऑतो को पाच्य पदार्थ को आगे बढान के लिये तन्तुओ/रेशो/फाइबर्स की आवश्कता पडती है। शाकाहार रेशायुक्त आहार है और मनुष्य की ऑतो के लिय पूरी तरह अनुकूल है।

प्रकृति ने दूध की शर्करा (लेकटेव) को पचाने क लिए शाकाहारियो के थूक मे "टाइलिन" नामक पदार्थ की व्यवस्था की हे। यह विशिष्ट पदाथ मासाहारी जीव-जन्तुआ के थूक म बिल्कुल नही मिलता।

इसक अतिरिक्त शाकाहार भोजन कोलेस्टराल का कम करता है। मल-मूत्र (यूरिक एसिड) घटाता है, पाचन तन्त्र को विकार-मुक्त करता ह, मधुमह (डॉयबिटीज) नही हान देता, विष मुक्त होता है, इसके उत्पादन मे कम ऊर्जा लगती हे तथा मनुष्य का शरीर तन्त्र इसके लिए सर्वथा उपयुक्त/समर्थ है।

ब्रिटेन मे शाकाहार अब एक महान सामाजिक क्रान्ति क रूप मे उभर कर सामन आ गया है। सिर्फ लन्दन म एक सो स अधिक शाकाहारी रेस्तरा हे तथा ब्रिटेन के हर स्कूल मे शाकाहार भोजन को प्रवेश मिल गया हे। ब्रिटन म 35 लाख और अमेरिका म 1 करोड 24 लाख शाकाहारी है।

जिज्ञासा *मासाहार से अन्य कौन-सी कठिनाईया मामने आ सकती है?*

समाधान मासाहार के कारण निकट भविष्य मे पानी क दुष्काल की स्थिति आ जायेगी। एक पौड मास के उत्पादन मे शाकाहार की अपेक्षा कई गुना पानी खर्च होता हे। शाकाहार के उत्पादन मे जितनी ऊर्जा खर्च होती उसस कई गुना ऊर्जा मिल जाती है। शाकाहार मे विटामिन 'सी' है जो ऑटोमोबाइल्स के इस जमाने मे कार्बन-मोनोक्साईड जैसे खतरनाक जहर के लिए एक सुदृढ कवच है। मास की बुनियाद पर खडे आहार से हड्डियो की सघनता घटती हे और वे कमजोर और कच्ची पड जाती है। मास खाने से लगभग 160 बीमारियॉ प्रविष्ट होती है।

जो लाग अमेरिका अर्थतन्त्र की तनिक भी जानकारी रखते हे वे साफ-साफ जानते है कि देश मे मासाहार बढता है तो हमारा आर्थिक मानचित्र कितना बदशक्ल हो जायेगा। नैतिक ढाचा चिन्दा-चिन्दा हो जायेगा। भारत मे मासाहार बहुत तेजी से बढ रहा है। मासाहार की फितरत अपने साथ अनेक बुराइयो/व्यसनो को साथ लेकर आती है। विश्व मे मास-अण्डे की व्यापारिक लाबी/मासाहार माफिया अरबो डालर/पौड

अपने अस्तित्व के सघर्ष के लिए प्रचार पर खर्च कर रही है जिससे मासाहार व अण्डे को शाकाहार की तुलना मे श्रेष्ठ सिद्ध कर सके।

मासाहार से लकवा (पक्षाघात), गुर्दे मे पथरी, प्रोस्टेट, कैसर, अल्सर, डॉयबीटीज, हृदयरोग आदि न जाने कितनी बीमारी उत्पन्न होतीं है।

यह आरोप निराधार है कि शाकाहार के कारण खाद्य-सकट उत्पन्न हो सकता है अकेले अमेरिका मे पशु जितना सोयाबीन व अन्न खाते है। उससे एक अरब तीन करोड व्यक्तियो का पेट भरा जा सकता है।

100 ग्राम मासाहार से अधिकतम 194 कैलोरियॉ प्राप्त की जा सकती है। जबकि 100 ग्राम गेहूँ के आटे से 353, तुअर की दाल से 353, सोयाबीन से 432, मूगफली से 564 कैलोरियॉ सहज ही मिल सकती है। एक वयस्क पुरुष को 2400 तथा स्त्री को 2000 कैलोरियो की प्रतिदिन आवश्यकता होती है।

एक बाल कन्या जितना अधिक मास भक्षण करेगी वह उतनी ही जल्दी रजस्वला होगी। जो लोग शाकाहारी होते है उन्हे 30 प्रतिशत कम इन्सुलिन की आवश्यकता होती है तथा उनका ब्लड शुगर लेवल अधिक स्थिर रहता है। मासाहारी स्त्रियो को छाती के कैसर की अधिक शिकायत होती है।

जिज्ञासा *क्या शाकाहारी व्यक्तियो का नाम विश्वविख्यात विभूतियो मे भी दर्ज हुआ है?*

समाधान समस्त ऋषि-मुनि, अवतार शाकाहारी थे। यह तो है धार्मिक दृष्टिकोण। अब देखिए विश्व विख्यात विभूतियॉ जो जाने माने वैज्ञानिक, गणितज्ञ, दार्शनिक, महाकवि, कलाकार, साहित्यकार, चित्रकार व शिल्पी रहे है वे सभी शाकाहारी थे। चार्ल्स डार्विन, अल्टर्ब आईस्टाईन, लियो टाल्सटाय, एच जी वेल्स, जार्ज बर्नार्डशा, महात्मा गॉधी, सर आयजक न्यूटन, प्लेटो, पायथागोरस, रविन्द्रनाथ ठाकुर, अरस्तू आदि शाकाहारी थे।

जिज्ञासा *क्या मासाहार सात्विक आहार नही है?*

समाधान मासाहार सात्विक आहार नही है। आध्यात्म और योग की दृष्टि से वह मनुष्य की प्रगति मे बाधक है।

जिज्ञासा *क्या शाकाहारी लोग अच्छे पहलवान व अच्छे एथलीट हो सकते है?*

समाधान इसमे तो कोई सदेह नहीं। भारत के प्रसिद्ध पहलवानो मे अनेक शाकाहारी है। देव समाज से सम्बन्धित टेलीग्राफ विभाग मे कार्यरत श्री चौहान पूर्ण शाकाहारी है, उन्होने लम्बी दौड मे विश्व प्रतियोगिता मे सम्मान अर्जित किया। मासाहारी/तामसिक भोजन करने वाले सयम/सतुलन नही रख पाते।

शाकाहारी पहलवान ग्रीक मेरेथीन (लम्बी दोड) धावक, साइकिल धावक, भारोत्तोलक व तैराकी आदि मे अनेक शाकाहारियो न नाम कमाया है।

जिज्ञासा *प्रोटीन, वसा व कैलोरीज शाकाहारी भोजन से कैसे प्राप्त की जा सकती है?*

समाधान अनाज 400 ग्राम (प्रोटीन 48 4, फैट 6 9 व कैलोरीज 1384), दाले 60 ग्राम (प्रोटीन 14 6, फैट 7 3 व कैलोरीज 209), हरी पत्तेदार सब्जी 100 ग्राम (प्रोटीन 2, फैट 0 7 व कैलोरीज 26) अन्य सब्जियाँ 75 ग्राम। इसी प्रकार फल 50 ग्राम, दूध 250 ग्राम, घी-तेल आदि 25 ग्राम व चीनी 30 ग्राम इन सबसे कुल 2250 कैलोरीज, 76 5 ग्राम प्रोटीन व 50 3 ग्राम फैट मिल जाता है।

आधुनिकता की दौड मे अपनी सस्कृति, आचार-विचार को हमने ताक पर रख दिया है। शाकाहार पर शोधकर्त्ताओ ने यह सिद्ध कर दिया है कि शाकाहार भोजन मे पर्याप्त मात्रा मे प्रोटीन, खनिज, कैलोरीज, विटामिन व अन्य पोषक तत्त्व भी मोजूद है। मास का तो अपना कोइ स्वाद भी नही होता। एवरेस्ट विजेता तेनसिग शेरपाओ की शान्ति का रहस्य उनका शाकाहारी होना ही था।

इस्टीटयूट ऑफ न्यूटरीशन, हैदराबाद द्वारा अनेक तालिकाये 'मासाहार बनाम शाकाहार' अब सहज उपलब्ध है, जो दोनो भोजन व्यवस्थाओ की तुलनात्मक विश्लेषण कर निर्विवाद रूप से यह सिद्ध करती है कि शाकाहार भोजन मासाहार भोजन की अपेक्षा किसी भी रूप मे कमजोर नही। इन तालिकाओ से यह भी पता चलता है कि मास व अण्डो से शाकाहारी भोजन सस्ता व सहज रूप से उपलब्ध है। दूसरा पक्ष है जीव हिसा। मूक पशुओ का बेरहमी से कत्ल कर मास प्राप्त होता है, जिससे पूरा पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है और मानव के स्वभाव मे हिसा, बलात्कार, आतकवाद, क्रूरता आदि दोष उत्पन्न हो जाते है जिससे वातावरण मे नैसर्गिक शान्ति की जगह भयावह नीरसता छा जाती है। निरामिष आहार हमारे मानसिक तनाव को दूर करने मे उपयोगी है। याद रखिए! शान्ति की व्यूह रचना भी हमारे मस्तिष्क से ही होती है।

जैन दर्शन मे शाकाहार व सूर्यास्त से पूर्व भोजन की व्यवस्था है। इतना ही नही, पानी छान कर पीने की करुणामयी मीठी हिदायत है। प्राणिमात्र के कल्याण की प्रशस्त कामनाएँ "जिओ और जीने दो" और "अहिसा परमोधर्म" के अमर सूत्र भी शाकाहार की महत्ता निनादित करते है। उक्त सारे तथ्य 'कोरा धार्मिक ढकोसला' नही अपितु तर्कसगत, प्रासगिक व वैज्ञानिक तथ्यो पर आधारित है इनके बिना विश्व मे शान्ति, सौहार्द, सह-अस्तित्व, परस्पर सद्भावना भाईचारा कोरी कल्पना है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री! आप शाकाहार प्रवर्तक के रूप मे जाने व पहचाने जाते है,*

इस दिशा मे आपकी उपलब्धियाँ क्या है?

समाधान मै शाकाहार को मानव कल्याण का एक आवश्यक अग मानता हूँ इसलिये मै इस दिशा मे जीवन पर्यत समर्पित हूँ। शाकाहार रथ प्रवर्तन, शाकाहार दिशाबोध, शाकाहार गौरव यात्रा आदि अनेक माध्यमो से शाकाहार का प्रचार किया है।

जिज्ञासा *क्या इसके कोई सार्थक परिणाम मिले?*

समाधान अभी पिछले वर्ष 1999 मे ही दिसम्बर मास मे अपने सोनीपत (हरियाणा) प्रवास मे मैने हायर सैकेण्डरी तक के अनेक शिक्षा सस्थाओ मे शाकाहार पर प्रवचन किय। विभिन्न स्कूलो के लगभग 20 हजार छात्रो ने मासाहार, मद्यपान निषेध, नशा आदि न करने का स्वेच्छा से सकल्प लिया। मेरी प्रेरणा पर इन स्कूलो के प्रबन्ध-तन्त्र व प्रधानाचार्यो ने उन्हे नैतिक चरित्र के लिए 10 नवम्बर का ग्रेस देने की भी घोषण की, जिससे इन छात्रो को भारी प्रोत्साहन मिला। ग्राम फाजलपुर (सोनीपत) मे मेरी प्रेरणा से स्थापित भगवान महावीर इजीनियरिंग कॉलेज मे शाकाहार गौरव यात्रा का समापन हुआ तथा अन्य योजनाओ पर शाकाहार सकल्प को स्थाई रूप देने के लिए विचार-विमर्श हुआ। मुजफ्फरनगर, खतौली, रुडकी, हरिद्वार व देवबन्द आदि मे भी शाकाहार गौरव यात्रा का आयोजन हुआ, जिसमे शाकाहार पद्धति पर देश के प्रख्यात शाकाहारविद डॉ नेमीचन्द जैन, डॉ एम एम बजाज, डॉ डी सी जैन, डॉ अनिल भसाली आदि के व्याख्यान कराये गये।

जिज्ञासा *मानव समाज के लिये शाकाहार पर आपका सदेश?*

समाधान मानव सभ्यता के मगलमय भविष्य के लिये शाकाहार गौरव यात्रा की शान्त, मौन, अहिसक क्रान्ति मे एक सक्रिय, तेजस्वी, धारदार भागीदार बने। आहार की सोच मे परिवर्तन तो अवश्यभावी है - किन्तु प्रश्न यह है कि आप इसमे कितना योगदान देगे? आपके सहयोग से ही इस अहिसक क्रान्ति की लपटे लोक हृदय मे धधकेगी और एक रचनात्मक भूचाल का आकार ग्रहण करेगी। आप यह जान ले कि शाकाहार सिर्फ आहार नही है प्रत्युत वह एक सुविकसित जीवन पद्धति है। यह एक ऐसी परिपूर्ण जीवन शेली है, जो सदियो के अनुभव के बाद अस्तित्त्व मे आयी है। इस जीवन शैली के नियन्त्रक तत्त्वो मे अहिसा, करुणा, मानवीयता, सह-अस्तित्व, प्रकृति से मैत्री, स्वास्थ्य/स्वच्छता और स्वाधीनता सम्मिलित हे।

जिज्ञासु *जय हो गुरुदेव! आपसे शाकाहार के बावद अपेक्षा से अधिक जानिकारियाँ मिली। वैज्ञानिक तथ्य सामने आये। हमे बडी खुशी मिली कि हमारे दिगम्बर सन्त भी विज्ञान की काफी जानकारियाँ रखते है। मै आज धन्य हो गया। बावनगजा मे योगा शिविर के बाद यह शानदार भेट हुई। मेरा ज्ञानावर्द्धन हुआ। सदैव कृपा बनाए रखे। नमोस्तु!*

सद्कर्मों से होता है: दिव्यता का जन्म

कर्म करने से मनुष्य को आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है उसका हृदय पवित्र बनता है उसके सकल्पो में दिव्यता आती है, सद्कर्मो से ससार की समस्त दुर्वासनाए एव कलुषित भावनाएँ स्वत ही समाप्त हो जाती है। कर्म और भाग्य एक तरह से एक-दूसरे के पूरक है, इसके मर्म को जानने के लिए कर्म की अवधारणा की व्यापक प्रसशा करनी होगी।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

4 दिसम्बर, 1998, चण्डीगढ

कर्म और भाग्य दोनो एक सिक्के के दो पहलू है कर्म करने वाला बजर धरा से भी फलो की खेती कर सकता है। आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य बनता है। महायोगी उपाध्याय गुप्तिसागर जी का कथन है - सही दिशा मे किया गया सत्कर्म मनुष्य के उन्नत भाग्य का आधार है। कर्म सिद्धान्त की अवधारणा को लेकर उपाध्यायश्री ने अनेक जिज्ञासाओ के बडे सटीक एव तर्क-सगत समाधान दिए। प्रस्तुत है कुछ अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन**

जिज्ञासा *क्या कर्म से भाग्य को बदलना सम्भव है?*

समाधान भाग्यवादी व कर्मवादियो के बीच सदैव से ही वाद-विवाद चलता रहा है। जिस प्रकार सूर्य की किरणो से जगत मे प्रकाश फैलता है, उसी प्रकार कर्म से समाज मे चेतना का सचार होता है। हम अपने कर्मो द्वारा भाग्य को बदल सकते है ऐसा लगभग सभी धर्मो मे माना गया है। चार्वाक अपवाद स्वरूप है। कुछ लोकमत है कि कोरे भाग्यवादी कायर और अकर्मण्य हो जाते है। कर्म करने से मनुष्य को आत्मिक शान्ति मिलती है, उसका हृदय पवित्र होता है। सकल्पो मे दिव्यता आती है। सद्कर्मो से ससार की समस्त दुर्वासनाए व कलुषित भावनाए स्वत ही समाप्त हो जाती है। कर्म

और भाग्य एक तरह से एक-दूसरे के पूरक है। इसके मर्म को जानने के लिए कर्म की अवधारणा की व्यापक मीमासा करना होगी। यह विषय बडा व्यापक और गूढ है। लोक व्यवहार मे अपनी-अपनी सुविधानुसार जनसाधारण ने अनेक तर्को से अपने-अपने पक्ष को सपुष्ट किया है।

जिज्ञासा *भारतीय दर्शन मे धर्म की अवधारणा क्या है?*

समाधान चार्वाक को छोडकर प्राय सभी दर्शन इस अवधारणा के पोषक है कि कर्म सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य को अपने द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्मों के फल भोगना पडते हैं। (**"अवश्यमेव हि भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्"**) नैतिक जगन मे व्याप्त व्यवस्था की व्याख्या कर्म सिद्धान्त के आधार पर की जाती है। कर्म सिद्धान्त के मानने वाले भारतीय दार्शनिको न मनुष्य जीवन को - भूत वर्तमान और भविष्य के रूप मे स्वीकार किया है। मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके भूत जीवन के कर्मो के फल के अनुरूप होता है और उसका भावी जीवन वर्तमान जीवन के कर्मो के फल के अनुरूप होगा। मनुष्य का अधिकार उसके भूत जीवन पर तो नहीं होता किन्तु वर्तमान जीवन पर उसका पूर्ण अधिकार है कि वो कैसे कर्म करे। भारतीय दार्शनिको ने मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता माना है। उर्दू के प्रसिद्ध शायर इकबाल ने कहा है - **"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर के पहले खुदा बंदे से पूछे बता तेरी रजा क्या है।"** कर्म सिद्धान्त के साथ इच्छा स्वातन्त्रय का कोई विरोध नही।

जिज्ञासा *कर्म सिद्धान्त की विभिन्न भारतीय धर्मो मे व्याख्या किस प्रकार की गई है, बतलाने की अनुकम्पा कीजिएगा?*

समाधान वेदो के अनुसार कर्म सिद्धान्त एक प्राचीन सिद्धान्त है। इसका उल्लेख ऋग्वेद मे "ऋत" के रूप मे हुआ है। ऋत का शाब्दिक अर्थ है - वस्तुओ की कार्यविधि। नैतिक जगत मे व्याप्त व्यवस्था का कारण भी ऋत है। यह वह नियम है जो ससार मे सर्वत्र व्याप्त है और जो सभी देवी-देवताओ और मनुष्यो पर अवश्य ही प्रभावी है। ऋग्वेद के अनुसार ऋत हमारे सामने सदाचार के एक मापदण्ड को प्रस्तुत करता है। ऋत के अनुसार ही मनुष्य शुभ-अशुभ फल प्राप्त करता है।

उपनिषद् की मान्यता है कि कर्म सिद्धान्त सामाजिक सेवा के साथ मेल रखता है। हम वही काटते है जो बोते है। मनुष्य का कर्म हमेशा उसके साथ रहता है। कर्मो के अनुसार ही मनुष्य पुण्यात्मा या पापात्मा कहलाता है। वृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार पुण्य कर्मो से मनुष्य पुण्यात्मा व पाप कर्मो से पापात्मा होता है।

गीता को कर्मयोग शास्त्र कहा गया है। महाभारत की युद्धभूमि में श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म की महत्ता एव आवश्यकता बताते है। चुपचाप बैठे रहने का अर्थ है व्यर्थ कार्य न करना। यह कोई सकारात्मक सक्रियता नही है। निषेध मे कोई जीवन नही होता। सकारात्मक कर्म ही भगवद् गीता का सदेश है। कोई भी व्यक्ति क्षणमात्र भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। गीता मे सकाम कर्म और निष्काम कर्म कहे गये है। जिस कर्म के फल के प्रति हमारी आसक्ति बनी रहती है उसे सकाम कर्म बताया गया है। इसके विपरीत निष्काम कम वह है जिसके फल के प्रति हमारी कोई आसक्ति नही रहती। नारायण श्रीकृष्ण का कथन है, व्यक्ति को सकाम कर्म नही करना चाहिए। सकाम कर्म बन्ध का कारण है। सकाम कर्म के कारण ही जीवात्मा बार-बार बन्धन ग्रस्त होता है।

"कर्म सिद्धान्त भविष्य के प्रति आशा का सचार करता है। यह मानव पुरुषार्थ को जागृत कर उसे सदेश देता है कि मनुष्य स्वय अपना भाग्य विधाता है। उसका भूत पर तो कोई वश नहीं है किन्तु वर्तमान पर उसे पूरा अधिकार है। वस्तुत कर्म सिद्धान्त से बढ़कर कोई दूसरा सिद्धान्त जीवन और आचरण मे इतना महत्व नहीं रखता।"



चार्वाक दर्शन यह वस्तुत भौतिकवादी दर्शन है। यहाँ बन्धन, कर्म सिद्धान्त, आत्मा, परमात्मा व मोक्ष आदि का स्वीकार नही किया गया है। यहाँ कर्म सिद्धान्त की उपादेयता इस रूप मे मानी गई है कि प्रत्येक मानव को वही कर्म करना चाहिए जिससे उन्हे ऐन्द्रिक सुख प्राप्त हो।

बौद्ध दर्शन बौद्ध धर्म के प्रतिष्ठाता महात्मा बुद्ध के अनुसार मानव कर्मो के फल भोगने के लिए ही बार-बार शरीर धारण करता है। बुद्ध ने स्पष्ट कहा कि मानव के दु ख का कारण उसके वासनायुक्त कर्म है इसलिए उन्होने भी मानव को निष्काम कर्म करने की प्रेरणा दी है।

न्याय दर्शन न्याय दर्शन मे कर्म सिद्धान्त का रूप "अदृष्ट" के रूप मे कहा गया है अदृष्ट का शाब्दिक अर्थ है - अदृश्य शक्ति। ससार मे अनेक प्रकार की

विषमताए है। कोई गरीब है, कोई अमीर, कोई स्वस्थ हे, कोई अस्वस्थ। कोई भारी परिश्रम के बाद भी दुखी हे तो दूसरा बिना परिश्रम के ऐश्वर्य को लूटता है। ससार मे इतनी विषमताए क्यो है? न्यायदर्शन इस विषमता की व्याख्या कर्म सिद्धान्त के आधार पर करता है इसके अनुसार भी मनुष्य के हर कर्म का फल सुरक्षित होता है। अच्छे कर्मो के फल के कारण वह सुख भोगता है और बुरे कर्मो के कारण दु ख को प्राप्त करता हे। अदृष्ट अचेतन है अत इसको सचालित करने के लिए ईश्वर की आवश्यकता होती हे। इसी परिप्रेक्ष्य मे ईश्वर को कर्मफलदाता माना जाता हे।

पूर्व मीमासा दर्शन मीमासा दर्शन की मान्यता है कि इस लोक मे किए गए कर्म से एक अदृष्ट शक्ति उत्पन्न हाती है जिसे अपूर्व कहा जाता है। अपूर्व (जो पहले नही था) क आधार पर ही आत्मा का अपने कर्मो के फल क रूप मे दुख-सुख भोगने पडते हे।

जिज्ञासा *जैनदर्शन मे कम सिद्धान्त की अवधारणा क्या है?*

समाधान जेनदर्शन म कर्म को ही बन्धन का मूल कारण माना गया है। जीव (आत्मा) अपने कर्मो के अनुसार ही दुख-सुख भोगता है। जैनदर्शन मे फल के अनुरूप कर्मो का नामकरण किया गया हे। आयु कर्म (आयु निर्धारित करता है), ज्ञानावरणीय कर्म (जो कर्म ज्ञान मे बाधक हो), अन्तराय कर्म (जो कर्म आत्मा की स्वाभाविक शक्ति को रोकते है), गोत्र कर्म (उच्च अथवा निम्न परिवार मे जन्म लेने का निश्चय करते हैं)।

जिज्ञासा *प्रारब्ध कर्म, सचित कर्म और क्रियामाण कर्म से क्या अभिप्राय है?*

समाधान प्रारब्ध और सचित कर्म का सम्बन्ध मनुष्य के भूत जीवन से है। क्रियामाण कर्म का सम्बन्ध मनुष्य के वर्तमान से है। प्रारब्ध कर्म सचित कर्म का वह अश है जिसका फल मानव ने अपने वर्तमान जीवन मे पाना शुरू कर दिया है। वर्तमान मे जो कर्म हम सम्पादित कर रहे है उन्हे क्रियामाण कर्म कहा जाता है।

जिज्ञासा *मानव समाज का एक वर्ग भाग्य के सामने कर्म सिद्धान्त को पूरी तरह नकारता है। उनका दृष्टिकोण क्या है?*

समाधान मैने जैसा कि पूर्व मे बताया था कि भाग्यवादी और कर्मवादी अपनी-अपनी बात के पक्ष मे अनेक तर्क देते है किन्तु भारतीय समाज का अधिकाश भाग जीवन मे कर्म को प्रधान मानता आया है। भाग्यवादियो का तर्क है कि उनके कर्म, उनके भाग्य के आधीन है अर्थात् वे भाग्य से ही निर्धारित होते है। वे स्वतन्त्र रूप से स्वय कोई कर्म नहीं कर सकते इसलिए भाग्य कर्म के अनुसार नहीं बदलता। जीवन मे अनेक विसगतियो

के लिए वे पूरी तरह से भाग्य का ही प्रधानता देते है। उनका कहना है कि एक शाषण करता है और दूसरा शोषित। एक परिश्रम के बाद भी लाचार और दूसरा बिना कुछ करे अपार एेश्वर्य भोगता है। यह सब अपने-अपने भाग्य के कारण ही है। कर्मसिद्धान्त इसकी व्याख्या (विषमताओ के लिए भाग्य को दोषी बताना) इस प्रकार करता है कि मनुष्य के कर्मो के सभी फल सुरक्षित रहते है। शुभ कर्मो से सुख और अशुभ कर्मो से दुःख की प्राप्ति होती है। यदि कोई व्यक्ति वर्तमान मे अशुभ कर्म करते हुए भी सुख भोग रहा है तो इसका कारण मात्र भाग्य नही अपितु इसका कारण यह है कि अपने भूत जीवन मे उसने शुभ कर्मो का सम्पादित किया होगा जिसका फल वर्तमान जीवन मे उसे मिल रहा है। पूर्वकृत सभी संचित कर्मो के फल केवल एक जीवन मे नही मिल जाते। कुछ कर्मो के फल संचित रह जाते है।

जिज्ञासा *पूरी चर्चा के साराश के रूप मे आप क्या संदेश मानव मात्र को देना चाहेगे?*

समाधान कर्म सिद्धान्त भविष्य के प्रति आशा का संचार करता है। यह मानव पुरुषार्थ को जागृत कर उसे संदेश देता है कि मनुष्य स्वय अपना भाग्य विधाता है। उसका भूत पर तो कोई वश नही है किन्तु वर्तमान पर उसे पूरा अधिकार है। वस्तुत कर्म सिद्धान्त से बढकर कोई दूसरा सिद्धान्त जीवन और आचरण मे इतना महत्व नही रखता। इस सिद्धान्त के आधार पर ही मनुष्य शुभ कर्म सम्पादित करने के लिए उत्साहित होता है और अशुभ कर्म करने से बचने का प्रयास करता है इसलिए मानव समाज को पूरी आशा और विश्वास के साथ शुभ कर्मो को सम्पादित करने की दिशा मे निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए।

जिज्ञासु *नमोऽस्तु उपाध्याय परमेष्ठि! आपके अतल ज्ञान से मै अत्याधिक प्रभावित हुआ। जन-जन के लिए आपका सन्देश जीवन प्रदाता है। सरस्वती आपकी जिह्वा पर है। इसी से अनुमान करता हूँ कि आपके गुरु कितने ज्ञानी होगे। प्रणाम! विराम लेता हूँ*

महके जीवन : आचार विचार से

“ वर्तमान मे मनुष्य के हृदय का प्रेम स्रोत सूखता जा रहा है। आज का मानव समाज सवेदन शून्य हो गया है। यह सवेदन शून्यता ही वह रोग है जिससे मानव समाज पीडित है और चहुँ ओर समस्या ही समस्या दिखाई दे रहीं है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि ”

वर्षायोग, 22 नवम्बर, 2001, निर्माण विहार, दिल्ली

मानव जीवन दुर्लभ चिन्तामणि रत्नतुल्य है। सभी महापुरुषो ने इस मानव पर्याय को सद्‌गुणो एव सद्‌कर्मो से अलकृत करने का निर्देश दिया है। उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी ने स्पष्ट किया है कि मानव यदि लोककल्याण और आत्म-कल्याण की चेष्टा मे सलग्न रहे तो वह अपने जीवन को सार्थक कर सकता है। प्रखर तत्त्वचिन्तक, निष्कपट कर्मयोगी, निर्ग्रन्थ, जैनमुनि उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी मे वैचारिक तेजस्विता का तपनशील रूप व्यक्त होता है उनके भीतर सत्य जितना प्रबल है कर्मनिष्ठा उतनी ही स्फूर्त एव तेजोमय है। ऐसे लोक मगल और आत्म मगल मे रत उपाध्यायश्री के पास मै कुछ जिज्ञासाये लेकर गया। जो समाधान उन्होने प्रस्तुत किये उनके प्रमुख अश - **धर्मचन्द्र जैन**, *प्रीतविहार, दिल्ली*

जिज्ञासा *क्या वैज्ञानिक युग धर्म शास्त्रो को चुनौती दे सकता है?*

समाधान पुग मन्तव्य प्रयत्नपूर्वक पकडे रखने से विकास अवरुद्ध हो जाता है। पुराने शास्त्र को चुनौती दिये बिना नये शास्त्र का जन्म नही हो सकता। चुनौती देना मनुष्य मात्र का जन्म सिद्ध अधिकार है। हॉ, यदि हम विज्ञान और धर्म दोनो को मानव कल्याण के हितैषी समझे तो दोनो परस्पर पूरक है, वैज्ञानिक युग मे धर्मग्रन्थो का अध्ययन अत्यावश्यक है इससे सहार नही निर्माण को दिशा मिलेगी।

जिज्ञासा *शास्त्र और ग्रन्थ मे क्या भेद है?*

समाधान शास्त्र आत्मशुद्धि का प्रतिपादक है, आध्यात्मिक उपदेश है। शास्त्र कभी असत्य नही हो सकता। शास्त्र अनुभूत सत्य पर आधारित होता है।

ग्रन्थ इधर-उधर के विचारो का सकलन मात्र है। ग्रन्थ मे कुछ सत्य भी हो सकता है और कुछ असत्य भी हो सकता है। ग्रन्थ प्रचलित एव अनुमानित मान्यताओ पर आधारित है। वस ग्रन्थ ओर शास्त्र पर्यायवाची शब्द है अथवा यह कहिए जा एक समुदाय के लिए ग्रन्थ है वह दूसरे समुदाय के लिये शास्त्र हो सकता है। जिस प्रमाणिक माना जाये उस सहज रूप से शास्त्र कह सकते है आर जिसकी प्रमाणिकता - अप्रमाणिकता न देखी जाये वह ग्रन्थ है।

“



वर्षायोग/चातुर्मास मूलत अहिसा महाव्रत की सुरक्षार्थ होता है। वर्षाकाल मे मुनियों के लिये चातुर्मास की प्राचीन परम्परा है। इन दिनो मैं जैन मुनि ध्यान, अध्ययन द्वारा आत्म सिन्धु मे डूबकर उसमें से चिन्तन के मोती - रत्न खोजकर स्वय को विभूषित करते हैं।

”

जिज्ञासा *मानव जीवन का उद्देश्य क्या है?*

समाधान मानव जीवन का उद्देश्य त्याग है, भोग नही। श्रेय है - प्रेय नही। मानव को आत्म कल्याण व लोक कल्याण के लिस सम्यक् चेष्टारत रहना चाहिये।

जिज्ञासा *अतिचार और अपवाद मे क्या भेद है?*

समाधान अतिचार निषिद्ध मार्ग है, अधर्म है। अपवाद विधि माग है, अत धर्म है।

जिज्ञासा *अवमानव और महामानव मे क्या अन्तर है?*

समाधान महामानव का अर्थ है युग निर्माता। महामानव निष्काम लोकमगल मे लगा रहता है। महामानव क्रिया प्रधान होता है, उसके पास काम अधिक होता है और बात कम। महामानव वातावरण को बनाते है। अवमानव उक्ति प्रधान होते है उसके पास बाते अधिक, काम कम होता है। अवमानव वातावरण से बनते है।

जिज्ञासा *विचार से क्या अभिप्राय है?*

समाधान विचार साधक के पथ के अन्धकार को नष्ट-भ्रष्ट करने वाला प्रकाशक तत्त्व है।

जिज्ञासा *आचार से क्या अभिप्राय है?*

समाधान आचार जीवन की उस शक्ति का नाम है जो साधक को उर्ध्वगामी बनाती है।

जिज्ञासा *इस सदी का मानव समाज किस रोग से पीडित है?*

समाधान . मनुष्य के हृदय मे प्रेम का स्रोत पूरी तरह से सूखता जा रहा है। आज का मानव समाज सवेदन शून्य हो गया है। यह सवेदन शून्यता ही वह रोग है जिससे मानव समाज पीडित है और चहुँ ओर समस्याये-ही-समस्याये दिखाई दे रही है।

जिज्ञासा *हर व्यक्ति अध्यात्म की राह पर चलकर मानव समाज को नये उजाले तो नही दे सकता, फिर वो क्या करे?*

समाधान ठीक है, हर आदमी मशाल की तरह जल कर रास्ता नही दिखा सकता, तो न सही, परन्तु अगरबत्ती की तरह महक कर परिवेश को सुगन्धित तो कर ही सकता है।

जिज्ञासा *जैन धर्म का मर्म है वह शरीरवादियो/चर्मवादियो का धर्म नही है, इससे क्या अभिप्राय है?*

समाधान जैन धर्म अध्यात्म की ठोस भूमिका पर खडा है। वहाँ शरीर, जाति, वश के भौतिक आधार या फिर कौन किस कर्म या व्यवसाय से जुडा है नही देखता, अपितु व्यक्ति का चरित्र, पुरुषार्थ व आत्मिक पवित्रता का मूल्याकन करता है।

जिज्ञासा *प्रतिबद्धता, शास्त्र की हो या सत्य की एक ही बात है क्या?*

समाधान ऐसा नही, शास्त्र धर्म का शरीर है और सत्य प्राण। सत्य के अभाव मे शास्त्र की वही स्थिति है जो स्थिति प्राण बिना किसी व्यक्ति के शरीर की होती है। शास्त्र की प्रतिबद्धता वहॉ तक सही है जहॉ तक वह सत्य को प्राप्त करने मे साधन का काम करता है अर्थात् शास्त्र की प्रतिबद्धता सीमित है और परिवर्तनशील भी, क्योकि धर्म के साथ-साथ देश कालानुसार शास्त्र भी बदलता रहता है किन्तु सत्य की प्रतिबद्धता तो सीमा से परे है तथा स्थायी है, क्योंकि सत्य साध्य है और शाश्वत भी।

जिज्ञासा *विचार और परम्पराओ का परस्पर क्या सम्बन्ध है*

समाधान विचारो से ही परम्पराओ का अवतरण हुआ है। जैनदर्शन के अनुसार विचार अथवा ज्ञान आत्मा का गुण है, परन्तु परम्परा आत्मा का गुण एव स्वभाव नही है। विचार सचेतन है और उसका परिणमन आत्मा से होता है, परन्तु परम्पराओ का परिणमन पुद्‌गलो से होता है। विचार एक जन्म से दूसरे जन्म मे भी साथ जाते है जबकि परम्पराये आगामी जन्मो मे कभी साथ नही जाती। परम्पराओ का प्रवाह वर्तमान जन्म तक सीमित रहता है इसलिये कहा जा सकता है कि विचार अनन्त है और परम्पराए सान्त है।

जिज्ञासा *विचारो के अनुरूप परम्परा है अथवा परम्परा के आधार पर विचारो का उद्‌भव एव विकास हुआ है? परम्परा विचार जन्य है या विचार परम्परा जन्य है?*

समाधान परम्परा के पहले विचार एव विवेक का होना परम आवश्यक है। परम्पराये स्वभाव से आत्मा की नही है, प्रबुद्ध विचारको द्वारा स्थापित है इसलिये वे युग के अनुरूप तथा विचारो के अनुरूप परिवर्तित भी होती है। विचारो के आधार पर परम्पराओ का उद्‌भव एव विकास होता है।

जिज्ञासा *धर्म, पुण्य और पाप मानव को कैसे प्रभावित करते है?*

समाधान वस्तु का स्वरूप ही धर्म है। धर्म कोई बाहर मे रहने वाली अथवा बाहर से प्राप्त की जानी वाली वस्तु नही है। आत्मा का जो स्वभाव है, वही धर्म है और वह आत्मा मे ही निहित है, अन्यत्र नही। जो साधक विवेकपूर्वक चलता-फिरता है, उठता-बैठता है, शयन करता है, खाता-पीता है और बोलता है वह पाप कर्म का बन्ध नही करता अर्थात् पुण्यार्जक है और जो प्रमादपूर्वक प्रवृत्ति करता है वह निश्चित ही पापास्रवक है।

जिज्ञासा *जैनदर्शन मे दो प्रकार के मुनि देखने मे आते है। कुछ मुनि श्वेत वस्त्र धारण करते है और दूसरे निर्वस्त्र रहते है। वस्त्रधारी मुनि कौन से होते है और निर्वस्त्र मुनि कौन सी परम्परा के पोषक है? निर्वस्त्र रहने वाले मुनियो के लिए वस्त्रहीन रहने की अनिवार्यता क्यो है इस मान्यता का आधार क्या है? निर्वस्त्र रहने वाले मुनि यदि सार्वजनिक स्थानो पर जाते समय कोपीन (लगोट) का प्रयोग कर ले तो क्या वे मुनि पद के अधिकारी नही रहेगे। समाज मे उनका निर्वस्त्र रहना और सार्वजनिक स्थानो मे इसी रूप मे भ्रमण करना सदैव चर्चा का विषय रहा है। कुछ लोग इस पर नाक-भौह भी चढाते है। कृपया इस विषय का समाधान करे?*

समाधान श्वेत अम्बर (सफेद वस्त्र) धारण करने वाले मुनि श्वेताम्बर परम्परा के है और जो पूर्ण रूप से निर्वस्त्र रहते है वे दिगम्बर मुनि होते है।

दिगम्बर जेन मुनि पूर्ण रूप से निर्वस्त्र होते है, ऐसा इसलिये कि यहाँ यह मान्यता है कि वस्त्र केवल विकारो को ढँकने के माधन है। जब मन, इन्द्रियाँ और विकार जीत लिये तब वस्त्र प्रयोजनीय रह ही कहाँ जाते है। जब मन और ऑख मे विवेक जगा लिया, जान लिया कि मुझसे उम्र मे बडी नारी मेरी मॉ तुल्य है, हम-उम्र बहन है और अल्पवय वाली नारी पुत्रीवत् है तो फिर विकार कहाँ? जहाँ विकार है, वहाँ वस्त्र है। साधना के मार्ग मे वीतरागी को वस्त्र भी बोझ समान लगने लगते है।

वैसे देख तो वस्त्र रखने पर उसकी सफाई, रक्षा की चिन्ता, उसके लिये याचना, धोने का विकल्प आदि बढ जाते हे साधना के चरमोत्कर्ष पर शरीर तो पूर्ण रूप से गौण हो जाता हे। फिर वह ढँका या निर्वस्त्र हे इसका प्रश्न ही कहाँ रह जाता है। वीतराग विज्ञान म सूक्ष्म-स-सूक्ष्म वस्तु से भी राग शून्य होना पडता है तब ही तो वह वीतरागी बनता है। अत यह केवल उन व्यक्तियो के लिय आश्चर्यजनक या कौतुहल या फिर नाक-भौह चढाने का विषय हो सकता हे जिन्हे वीतरागता का अर्थ ही ज्ञात नही होता अर्थात् वह नही जानत कि दिगम्बर जेन परम्परा मे साधना का मार्ग राग शून्यता का है। वह देह निस्पृहता का दर्शन है। यहाँ सद्य प्रसूत बालक के प्रथम उन्मेष जैसी निर्विकारता ही मान्य हे। जो निर्विकार हे, देहस्थ होकर देहातीत है, वहाँ वस्त्र वृक्ष के जीर्ण पीत (पात) की तरह स्वय झर जाते है। दिगम्बर मुनि यावज्जीवन बालकवत् निर्विकार रहत है।

पूर्ण वीतरागता के लिए वस्त्र राग वर्जित है, निषिद्ध है, बाधक है चूँकि वीतरागता ही धर्म की आत्मा है ओर इस आत्मोपलब्धि के लिए वस्त्र जैसी चीजे निष्प्रयाजनीय हो जाती है, रही सार्वनिक स्थलो पर भ्रमण की बात तो आप ही बतलाइए क्या सद्य प्रसूत बालक का निर्वस्त्र रहना किसी को विकार पैदा करता है या वह सुन्दर-असुन्दर नारियो को देखकर कामासक्त होता है? यदि नही तो बालवत् निर्विकार मुनि के लिये कोपीन की क्या आवश्यकता। (हँसकर) कोपीन मे तो एक मीटर कपडा लगेगा किन्तु जिनको दिगम्बर रूप अच्छा नही लगता वे अपनी ऑखो पर पट्टी बॉध ले उसमे केवल चार इच कपडा लगेगा। अर्थतन्त्र पर भी कम बोझ पडेगा।

दिगम्बर मुनि की चर्या एव जीवन पद्धति अदभुत होती है। यह उस भट्टी की तरह है जिसमे से खरा सोना ही बनकर बाहर आता है।

जिज्ञासा . *वर्षायोग/चातुर्मास से क्या अभिप्राय है?*

समाधान वर्षायोग/चातुर्मास मूलत अहिसा महाव्रत की सुरक्षार्थ हाता है। वर्षाकाल मे मुनियो के लिये चातुर्मास की प्राचीन परम्परा है। इन दिनो मे जेन मुनि ध्यान, अध्ययन द्वारा आत्मसिन्धु मे डूबकर उसमे से चिन्तन के मोती - रत्न खोजकर स्वय को विभूषित करते है। श्रावक भी उनके नियत स्थान की जानकारी होन स सहज रूप मे मुनिजनो का जीवन्त मम्पर्क प्राप्त कर धर्म लाभ लेते है। चातुर्मास श्रमण और श्रावक के बीच एक सतु का कार्य करता है। जिस प्रकार यह अन्न उपजाने का समय होता है उसी प्रकार वषायाग धर्मोपार्जन का भी सहज अवसर है।

जिज्ञासा *दिगम्बर मुनि कमण्डलु व पिच्छिका (मयूर पखी) क्यो रखत हे?*

समाधान कमण्डलु मे शौचादि के लिए प्रासुक जल (गर्म किया गया पानी) रहता हे तथा पिच्छिका सयम का प्रतीक है। यह दिगम्बर मुनि की पहचान है केवल पिच्छिका देखकर यह पता चल जाता है कि उक्त निवस्त्र सन्त दिगम्बर जन मुनि है।

ज्ञात रह - पिच्छिका मयूर-पखो की हानी है। कार्तिक माह मे मयूर स्वत अपने पख गिरा देती है उन्ही से यह पिच्छिका बननी है। य पख अत्यन्त मृदु हान है अत इनसे परिमार्जन करन पर जीवो को कष्ट नही हाता, इससे अहिमा ओर सयम की परिपालना मे सहायता मिलती है।

जिज्ञासु *नमोऽस्तु गुरुदेव! आपसे बहुत सार समाधान मिले, नय तथ्य उभरकर आए, ज्ञानार्जन हुआ, इसी तरह सदैव आपका कृपापत्र बना रहूँ। ऐसा आशीष प्रदान करे।*

विवेक : उत्थान का मार्ग

इन्द्रियों के भोगो की वितृष्णा से कषाय की अधिकता होती है। लोलुपता बढ़ती है। हिसात्मक भाव जागते है। धर्म से मन उचाट हो जाता है, अधर्म मे प्रवृत्ति होने लगती है, फलस्वरूप पाप कर्म का बन्ध होता है। ज्ञानवान मनुष्य वही है जो इन्द्रियों का सच्चा उपयोग करके इस जीवन मे लौकिक और पारलौकिक उन्नति करता है तथा भविष्य मे भी शुभ फल भोगता है, जो इन्द्रियों के दास हो जाते हैं वे भव-भव मे दु खों को भोगते है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

महावीर जयन्ती 1995 मेरठ (यू पी)

महावीर ने मानव जीवन के अभ्युत्थान के लिए एक सीमा रेखा खीची थी - इन्द्रिय सयम की, उस सीमा को आज मनुष्य ने लाघ दिया है इसलिए वह दु खी है। शोषण, दोहन और उत्पीडन एक-दूसरे को समाप्त कर देने की हिसक वृत्ति-मर्यादाओ के अतिक्रमण का ही परिणाम है। गुरुदेव का कथन है इन्द्रिय जेता ही जीवन मे लौकिक और पारलौकिक उन्नति कर सकते है।

उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनि महाराज वीतरागी राष्ट्र सन्त है। उनके चिन्तन मे तलस्पर्शिता, विचारोत्तेजकता, गम्भीर अध्ययनशीलता मुखर होती है। उनकी उत्कृष्ट जीवनचर्या के साथ-साथ उनकी कृतियॉ भी अनुभूतिपरक व सार्थक है। अपनी कुछ जिज्ञासाओ को लेकर समाधान हेतु श्रीचरणो मे श्रद्धापूर्वक उपस्थित हूँ - **भूपेन्द्र कुमार जैन** *।*

जिज्ञासा *जैन दर्शन मे "मुक्त जीव" और ससारी जीव मे क्या भेद है कृपया बताये?*

समाधान सिद्ध परमेष्ठी मुक्त जीव कहलाते है अर्थात जो जीव राग, द्वेष, मोह,

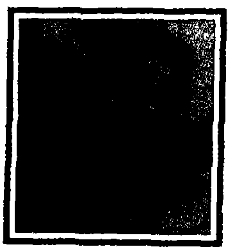
काम, क्रोध आदि अट्ठारह विकारो से रहित है तथा अष्ट कर्मो से रहित है वे मुक्त जीव कहलाते है। जो जीव चारो गतियो की पर्यायो मे परिणत होते रहते है तथा शुभ-अशुभ दोनो प्रकार के कर्मो को ग्रहण करते है - वे ससारी जीव है।

जिज्ञासा *चारो गतियो से क्या अभिप्राय है?*

समाधान देव गति, मनुष्य गति, तिर्यञ्च गति और नरक गति ये चार गतियाँ होतीं है, जिनमे ससारी जीव परिभ्रमण करता रहता है।

जिज्ञासा *सिद्ध परमेष्ठी - अर्थात्?*

समाधान सिद्ध परमेष्ठी लोक शिखर पर विराजमान है। अपने केवलज्ञान के द्वारा तीनो लोको को एक ही समय मे साक्षात् देखते और जानते है। सिद्ध परमेष्ठी शरीर और सर्व शुभ-अशुभ कर्मो से रहित, चारो गतियो के परिभ्रमण से मुक्त, अत्यन्त निश्छल एव अपनी आत्मा के शुद्ध स्वभाव मे सदा लीन रहते है।



अज्ञानी जीव विषय सुख को सुख मान लेता है जबकि वह सच्चा सुख नहीं। सच्चा सुख क्षणिक नहीं होता, उसका सम्बन्ध शरीर से नहीं आत्मा से है। सच्चा सुख स्वाधीन है, सहज है, निराकुल है, समभाव मय है, अपना ही स्वभाव है। यह ठीक ऐसा ही है जैसे कोई व्यक्ति पानी मे चन्द्र की परछाई को देख चन्द्रमा मान ले या फिर कुए में सिह अपनी परछाई को देख सच्चा सिह मान ले।

जिज्ञासा *इन्द्रियो के भोग से पाप कर्म कैसे बधते है?*

समाधान इन्द्रिय भोगो की वितृष्णा से कषाय की अधिकता होती है। लालुपता बढती है। हिसात्मक भाव जागते है। धर्मभाव से मन उचाट हो जाता है, अधर्म मे प्रवृत्ति होने लगती है फलस्वरूप पाप कर्म का बन्ध होता है। ज्ञानवान मनुष्य वही है जो इन्द्रियो का सच्चा उपयोग करके इस जीवन मे लौकिक व पारलौकिक उन्नति करता है तथा भविष्य मे भी शुभ फल भोगता है। जो इन्द्रियो के दास हो जाते है वे भव-भव मे दु खो को भोगते है।

जिज्ञासा *आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य मे ससार से क्या अर्थ है?*

समाधान **ससरण ससार** जहाँ जीव ससरण या भ्रमण करता रहता है, एक अवस्था

से दूसरी अवस्था को धारता है, उसे भी छोडकर पुन पुन अन्य अवस्थाओ को धारण करता है - उसे ससार कहते है। ससार मे निराकुलता, ध्रुवता व थिरता नहीं होती।

"मुनि दो प्रकार के होते हैं। जिनकल्पी और स्थविर कल्पी। जो उत्तम सहनन के धारण करने वाले हैं अर्थात् जो काटा चुभने, ऑख में धूल गिरने पर भी मौन रहते हों, वर्षा आदि ऋतुओ मे छह - छह माह तक बिना आहार लिए बैठे या खडे रह सकते हो, कन्दरा व वनवासी हों, वीतराग - निस्पृह हो - वे मुनिराज जिन कल्पी होते है।"



जिज्ञासा *इन्द्रियो के भोगो से जो क्षणिक आनन्द मिलता है - क्या इसे ही सुख कहते है? कृपया इसकी व्याख्या करे?*

समाधान अज्ञानी जीव विषय सुख को सुख मान लेता है जबकि वह सच्चा सुख नही। सच्चा सुख क्षणिक नही होता, उसका सम्बन्ध शरीर से नही आत्मा से है। सच्चा सुख स्वाधीन है, सहज है, निराकुल है, समभाव मय है, अपना ही स्वभाव है। यह ठीक ऐसा ही है जैसे कोई व्यक्ति पानी मे चन्द्र की परछाई को देख चन्द्रमा मान ले या फिर कुँए मे सिह अपनी परछाई को देख सच्चा सिह मान ले। यदि सुख यही होता तो इन्द्रियो के भोग पर कोई सरकारी प्रतिबन्ध तो है नही चाहे जितना भोगो और यह युग है भी भोगवादी सस्कृति का - फिर चहुँ ओर इतनी व्याकुलता, तनाव, मारा-मारी, भय, रोग, अराजकता क्यो है? यदि यही सुख होता तो ये सब अवस्थाए शून्य होनी चाहिए थी। अपनी आत्मा का स्वभाव सच्चा सुख है। जैसे इक्षु का स्वभाव मीठा, चॉदी का स्वभाव श्वेत, सूर्य का स्वभाव तेजस्वी है। जैसे चन्द्रमा मे सर्वाग शीतलता है, रुई मे सर्वाग हल्कापन, सूर्य का सर्वत्र ताप, मिश्री मे सर्वाग मिठास है उसी प्रकार आत्मा मे सर्वाग सुख है। सुख आत्मा का शाश्वत गुण है। इन्द्रिय सुख/विषय सुख से कभी तृप्ति नही होती। सच्चे सुख मे तृप्ति-ही-तृप्ति है। इन्द्रिय सुख मे राग है। सच्चे सुख निरोग है। जो सुख-दुख दे वह सच्चा सुख कैसे हो सकता है? इन्द्रिय सुख पराधीन है, सहज सुख स्वाधीन। सच्चे सुख मे कर्म बन्ध नही है, कर्मो की निर्जरा है। सुख किसी जड़ पदार्थ मे नही, न यह दूसरे से किसी को मिल सकता है शाश्वत सुख तो प्रत्येक की आत्मा मे है। सच्चे सुख विषय बहुत ही व्यापक है।

जिज्ञासा *दिगम्बर जैन शास्त्रो मे मोक्ष गामिता की शक्ति रखने वाले तपस्वी मुनियो*

के उत्कृष्ट स्वरूप और कठिन चर्या का वर्णन पढकर इस पचम काल मे बहुत से लोग दिगम्बर मुनियो के बारे मे टिप्पणी करते पाये जाते है कि आज के मुनिराज जगल, कदराओ व निर्जन स्थानो को छोडकर मन्दिर धर्मशालाओ, ग्रामो व नगरो आदि मे ठहरते है तथा उन्हे ऋतुओ की प्रतिकूलता का झेलन का पूरा अभ्यास नही होता। अत उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति अनिवार्य नही। आप इस बारे मे क्या कहना चाहेगे?

समाधान मै इस विषय पर अपनी कोई प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करने की अपेक्षा जैनागम इस विषय मे क्या कहता है, बताना चाहूँगा। परम वन्दनीय आचार्य सोमदेव इसका बहुत अच्छा समाधान दिये है -

काले कलौ चलेचित्ते देहे चान्नादि कीटके।
एतच्चित्र यद्यापि जिनरूप धरा नरा।।

जिज्ञासा *अर्थात्?*

समाधान आज के इस पतनशील कलिकाल मे और चित्त की क्षण-क्षण मे बदलने वाली चचलता के साथ, शरीर के अन्न का कीडा बन जाने पर आश्चर्य है कि आज भी जिनरूप को धारण करने वाले मुनि दिख रहे है। जो लोग मुनिराजो की परीक्षा मे ही अपना ध्यान लगाए रहते है तथा उनकी चर्या व उद्दिष्ट भोजी आदि बताकर कुतर्क करते रहते है - उन्हे उत्तर देते हुए पूर्वाचार्य कहते है -

"भुक्तिमात्र प्रदाने तु का परीक्षा तपस्वीनाम्" - श्रावको! वीतराग मुनिराजो को केवल आहार देने मात्र के लिए तुम क्या परीक्षा करते फिरते हो? पचमकाल के अन्त समय तक मुनि पाये जायेगे और वे चतुर्थ कालवत् ही अट्ठाईस मूल गुणधारी परम विशुद्ध शुद्धात्मा होयेगे - ऐसा सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य ने त्रिलोकसार मे लिखा है। तब आजकल के मुनिराजो पर आक्षेप करना कितना उचित है - यह श्रावक स्वय विचारे।

इसी प्रकार आचार्य देवसेन जी भावसग्रह मे कहते है -

मुनि दो प्रकार के होते है। जिन कल्पी और स्थविर कल्पी। जो उत्तम सहनन के धारण करने वाले है अर्थात् जो काटा चुभने, ऑख मे धूल गिरने पर भी मौन रहते हो, वर्षा आदि ऋतुओ मे छह - छह माह तक बिना आहार लिए बैठे या खडे रह सकते हो, कन्दरा व वनवासी हो, वीतराग - निस्पृह हो - वे मुनिराज जिन कल्पी होते है।

जो मुनि पॉचो प्रकार के वस्त्रो के त्यागी हो, जिनके पास कोई परिग्रह न हो, पिच्छिका हो, जो पॉचो महाव्रतो के धारी हो, खडे होकर दिन मे एक बार करपात्र भोजन करते हो, दोनो प्रकार के तपश्चरण मे उद्यमी हो, सदा छहो आवश्यको का पालन करते हो, केशलोच करते हो, भूमि काष्ट फलक व तृणो पर शयन करते हो। अट्ठाईस मूल

गुणो का पालन करते हो। जो हीन सहनन के कारण इस दु षम काल मे पूरे नगर व गॉव (मन्दिर, धर्मशाला आदि) मे ठहरते हो, ऐसे उपकरण रखते हो जिनसे रत्नत्रय भग न हो, न ही वे उपकरण रागवर्धक व चौर्य कर्म हेतु प्रेरित करते हो। श्रावको द्वारा प्रदत्त ज्ञानोपकरण स्वरूप धर्मग्रन्थ रखते हो, भव्यजनो को धर्म श्रवण कराते हो इस दु षम काल मे हीन सहनन होने पर भी धीर पुरुष कठोर महाव्रत धारण करते हो, वे ही मुनि स्थविर कल्पी है पहले के उत्तम सहनन से जो कर्म हजारो वर्षो मे नष्ट हो जाते थे वे कर्म इस समय हीन सहनन के द्वारा एक वर्ष मे नष्ट हो जाते है।

वर्तमान मे हिसक जन्तुओ से भरे जगलो मे रहकर निर्विघ्न धर्म ध्यान नही किया जा सकता अत मुनि उद्यानो, मन्दिरो, धर्मशालाओ आदि मे रहते है। यह वर्तमान शक्तिहीन सहनन के लिए समुचित शास्त्र मार्ग है।



“‘जीवन’ ही कर्तव्य है। आज जीवन के हर क्षेत्र में अनैतिकता, अराजकता, अत्याचार का जो प्रदूषण फैला है उसे दूर करने के लिए देश के प्रत्येक नागरिक को प्रामाणिक बनकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।”

जिज्ञासा . इन तथ्यो के अनुसार तो यह सब कुछ पूर्वाचार्यो व जैनागमो के अनुसार है अत वर्तमान मुनियो की श्रद्धा-भक्ति भी उसी प्रकार की जानी चाहिए जेसे चतुर्थ कालवर्ती मुनियो के प्रति होती थी।

समाधान कालानुसार चतुर्थ काल के मुनियो की तुलना मे दीर्घ सहनन अर्थात् 'शारीरिक सामर्थ्य' से होने वाले विशिष्ट तप एव अन्य उत्तर गुणो को छोडकर शेष चर्या और भावो की विशुद्धि वर्तमान मुनियो मे भी प्राच्य काल के समान ही होनी चाहिए। इस दुषम काल मे प्राकृतिक रूप से शरीर के सहनन पूर्वकालो जैसे बलवान नही होते तथा मन अत्यन्त चञ्चल रहता है।

जिज्ञासा *पच महाव्रत क्या है?*

समाधान अहिसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह ये पाच महाव्रत है।

जिज्ञासा *जैन दर्शन मे सल्लेखना व्रत से क्या अभिप्राय है?*

समाधान मरण समय आत्म समाधि व शान्त भाव से प्राण छूटे ऐसी भावना करना सल्लेखना व्रत/समाधि मरण व्रत कहलाता है। दूसरे शब्दो मे परिणामो की उत्तरोत्तर

विशुद्धि क साथ कषाय और शरीर का समीचीन रूप से कृश करना सल्लेखना व्रत कहलाता है।

जिज्ञासा *उत्तम और सच्ची साधना कौन-सी है?*

समाधान जो प्रदर्शन से परे हो वही सच्ची साधना है। सच्ची साधना मे सिद्धि की भी भावना या धारणा नही रह जाती।

जिज्ञासा *प्राणायाम के मायने क्या है?*

समाधान श्वास का अन्दर लेना, श्वास का बाहर निकालना और श्वास का रोकना - इन तीनो क्रियाओ का सामूहिक नाम प्राणायाम है।

जिज्ञासा *प्राणवायु का तात्पय क्या है?*

समाधान जो वायु हमारा जीवन धारण करती है उसे प्राण वायु कहते है

जिज्ञासा *कायोत्सर्ग से क्या अभिप्राय है?*

समाधान काय के प्रति ममत्व एव कषाय का उत्सर्ग कायोत्सर्ग है। दूसरे शब्दो मे मुक्ति और शक्ति सचयन की प्रक्रिया ही कायोत्सर्ग है।

जिज्ञासा *धर्म के क्षेत्र मे विवेक की महती आवश्यकता बतायी गई है - विवेक से क्या अभिप्राय है और यह किस प्रकार धर्म क्षेत्र मे सहायक होता है?*

समाधान विवेक मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। विवेक वस्तुत वह क्षमता है जिसके द्वारा उचित-अनुचित का भेद करना सम्भव होता है। विवेक ही मनुष्य को उचित एव गन्तव्य मार्ग पर बढने की प्रेरणा देता है। विवेकशील व्यक्ति पतन के अन्धकार मे से भी उत्थान का मार्ग खोज लेता है। इस प्रकार धर्म की तीक्ष्णता बनाए रखने के लिए विवेक का होना आवश्यक है।

जिज्ञासा *आज का दिशा बोध?*

समाधान 'जीवन' ही कर्तव्य है। आज जीवन के हर क्षेत्र मे अनैतिकता, अराजकता, अत्याचार का जो प्रदूषण फैला है उसे दूर करने के लिए देश के प्रत्येक नागरिक को प्रामाणिक बनकर अपने कर्तव्यो का पालन करना चाहिए। युवको को समाज की समरसता और उसकी एकसूत्रता को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए अखण्ड जीवट, अचल धैर्य, कर्म निष्ठा व प्रखर आत्मबल का सूत्र अपने जीवन मे धारण करना चाहिए। उन्हे निराश व हताश होने की आवश्यकता नही। विश्वास अपने आप मे अमर औषधि है।

कपटपूर्ण चालः अण्डों को कहना शाकाहार

> **अण्डें की प्राप्ति एक जीव के अन्दर से होती है किसी वनस्पति से नहीं। शाकाहारी पदार्थ मिट्टी, सूर्य की किरणों, जलवायु से विभिन्न तत्व प्राप्त कर उत्पन्न होते है। जबकि किसी भी प्रकार के अण्डे ऐसे प्राप्त नहीं होते। दोनों प्रकार के अण्डों की प्राप्ति मुर्गी से होती है व इनके रासायनिक तत्त्व (कैमिकल कम्पोजीशन) में कोई फर्क नहीं होता।**
>
> **- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि**

गाँधी जयन्ती, वर्षायोग 2004, गन्नोर (हरियाणा)

अण्डो को शाकाहारी कहना अनुचित है। अण्डा मुर्गी के बिना उत्पन्न नही हो सकता। शाकाहार प्रवर्तक उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी ने तथ्यो की दृष्टि से अवगत कराया है कि अण्डा खाना भ्रूण हत्या सदृश अपराध है। अण्डा मासाहार ही है अण्डो को शाकाहार कहना मासाहारियो का कपट पूर्ण प्रचार है। उपाध्यायश्री से दिल्ली मे भोजन मे अण्डे के प्रयोग को लेकर जो समाधान मेरी जिज्ञासाओ को मिला वह अचूक और अकाट्य था। वार्त्ता के प्रमुख अश इस प्रकार है - **भूपेन्द्र कुमार जैन** *।*

जिज्ञासा *क्या अण्डा सम्पूर्ण आहार है?*

समाधान नही।

जिज्ञासा *क्या केवल अण्डा खाकर मनुष्य जीवित रह सकता है और उससे काम करने के लिए अपेक्षित ऊर्जा/कैलोरियाँ मिल सकती है?*

समाधान सम्भव ही नहीं। आहार विज्ञान के अनुसार बैठक का काम करने वाले एक व्यक्ति को 2400, मध्यम दर्जे का काम करने वाले को 2800 और भारी श्रम करने वाले को प्रतिदिन 3000 कैलोरियो की आवश्यकता होती है तो क्या वह प्रतिदिन क्रमश 28,32 और 45 अण्डे खाकर काम करेगा। उसे यह सब जब भी मिलेगा तो

सतुलित आहार स प्राप्त होगा। एक अण्ड म कुल 87 5 कैलोरिया मिलती ह।

जिज्ञासा *क्या अण्डा शाकाहारी है*

समाधान अण्डा शाकाहारी हो ही नही सकता। वह भ्रामक प्रचार अण्डा व्यवसायियो का हे। शाकाहारियो क अण्डे के प्रति घटत लगाव को समाप्त करन क षडयन्त्र का असफल प्रयत्न है। अण्डा चाह फर्टिलाइज हो या इनफर्टाइल उसमे जीवाश होता है। यह बात अब मात्र कल्पना नही अपितु वज्ञानिको द्वारा प्रमाणित ठास सत्य ह। यह प्रचार कि इन्फर्टिलाइज (मुर्गी द्वारा सेय गय) अण्ड मे जीव नही होता पूरी तरह गलत है। अण्डे को शाकाहारी बताना एक व्यापारिक कपट ह। मिशीगन यूनिवर्सिटी (अमरिका) ने सन् 1971 म यह सिद्ध किया कि कोइ भी अण्डा निर्जीव नही हाता। दुनियाँ भर के आहार-विशेषज्ञो और पोषण वैज्ञानिको न साफ-साफ कहा है कि अण्डा सहत के लिए घातक है। सरकार भी लाक स्वास्थ्य की चिन्ता को ताक पर रखकर न सिर्फ इसे बढावा दे रही है वरन कपटपूर्ण भाषा म उसका अतिरजित प्रचार भी कर रही हे।

जिज्ञासा *अण्ड के समर्थन मे इतने सशक्त प्रचार का आखिर मकसद क्या है?*

समाधान अण्ड का शाकाहरियो के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बनान क लिए यह प्रयत्न है। धर्म, जो हमारे रचनात्मक सस्कार को हर क्षण जागरूक रखता था, भी आज अनास्था ओर उपक्षा का शिकार हा गया ह। मूलत भारत शाकाहारी दश है, अहिसक हे, प्रकृति प्रेमी है, कृषि प्रधान है। दश म अब इस प्रचार के माध्यम से लाक जीवन के रहन-सहन और खान-पान की आदत बदलने का काम जोर-शोर से चल रहा हे ओर इसमे अण्डा व्यवसायियो को काफी सफलता भी मिली है। अण्ड का उपयोग काफी बढा है, जगह-जगह पर मुर्गी पालन केन्द्रो (पोल्ट्री फार्म) का एक अन्तहीन जाल फैला दिया गया हे इन अप्राकृतिक वस्तुओ को बेचने के लिए नई-नई व लुभावनी शब्दावली का विकास कर लिया गया। जसे अण्डे का शाकाहारी बताना व अण्डे मे जीव न होने का प्रचार करना आदि।

जिज्ञासा *लुभावनी शब्दावली से आपका क्या अभिप्राय है?*

समाधान ''वेजीटेरियन'' की तर्ज पर एक शब्द आया ''एगीटेरियन''। इस शब्द से अण्डो को एगीटेरियन बता कर कहा गया कि जो अण्डे पोल्ट्रियो से मण्डी मे आ रहे है वे निर्जीव व शाकाहारी है और इनका प्रयोग शाकाहारी लोग भी निरापद रूप से कर सकते है। प्रकृति ने क्या अण्डे का सृजन प्रजनन के लिए नही किया? आज देश मे 60 हजार से भी अधिक पोल्ट्रियॉ है, जिनसे 14 अरब अण्डे प्रतिवर्ष उत्पादित होते है। अण्डा उत्पादन के क्षेत्र मे भारत का विश्व मे छठा नम्बर है। अण्डो के बढते उत्पादन

और निरन्तर उत्पादन के लक्ष्य को बढ़ाये जाने की कोशिश ने बड़े अण्डा व्यवसायियो की पैरो के नीचे की जमीन खिसका दी है क्योकि उत्पादन की तुलना मे खपत कम है। उनके लिए यह आवश्यक हो गया है कि अण्ड़ो को मण्डी मे फलने-फूलने के लिए भारतीयो और विशेष रूप से शाकाहारी लोगो की मानसिकता को धुआधार भ्रामक प्रचार माध्यम से अण्डे उनके उदर मे व किचन मे पहुँचा दिये जाये। इसमे उन्हे निरन्तर सफलता भी मिली है। नयी पीढी के युवक-युवतियाँ बाजारो मे, चौराहो पर खुलेआम निसकोच अण्डे को उबला आलू बता कर खाते है। यह शाकाहार प्रेमियो के गाल पर इन अण्डा व्यवसायियो का करारा तमाचा है।

ससार में दो प्रकार के जीव होते हैं। एक जड़ व दूसरे चेतन। मनुष्य, पशु-पक्षी व मछली इत्यादि चेतन जीव है। पेड-पौधे जड़ पदार्थो की श्रेणी मे आते है। पेडो के फल पककर अपने आप गिर जाते हैं। वृक्षों की टहनिया व पत्ते काटने पर फिर फूट पड़ते हैं। पौधों की कलमें लगायी जाती है एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाया जाता है और वे फिर उग आते हैं किन्तु किसी पशु-पक्षी के साथ ऐसा नहीं हो सकता कि उसका कोई अग काट दिया जाये और वह अग दोबारा आ जाये।



जिज्ञासा *पोल्ट्रियो मे अण्डो के विकास की क्या प्रक्रिया है?*

समाधान . आम उपभोक्ता यह नही जानता कि पोल्ट्रियो मे अण्डो का उत्पादन कितनी हिसक विधियो से होता है। मुर्गियो के अण्डे देते ही उन्हे इक्यूवेटर (सेटर) मे डाल दिया जाता है जिससे उसमे से 21 दिन की जगह 18 दिनो मे चूजे बाहर आ जाये। मुर्गियाँ इन स्थानो पर अण्डे स्वभाविक रूप/स्वेच्छा से नही देती अपितु उन्हे विशिष्ट हार्मोन्स और एग-फार्म्यूलेशन दिये जाते है। इन इजेक्शनो के कारण ही मुर्गियाँ लगातार अण्डे दे पाती है। इजेक्शनो का यह जहर इन अण्डो के माध्यम से सीधा इन्सानो के पेट मे भी पहुँचता है और अनेक बीमारियो को जन्म देता है। मुर्गियो को भी अक्सर टी बी , दमा आदि भयकर रोग लग जाते है।

जिज्ञासा *साधारणतया अण्डे कितने प्रकार के होते है।*

समाधान अण्डे दो प्रकार के होते है। एक वे जिनमे से बच्चे निकल सकते है दूसरे वे जिनसे बच्चे नहीं निकलते। मुर्गी यदि मुर्गे के ससर्ग मे न भी आये तो जवानी मे

अण्ड द सकती है। जिस तरह से प्रकृति ने मासिक धर्म की प्रक्रिया बनायी है उसी प्रकार मुर्गी के भी यह धर्म अण्डो क रूप मे होता है। इन्ही अण्डा को व्यवसायिक लोग अहिसक, शाकाहारी, एगीटरियन, वेज आदि भ्रामक नामो स पुकारते है किन्तु ये अण्ड शाकाहारी नही होते वे मुर्गी क आन्तरिक गन्दगी के परिणाम हे इन अण्डो की प्राप्ति भी एक जीव के अन्दर से होती है किसी वनस्पति से नही। शाकाहारी पदार्थ मिट्टी, सूय की किरणो, जलवायु से विभिन्न तत्त्व प्राप्त कर उत्पन्न होन हे, जबकि किसी भी प्रकार के अण्ड एसे प्राप्त नही होते। दानो प्रकार के अण्डो की प्राप्ति मुर्गी से होती है व इनम रासायनिक तत्त्व (कैमिकल कम्पाजीशन) मे कोई फर्क नही हाना। इन दोनो प्रकार क अण्डा म केवल एक ही भेद हा सकता है कि इन्हे अपरिपक्व (इम्मच्योर), मुर्दा या भ्रूण कहा जाये।

जिज्ञासा *नवजात चूजो क साथ व्यवसायी किस प्रकार दुर्व्यवहार करते है तथा उन्हे किन अवस्थाओ से गुजरना पडता हे?*

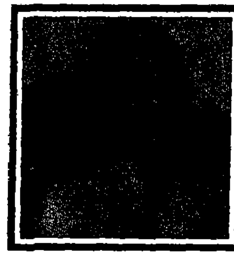
समाधान मुर्गी का बच्चा चूजा जेसे ही अण्डे स बाहर आता हे, नर तथा मादा बच्चो को पृथक-पृथक कर दिया जाता ह। मादा बच्चो का शीघ्र जवान करन क लिए एक खास प्रकार की खुराक दी जाती हे। उन्ह चौबीसो घण्ट तज रोशनी मे रखकर सोन नही दिया जाता ताकि ये दिन रात खा-खाकर जल्दी रज स्राव करने लगे और अण्डा दन लगे। अब इन्हे जमीन की जगह तग पिजरो मे रख दिया जाता हे, इन पिजरो मे इतनी अधिक मुर्गिया होती है कि व पख भी नही फडफडा सकती। तग जगह के कारण आपस म चोच मारकर जख्मी होती हे, क्रोध करती हे और कष्ट भोगती हे। जब ये अण्डे दती है ता अण्डा जाली से किनारे पकड कर अलग कर लिया जाता है और इस प्रकार मुर्गी को उसे अपन अण्डे सेन के प्राकृतिक कर्म स भी वचित कर दिया जाता है ताकि वे अगला अण्डा जल्दी दे।

जिज्ञासा *वनस्पति विज्ञान मे पेड-पौधो मे जीवन होने की मान्यता हे फिर मासाहार व शाकाहार मे भेद ही क्या रहा?*

समाधान ससार मे दो प्रकार के जीव होते है। एक जड व दूसरे चेतन। मनुष्य, पशु-पक्षी व मछली इत्यादि चेतन जीव है। पेड-पौधे जड पदार्थो की श्रेणी मे आते है। पेडो के फल पककर अपने आप गिर जाते है। वृक्षो की टहनियॉ व पत्ते काटने पर फिर फूट पडते है। पोधो की कलमे लगायी जाती है एक स्थान से उखाड कर दूसरे स्थान पर लगाया जाता हे और वे फिर उग आते है किन्तु किसी पशु-पक्षी के साथ ऐसा नही हो सकता कि उसका कोई अग काट दिया जाये और वह अग दोबारा आ जाये। पशु-पक्षियो को मनुष्य पोधो की तरह धरती से उत्पन्न नहीं कर सकता। बहुत से

त्यागी-वृतिलोग वृक्षो से फल पककर गिरने पर ही खाते है तथा उन्हे स्वय तोडते नही, जिससे न्यून पाप भी न हो।

अण्डे में सोडियम साल्ट की मात्रा इतनी होती है, जैसे एक अण्ड़े के खाने से आधा चम्मच नमक खा लिया हो। रक्तचाप के मरीजों के लिए तो यह बहुत ही हानिकारक है। अण्डे के सफेद भाग में नमक और पीले में कोलेस्टेरोल है। अण्डे में कार्बोहाइड्रेटस बिल्कुल नहीं होता फलस्वरूप कब्ज/जोड़ों में दर्द जैसी बीमारियाँ हो सकती है।



जिज्ञासा *अण्डो के प्रचार-प्रसार व उनकी आदत डलवाने के लिए व्यवसायी कौन-कौन से हथकण्डे अपना रहे है?*

समाधान पूना मे "नेशनल एग कोआर्डिनेशन कमेटी (नेएकोक) एक ऐसी सस्था है जो जी-जान से अण्डे को हर भारतीय के उदर व किचन मे पहुँचाने के लिए सकल्पबद्ध है तथा एडी-चोटी का जोर लगा रही है। इस सस्था ने केवल एक दिन मे मुम्बई, पूना, सागली, मिरज, जयपुर, इलाहाबाद और हेदराबाद मे जुलूस निकालकर "अण्डे खाने की आदत डालो" अण्डा "वेजीटेरियन फूड" (शाकाहारी खाद्य पदार्थ) है, के नारे लगाकर मुफ्त मे अण्डे बॉटे। लाखो की तादाद मे अण्डे बॉटे गये। कमेटी ने बेरोजगार नौजवानो को आमलेट, उबले अण्डे तथा अण्डे के सेडविच बेचने की हथठेलियो के लिए बैको से ऋण दिलवाया। देश के कोने-कोने मे 10 हजार लारियॉ अण्डो के प्रचार-प्रसार मे लगाये जाने का पुरुषार्थ किया।

जहॉ एक ओर अमेरिका और यूरोपीय देशो मे आहार शास्त्रियो ने खुराक मे अण्डे घटाने का मशवरा दिया है वही भारत मे नेएकोक प्रचार करा रहा है - "सड़े हो या मडे रोज खाये अण्डे"। अमेरिकी मेडिकल एसोसियेशन ने तो हाल ही मे कहा कि फूड पाइजनिग की घटनाओ मे अण्डे का बडा योगदान है। अण्डे मे रहने वाला सालमोनेल्ला बेक्टीरिया जो इसके लिए जिम्मेदार है। नेएकोक भारतीय उपभोक्ता को एगचाट, एगकरी, एगसलाद जैसे चटखारो से लुभा रहा है और धुँआधार प्रचार कर रही है।

जिज्ञासा *अण्डो मे शाकाहारी खाद्य पदार्थों की तुलना मे क्या पौष्टिक तत्व अधिक होते है?*

समाधान नहीं, बिलकुल नही। अण्डे का जो भाग खाया जाता हे उस (सफद और पीला बल्क) मे हमारी ऊर्जा प्राप्ति के लिए आवश्यक कार्बोहाइड्रेट तत्व नही हे। इसी प्रकार उसमे विटामिन "के" नहीं है और क्षारा की मात्रा भी अन्य खाद्य पदार्थो की तुलना मे बहुत कम हे।

100 ग्राम (लगभग दो अण्डे) अण्डो से जितना प्रोटीन मिलता है उतना ही गेहूँ से भी मिलता है। मूग, चना जैसी दालो से तिगुनी चौगुनी मात्रा मे प्राटीन मिलता है।

अण्डे (100 ग्राम/2 अण्डे) मे प्रोटीन 13 3 गेहूँ मे 13 2, मूग मे 24 0 तथा सोयाबीन मे 43 2 प्रोटीन है।

दो अण्डो (100 ग्राम लगभग) 1 20 रुपय, गेहूँ (100 ग्राम) पर 0 30 रुपये, मूग पर 0 80 रुपये व मायाबीन पर 0 50 रुपये खच आता हे। इससे सिद्ध होता हे कि 100 ग्राम अनाज पर इतन ही अण्डो की तुलना म बहुत कम खर्च आता है।

1 ग्राम प्रोटीन क लिए इस प्रकार अण्डे पर 10 पैसे, गेहूँ पर 4 पेसे, दालो पर 3 पैसे व सोयाबीन पर 1 पैसा खर्च आता हे।

कैलोरी (ऊर्जा) के हिसाब मे देखे तो 100 कैलोरी के लिए अण्ड पर 90 पैसे, गेहूँ पर 9 पैसे, दालो पर 8 पेस व सोयाबीन पर 5 पैसे खर्च आता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि अण्डे की अपक्षा शाकाहारी पदार्थ सस्त पडते है। अण्डो की अपेक्षा अन्य खनिज पदार्थ भी शाकाहार खाद्यो मे अधिक होते है इसलिये अण्डा अपूर्ण आहार है।

जिज्ञासा *अण्डे खाने से क्या नुकसान होते है?*

समाधान अण्डा मे कोलस्टेरोल की मात्रा अधिक हाती है। कालस्टेरोल धमनियो को सिकुडा देता है, जिससे लकवा या दिल का दौरा भी पड सकता है। कालेस्टेरोल की मात्रा अधिक पहुँचने से रक्तचाप की शिकायत पेदा होने लगती है।

अण्डे मे सोडियम साल्ट की मात्रा इतनी होती है, जैसे एक अण्डे के खाने से आधा चम्मच नमक खा लिया हो। रक्तचाप के मरीजो के लिए ता यह बहुत ही हानिकारक है। अण्डे के सफेद भाग मे नमक ओर पीले मे कोलस्टगेल है। अण्डे मे कार्बोहाइड्रेटस बिल्कुल नही होता फलस्वरूप कब्ज/जाडो मे दर्द जेसी बीमारियॉ हो सकती है।

पोल्ट्री फार्म की मुर्गियो को तरह-तरह की घातक दवाईयॉ दी जाती है, इनका अश अण्डा खाने पर पेट मे जाता है। अण्डो मे डी डी टी जेसा जहर भी पाया जाता है।

अण्ड़ा कफ पैदा करता है। इथियोपिया मे तो मान्यता है कि यदि गर्भवती महिला अण्ड खाये तो उसके बालक के सिर पर बाल नही होगे तथा उसमे प्रजनन शक्ति भी नही होगी।

अण्डा 8 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान पर सडन लगता है। अण्डे मे तुरन्त ऊर्जा देने वाले तत्व तथा शुगर, स्टार्च आदि भी नही है।

दूध और अण्डे को एक जैसा बताना बहुत बडी भूल है, क्योकि अण्डे मे बी-2, बी-12 तथा कैल्शियम, जो दूध मे पाये जाते है यथेष्ट मात्रा मे नही होते।

यह प्रचार किया जाता है कि भारतीय शाकाहार मे लोहा (आयरन), आयोडीन और विटामिन-ए की भारी कमी होती है, किन्तु अण्ड भी इसका कोई समृद्ध स्रोत नही है। एक अण्डे की अपेक्षा पालक मे विटामिन-ए का अधिक समृद्ध स्रोत है। यह अण्ड मे 25 गुणा सस्ता पडता है।

10 ग्राम अण्डे और धनिया की तुलना करे तो धनिये मे 14 1 ग्राम प्रोटीन, 16 1 ग्राम वसा, 4 4 ग्राम खनिज लवण, 0 63 ग्राम कैल्शियम, 21 6 ग्राम कार्बोहाइड्रेटस, 0 37 ग्राम फास्फोरस, 17 1 ग्राम लोहा प्राप्त होता है तथा 288 केलोरियॉ मिलती है, जबकि 100 ग्राम (दो अण्डे) अण्डे मे 13 3 ग्राम प्रोटीन, 1 0 ग्राम वसा, 0 06 ग्राम खनिज लवण, कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेटस नही, 0 22 ग्राम फास्फोरस तथा 2 1 ग्राम लोहा होता है।

भारतीय विज्ञापन मानक के 26 मई 1990 के निणय के अनुसार अण्डा सब्जी नही है। उसे इस नाम से बचना राष्ट्रीय और सामाजिक अपराध है। अण्डे मे (100 ग्राम) 13 3 प्रोटीन व मैथी मे 26 2 ग्राम प्रोटीन होता है। इसी प्रकार मूगफली भी अण्डे से हर प्रकार श्रेष्ठ है। मसूर की दाल की तुलना मे भी अण्डा बहुत कमजोर है।

आहार विज्ञानियो का स्पष्ट मत है कि परिवार के बजट मे अण्डो की जगह दूध को ही प्राथमिकता दी जाना चाहिए। एक तो दूध अण्डे की अपेक्षा सस्ता पडता है, दूसरे इसमे केल्शियम अधिक होता है।

साराश रूप मे अण्डे खाने से प्रमाणिक तथ्यो के अनुसार कफ पैदा होता है, विषावरोधी शक्ति का क्षय, आते सड जाती है, इसमे अनेको प्रकार के जहर होते है, हृदय-रोग, लकवा, एक्जीमा उत्पन्न करता है, बौद्धिक और भावनात्मक क्षति, कैसर की आशका बनी रहती है।

जिज्ञासा *अण्डा उत्पादन को लेकर सरकार का लक्ष्य क्या है?*

समाधान सरकार की योजनानुसार एक वर्ष मे प्रति व्यक्ति सौ अण्डे प्राप्त होने का लक्ष्य हे किन्तु अभी प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति उत्पादन 25 अण्डे है।

जिज्ञासा *आपका देशवासियो के लिय सदेश?*

समाधान उक्त तमाम तथ्यो से यह स्पष्ट होता है कि अण्डा की तुलना मे शाकाहारी पदार्थ बहुत सस्त हे। इसके अतिरिक्त पश्चिमी देशो मे अण्डो के हानिकारक परिणामो पर नये-नय अनुसधान हो रहे हे। अन्न स्वय अपने आप मे एक सम्पूर्ण आहार हे। डायटोलाजिस्ट (आहार-विशेषज्ञ) डॉ बसतभाई का कहना है कि अण्डे के 5 प्रतिशत फायदे है और ९५ प्रतिशत नुकसान है।

हम राष्ट्र स्तर पर आहार की समीक्षा नही करेगे ता समस्याएं भीषण रूप धारण कर लेगी। पश्चिम के देश अब अपनी गलती महसूस कर रह है और प्राकृतिक आहार की तरफ लाट रहे हे लेकिन भारतीय, विकृत जीवन शैली को अपनाने मे लग है। हमारा देश अहिसावादी हे। अहिसा उसके जीवन की अपरिहार्यता हे। अहिसा के माध्यम स ही देश स्वतन्त्र हुआ है। अहिसा, भारतीयो के जीवन की रीढ हे किन्तु इधर अण्डा, मास व मछली आदि उद्योगो ने हमारी सरचना को ध्वस्त कर दिया हे।

आहार का आचार पर सीधा प्रभाव पडता है। मनुष्य की सामाजिक, गार्हस्थिक तथा सास्कृतिक समरसताए भग हुई है। आपकी रसोई अब स्वदेशी सुगन्ध से वचित हो रही हे। पारिवारिकताए तो लगभग चोपट हो चुकी है। अत मै चाहता हूँ भारतीय सस्कृति के गौरव को बनाए रखने शुद्ध-शाकाहार ग्रहण करे।

जिज्ञासु *नमस्कार गुरुजी! आपकी कृपा से मुझे अनेक जानकारियॉ मिली, मन बडा प्रसन्न हुआ, आगे भी कृपा बनाएँ रखे।*

कत्लखाने :
भारत के भाल पर कलंक

मास निर्यात के रूप में हम विश्व मे हिसा, क्रूरता अनैतिकता एव पशुओं के साथ विश्वासघात का निर्यात कर रहे है। आज देश की जनसख्या के 65 प्रतिशत लोग मासाहारी है। यह स्थिति मास निर्यात व बूचडखाने खोलने को प्रोत्साहन दे रही है हमें भारत के लोगो को जागृत कर उनकी मानसिकता को बदलना है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

गाधी जयन्ती 1995 परेड ग्राउण्ड, दिल्ली

कत्लखानो ने भारत मॉ के हृदय को रक्तरजित कर दिया। अहिसा प्रेमियो की इस धन-धान्य पूर्ण धरा पर धन के लालचियो की चाल से कृषि का रूप बदल गया है। बढते कत्लखानो का कलक झेलने को जनमानस बाध्य है। उपाध्यायश्री का कहना हे कि ससार की मास निर्यात की नीति ने ही हिसा को बढावा दिया है। इसी प्रश्न से प्रेरित होकर मेने देश मे बढते कत्लखाने व व्यापक स्तर पर पशुओ के नरसहार पर दिगम्बर जैन राष्ट्र सन्त उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी से वार्त्तालाप किया। उपाध्यायश्री पारस पुरुप है। वे अविराम अपनी ओजस्वी लेखनी व मुनिचर्या की उग्र तपस्या व साधना से लोकमगल की कामना करते रहते है। पुरुषार्थ के धनी उपाध्यायश्री से हुई वार्त्तालाप के प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन** *।*

जिज्ञासा *पेट भरने के लिए क्या पशु वध करना न्याय सगत है? क्या मास बिना जीवन नही चल सकता?*

समाधान आहार के लिए मनुष्य को मास की आवश्कता बिल्कुल भी नही है क्योकि शाकाहारी भोजन सहज रूप से पर्याप्त मात्रा मे मिलता हे जो सस्ता, पोषक तत्त्वो से भरपूर है। मास, स्वास्थ्य, पशु-सम्पदा और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के लिए अभिशाप है। कत्लखानो ने हिसा, हत्या, क्रूरता और सवेदन शून्यता को आम बात बना दिया है।

हिसा का यह खौफनाक दौर हमारे देश म विदश स आया है। सरकार ने यान्त्रिक कारखानो को खोलने की अनुमति दी है।

क्या भारत जेसे देश के नागरिको को कत्लखाने रोकने के लिए इमानदार कोशिश नही करनी चाहिए। यह भ्रम भी फैलाया जा रहा ह कि मास ऐसी विधि स तयार किया जा रहा है जिसस पशुओ को किसी प्रकार की पीडा नही होती किन्तु मासाहार बिना हत्या/हिसा के उत्पादित कर पाना सम्भव नही ह। अकल अल-कबीर यांत्रिक कत्लखाने म (रुद्राम, हैदराबाद) म प्रतिवर्ष 1 लाख 50 हजार भैस व 6 लाख भड-बकरियाँ कटती है।

जिज्ञासा *कत्लखानो से पर्यावरण पर क्या असर होता है?*

समाधान कत्लखानो ने जहाँ बीमारियाँ बढायी ह वही दूसरी ओर इसस पर्यावरण दूषित होता है। कत्लखानो से निकलने वाला खून व कचरा अलग म एक समस्या है। कत्लखाना म अवध रूप से दुधारु पशुओ का भारी सख्या म कत्ल कर दिया जाता है। कत्लखाने क्योकि भारी प्रदूषण फैलात ह, इसलिए उनकी सफाइ व मास साफ करने मे पानी की बेहद फिजूलखर्ची होती है जो कि शाकाहार भोजन म अपेक्षाकृत बहुत कम होती है। कत्लखानो की गन्दगी नदियो मे बहा दी जाती है। जिसस जीवन का अनिवार्य जल तत्व दूषित हो रहा है और जल समस्या रोगो को जन्म द रही ह।

जिज्ञासा *फिर भी गुरुवर देश मे कत्लखान बढते ही जा रह है*

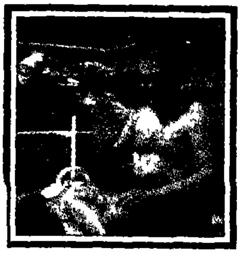
समाधान देश मे 38029 से अधिक वेध (लाइसेंसशुदा) कत्लखान ह। चार महानगरो मे स्वचालित यांत्रिक कत्लखान है ओर हजारो की सख्या म अवध कत्लखान भी ह। बूचडखाने कभी भी सभ्यता क प्रतीक नही हो सकते व बबरता, क्रूरता क ही केन्द्र है। सरकारी नीति ओर स्वाद लोलुपता, सस्कारो का अभाव ही कत्लखानो को जन्म द रहा है।

जिज्ञासा *विदेशी मुद्रा के लालच म नये-नये यान्त्रिक बूचडखाने आध्यात्मिक स्वरूप को कैसी चुनौती दे रहे है?*

समाधान विदेशी मुद्रा के लालच मे सरकार नये-नये यान्त्रिक बूचडखान खोलकर मास का निर्यात करने मे भारी रुचि दिखा रही है।

भारतीय सस्कृति मुगलो के काल मे इतनी प्रभावित नही हुई जितनी आज स्वतन्त्र भारत मे खुलेआम नष्ट हो रही है। इससे भारत का अध्यात्म स्वरूप सर्वथा नष्ट हो रहा है। जो भारत देश विश्व का आध्यात्मिक गुरु था अहिसा, सत्य, प्रेम, करुणा, दया, परोपकार "वसुधैव कुटुम्बकम्" का सदेशवाहक था, उसी भारत से आज मास का

निर्यात हो रहा है। मास निर्यात के रूप मे आप विश्व मे 'हिसा, क्रूरता, अनैतिकता एव पशुओ के साथ विश्वासघात का निर्यात' कर रहे है। आज देश की जनसख्या के 65 प्रतिशत लोग मासाहारी है। यह स्थिति मास निर्यात व बूचडखाने खोलने को प्रोत्साहन दे रही है। हमे भारत के लोगो को जागृत कर उनकी मानसिकता को बदलना है। सविधान का स्वरूप धर्म निरपेक्षता का है। दुधारु पशुओ, बैल व बछडो को सविधान मे सुरक्षा की गारण्टी दी है। केबल चैनलो व दूरदर्शन पर मासाहार का खुला विज्ञापन अहिसक समाज के लिए बडी चुनौती है।



"हर युग में अहिसा भारतीय सस्कृति का प्रतीक रही है। इस खोये हुए जीवन मूल्य की पुनर्स्थापना के लिए मासाहार का प्रयोग व चमडे से बनी वस्तुओं व अन्य दवाईया, सौन्दय प्रसाधन आदि से भारतीयो को मोह हटाना होगा तभी देश का पशुधन व भारत की अस्मिता की रक्षा व पशु सवर्धन हो सकेगा अन्यथा देश पतन के कगार पर खडा है ओर सारी आर्थिक व्यवस्था बदहाली की दहलीज पर खडी है।"

जिज्ञासा *गुरुवर! इसके लिए मुख्य रूप से कौन दोषी है?*

समाधान मासाहार की विकृत सस्कृति व मास निर्यात की नीति सर्वथा अनुचित है। नय-नये बूचडखानो का खोलना, जानवरो की खेती का रूप विकसित करना तथा नगरो स ग्रामीण क्षेत्र तक मे कत्लखाने लगाने की योजना इसके लिए दोषी है। जन प्रतिनिधियो की स्वार्थ लोलुपता मास निर्यात को बढावा दे रही है। हमारी असजगता, निष्क्रियता, उदासीनता व तटस्थता भी इसके मुख्य कारण है। हम ऐन मोके पर चुप रह जाते है और बाद मे अपना समय केवल बातो मे बर्बाद करते है। जब खेत ही बाढ को खाये तो क्या किया जाये। सोन्दय प्रसाधनो या फिर उपभोग के विभिन्न उत्पादको हेतु पशुओ की हिसा एव उन पर अत्याचार अनुचित है। जो राजनैतिक दल हिसा व पशु वध का समर्थन करती हो उसे कदापि चुनाव मे वोट व सहयोग न दिया जाये। चमडे स बनी वस्तुओ का धीरे-धीरे त्याग किया जाये। मासाहार के स्थान पर शाकाहार का प्रचलन बढाया जाये। अहिसक करदाताओ के पैसो का उपयोग केवल जन-कल्याण के लिए हो।

जिज्ञासा *भारत मे कितना पशु धन है एव मास नियात से सरकारे कितना धन कमाती है?*

समाधान इस समय मेरे पास वर्तमान आकडो की नई सूची नही आई है।

जिज्ञासा *कत्लखानो/बूचडखानो मे पशुओ की कत्ल दर कितनी है?*

समाधान देश मे पशुओ की कत्ल-दर - गोवश 1 45 प्रतिशत, भैस-पाडा 3 45 प्रतिशत, भेड 35 5 प्रतिशत, बकरे-बकरियाँ 35 8 प्रतिशत है।

अल-कबीर कत्लखाना एक वर्ष मे 1 लाख 80 हजार भैस-पाडे व 7 लाख भेड बकरियाँ काटेगा। आने वाले 5 वर्षो मे 832 करोड रुपये की विदेशी मुद्रा की हानि होगी क्योकि जितना चारा इत्यादि यह जानवर खाते है दूध, गोबर आदि देते है। इस सबकी गणना मे इनसे उपलब्ध मास की कीमत बहुत कम होगी। 12 लाख से अधिक लोगो के समक्ष रोजी-रोटी के लाले पड जायेगे। अल-कबीर ने केवल 325 लोगो को काम दिया है। इससे विश्व के 8 देशो मे 8 हजार तथा दिल्ली मे 76 मास बिक्री केन्द्र बने है। 20 हजार टन मास कुवैत और ईरान भेजा जाता है। यह बूचडखाना 300 एकड भूमि मे 40 करोड की लागत से बना है। एकत्रित किया गया लहू प्रोटीन, हीमोग्लोबिन टॉनिक आदि बनाने मे उपयोग होता है। इसका लक्ष्य प्रतिवर्ष 15 हजार टन जमा हुआ भैस का मास तथा तीन हजार टन गोमास है। सरकार को इसमे 60 करोड रुपये की विदेशी मुद्रा मिलेगी।

देवनार मुम्बई का कत्लखाना एशिया का सबसे बडा कत्लखाना है। कत्लखाने मे 1510 कर्मचारी है। भारत के पशुधन का मूल्य लगभग 40 हजार करोड रुपये है। प जवाहर लाल नेहरु व श्रीमती इन्दिरा गाधी ने कहा था कि 66 प्रतिशत ऊर्जा इन्ही पशुओ से मिलती है अत कत्लखाने न खोलो।

जिज्ञासा *गुरुदेव! जिस प्रकार दुकानो/प्रतिष्ठानो की एक दिन छुट्टी रहती है उसी प्रकार क्या कत्लखानो की छुट्टी नही रहनी चाहिए?*

समाधान जापान, आयरलेण्ड, फ्रास, पोलैण्ड, इण्डोनेशिया मे प्रत्येक रविवार को, सीरिया, अरब मे शुक्रवार को, जर्मनी मे हर शनिवार, रविवार को, पाकिस्तान मे प्रत्येक मगलवार, बुधवार को, श्रीलका मे प्रतिपदा अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा को कत्लखाने बन्द रहते है। हॉ, भारत मे भी कही किन्ही प्रदेशो की राज्य सरकार ने लोगो की भावनाओ का आदर करते हुए गणेश चतुर्थी, ऋषि पचमी, अनत चतुर्दशी, गॉधी जयन्ती, गॉधी निर्वाण, महाशिवरात्रि, राम नवमी, बुद्ध जयन्ती, महावीर जयन्ती, कृष्ण जन्माष्टमी,

गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, दीपावली एव कार्तिक पूर्णिमा को मॉस विक्रय तथा पशुओ के वध पर प्रतिबन्ध लगाया है।

जिज्ञासा *भारत की बिगडती हुई शक्ल को सुधारने हेतु क्या किया जाये?*

समाधान ज्ञात रहे! हर युग मे अहिसा भारतीय सस्कृति का प्रतीक रही है। इस खोये हुए जीवन मूल्य की पुनर्स्थापना के लिए मासाहार का प्रयोग व चमडे से बनी वस्तुओ व अन्य दवाईयो, सौन्दर्य प्रसाधन आदि से भारतीयो को मोह हटाना होगा तभी देश का पशुधन व भारत की अस्मिता की रक्षा व पशु सवर्धन हो सकेगा अन्यथा देश पतन की कगार पर खडा है और सारी आर्थिक व्यवस्था बदहाली की दहलीज पर खडी है।

जिज्ञासा *भारतवासियो को आपका सदेश?*

समाधान हिसा के समर्थन मे झूठा व भ्रामक प्रचार आज इतना शक्तिशाली है कि बिना योजनाबद्ध तरीके से सगठित हुए उससे जूझना सहज नही रह गया। फिर चाहे वह मासाहार का प्रचार हो या अण्ड का शाकाहार बताने का। इसलिए अहिसा आज निस्तेज होती जा रही है आप केवल अहिसा के कोरे सिद्धान्तो का वाचनिक चर्चा व व्याख्यान से हिसा के विगट मुह फाडे अजगर से लोहा नही ले सकते। आज देश को अहिसा के आचरण की नितात आवश्यकता है। इसके बिना शान्ति की कल्पना वैसी ही धूर्तता की पराकाष्ठा होगी जैसे चम्पक पुष्प को गुलाब बनाने की झूठी कोशिश करे या गेदे का फूल सूरजमुखी बनने का व्यर्थ नादान प्रयास करे। जहाँ अहिसा की प्रतिष्ठा होती है वहॉ जन्मजात वैर-विरोधी जीव अपने वैर का त्याग कर देते है। शक्ति शास्त्र-सज्जा मे ही नही प्रत्युत अभय मे भी है। मै भारतीय नागरिक को यही परामर्श, आदेश, आर्शीर्वाद दूँगा कि हिसा का प्रतिकार एव अहिसा के सवर्धन के लिए शक्ति का सचयन करे ओर विनाश के कगार पर खडे विश्व के सामने आदर्श प्रस्तुत करे।

भूकम्प की वजह : प्राकृतिक आपदा या कत्लखाने

विज्ञान और तकनीकी विकास ने बहुत प्रगति की है किन्तु प्रकृति मे अनेक रहस्य आज भी छुपे पडे है जिनको पूर्ण रूप से जान लेना विज्ञान के बूते की बात नहीं है। भूकम्प के विनाश से मानव सभ्यता का कैसे बचाया जाये इस पर कार्य करना अधिक उपयोगी है। **- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि**

30 जनवरी 2000, सोनीपत (हरियाणा)

भूकम्प प्राकृतिक आपदा तो है ही, किन्तु वैज्ञानिक भूकम्प का कारण, बढता मासाहार, प्राकृतिक असन्तुलन एव कत्लखान मान रहे है। गुरुदेव उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी की दिव्य दृष्टि न इस ओर अवलोकन किया है और इस तथ्य का उभारा है कि धरती बार-बार पापो के बढते भार से काप रही है।

उपाध्याय गुप्तिसागर मुनिराज ऐसे निग्रन्थ सत है जिनका अपरिमित ज्ञान, तप और त्यागमयी जीवन अद्वितीय है। प्रत्येक विषय पर उनकी सारगर्भित, तार्किक विवेचना विषय के नये-नये पहलू उद्घाटित करती है।

धरती के गर्भ म पलते-पनपते उमडते-घुमडते रहस्यो ओर रोमाचक घटना क्षणो की विस्तृत ओर रोचक जानकारी की जिज्ञासा को लेकर उपाध्यायश्री से भूकम्प जैसे भोगोलिक ओर वैज्ञानिक विषय पर बातचीत हुई, उपाध्यायश्री ने मेरी जिज्ञासो के सन्दर्भ म अनेक मान्यताओ, वैज्ञानिक पहलुओ और आकडो आदि के साथ प्रमाणिक व सटीक समाधान दिये। प्रस्तुत है उसके कुछ प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन।**

जिज्ञासा *भूकम्प क्या है?*

समाधान भूमि के गर्भ मे आन्तरिक हलचलो के कारण भूगर्भ की चट्टाने कभी-कभी अनायास तीव्र गति से कम्पन करने लगती है। इसी कम्पन को भूचाल या भूकम्प कहते है। धरती की सतह पर उसके गर्भ मे चट्टानी अथवा ज्वालामुखी तब्दीलियाँ होती रहती

है और जिस कारण कभी हल्के और कभी बडे तीव्र झटके आते है। फलस्वरूप विश्व के अनेक देशो मे जान-माल की भारी हानि हुई है/होती है। चीन मे सर्वाधिक साढे आठ लाख व्यक्तियो की मृत्यु का उल्लेख है जो विश्व मे रिकार्ड है। यह भूकम्प 23 जनवरी 1556 को आया था।

"



प्राचीन भारत में प्रख्यात ज्योतिषाचार्य वराह मिहिर की वराह सहिता में उल्लेख है कि किसी स्थान पर भूकम्प आने से एक-दो दिन पूर्व या एक-दो घण्टे पूर्व उस क्षेत्र मे चिडियों, कुत्तों, चूहों व सुअरों आदि जीव-जन्तुओं में असाधारण परिवर्तन आ जाता है। उनकी भाग-दौड, उछल-कूद में एक विशेष प्रकार की बैचेनी दिखाई देने लगती है जिससे भूकम्प आने का अनुमान लग जाता है।

"

जिज्ञासा *भूकम्प को लेकर विश्व के अनेक देशो मे विविध कथाये/लोकोक्तियाँ प्रचलित है कृपया आप उनके बारे मे बतलाईएगा?*

समाधान भूकम्प आदिकाल से आते रहे है। किन्तु कुछ देशो मे इनके प्रकोप भयकर रहे है वही पर इस प्रकार की कथाये प्रचलित है। भारत मे यह धारणा रही है कि पृथ्वी शेषनाग के फन पर स्थित है तथा उसके हिलने से भूकम्प आते है। ग्रीस के गणितज्ञ पेथागोरस का विश्वास था कि जब मृतक पुरुष आपस मे लडते है तो भूकम्प आते है। ग्रीस के ही अरस्तू नामक दार्शनिक का मत था कि पृथ्वी के भीतरी भागो से गैसो का बाहर निकलना ही भूकम्प का कारण है। साइबेरिया के कमचटका प्रदेश मे लोगो का विश्वास था कि कोसई नामक एक बडा कुत्ता जब अपने फरवाले बालो को झटकता है तब भूकम्प आते है। जापान का मत था कि पृथ्वी एक बहुत बडे मकडे पर स्थित है जिसके कभी-कभी चलने-फिरने से भूकम्प आते है। यूरोपीय देशो के पादरियो का यह भी विश्वास था कि भूचाल का कारण पृथ्वी पर पाप का बढना है। सलीबीस द्वीपो के कोरो क्षेत्र मे एक और मान्यता है कि "मारदिका पुद्' , जो पृथ्वी की आत्मा है, स्वर्ग के देवता एलाटाला ने पृथ्वी के अन्दर बैठने और जब-तब उसको हिलाते रहने के लिए कहा जिससे कि लोग एलाटाला को नहीं भुला सके। मुख्यत इन्ही देशो मे देशवासियो को बडे-बडे भूकम्पो से हताहत होना पडा है।

जिज्ञासा *गुरुदेव! कम-से-कम शब्दो मे भूकम्प विज्ञान का अर्थ बतलाइयगा?*

समाधान भूकम्प विज्ञान का अर्थ है प्रत्यास्थ तरगो (एलास्टिक वेवज) का विज्ञान। इसके अन्तर्गत भूकम्पो, विस्फोटको आदि के उदगम तथा पृथ्वी और चन्द्र आदि ग्रहो की बनावट के बारे मे अध्ययन किया जाता है। भूकम्प विज्ञान ही भूगर्भ शास्त्र का प्रमुख अग है, भूगर्भ शास्त्र का जहाँ ठास पृथ्वी, समुद्र वायुमण्डल एव आयत मण्डल की भौतिकी कहते है, वही भूकम्प विज्ञान मे भौतिकी, गणित, रसायन शास्त्र, भूविज्ञान एव साख्यिकी जैसे विषय सम्मिलित है।

जिज्ञासा *स्यूनामी से क्या अभिप्राय है?*

समाधान जल पर भूकम्प के प्रभाव से सम्बन्धित है यह। चिली, पीरु हवाई द्वीप और जापान के घनी आबादी वाले समुद्री तटो पर अक्सर पानी की 20 मीटर तक ऊँची लहरे उत्पन्न हो जाती है। इनको दक्षिणी अमेरिका मे मारमोतो, जापान मे तुनामी व अग्रजी मे स्यूनामी कहते है अधिकतर ये प्रशान्त महासागर के थलीय तटो पर उत्पन्न होती है क्योकि भूकम्प के उत्केन्द्र थल के पास की खाइयो मे होते है। अधिकतर स्यूनामी का कारण समुद्र मे भूकम्प होता है।

जिज्ञासा *मै आश्चयचकित हूँ कि जैन निग्रन्थ सन्त के पास इतनी गहरी जानकारी कहाँ से है। यह विषय तो धर्म से कोसो दूर है फिर भी इतना ज्ञान?*

समाधान मै ससार के किसी भी दर्शन/ज्ञान विषय को निरर्थक नही समझता। अध्ययन व सकलन (नोट्स) दोनो ही करता रहता हूँ। हर विषय की अपटूडेट जानकारी सकलित कर रखना मेरा स्वभाव है। मै अपना एक क्षण भी मुनिचर्या के अतिरिक्त खराब नही करता। नये-नये विषयो का अध्ययन-मनन करता हूँ।

जिज्ञासा *क्या भूकम्प की सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है*

समाधान भूकम्प विज्ञान का जहाँ काफी विकास हुआ है वही अभी तक भूकम्प की सटीक भविष्यवाणी कर पाना भूकम्प विज्ञान के वृत्त के बाहर है? परिस्थितियो का आकलन कर कभी-कभी केवल किसी विशेष क्षेत्र मे भूकम्प की सम्भावना ही व्यक्त कर पाया है भूकम्प विज्ञान। भारत मे जब भूकम्प वैज्ञानिको व इजीनियर्स से इस विषय मे पूछा गया तो उनका कहना है कि हमारा अधिक कार्य व अनुसधान भूकम्प से होने वाले नुकसान को रोकने पर है। किस प्रकार बडे-बडे बाँधो व इमारतो को भूकम्प के प्रभाव से रोका जा सकता है, इसी पर कार्य किया जा रहा है। हमारी सरकार के पास इतने आर्थिक ससाधन उपलब्ध नही है जिससे भूकम्प की भविष्यवाणी पर पैसा खर्च किया जाये। अधिक आवश्यक यह समझा गया कि भूकम्प से होने वाले विनाश से मानव सभ्यता को कैसे बचाया जाये इस पर कार्य करना अधिक उपयोगी है। इसके

लिये नये-नय उपकरणो का विकास, भूकम्प की प्रतिरोधक सामग्री का निर्माण, पूर्व मे आए भूकम्पो का अध्ययन आदि इसके क्षेत्र मे आते है।

जिज्ञासा *क्या वैज्ञानिक आधार के अतिरिक्त भी भूकम्प की भविष्यवाणी करने के अन्य कोई साधन है?*

समाधान **प्राचीन भारत में प्रख्यात ज्योतिषाचार्य वराह मिहिर की वराह सहिता में उल्लेख है कि किसी स्थान पर भूकम्प आने से एक-दो दिन पूर्व या एक-दो घण्टे पूर्व उस क्षेत्र में चिडियों, कुत्तों, चूहो व सुअरों आदि जीव-जन्तुओं में असाधारण परिवर्तन आ जाता है। उनकी भाग-दौड़, उछल-कूद में एक विशेष प्रकार की बैचेनी दिखाई देने लगती है जिससे भूकम्प आने का अनुमान लग जाता है।** चीन मे भी ऐसी ही मान्यता है। जापान मे देखा गया है भूकम्प आने से पहले मेढक व साप अपने बिलो से बाहर आ जाते है। भूकम्प को देवी प्रकोप समझकर मानव हताश और निरुपाय की भॉति इसे भोगता रहा है। ई सन् 1923 मे क्वातो भूकम्प के कई दिन पहले खाडी से मछलियॉ गायब हो गई थी। चीन के एक क्षेत्र मे सन् 1969 मे भूकम्प से कुछ घण्टे पहले चिडियाघर मे भगदड मच गई। मुर्गियो के बच्चे अपने दडबे मे नही गये। भेडे व घोडे लगातार दोडने लगे। सन् 1935 के चिली के भूकम्प मे सारे कुत्ते शहर छोड कर भाग गये। सन् 1972 के निकारगुहा भूकम्प मे कुछ घण्टे पहले बन्दरो ने भारी व अजीब तमाशा दिखाया। भूकम्प पूर्वानुमानो मे सबसे आवश्यक है कि भूगर्भ शास्त्री सभी क्षेत्रो मे भ्रशो की सूचना दे सके। आजकल इस विषय मे उपग्रहो से बडी सहायता मिलती है।

जिज्ञासा *विशाल भूकम्प कब आते है?*

समाधान भूकम्प वैज्ञानिको के अनुसार अध्ययन करने पर यह पाया गया है कि जब पृथ्वी के ऊपरी खोल मे 20 कि मी गहराई से प्रत्यास्थ ऊर्जा (एलास्टिक एनर्जी) सहसा बाहर निकलती है। वह भूपर्पटी के भगुर (ब्रिटिल) शैलो मे तनाव के रूप मे एकत्रित होती रहती हे और इस कारण उत्पन्न प्रतिबल जब भगुर शैलो की सहन सीमा को पार कर जाता है तो उनको विभगित कर देता है। शैलो के विभगन द्वारा उत्पन्न फटाव ही ऊर्जा के आकस्मिक निष्कासन का साधन है। इसी से तरगित होकर जमीन हिलने डुलने लगती है, जिसका विनाशकारी प्रभाव हम पृथ्वी की सतह पर अनुभव करते है।

जिज्ञासा *भूकम्पीय स्केल क्या होता है?*

समाधान केवल कुछ प्रश्नो और उत्तरो मे इसकी जानकारी भी मेरे पास है (फाईल देखकर बताता हू) - देखिए! भूकम्प विज्ञान और उसकी परिधि मे आने वाली समस्त

बातो को समेट पाना कठिन कार्य है। यह एक व्यापक विषय है और इस पर देश व विदेशो मे लाखो भूकम्प विज्ञान वेत्ता, इजीनियर, खगोल शास्त्री व भूगर्भ शास्त्री बडी-बडी भूकम्प अध्ययन व शोध सस्थाओ मे कार्यरत हे। आपकी जिज्ञासाये व मेरे उत्तर केवल जिज्ञासा के रूप म भूकम्प विषय पर आपका व दूसरे इसमे रुचि रखने वालो का मार्गदर्शन विषय के प्रारम्भिक रूप म हो सकता हे। मेरी जानकारी क अनुसार सन् 1935 मे भूभौतिक शास्त्री चार्ल्स रिक्टर द्वारा प्रथम बार रिक्टर स्केल/भूकम्प स्केल का अविष्कार किया गया। इसक द्वारा भूकम्प म उत्पादित ऊर्जा को नापा जाता हे। रिक्टर स्केल एक लघु गणितीय स्कल हे। जेसे-जसे भूकम्प विज्ञान का विकास हुआ इस दिशा मे नये अविष्कार व सुधार हुए।

जिज्ञासा *भूकम्प जेसे नीरस विषय म आपकी इतनी सटीक विवेचना मेरे रोमाच का कारण बनी रही है। आप कैसे जान गय कि मे आपसे भूकम्प विषय पर बात करने आने वाला हूँ जो आपने इतनी सामग्री जुटा रखी है। उपाध्यायश्री कृपया मेरे आश्चर्य का समाधान करे?*

समाधान मैने हिमाचल म शिमला और उत्तराचल मे बद्रीनाथ तक की पदयात्रा की। प्रकृति के अति निकट रहकर मैने अनेकश प्राकृतिक रहस्यो की अनुभूति की है। विज्ञान और तकनीकी विकास ने बहुत प्रगति की है, किन्तु प्रकृति म अनेक रहस्य आज भी छुपे पडे है जिनको पूर्ण रूप स जान लेना विज्ञान के बूते की बात नही है। विज्ञान भी कभी एक स्थान पर आकर नही रुक जाता उसमे सदैव ही नय-नये आयाम जुडते रहते हे। म प्रकृति प्रमी हू और रचनात्मक व सृजन कार्यो मे प्रयासरत रहता हूँ। मे सदैव एक जिज्ञासु क रूप मे नई स नइ जानकारी प्राप्त करने का इच्छुक रहता हूँ। यही कारण हे कि मेरे लिए आपकी जिज्ञासाओ का समाधान कर पाना सम्भव हो रहा हे। मे निरन्तर पुरुषार्थ रत रहता हू।

जिज्ञासा *चतुर्थ परमेष्ठि विज्ञान मे एक शब्द पढने मे आता हे भ्रश। इसका क्या अर्थ हे।*

समाधान चट्टानो म जो लम्बी-लम्बी दरारे पड जाती है उनको भ्रश कहते हे।

जिज्ञासा *गुरुदेव! भूकम्प के विशेषत क्या कारण होते है?*

समाधान सुनिये! भूकम्प आने के मात्र एक या दो ही कारण नही हे, या हम जिन कारणो को जानते है, उतने ही नही बल्कि अनेक कारण है। विज्ञान की यह विशेषता ह कि वह कभी-किसी भी स्थिति मे किसी अध्ययन या खोज को अन्तिम नही मानता और भावी सभावनाओ क लिए अपने द्वार प्रतिक्षण खुले रखता हे।

भूकम्प को लेकर जो अध्ययन हुए है, जब हम उनकी क्रमबद्ध समीक्षा करते है,

तब पता चलता है कि वे इकतरफा है, उनमे मात्र पार्थिव या भौतिक स्थितियो पर विचार किया गया है तथा उन स्थितियो को अनदेखा कर दिया गया है, जो भौतिकी के इलाके से बाहर निकल गई है, या उसके लिए विजातीय है। सन् 1995 मे दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन अध्येताओ डॉ मदन मोहन बजाज, एम एस एम इब्राहिम तथा विजयराज सिह ने सुजडल (रूस) मे चट्टानो में वधशाला-जनित भू-रेखिक प्रत्यस्थ पीडा-तरगो के पारस्परिक प्रभाव (इटरएक्शन ऑफ अबेटॉयर-जैनरेटेड नॉन-लीनियर इलास्टिक पैन वेव्हज इन रॉक्स) पर प्रयोगशाला मे प्रयोग किये। उन्होने दुनिया के सामने एक नई उपपत्ति प्रस्तुत की और अत्यन्त आश्वस्त भाव से स्थापित किया कि भूकम्पो की वजह हिसा, हत्या, क्रूरता, कत्लखाने और युद्ध है, यदि इन्हे बद या कम कर दिया जाये तो वे या तो सीमित हो जायेगे या उनकी तीव्रता मन्द पड जायेगी।

उनकी यह उपपत्ति (तर्क) काल्पनिक नही है, बल्कि उन तमाम वैज्ञानिको का समवत निष्कर्ष है जो इन तीनो से पहले भूकम्प की प्रक्रिया के प्रति लगातार सजग और चिन्तित रहे है।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइस्टाइन के नाम पर जिन "पीडा-तरगो" को अभिहित किया गया है, हम किसी भी हालत मे उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। आइस्टाइनी पीडा ससार की पीडा की सर्वोच्च तीव्रता है, जो तब अस्तित्व ग्रहण करती है, जब पशु-पक्षियो अथवा किसी भी जीवधारी का बूचड या कसाई खाने मे कत्ल किया जाता है। डॉ जगदीश चन्द बसु ने यह सिद्ध किया है कि धरती के गर्भ मे जो भी है वह सवेदनशीलता से भरपूर है, इसलिए यह सम्भव ही नही है कि ब्रह्माण्ड (यूनीवर्स) मे कहीं भी कुछ भी घटित हो और उसका एक-दूसरे पर प्रभाव न पड।

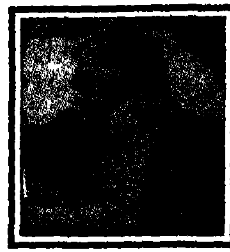
ऐसी स्थिति मे यह कैसे सम्भव है कि विश्व मे करोडो जीवधारियो को उनके प्रकृति-प्रदत्त जीने के अधिकार से अकाल वचित कर दिया जाए, उन्हे बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया जाये और कही कोई प्रतिक्रिया न हो?

एक सर्वेक्षण (सन् 1989) के अनुसार भारत मे प्रतिवर्ष वैध-अवैध रूप मे लगभग 15 करोड पशुओ को मासाहार के निमित्त मारा जाता है। भारत मे प्रति व्यक्ति मास-खपत का ओसत 1 25 किलोग्राम मास है, जिसे बढाकर 3 कि ग्रा करने की भरपूर कोशिश की जा रही है। 1 15 कि ग्रा मास-खपत की दृष्टि से 4,10,986 पशुओ की हत्या प्रतिदिन होगी। आप क्या सोचते है कि जब इतने पशु मारे जायेगे तब इस देश या विश्व की धरती अप्रभावित रहेगी? आश्चर्य की बात है कि जब ब्रिटेन जैसे विकसित देश ने गत दशक मे अपने 25 प्रतिशत कत्लखानो पर ताले डाल दिये है तब हम शहरी कत्लखानो (सिटी एबॉटॉयर्स/सीए) को ग्रामीण कत्लखानो (रुरल एबॉटॉयर्स/आरए) मे रूपान्तरित करने की एक व्यवस्थित योजना बना रहे है ताकि देश की जो प्राकृतिक

सरचना है, वह छिन्न-भिन्न हो जाए और वह जल-दुष्काल, भूकम्प, बाढ, अनावृष्टि इत्यादि के खूनी शिकजे मे कस जाए।

"

विज्ञान की आड़ लेकर तथा केवल भावनात्मक बात कह कर विषय की गम्भीरता को नकारा नहीं जा सकता। अभी भूकम्प वैज्ञानिकों को न तो पूर्ण रूप से विज्ञान का ही समुचित ज्ञान है और न ही अभी उन्होंने भूकम्प और कत्लखानों के आपसी सम्बन्ध पर व्यापक व गहराई से अध्ययन व अनुसधान किया है। आवश्यकता इस बात की है कि वैज्ञानिक इस पहल पर भी भूकम्प विज्ञान मे स्थापित कारणो के साथ-साथ गम्भीरता से अध्ययन, मनन व चिन्तवन करें ताकि आने वाले समय में मानव जगत को समुचित समाधान प्राप्त कर सत्य का साक्षात्कार करा सकें।



"

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री वास्तव मे कत्लखाने तो भारत मे बडी सख्या मे है। इसके कारण करोडो दुधारु व अन्य पशु प्रत्येक वर्ष काटे जा रहे है भारत सरकार धन कमाने के लिए और मास का निर्यात विदेशो मे कर रही है। क्या यह उचित है?*

समाधान इस समय देश मे 'साढे चार हजार' मान्यता प्राप्त कत्लखाने है तथा एक दर्जन के लगभग सुअर मास प्रसस्करण इकाइयो सहित 150 से अधिक छोटी-बडी मास प्रसस्करण इकाईयाँ है जिनमे प्रतिवर्ष 15 करोड पशुओ का वध होता है (7 5 करोड वैध तथा 7 5 करोड अवैध वधशालाओ मे) जिनमे प्राप्त चमडे का अथवा उससे निर्मित वस्तुओ का व्यापक निर्यात होता है।

वर्ष 1965-66 मे चमडे का जो निर्यात मात्र 32 करोड रुपये प्रतिवर्ष था वह 10 वर्ष मे 57 अरब 98 करोड रुपये हो गया और अब यह राशि बढकर दुगुनी हो गई है। अन्तर्राष्ट्रीय चमडा वस्तु मेला (I/LGF-98) मे यह भविष्यवाणी की गई थी कि वर्तमान मे चमडा वस्तुओ का 5700 करोड रुपयो का निर्यात बढकर 7000 करोड रुपयो से अधिक 7 खरब रुपये हो जाएगा, सच साबित हो रही है। विशेषज्ञो का निष्कर्ष है कि यदि भारत मे पशुओ का वध इसी रफ्तार से होता रहा तो 21वी सदी के अन्त तक पशुओ के अकाल का खतरा मडराने लगेगा। इतनी तेज रफ्तार से कत्लखानो का बढना व उनमे निरीह व मूक पशुओ का वध भारत के लिए अशुभ सकेत है। भारतीय सस्कृति

करुणा, दया, अहिसा, ममता व समता की रही हे। यहा **"अहिसा परमोधर्म "** का सदैव उद्घोष हुआ है। यहॉ विभिन्न धर्मो के गुरुओ व तीर्थकरो ने **"जिओ और जीने दो"** का सदेश दिया है। पशु हो या मानव कोई भी ससार मे मरना नही चाहता फिर इन बेबस जानवरो को केवल मास, सौन्दर्य प्रसाधन, जूते, पर्स, हैण्ड बैग व बैल्ट इत्यादि के निर्माण के लिए तथा मास निर्यात से कमाई के लिए वध करना सर्वाधिक क्रूर कृत्य है। इससे निरन्तर मानवीय सवेदना मे कमी आ रही है तथा आपसी भाई-चारा व परस्पर सहयोग की भावना कम हो रही है।

जिज्ञासा *कत्लखानो से मात्र भूकम्प का ही खतरा है अथवा अन्य भी कोई समस्या उत्पन्न हो सकती है*

समाधान हॉ क्यो नही? कत्लखाने भारी प्रदूषण फैलाते है। दश मे आज सर्वत्र पानी की कमी का बोलबाला है इस पर मास धोने मे साधारण शाकाहार भोजन की अपेक्षा चार गुना पानी बर्बाद होता हे। सिर्फ अल-कबीर कत्लखाने (रुद्रारम, आन्ध्रप्रदेश) मे प्रतिदिन 16 लाख लीटर पेय जल खर्च होता है। उसकी सालाना जल खपत 48 करोड लीटर है। केवल अप्रैल 1991 से मार्च 1992 की अवधि मे भारत से 195 करोड रुपये के मूल्य का मास तथा तज्जनित पदार्थ विदेश भेजे गये। जो भारत देश विश्व को अहिसा का सदेश देता था आज उसी से मास निर्यात किया जाना भारत के लिए लज्जास्पद तो हे ही साथ-साथ केवल विदेशियो के विनोद और स्वाद के लिए अपनी जमीन का रेगिस्तान मे बदलना कौन-सी अकलमदी है। भारत इसके परिणामस्वरूप जैव खाद से भी वचित हो रहा है। एक गाय से वर्ष भर मे 3500 कि ग्रा गोबर प्राप्त होता है, जिससे 17,885 रुपये के मूल्य की कम्पोस्ट खाद मिल सकती है। इसमे भी कोई सत्यता नही कि कत्लखानो मे पशु-पक्षियो को मानवीय पद्धति से मारा जाता है। देश के कत्लखानो मे एक अनुमान के अनुसार प्रतिदिन 60 हजार मवेशी (कैटल) मौत के घाट उतारे जाते है। भारतीय कत्लखानो मे सविधान के अनुच्छेद 48 का खुलेआम उल्लघन हो रहा है। सविधान मे बछडे, बैल और दुधारु पशुओ का वध प्रतिबन्धित है फिर भी उन्हे कत्ल किया जा रहा है। बूचडखानो से निकलने वाला कचरा खुद मे एक बहुत बडी समस्या बन गई है।

इस तथ्य पर घोर आश्चर्य होता है कि पशुओ को जो 14 करोड 50 लाख टन अनाज और सोयाबीन खिलाया जा रहा है, उसमे से प्रतिवर्ष केवल 2 करोड़ 10 लाख टन मास उत्पादित होता है अर्थात 20 अरब अमरीकी डालर मूल्य का 12 करोड 40 लाख टन अनाज प्रत्येक वर्ष नष्ट हो जाता है। उपर्युक्त राशि से विश्व की सम्पूर्ण आबादी के लिए एक वर्ष के लिए खाना, कपडा और मकान दिलाने मे भारी योगदान मिल सकता है।

जिज्ञासा · *क्या आप भी ऐसा* मानते है कि कत्लखाने भूकम्प का कारण हो सकते है? क्या यह केवल भावनात्मक बात नही है क्या इसके पीछे कोई वैज्ञानिक तथ्य भी है? क्या इस सिद्धान्त का मान्यता मिली है?

समाधान यह जानकारी वर्ष 1995 मे प्रथम बार कुछ तथ्यो के आधार पर दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन वैज्ञानिको डॉ बजाज, डॉ सिह और एम एस एम इब्राहिम ने दी। उन्होने जून 1995 मे सुजडल (रुस) मे "बिस सिद्धान्त" प्रतिपादित किया। 'बिस सिद्धान्त' के अनुसार भूकम्प की वजह कत्लखाने, क्रूरता आदि है।

'बिस सिद्धान्त' को अभी वैज्ञानिक मान्यता तो नही मिली किन्तु अब दुनिया के विचारको और वैज्ञानिको ने उस पर विचार करना प्रारम्भ कर दिया है। क्या हमे मानवीय और भावनात्मक गठन की चिन्ता नही करनी चाहिए। हमारे वैज्ञानिको को इस तथ्य की परीक्षा करनी चाहिए कि भूकम्प विज्ञान के सिद्धान्तो के अनुसार कत्लखाना का देश के जैव-मण्डल (बॉयो-अटमास्फिअर) पर क्या असर पडता है। जब एक पौधे को छूने, उखाडने या काटने मात्र से कोई घटना घटित होती है तब फिर कैसे सम्भव है कि इतने सारे पशुओ का कत्ल हो और कही कुछ घटित न हो।

जिज्ञासा दिल्ली विश्वविद्यालय के जिन तीन वैज्ञानिको ने भूकम्प की वजह कत्लखाने, हिसा व क्रूरता आदि को बतलाया है उन्होने पीडा-तरगो की नई अवधारणा भी प्रस्तुत की है।

समाधान वे कहते है, कत्लखानो को भूकम्प की वजह चाहे तर्क सगत न मानी जाये और इसे कोरी कल्पना व भावनात्मक बात कहा जाये किन्तु इस पर शोध की सम्भावना से कतई इन्कार नही किया जा सकता। भले इसे आज मान्यता प्राप्त न हो किन्तु वह समय आ सकता है जब इस रहस्य पर से पर्दा उठे। डॉ जगदीश चन्द बसु ने जब प्रथम बार पेड-पौधो मे जीवन होने की बात कही थी उस समय उस पर भारी बवाल मचा था समय बीतता गया और आखिरकार इस सिद्धान्त को मान्यता प्राप्त हुई। क्रूरताओ की शक्ति के बढने से कई भौतिक और भावनात्मक समस्याये एव सकट उत्पन्न हो गये है। ससार का प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी रूप मे सृष्टि के सृजन के लिए अदृश्य शक्ति को जिम्मेदार मानता है और इस प्रकार सभी प्राणी आन्तरिक रूप से जुडे हुए है, किन्तु विडम्बना यह है कि मनुष्य जैसा बुद्धिजीवी निरीह प्राणियो को मारकर अपनी उदर पूर्ति मे रस लेता है। कत्लखानो से भूकम्प आने की बात मात्र भावनात्मक पहलू नही है इसका सम्बन्ध ऐसे अनेक रहस्यो से है जो अभी पूर्ण रूप से उद्घाटित नही हुए। ससार मे भावना के बिना कुछ नही होता। प्रकृति, पशु-पक्षी और मानवो के मध्य एक घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन तीनो की समग्रता जब छिन्न-भिन्न की जाती है तब व्यवधान होता है। विज्ञान ने शरीर को भले ही तृप्त किया हो किन्तु मन अशान्त है

और आत्मा प्यासी है और इसका मूल कारण है भावनात्मक रिश्तो के प्रति उदासीनता।

जिज्ञासा *इस विषय पर थोडा और प्रकाश दीजिएगा?*

समाधान सन् 1934 मे बिहार मे बहुत बडा भूकम्प आया था उस समय महात्मा गाँधी ने कहा था यदि मनुष्य-मनुष्य के बीच वैमनस्य, जात-पात आदि को लेकर चल रहे झगडे समाप्त कर दिये जाये तो भूकम्प आने बन्द हो जायेगे। इस पर रविन्द्रनाथ टैगोर ने गाँधी जी से कहा था कि मै आपका बडा सम्मान करता हूँ किन्तु आपने जो भावनात्मक प्रचार का सहारा लेकर भूकम्प का कारण जात-पात व आपस का वैमनस्य आदि बताया इससे मै बिल्कुल सहमत नही हूँ तथा इसे मै अनुचित प्रयास कहूँगा। विज्ञान और भावना को मिलाना सर्वथा अनुचित है।

भूकम्प से विनाश के बाद उपायो से पहले सम्भावित विनाश से बचाव की तैयारी करने का मशवरा देते हुए वास्तुकारो एव अभियान्त्रिको से जनवरी 2000 मे आयोजित एक सगोष्ठी मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ ए एस आर्य ने कहा कि पहले हमे भूकम्प प्राय (अर्थक्वेक प्रोन) की पहचान करनी होगी उसके बाद क्षेत्रो की परिस्थितियो के अनुकूल भवन निर्माण व सम्भावित विनाश रोधक उपाय करने चाहिये। उन्होने भारत के समस्त उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को भूकम्प वाला बतलाया तथा कहा कि देश के भूकम्प बहुल 14 क्षेत्रो मे उत्तर के पर्वतीय क्षेत्रो मे उत्तरकाशी, चमोली तथा टिहरी क्षेत्र सर्वाधिक सवेदनशील है, यहॉ पर कभी भी भू-स्खलन हो सकता है। उन्होंने लातूर, अण्डमान-निकोबार क्षेत्र को भूकम्प सम्भावित क्षेत्र बताया था। डॉ आर्य ने भूकम्प के विनाश का मुख्य कारण असुरक्षित, असुविधाजनक सघन निर्माण कार्य बताया है। इतना ही नही सरकारी भवन निर्माण प्राधिकरण और समितियॉ भी अमानक भवनो का निर्माण करा रही हैं। उन्होने आर्चिटेक्टस्, इजीनियर्स से आग्रह किया कि वे परस्पर समन्वय के साथ भूकम्प विनाशयुक्त भवनो के निर्माण के लिए पहले से ही बचाव की पूर्व तैयारी करे।

रुडकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री डॉ भरतसिह ने कहा कि 'टिहरी बाध' के प्रारम्भ मे कुछ लोगो द्वारा बाध के भूकम्परोधी होने के प्रति आशका व्यक्त की थी तथा भारी शोर-शराबा मचाया था तथा उस समय तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व श्रीमती इन्दिरा गाधी से मिलकर रुडकी के भूकम्प विशेषज्ञो ने उन्हे समझाया था कि बाध को भूकम्परोधी बनाया जा सकता है, लेकिन टिहरी क्षेत्र मे आये भयानक भूकम्प के बावजूद बाध को कोई क्षति नहीं पहुँची थी। ध्यान रखिए! बड़े से बड़े निर्माण को भी भूकम्परोधी बनाया जा सकता है। बगाल इजीनियरिंग ग्रुप एण्ड सैन्टर के कमाडेन्ट ब्रिगेडियर आर एस जामवाल ने जानकारी दी कि सेना को भी भूकम्परोधी मकानो व बकरो की आवश्यकता है और सेना के इजीनियर ऐसे ही भवनो और बकरो का निर्माण कार्य कर रहे है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री आपकी उपयुक्त तथ्यो के परिपेक्ष्य मे क्या प्रतिक्रिया है?*

समाधान विज्ञान की आड लेकर तथा केवल भावनात्मक बात कह कर विषय की गम्भीरता को नकारा नही जा सकता। अभी भूकम्प वैज्ञानिको को न तो पूर्ण रूप से विज्ञान का ही समुचित ज्ञान है और न ही अभी उन्होने भूकम्प और कत्लखानो के आपसी सम्बन्ध पर व्यापक व गहराई से अध्ययन व अनुसधान किया है। आवश्यकता इस बात की है कि वैज्ञानिक इस पहल पर भी भूकम्प विज्ञान मे स्थापित कारणो के साथ-साथ गम्भीरता से अध्ययन, मनन व चिन्तवन करे ताकि आने वाले समय मे मानव जगत को समुचित समाधान प्राप्त कर सत्य का साक्षात्कार करा सके। इधर भूकम्प का जो नया शास्त्र उभर कर आया हे उस पर लोगो का ध्यान भले ही ठीक से न गया हो लेकिन उन धर्मवेत्ताओ तथा भूकम्प विज्ञानियो को एक साथ बैठकर तथ्य की समीक्षा करनी चाहिए कि क्या भूकम्प आने की मात्र कोई जड वजह है अथवा कोई ऐसा कारण भी है जिसे क्रूरता, हिसा, हत्या, युद्ध और कत्ल की सज्ञा देते है? 27 जनवरी 2001 के बाद देश-विदेश मे जो भूकम्प आए है ओर नेपाली हत्याकाण्ड के बाद वहॉ जो भूकम्प आया है क्या हम उसका विश्लेषण नही करेगे और यह पता नही लगाएगे कि धरती कम्पन के पीछे मनुष्य की नृशसता और बर्बरता भी एक कारण है?

जिज्ञासा *सत्य वचन! हिसक आचरण ही भूकम्पन का जनक है।*

गुरुदेव! मै आपसे बहुत प्रभावित हुआ अनेक समाधान मिले। भविष्य मे ऐसी ही कृपा दृष्टि रखिएगा। आशीर्वाद दे। नमोऽस्तु ।

- सम्पादक *(1 जनवरी 2004 को सूनामी लहरो के भीषण प्रकोप के बाद जनसामान्य को इन भयकर तूफानी लहरो के नाम का अभिज्ञान हुआ, लेकिन 5 वर्ष पूर्व लिए गए इस साक्षात्कार मे सूनामी की व्याख्या पूज्य गुरुदेव के तलस्पर्शी ज्ञान की द्योतक है)*

विकट समस्या :
जनसंख्या विस्फोट

भारत में आज भी साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है। भारत की आत्मा ग्रामीण क्षेत्रो में बसती है, जहाँ शिक्षा का बड़ा अभाव है तथा जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र की अधिक आबादी अपने परिवार को नियोजित करने के अहम मुद्दे की ओर जागरूक नहीं है। सम्भवत गरीब लोगों के मन में आज भी यह भावना काम करती है कि घर के सदस्यो की सख्या जितनी अधिक होगी उतने ही काम करने वाले हाथ ज्यादा होंगे। उनकी मानसिकता मे अपेक्षित बदलाव सरकार द्वारा अरबों रुपया जनसख्या वृद्धि को रोकने पर खर्च करने के बाद भी नहीं आया। शिक्षित समाज में अपेक्षाकृत जागरूकता आयी है, किन्तु वे भी सयमी जीवन को न अपनाकर अधिक जोर परिवार नियोजन के कृत्रिम उपायों पर ही दे रहे है। केवल कृत्रिम उपायों से ही यह समस्या सुलझने वाली नहीं है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

अहिसा महाकुम्भ, 1 जनवरी 2001, लाल मन्दिर, दिल्ली

क्रान्तिकारी दिव्य सन्त, महान चिन्तक, प्रख्यात साहित्यकार एव असाधारण दिगम्बर जेन मुनि उपाध्याय गुप्तिसागर जी से जनसख्या वृद्धि की चुनौतियो के सन्दर्भ मे हुई बातचीत के प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन** *।*

जिज्ञासा *21वी सदी मे विश्व मे विशेष रूप से भारत की बढती जनसख्या के फलस्वरूप किन चुनौतियो का सामना करना पडेगा?*

समाधान चुनौतियॉ ही मनुष्य को कर्म पथ पर साहस के साथ आगे बढने की प्रेरणा देती है। चुनौतियॉ तो जीवन का अभिन्न अग है। 20वी सदी अपने अवसान पर है और 21वीं सदी दुनिया के द्वार पर दस्तक दे रही है। आने वाली सदी की सबसे बडी चुनौती जनसख्या विस्फोट की होगी।

भारत की जनसख्या 1991 जनगणना क अनुसार 84 करोड 63 लाख थी जो बढ़कर सयुक्त राष्ट्र के आकलन के अनुसार 1998 मे 97 करोड 58 लाख तक पहुची। इस सदी के अन्त मे यह एक अरब के लगभग हो गई है। इस निरन्तर बढती आबादी ने देश की समस्त प्रगति को छिन्न-भिन्न करके रख दिया है। भोगवादी सस्कृति के कारण ससाधनो का दोहन बेतहाशा हो रहा है और मनुष्य असयमी जीवन जी कर समस्याओ को घटाने की अपेक्षा उन्हे निरन्तर बढा रहा है। बेरोजगारी, आवास पीने का पानी, शिक्षा, विद्युत आपूर्ति स्वास्थ्य आदि सभी दिशाओ मे निराशा व्याप्त है। हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति स आगे निकल जाने की होड मे अनैतिक तरीके स जीवन यापन करने को तैयार है। जिसके फलस्वरूप लूट, बलात्कार, अपहरण, अराजकता, आतकवाद, तस्करी जेसी घातक समस्याये अपनी जडे गहरी करती चली जा रही है।

जिज्ञासा *गुरुवर! क्या रुढिवादी सोच इसमे कारण नही है?*

समाधान अन्ध-विश्वास और रुढिवाद ने अपनी जडे जमा ली है। भारत मे आज भी साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है। भारत की आत्मा ग्रामीण क्षेत्रो मे बसती है, जहाँ शिक्षा का बडा अभाव है तथा जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र की अधिक आबादी अपने परिवार को नियोजित करने के अहम मुद्दे की ओर जागरूक नही है। सम्भवत गरीब लोगो के मन मे आज भी यह भावना काम करती है कि घर क सदस्यो की सख्या जितनी अधिक होगी उतने ही काम करने वाले हाथ ज्यादा होगे। उनकी मानसिकता मे अपेक्षित बदलाव सरकार द्वारा अरबो रुपया जनसख्या वृद्धि को रोकने पर खर्च करने क बाद भी नही आया। शिक्षित समाज मे अपक्षाकृत जागरूकता आयी है, किन्तु वे भी सयमी जीवन को न अपनाकर अधिक जोर परिवार नियोजन के कृत्रिम उपायो पर ही दे रहे है।

जिज्ञासा *क्या कृत्रिम उपायो से यह समस्या सुलझेगी?*

समाधान केवल कृत्रिम उपयो से ही यह समस्या सुलझने वाली नही है। जब तक मनुष्य अपने खान-पान को शाकाहारी व अपने जीवन मे पर्याप्त सयम को स्थान नही देगा अर्थात् वह ब्रह्मचर्य की महत्ता को जीवन मे स्थान नही देगा, इस बढती आबादी पर काबू नही पाया जा सकेगा। दुनिया की दूसरी सबसे बडी आबादी वाले देश भारत मे विश्व की कुल जनसख्या के 16 प्रतिशत लोग रहते है, जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से

यह विश्व का कुल 2 42 प्रतिशत भाग है।

जिज्ञासा : *अच्छा गुरुदेव। अन्य कौन-सी कठिनाई आ सकती है?*

समाधान सर्व विदित है, देश मे पानी, ईधन, वन, पैट्रोलियम पदार्थ व खनिज पदार्थ आदि के स्रोत दिन-प्रतिदिन कम होते जा रहे है। ऐसे में यदि आबादी पर नियन्त्रण न रखा गया तो ससाधन तो छटते जाएगे और माग बढती जायेगी और इस बडे असुतलन का लाभ पैसे वाले व शारीरिक शक्ति (मसल पावर) वाले हडपने के लिए अपनी अनैतिक व अपराधिक गतिविधियो से देश की सभ्यता व सस्कृति को चिन्दी-चिन्दी करके रख देगे। विज्ञान और तकनीकी की सारी आधुनिक प्रगति धरी-की-धरी रह जायगी। चहुँ ओर जगलराज जैसा होगा। समर्थ दूसरो का हिस्सा छीन ले जायेगा। रोटी-रोजी, मकान, पानी, जन-स्वास्थ्य, विद्युत आपूर्ति, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रो मे भीष्म समस्याये खडी हो जायेगी।



"जनसख्या विस्फोट को रोकने के लिए शिक्षा का प्रसार और विशेष कर ग्रामीण व पिछडे क्षेत्र की महिलाओं को साक्षर कर उनमें परिवार सीमित रखने की आवश्यकता के प्रति सजगता का भाव व जीवन में सयम का अभ्यास बढ़ाने की जागरूकता पैदा करना होगी। उनमें सतान उत्पत्ति की दिशा में चली आ रही रुढ़ियाँ व अन्धविश्वास के अँधेरों से उन्हें बाहर लाना होगा।"

जिज्ञासा *इस जनसख्या विस्फोट का सबसे बडा कारण आप क्या मानते है?*

समाधान महिलाओ और विशेषकर ग्रामीण व श्रमिक महिलाओ मे परिवार सीमित रखने के लिए पर्याप्त जागरूकता व उसके लाभ के प्रति विश्वास का उत्पन्न न करा सकना एक बहुत बडा कारण है। इस पर अशिक्षित क्षेत्र व आदिवासी जातियो मे पनपते अन्ध-विश्वास 'कि ईश्वर ही सन्तान देता है और वही उन्हे खाने के लिए भी अन्न देगा इसीलिए वे इस तरह से असावधान रहते है।' राजनैतिक व भौगोलिक कारणो से अपनी आबादी बढाने के लिये कुछ धार्मिक सस्थाये इसमे रुचि नही लेती।

वे समय की चुनौतिया से पलायन कर उनसे ऑख मिलाने के बजाए कट्टरपथियो व राजनैतिक हित साधने वालो के बहकावे मे आकर वस्तु-स्थिति का आकलन ही नही करना चाहते। इसका नतीजा यह हो रहा है कि बेरोजगारी की मार से वे और अधिक पिछडते जा रहे है और साधनो को झपट कर मुहैय्या कराने की होड मे आपराधिक व आतकवादी गतिविधियो मे लिप्त होते जा रहे है। साक्षरता की कमी भी इसका प्रमुख कारण है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 50 वर्ष बाद भी महिलाओ की साक्षरता का अनुपात महज 38 प्रतिशत है। इन वर्षो मे यदि महिलाओ को साक्षर करने पर अधिक ध्यान दिया जाता तथा उन्हे अन्ध-विश्वास व रुढियो से बाहर लाया जाता, तो आबादी पर निश्चित रूप से अकुश लग सकता था।

जिज्ञासा *आबादी वृद्धि की समस्या से और कौन-सी सामाजिक एव पारिवारिक समस्याये उत्पन्न हो सकती है?*

समाधान ससाधनो व आपूर्ति का असतुलन देश के युवको मे निराशा, हताशा व बेरोजगारी को जन्म देगा क्योकि हम इतनी बडी आबादी को न तो रोजगार दे पाएगे, न मकान, न शिक्षा। इससे निश्चित रूप से अनैतिकता, अराजकता, भ्रष्टाचार व अन्य अपराधिक गतिविधियो को बढावा मिलगा। जमीन तो उतनी ही रहेगी, फिर लोगो के रहने के लिए जगह कहॉ से आयेगी? जनजीवन यान्त्रिक (मशीनीकरण) होता जा रहा है और परिवार की आवश्कताओ की पूर्ति मे ही इतना समय आज परिवार के सदस्यो का लग जाता है कि उन्हे अपने ही परिवार के सदस्यो से सवाद करने का समय नही मिल पाता। जिससे परिवार टूट रहे है और उनमे परस्पर प्रम घट रहा है तथा उनकी सन्तान उद्दण्ड व अपराधिक होती जा रही है। जब परिवारो का यह हाल है तो समाज व राष्ट्र मे ऐसे लोग परस्पर मैत्री, सद्‌भाव, भाईचारा बनाये रख सकेगे मुझे नही लगता। जब देश मे आत्म-निर्भरता व स्वभिमान घटेगा तथा हम प्रतिदिन शिक्षित व प्रतिभावान युवको को अच्छे साधन व सुविधा नही दे पायगे तब हम प्रतिभा पलायन को कैसे रोक पायेग।

जिज्ञासा *गुरुवर! मानव जीवन को दुर्लभ कहा जाता है क्या जनसख्या वृद्धि से इस धारणा पर भी कोई प्रभाव पडेगा?*

समाधान सच यही है जनसख्या वृद्धि के कारण जीवर्न वरदान के वनस्पत् एक

अभिशाप बनने जा रहा है। मानव की भोगवादी लिप्सा, नारी को भोग की वस्तु समझे जाने लगी है व अशिक्षा के कारण बढती आबादी ने मानव की शान्ति, सुरक्षा, सस्कृति, प्राचीन सभ्यता व धार्मिक मान्यताओ का भारी हानि पहुँचायी है। बढती आबादी के कारण, देशवासियो की मूलभूत आवश्यकताये रोटी, रोजगार और आवास मुहैय्या न करा सकने के कारण हम विदेशो के कर्जदार बन गये है और विश्व बैक व बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के आगे देश के सम्मान व अर्थतन्त्र को नष्ट-भ्रष्ट कर ऋणा के कुचक्र मे फसते चले जा रहे है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ही तर्ज पर विश्व बैक सस्था देश को हर आर्थिक मोर्चे पर किसी न किसी रूप मे अपने अनुसार चलाने को बाध्य कर रही है और हमारी सस्कृति, चिन्तन, खान-पान को बिगाडने मे लगी हुई है। आज दुनिया की 83 करोड आबादी भूख और कुपोषण का शिकार है और दुनिया के 20 करोड नौनिहाल ऐसे है जो भूख के कारण काल के गाल मे समा रहे है। आज भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महगाई, शोषण, कुपोषण प्रदूषण आदि सभी समस्याये इन जनसख्या विस्फोट के कारण ही है। हमे मानव जीवन को सार्थक करने हेतु भी मानव को निकालना होगा। प्रतिपल समस्याओ से जूझने वाला मानव अपने जीवन को कैसे दुर्लभ समझेगा।

जिज्ञासा *जनसख्या को नियन्त्रित करने के लिए आप क्या सुझाव देगे?*

समाधान एक सन्त इस बारे मे अधिक जोर खान-पान मे शुद्धता, शाकाहारी भोजन, रहन-सहन मे सादगी पर ही देगा जिसस ब्रह्मचर्य सन्तुलन बना रहे और लोग सयमी जीवन बिताकर अपने परिवार को नियोजित रखे। इसके लिए आज की युवा पीढी को सन्तुलित आहार पर जोर देने व शाकाहार चेतना जगाने के लिए काम करना होगा। शाकाहार - प्यार, वात्सल्य, करुणा, सरलता, सादगी, सयम और समता की डगर है। इन प्रवृत्तियो के जागृत होने से मनुष्य के अधिक विवेकशील व सयमी होने से जहॉ एक ओर सीधी चोट जनसख्या वृद्धि पर पडेगी, वही दूसरी ओर जनसख्या वृद्धि से बढने वाले शोषण, कुपोषण, अपराध, भोगवाद, राष्ट्रीय अखण्डता, आतकवाद जैसी बढती हुई प्रवृत्तियो पर भी अकुश लगेगा।

जिज्ञासा *जनसख्या नियन्त्रण मे महिलाओ की भूमिका क्या हो सकती है?*

समाधान जनसख्या विस्फोट को रोकने के लिए शिक्षा का प्रसार और विशेष कर ग्रामीण व पिछडे क्षेत्र की महिलाओ को साक्षर कर उनमे परिवार सीमित रखने की

आवश्यकता के प्रति सजगता का भाव व जीवन मे सयम का अभ्यास बढाने की जागरूकता पैदा करना होगी। उनमे सतान उत्पत्ति की दिशा मे चली आ रही रुढियाँ व अन्धविश्वास के अँधेरो से उन्हे बाहर लाना होगा जिससे वे अपने परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति परिवार नियोजित करने के अपने उत्तरदायित्व को पहचान कर जहाँ स्वय इस पर अमल करेगी वही अन्य महिलाओ का भी इसके लिए प्रेरित करेगी तथा यहाँ उचित तो यही होगा कि शेष जीवन मे ब्रह्मचर्य धारण करेगी। परिवारो म जनसख्या विस्फोट के प्रति जागरुकता लान का कार्य देश के हर व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य है।

जिज्ञासा *क्या अशिक्षा का भी जनसख्या वृद्धि पर फर्क पडता है?*

समाधान आप केरल मे दखिये। जहा साक्षरता का प्रतिशत पूरे दश म सबसे अधिक है वहाँ जनसख्या वृद्धि की ओसतदर भी न्यूनतम है। बिहार और उत्तर प्रदेश म साक्षरता का प्रतिशत कम है ओर इसीलिये इन प्रदशा म जनसख्या वृद्धि का औसत भी अधिक है। पुरुष वर्ग जहाँ आज बडे-बड दावे नारी समानता क करता है वही परिवार नियोजित करने क क्षेत्र मे वह सब कुछ नारी पर छाडकर स्वय बच निकल जाना चाहता है। पुरुष वर्ग को स्वार्थी न हाकर नारी वर्ग क साथ कधे-स-कधा मिलाकर स्वय सयमी जीवन जीना चाहिय और समाज म जागरूकता लाने के उपाय करने चाहिये। यह समस्या किसी अकेले एक समाज विशेष की नही, अपितु पूरे राष्ट्र की है और इससे राष्ट्रीय स्तर पर ही जूझना होगा। ऐसे विस्तारवाद का क्या लाभ होगा जहाँ न रहने के लिए छत, न खाने को भोजन, करन को काम नही और शिक्षा के नाम पर निरक्षरता? हमे आत्म-मन्थन कर अपनी सास्कृतिक व आध्यात्मिक मर्यादाओ को पुनर्जीवित कर अपने आचरण, खान-पान व राष्ट्र के प्रति अपनी सोच मे बदलाव लाना होगा तभी हम इन ज्वलन्त समस्याओ से जूझ सकेगे।

बढ़ता शहरीकरण : उजड़ते गाँव

आर्थिक विषमताओ व शहरी नागरिको से मिली उपेक्षा से खिन्न कई बार ऐसे लोग गलत रास्ते अपना लेते है जो उनके स्वय के लिए व समाज के लिए कष्टप्रद होते है। इसका एक बडा कारण रहन-सहन के स्तर में भिन्नता भी है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

15 अगस्त 2000, वहलना (मुजफ्फरनगर)

दिगम्बर जैनमुनि परम्परा के प्रतिनिधि राष्ट्र सन्त उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनि जी जो अहर्निश सदाशयता, आत्मीयता और सहृदयता के प्रतीक है, से मेरी प्रथम भेट वहलना (मुजफ्फरनगर) मे हुई। उनकी ब्रह्म तेजस्विता, स्फूर्ति और प्रसन्नता अद्वितीय है। मैने अपनी कुछ जिज्ञासाओ के समाधान का अनुरोध उनसे किया। उपाध्यायश्री की स्वीकृति मिलने पर मैने बढते शहरीकरण पर उनसे विस्तृत चर्चा की। यहॉ बातचीत के प्रमुख अश प्रस्तुत है - **गोपाल नारसन**, *सवाददाता पजाबकेसरी, सहारनपुर*

जिज्ञासा *निरन्तर बढते शहरीकरण को आप किस रूप मे देखते है?*

समाधान भारत की आत्मा गॉव मे बसी है। भारत के गॉव सदियो तक राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा से अलग रहे है। आजादी के बाद विकास का एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। गॉव छोडकर शहर मे बसने वालो की सख्या निरन्तर बढ रही है। गॉव खाली और वीरान हो रहे है। नगरो मे रहने की जगह की माग बढती जा रही है। गॉवो से शहर की तरफ बढते पलायन के कारण शहर अनियन्त्रित होते दिखाई दे रहे है। रोज नये-नये भवनो, नई-नई बस्तियो का जन्म हो रहा है। निर्धारित शहर सीमा प्राय समाप्त हो चुकी है। शहर के रख-रखाव, साफ-सफाई, कानून व्यवस्था सब छिन्न-भिन्न होकर कम पड रही है। इस बदलते स्वरूप के नियन्त्रण को लेकर अनेक

ज्वलन्त समस्याए खड़ी हो गई है।

जिज्ञासा *कैसी समस्याएँ गुरुवर।*

समाधान शहरो की आबादी जिस तेजी के साथ बढ रही है। उतनी तेजी से दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ति का समाधान नही खोजा जा रहा है। परिणाम स्वरूप मूलभूत सुविधाओं से नागरिक वचित है। प्राय हर नगर मे जहॉ-जहॉ नई बस्तियॉ बनी है और पुरानी बस्तियो मे पानी, बिजली, आवास, विद्यालय, चिकित्सालय इत्यादि पर्याप्त रूप मे न होने से नागरिक परेशान है। आज जिन समस्याओ के समाधान के प्रयास किये जाते है कल उतनी ही अधिक कुछ नई समस्याओ का जन्म हो जाता है। जिसके कारण समस्याये ज्यो-की-त्यो बनी रहती है और नागरिक इन्हे लेकर कुढते रहते है। शासन को कोसते रहते है और स्थानीय निकाय व प्रशासन धन व साधनो की कमी को। देश के हर क्षेत्र मे बढता भ्रष्टाचार, निष्क्रियता व निजी स्वार्थ भी इसका मूल कारण है। इससे न जनहित होता है न राष्ट्रहित। गॉव से शहर मे आये नये लोगो व नगर मे रह रहे पुराने लोगो मे भी एक असतुलन बना रहता है। शहरो के तेजी से असयमित व असन्तुलित विस्तार के कारण बहुत सी समस्याये पैदा हो रही है। अपराधिक गतिविधियो मे निरन्तर बढोतरी हो रही है। जमीनो की दर बहुत तेजी से बढी है। नगरो का पर्यावरण भी निरन्तर दूषित व असन्तुलित हो रहा है। हर तरफ कक्रीट के जगल दिखाई दे रहे है। विद्यालय हो या चिकित्सालय, बस स्टेण्ड हो या स्टेशन। हर जगह आपा-धापी दिखाई पड रही है। मानव जिन्दगी का जैसे मशीनीकरण हो गया हो।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री बढते शहरीकरण का मूल कारण आप क्या मानते है?*

समाधान शहरी वातावरण की चकाचौध लेकर जो सब सुविधाएँ व व्यवसाय के अवसरो को गॉव के लोग सुनते, देखते और समझते है उनसे वे अनायास ही आकर्षित हो जाते है। इस व्यवस्था का मूल कारण शासन स्तर पर शहरो व गॉवो के लिए दोहरी व्यवस्था का लागू करना रहा है। चूकि गॉवो की अपेक्षा शहरो मे ससाधन, अवसर, सुविधाए अधिक है, इसलिए गॉव के लोगो का शहरो के प्रति आकर्षण बढना स्वाभाविक है। दूसरे शासन स्तर पर गॉवो की लगातार की जानी उपेक्षा भी इस समस्या के लिए सीधे-सीधे दोषी है। यदि पहले से ही गाव व शहर के प्रति बराबर ध्यान दिया जाता और शहरो के साथ-साथ गॉवो को भी विकसित करने के प्रयास किये गये होते, तो शायद आज न तो गॉवो की, और न ही शायद आज शहरो की यह हालत होती। बहुत से गॉवो मे आजादी के पचास साल बाद भी न तो बिजली है, न पीने का पानी, न चिकित्सालय, न विद्यालय और न ही आवागमन के साधन। तो क्या गॉवो के लोगो का अधिकार नही है कि उनके बच्चे भी शहरी लोगो के बच्चो की तरह पढे-लिखे और बडे

होकर काबिल बने? क्या गॉवो के लोगो को अधिकार नही है कि वे रोजगार पाए और उनका परिवार खुशहाल हो? चूंकि गॉव मे ससाधन व अवसर नही है इसलिए गॉव के बडे लोग रोजगार पाने के लिए और बच्चे शिक्षा के लिए गॉव से शहर की तरफ पलायन कर रहे है। परिणाम स्वरूप गॉवो की जनसख्या का घनत्व घट रहा है तो शहर का इसी अनुपात मे बढ रहा है।

जिज्ञासा *क्या यह स्थिति केवल भारत मे है?*

समाधान नही, ऐसा नही है। सम्पूर्ण विश्व मे गॉवो की अपेक्षा शहरो के प्रति लोगो का अधिक आकर्षण रहा है। सन् 1950 मे न्यूयार्क जैसे शहर की आबादी एक करोड थी। आज तो इतनी आबादी वाले शहरो की सख्या 14 तक पहुँच गई है। जापान का टोक्यो शहर सर्वाधिक आबादी वाला शहर बन गया है। इस अकेले शहर मे दो करोड 65 लाख से अधिक लोग बसते है परन्तु शहरो मे बढती आबादी का प्रतिशत विकासशील देशो मे कही अधिक है। विश्व के 15 बडे आबादी वाले शहरो मे से 11 विकासशील देशो से सम्बन्धित है। जिसका अर्थ यह हुआ विकसित देशो की अपेक्षा विकासशील देशो मे गॉव से शहर की ओर अधिक पलायन हो रहा है। चूंकि भारत भी एक विकासशील देश है, इसलिए यहॉ उक्त समस्या का प्रभाव अधिक है। जिसका मूल कारण आर्थिक विपन्नता है, जिसकी वजह से गॉव मे विकास की तरफ आपेक्षित ध्यान नही दिया जा रहा है और शरहा मे भी अनियन्त्रित आबादी के कारण व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है।



“ शहरी चकाचौंध हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। गॉव में चूकि उपभोक्तावाद इतना हावी नहीं है इसलिए ग्रामीण इससे बचे हुए हैं और अभी तक उन्हें कृत्रिम खानपान जैसे पिज्जा, बर्गर, हॉट-डॉग, कटलेट, बिरयानी, सीक-कबाब आदि व रहन-सहन के लिए जैसे ए सी , कूलर, फ्रीज, ओवन, माइक्रोवेव आदि का खर्च नहीं उठाना पड़ता परन्तु शहर में बढते उपभोक्तावाद का सीधा असर हर किसी पर पड रहा है, जिससे आर्थिक बोझ पड़ना स्वाभाविक है ”

जिज्ञासा *लेकिन सरकार तो बराबर गॉवो की तरफ ध्यान दे रही है, अनेक योजनाए गॉवो के लिए चलाई जा रही है ताकि गॉव विकसित हो सके। फिर ऐसा क्यो हो रहा है?*

समाधान यह सत्य है कि भारत के योजनागत विकास ने शहरीकरण को रोकने व समग्र ग्रामीण विकास की बाते लगातार 50 वर्षो म होती रही है परन्तु योजनाओं का क्रियान्वयन जिस ढग स किया गया, उससे स्थिति बद-स-बदतर होती गई। गॉवो मे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था होने के कारण अधिकाश लाग (प्राय 90 प्रतिशत) ग्रामीण खेती पर निर्भर करते है। बढती आबादी क चलन खेती की जमीन तो लगातार प्रति व्यक्ति बटवारे के बाद कम होती गई और ग्रामीणो को अन्य रोजगार के अवसर गॉव मे उपलब्ध नहीं हुए। जिससे हताश होकर उन्हे अपन परिवार के भरण-पोषण हेतु शहर की तरफ कुछ रोजगार व व्यवसाय के लिय भागना पड रहा है।

जिज्ञासा *जो लोग गॉव छोडकर शहर आ रह ह, क्या वे अपने आपको शहरी बना पाने मे सफल हो जाते है? यदि नही ता क्या उनका शहर की घुटन भरी जिन्दगी मे दम नही घुटता होगा?*

समाधान यह सच हे गॉव छोडकर शहर म आए लाग अपन आपको शहरी जीवन से बहुत समय तक नही जोड पाते हे। शहर म आकर ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड व्यक्ति अपने आपको अलग-थलग महसूस करते हे। व शहर की तज गति के जीवन म अपने आपको समायोजित नही कर पाते। जिस कारण उनम मानसिक कुण्ठा पेदा हा जाती है। आर्थिक विषमताओ व शहरी नागरिको स मिली उपक्षा से खिन्न कई बार एसे लाग गलत रास्ते अपना लेत है जो उनके स्वय के लिए व समाज क लिए कष्टप्रद हाते है। इसका एक बडा कारण रहन-सहन के स्तर मे भिन्नता भी ह। गॉव का रहन-सहन चूकि कम खर्चीला होता हे ओर जब गॉव का व्यक्ति शहर मे आता हे तो शहरी रहन-सहन के अनुरूप अपने आपको ढालने की कोशिश करता है इस कोशिश मे उसका बजट बिगड जाता है और वह शहरी चकाचौध के चक्कर मे अपना सब कुछ लुटा बैठता है। ऐसी स्थिति न आए, इसके लिए सयम की आवश्यकता हे।

जिज्ञासा *इस चकाचौध के लिए बढता उपभोक्तावाद कहॉ तक दोषी है?*

समाधान शहरी चकाचौध हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती हे। गॉव मे चूकि उपभोक्तावाद इतना हावी नही है इसलिए ग्रामीण इससे बचे हुए हे ओर अभी तक उन्हे कृत्रिम खानपान जैसे पिज्जा, बर्गर, हॉट-डॉग, कटलेट, बिरयानी, सीक-कबाब आदि व रहन-सहन के लिए जैसे ए सी , कूलर, फ्रीज, ओवन, माइक्रोवेव आदि का खर्च नही उठाना पडता परन्तु शहर मे बढते उपभोक्तावाद का सीधा असर हर किसी पर पड रहा है, जिससे आर्थिक बोझ पडना स्वाभाविक है और इसे दूसरी दृष्टि मे विकास का प्रतीक व स्टेटस सिम्बल भी माना जा रहा है। मेरी दृष्टि मे उपभोक्तावाद विकास का प्रतीक तो है परन्तु इसमे उपभोक्ता की जागरूकता का होना भी आवश्यक है तभी

उपभोक्ता उसके शोषण से बचा रह सकता है और बढते उपभोक्तावाद से लाभान्वित हो सकता है।

जिज्ञासा *ग्रामीण व शहर के बच्चो मे शिक्षा स्तर पर जो एक विशेष अन्तर दिखाई देता है उसका क्या कारण है?*

समाधान गॉवो के बडे-बडे विकास के दावो के बावजूद प्रारम्भिक शिक्षा का स्तर बहुत निम्न है। गाँवो मे न तो पर्याप्त साधन है और न विद्यालय। जहॉ विद्यालय है भी, वहॉ न टाट-पट्टी है, न फर्नीचर, न बच्चो की सख्या के अनुरूप शिक्षक। जहॉ शिक्षा भवन है वहॉ उनकी दशा बडी शौचनीय है। ऐसी स्थिति मे गॉव के बच्चो व शहर के बच्चो की शिक्षा मे भारी अन्तर का होना स्वाभाविक है। अलग-अलग माहौल मे बढे व पढे इन बच्चो के मानसिक स्तर, बोलचाल, रहन-सहन मे भारी अन्तर बना रहता है जिससे गॉवो के बच्चो मे हीनभावना का पनपना स्वाभाविक है। इस दोहरी विकास की नीति के चलते, अन्तर तो होना ही है। जब ग्रामीण क्षेत्रो के विकास का लाभ वास्तव मे गॉव तक पहुॅचेगा, तो ही यह अन्तर कुछ कम होगा और इस समस्या पर किसी हद तक अकुश लग पायेगा।

जिज्ञासा *गॉवो मे नगर की अपेक्षा राजनीतिकरण अधिक हुआ है? इसका ग्रामीण जीवन पर क्या प्रभाव पडा है?*

समाधान शहरो मे नागरिको का जीवन घुटन भरा, बहुत अधिक व्यस्त और भाग-दौड का बना रहता है। उनके पास दैनिक जीवन की आवश्यकताओ व नगर मे अपने अस्तित्व बनाये रखने के लिए इतना सघर्ष करना पडता है कि दूसरे कामो के वास्ते उसक पास समय ही नही बच पाता और उनकी प्राथमिकता अपने जीवन को चलाने के लिए आवश्यक ससाधनो को जुटाने मे ही लगी रहती है परन्तु गॉवो मे ऐसा नही है जिसके कारण उनके पास अधिक समय है और वे राजनीति मे अधिक सक्रिय दिखाई दते है। इसके कारण गॉवो मे झगडे-टटे भी अधिक है। जिसके कारण अपराध भी निरन्तर बढे है और गुटबाजी भी। आपसी गुटबाजी के कारण गॉवो के लिए बनायी गई योजनाओ का भी पूरा लाभ वे नही ले पाते। कुछ तो ये योजनाये वे अधिकारी बनाते है जो सम्पन्नता मे पले बढे है तथा उन्होने ग्रामीण जीवन को कभी निकट रहकर नहीं देखा होता और इस पर आपसी गुटबाजी व भ्रष्टाचार के कारणो से इन योजनाओ का बहुत सीमित लाभ ही गॉवो तक पहुॅच पाता है।

जिज्ञासा *क्या ग्रामीणो की अशिक्षा इसमे कारण नही है?*

समाधान ग्रामीण क्षेत्रो मे साक्षरता का प्रतिशत नगर की अपेक्षा आज भी बहुत कम है। ग्रामीण युवक शहरो की चकाचौध व भोगवादी सस्कृति के चलन को देखते हुए

उसकी नकल करने के लिए तथा इनकी पूर्ति के लिए शीघ्र धन जुटाने के वास्त अपराधो से भी जुड जाते है। बढती राजनीति ने पुराने गॉवो के स्वरूप को पूरा बदल कर रख दिया है। अब कहाँ है गॉव मे पहली जैसी विनम्रता, भाईचारा, एक दूसरे क प्रति सम्मान की भावना व परस्पर मेत्री मम्बन्ध। ग्रामीण और शहरो के विकास मे कही कोई समानता नहीं है। सरकारो की भी अपनी विवशताएँ है। भारत की जनसख्या का 80 प्रतिशत हिस्सा गॉवो मे रहता है। इतने बडे स्तर पर ससाधनो व धन का जुटा पाना टेढी खीर है। इसके अतिरिक्त गॉवो मे शहरो की अपेक्षा आज भी पुरानी कुरीतियो, अन्ध विश्वास, टोनो-टोटको का प्रचलन बना हुआ है। उनकी मानसिकता मे बदलाव की गति बहुत धीमी है। चिकित्सा सवाओ का बडा अभाव है। बच्चो के आहार व पोषण मे शहर की अपेक्षा ग्रामीण अभी भी उतने सर्तक नही है। ग्रामो मे खेती आधारित उद्योगो को छोडकर अभी भी राजगार क साधन उपलब्ध नही हो पाये है। लघु उद्योग धन्धे भी आवश्यकता क अनुसार नही पनप है। ग्रामो मे बढती राजनीति से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक हो रही है। विकास कवल फाइलो पर ही है।



"जब तक ग्रामीण क्षेत्र अपनी प्रगति से आश्वस्त नहीं होगे शहरीकरण को नहीं रोका जा सकेगा और इससे शहरों व गाँवों की समस्यायें घटने की अपेक्षा और बढेगीं तथा ग्रामीणों के हाथ भी कुछ लगने वाला नहीं। ग्रामवासियो को सगठित होकर स्वय भी अपने क्षेत्र के विकास के लिए आगे आना होगा। केवल सरकार ऐसा कोई कायाकल्प नहीं कर सकेगी।"

जिज्ञासा *क्या आप यह कहना चाहते है कि सरकार ने ग्रामीण विकास की दिशा मे पर्याप्त कार्य नही किया है?*

समाधान यह मान लेना कठिन ही जान पडता है कि सरकारे विकास व गरीबी उन्मूलन के लिए वचनबद्ध है। यदि ऐसा होता तो आज 50 वर्षो मे, अधिक आबादी (ग्रामीण) गरीबी रेखा के ऊपर आ जाती। विदेशी योजनाओ व सहायता मे तो खोट है ही लेकिन ग्रामीण विकास मे भी ईमानदारी की कमी खलती है। केन्द्र से राज्य सरकार तक, राज्य सरकार से जिले तक, जिले से तहसील और तहसील से ब्लॉक और ब्लाक से न्याय पचायतो तक पहुँचते-पहुँचते हर सहायता न के बराबर रह जाती है।

जिज्ञासा · *आपकी दृष्टि मे ईमानदारी की इस कमी का मुख्य कारण क्या है?*

समाधान उल्लेखनीय तथ्य है यह कि इस लम्बे सफर मे एक पूरी अफसरशाही पनपती है। साम्राज्यवाद का एक दूसरा रूप ही नजर आता है। राजनैतिक शक्तियाँ व जन-प्रतिनिधि अपने निजी स्वार्थो व वोट बैक के कारण पूरी पचायत व्यवस्था को हडप जाते है और ग्रामीण क्षेत्रो के विकास के आपेक्षित परिणाम सामने नही आ पाते। ग्रामीण क्षेत्रो मे शुद्ध पेयजल की तो बात ही क्या पीने के पानी का ही अभाव है। गॉवो के विकास की जब बात की जाती है तो ऐसा लगता है जैसे आसमान से गिरे और खजूर पर अटके। मै यह कहना चाहूँगा कि ग्रामीण विकास की बडी-बडी योजनाये तो बनी किन्तु सुव्यवस्थित क्रियान्वयन के अभाव मे उनके अपेक्षित परिणाम सामने नही आ पाये।

जिज्ञासा *यदि ग्रामीण विकास के वर्तमान स्वरूप मे इतनी ही कमियॉ है तो इसका विकल्प क्या है? दूसरे बिना ग्रामीण विकास के गॉवो से शहरो मे पलायन की समस्या कैसे रुक पायेगी?*

समाधान आध्यात्मिक दृष्टिकोण से एक इन्सान दूसरे से एक प्राकृतिक शक्ति के माध्यम से जुडा हुआ हे। इस समझ को दिल मे बैठा लेने से एक अनूठा भाईचारा पनपेगा। कुछ स्थानो पर ऐसे प्रयोग हुए भी हे जहॉ महीने के एक दिन अधिकाश गॉव वाले एक दिन की कमाई ऐसे कोष मे डाल देते है जिसका उपयोग केवल कठिनाई के दिनो मे "उधार" के रूप मे किया जाता है। इससे गॉव के विकास के महत्वपूर्ण कार्यो के लिये धन की कमी नहीं होती। गुजरात मे भी ऐसा प्रयोग हुआ है। एक लाख कुँओ मे पुन जल भरने का कार्य गुजरात के अधिकाश गॉवो ने बिना किसी सरकारी मदद के किया हे।

ग्रामीण विकास की पिछले 50 वर्षो की रपट से कुछ आवश्वासन तो नही है लेकिन इतना जरूर है कि यह समझ अब घर करने लगी है कि विकास के वर्तमान स्वरूप से हानि ज्यादा हुई हे और लाभ कम। वैमनस्यता व भाईचारे, आपस मे सहयोग की भावना लगभग समाप्त हो चुकी हे। मात्र सरकारी सहायता के बलबूते पर हाथ-पर-हाथ धरे बेठे रहने से कुछ नहीं होगा। किन्तु यह भी सच है कि उक्त प्रयोगो का किन्ही कारणो से विरोध होता रहे परन्तु समय की कसौटी पर खरे उतरे इन प्रयासो को साफ मन से स्वीकार करने मे राष्ट्र व समाज की भलाई ही होगी।

जब तक ग्रामीण क्षेत्र अपनी प्रगति से आश्वस्त नही होगे शहरीकरण को नही रोका जा सकेगा और इससे शहरो व गॉवो की समस्याये घटने की अपेक्षा और बढेगी तथा ग्रामीणो के हाथ भी कुछ लगने वाला नही। ग्रामवासियो को सगठित होकर स्वय

भी अपने क्षेत्र के विकास के लिए आगे आना होगा। केवल सरकार ऐसा कोई कायाकल्प नही कर सकेगी।

जिज्ञासा *21वी शताब्दी मे शहरीकरण का स्वरूप क्या होगा?*

समाधान 21वी शताब्दी के पहले 50 वर्षो मे शहरो का विकास दुनियाँ पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला होगा। स्थिति इतनी भयानक होती जा रही है कि शहरीकरण हमारे समाज के लिए एक अभिशाप बनता जा रहा है। वैसे तो पूरी दुनिया मे ही शहरीकरण बहुत तेजी से बढ रहा है। आगामी 10 वर्षो मे ऐसा लगता है कि विश्व की कुल आबादी का आधा हिस्सा शहरी क्षेत्रो मे होगा। आर्थिक उदारीकरण और भूमण्डलीकरण की नीति पर चल रहा भारत इस विश्वव्यापी समस्या से अछूता नही रह पायगा। 21वी शताब्दी के प्रथम दशक म मुम्बई दुनियाँ का सबसे बडा आबादी वाला दूसरा शहर हो जायगा। अगले दो वर्षो में मुम्बई की आबादी एक करोड 90 लाख तक हो जाने का अनुमान है। अगली दशाब्दी म कोलकाता का आबादी के रूप मे 12वा व दिल्ली का 15वाँ स्थान होगा। आज दुनियाँ के 14 शहर एसे ह जिनकी आबादी एक करोड से अधिक है।

शहरी क्षेत्रो की बढती प्रतियोगिता के कारण पिछले कुछ वर्षो म अपना सामान बेचने के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियो ने इस आबादी की ओर नजर डाली है। दुनिया भर की उपभोक्ता सामग्री के उत्पादन करने वालो को एक करोड की आबादी अपने लिए बहुत बडा बाजार नजर आता है। इनके बडे-बडे केन्द्र इन महानगरो व नगरो म खुलते जा रहे है। राष्ट्रीय राजमार्गो के किनारे चलने वाले ढाबो मे भी इन नई डिब्बा बन्द खाद्य सामग्रियो का प्रचलन बढ गया है। देश के अगले वर्ष के शुरु मे सात हजार किलोमीटर लम्बे सुपर हाइवे बनाने की योजना यदि वास्तव म लागू हो गई तो निश्चय ही इसके दूरगामी प्रभाव शहरीकरण पर भी पडेगे। यदि नीतियो मे परिवर्तन नही आया और ग्रामीण विकास मे सन्तोषजनक प्रगति नही हुई तो शहरीकरण के कारण 21वी शताब्दी मे इसका बडा भयानक स्वरूप देखने को मिल सकता है। शहरीकरण को रोकने के लिए गाँवो को प्रश्रय देना ही होगा। मुझे नही लगता कि इसके बिना कोई करिश्मा हो जायेगा और शहरीकरण पर अकुश लग सकेगा।

राष्ट्र प्रगति का आधार : दीर्घकालिक विकास नीति

केवल विनिवेश अर्थव्यस्था के लिए धन जुटाने का स्थायी साधन या निदान नहीं हो सकता। धन जुटाना है तो उद्योगों को लाभदायक बनाना होगा। विनिवेश से जुटाया गया धन एक प्रकार से अपनी ही सम्पत्ति को बेचकर खा लेने के समान है। यदि स्रोत नहीं बढ़ेंगे तो फिर कब तक जमा रकम या सम्पत्ति का अश बेचकर आवश्यकताओं की भरपाई कर सकोगे?

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

14 अप्रैल 2000, नोएडा (यू पी)

प्राणि-मात्र की पीडा जब अपनी पीडा लगेगी, तभी प्राणो मे सोई अहिसा जगेगी। मन प्राण इस पीडा से उबरने को जब आकुल होगे, तब गुरु-चरणो मे समर्पण की लौ जलेगी। गुरु चरणो मे समर्पण ही उसकी सही वदना है भगवान का सामीप्य उन्ही की कृपा से सम्भव हे और कर्मो का क्षय भगवान के दर्शन वदन से निश्चित है।

ऐमी ओजस्वी, प्रवाहमय वाणी के धनी उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज से राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओ पर बातचीत के प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन**

जिज्ञासा *सबल राष्ट्र के निर्माण मे कौन-कौन से तत्त्व बाधक बन रहे है?*

समाधान सबल राष्ट्र के निर्माण मे कई तत्त्व बाधक है, उनमे प्रमुख है बेरोजगारी, अस्थिर सरकारे, जनसख्या वृद्धि, राजकोषीय घाटा, प्रदूषण, राष्ट्रवाद की भावना का ह्रास, तात्कालिक समाधान की राजनीति, बढता बजट घाटा आदि।

जिज्ञासा *बढती बेरोजगारी ने देश को बदशक्ल कर दिया है आपका इस दिशा मे क्या चिन्तन है?*

समाधान बढती बेरोजगारी वास्तव मे देश के लिये अनेक समस्याये पैदा कर रही

है इसके कारण जहॉ परिवार टूट रहे हे व परिवारो मे कलह बढ रहा है, वहीं अनेक युवा निराश तनावग्रस्त होकर अपने को क्षणिक शान्ति देने हेतु नशे की लत के साथ जोड बैठते है और इसकी पूर्ति के लिये गलत साधनो द्वारा भी धन जुटाने के लिए अपराधी तक बन जाते है प्राप्त आकडो के अनुसार वर्ष 2010 तक देश मे बेरोजगारी की सख्या बढ कर साढे नौ करोड तक पहुच जाने का अनुमान है।

बढती बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए औसत जनसख्या की वृद्धि की दर से अधिक रोजगार के अवसर सृजित करन होगे। इसके बाद ही पूर्ण रोजगार की स्थिति के नजदीक शीघ्र पहुँचा जा सकगा। जिसमे कृषि, वाणिज्य, उद्योग, कुटीर उद्योग, लघु व गृह उद्योग के साथ-साथ विश्व स्तरीय कल-कारखाने व ओद्योगीकरण भी शामिल है।

पी एच डी वाणिज्य एव उद्योग मण्डल की सिफारिशे कहती हे कि रोजगार नीति मे आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। उद्योग मण्डल का कथन है कि उद्योगो म उत्पादकता बढाने और श्रमिको के जीवन स्तर मे सुधार के साथ-साथ बेहतर वेतन के लिए वर्तमान श्रमिक नीति की समीक्षा की जानी चाहिए। रोजगार और आर्थिक दोनो क्षेत्रो मे वृद्धि के लिए पूजीपतिया आर श्रमिको दोनो के लिए मिश्रित लाभ वाली प्रौद्योगिकी अपनाने पर जोर दिया जाना चाहिए। अनेक अध्ययनो म यह पाया गया है कि कुछ क्षेत्रो मे श्रमिको क जरिये ही काम कराना अधिक फायदमद है। उद्योग ओर सेवा क्षेत्र मे आय व रोजगार के अवसरो मे अनवरत वृद्धि से ही बेरोजगारी पर काबू पाया जा सकता है।

जिज्ञासा *चुनाव सुधार की दिशा मे कौन से प्रभावी कदम उठाये जा सकते है?*

समाधान नोवी लोकसभा से लेकर अब तक की चौदहवी लोकसभाए त्रिशकु सभाये रही हे। 1998 से आज तक का समय राजनीतिक अस्थिरता का समय कहा जायेगा। बार-बार सरकारे बदलने से विकास और राष्ट्र की प्रगति की गति धीमी हो जाती है।

चुनाव सुधार के लिए कुछ मुद्दे सार्वजनिक बहस के योग्य है और कुछ एकदम ही नई नीतिगत बाते अत्यन्त विचारणीय है देखिए -

- क्या चुनाव प्रत्याशियो के लिये कुछ न्यूनतम शिक्षा का होना जरूरी नही है?
- क्या प्रत्याशियो की अधिकतम आयु निर्धारित होना उचित नही है?
- क्या चुनावो मे विभिन्न आरक्षणो का होना ठीक हे, यदि हॉ, तो किन बातो पर वह आरक्षण आधारित हो और ऐसा करने से क्या लाभ होने की सम्भावनाये है?

- क्या देश मे छोटी-छोटी अत्याधिक क्षेत्रिय पार्टियो का होना उचित है या किसी पार्टी के लिए राष्ट्रीय सता पर स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखने के लिये कम-से-कम वा कुछ सख्या मे सासदो का चुना जाना अनिवार्य है?
- क्या चुनावो मे वोट देना प्रत्येक नागरिक को अनिवार्य नही हो और यदि कोई व्यक्ति चुनावो मे भाग न लेकर अपने को लगातार अलग रखता है तो उसको विभिन्न राष्ट्रीय सुविधाओ से वचित होने का डर हो, जैसे शिक्षा, यात्रा, लाइसेस बैक सुविधाएँ या अन्य कुछ और भी?
- क्या चुने गये प्रत्याशी का ध्येय उसे मिलने वाली सुविधाओ की ओर रहे अथवा जनहित कार्यो व उत्तरदायित्वो पर भी?

कुछ अन्य चुनाव सुधार के मुद्दे इस प्रकार हे -

- सदन को मध्यावधि मे भग न करके वेकल्पिक सरकारो व प्रधानमन्त्रियो की नियुक्ति कर लोकसभा का कार्यकाल अनिवार्य रूप से 5 साल करना।
- दल-बदल कानून के लिए प्रभावी कदम उठाना।
- राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त रखने के लिए कदम उठाना।
- चुनाव प्रत्याशियो का चुनाव लडने के लिये स्वच्छ चरित्र व उज्ज्वल छवि का होना आदि।

इसके अतिरिक्त चुनावो के व्यय की सीमा व उसके स्रोत की घोषणा भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। राष्ट्रपति शासन प्रणाली क्या वास्तव मे अस्थिरता या गतिरोध की समस्या मे कारगार उपाय है इन तमाम बिन्दुओ पर सार्वजनिक बहस होना चाहिये।



"देश की कमजोर सरकारी इकाईयों को सुदृढ बनाने के बजाय उन्हे निजी हाथो में और विदेशी लालची कम्पनियों को सौप कर जो पैसा आये उसे अनाप-शनाप सरकारी खर्चो में फूक देना, सरकार की कार्य क्षमता और अर्थव्यवस्था की डावाडोल स्थिति होने का सकेत देश और विदेशों मे देता है। केवल विनिवेश अर्थव्यस्था के लिए स्थायी साधन या निदान नहीं हो सकता। धन जुटाना है तो उद्योगों को लाभदायक बनाना होगा। विनिवेश एक प्रकार से अपनी ही सम्पत्ति को बेचकर खा लेने के समान है।"

जिज्ञासा · *100 करोड से अधिक जनसख्या वाले भारत मे इतनी विविधता देखने को मिलती है जितनी विश्व मे अन्यत्र कही नही। क्या हमारी लोकसभा भी इस विविधता की प्रतीक है?*

समाधान लोकसभा क सदस्यो का मुख्य उद्देश्य भारत के जनमानस के कल्याण मे सन्निहित है और यही उद्देश्य और भावना उन्हे एकता क सूत्र मे बाधे रखती है। भले ही लोकसभाओ का स्वरूप इसका अपवाद बनता जा रहा हो। हमारे देश मे रीति-रिवाज, इतिहास, सस्कृति, भाषा, खान-पान व वेषभूषा आदि एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्र से भिन्न-भिन्न है। इसी विविधता मे हमारी एकता विश्व मे हमे अलग पहचान बनाने का मुख्य आधार रही है। भारत की लाकसभा भी इसका प्रतीक है। इस सभा क सदस्य विभिन्न राजनीतिक दलो से सम्बद्ध होने के अतिरिक्त देश के सभी भागा म आते है, जो विभिन्न भाषाए बोलते है, अलग-अलग शैक्षणिक योग्यताए रखत है, भिन्न-भिन्न व्यवसायो स जुडे होते है और पृथक्-पृथक् आयु वर्ग के होते है। भारत की लोकसभा पूर्ण रूप से इसी विविधता को परिलक्षित करती है।



"**सरकार प्रोग्राम बना सकती है परन्तु उस पर अमल करना हर नागरिक का कर्त्तव्य है। प्रदूषण पर अकुश लगाने के सरकारी प्रयास ही पर्याप्त नहीं है, जो हे भी, उनमें भारी भ्रष्टाचार व सशक्त प्रयास के अभाव के चलते कारगर सिद्ध नहीं हो रहे है। जैसे प्रदूषण रहित वाहन होने का प्रमाण-पत्र बिना किसी विशेष निरीक्षण, केवल साधारण औपचारिकता पूर्ण कराए दे दिया जाता है।**"

जिज्ञासा *क्या सरकारी राजकोष के घाटे का निदान विनिवेश है?*

समाधान देश की कमजोर सरकारी इकाईयो को सुदृढ बनाने के बजाय उन्हे निजी हाथो मे और विदेशी लालची कम्पनियो को सौप कर जो पैसा आये उसे अनाप-शनाप सरकारी खर्चो मे फूक देना, सरकार की कार्य क्षमता और अर्थव्यवस्था की डावाडोल स्थिति होने का सकेत देश और विदेशो मे देता है। केवल विनिवेश अर्थव्यस्था के लिए स्थायी साधन या निदान नहीं हो सकता। धन जुटाना है तो उद्योगो को लाभदायक बनाना होगा। विनिवेश एक प्रकार से अपनी ही सम्पत्ति को बेचकर खा लेने के समान है। यदि स्रोत नही बढेगे तो फिर कब तक जमा रकम या सम्पत्ति या अश बेचकर जुटाई रकम पूरी पडेगी। उद्देश्यविहीन विनिवेश अथवा घाटा आपूर्ति के लिये किया

गया विनिवेश देश की अर्थव्यवस्था के लिये घातक है। ऐसे नीतिगत निर्णय दूरगामी नही हो सकते।

जिज्ञासा *देश मे बढता प्रदूषण जन स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहा है। इसका निदान क्या केवल सरकार कर सकती है?*

समाधान मुझे नहीं लगता कि अकेले सरकार के बलबूते पर प्रदूषण का निदान हो सकता है। आज हम विभिन्न प्रदूषणो से ग्रस्त है। जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण आदि। जो हमारी कृषि व्यवस्था, खाद्य, पेय पदार्थो व श्वास प्रणाली को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहे है।

आज जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ पेयजल की उपलब्धि भी कठिन हो गई है और आप बोतलो मे बन्द पानी 10 रुपये प्रति लीटर लेकर पीने पर मजबूर है। हमारे देश की नदियॉ, कुए व सभी जल-स्रोत प्रदूषण के प्रभाव म अछूते नही है।

ध्वनि प्रदूषण ने हमारे सुनन-सोचन की शक्ति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है।

भूमि प्रदूषण ने भूमि की उपजाऊ क्षमता को कम किया है और उर्वरको व कीट नाशको के अधिक उपयोग क कारण फसले व खाद्य पदार्थ कुपोषित हो गये है जो हमारे जीवन को सीधे रूप स प्रभावित कर रहे है।

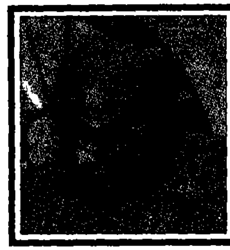
प्रदूषण का यह आलम है कि आज जरा-सी बारिश होने पर नगरो व महानगरो मे पानी भर जाता है फलस्वरूप जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है इतना ही नही, बहुत अधिक जानमाल का नुकसान भी होता है।

जिज्ञासा *गुरुवर! इसक लिए मुख्यत कौन जिम्मेदार है?*

समाधान इसके निदान के लिये आम जनता भी उतनी ही जिम्मेदार है जितनी सरकारी सस्थाये। सरकार प्रोग्राम बना सकती है परन्तु उस पर अमल करना हर नागरिक का कर्त्तव्य हे। प्रदूषण पर अकुश लगाने के सरकारी प्रयास ही पर्याप्त नही है जो है भी उनमे भारी भ्रष्टाचार व सशक्त प्रयास के अभाव के चलते कारगर सिद्ध नहीं हो रहे है। जेसे प्रदूषण रहित वाहन होने का प्रमाण-पत्र बिना किसी विशेष निरीक्षण, केवल साधारण औपचारिकता पूर्ण कराए दे दिया जाता है जबकि देश मे वाहन प्रदूषण के कारण हर दिन सैकडो लोगो की जान चली जाती है और सैकडो लोग फेफडो व हृदय रोग जैसी जानलेवा बीमारी से ग्रस्त हो जाते है। बडे महानगरो मे तो वाहनो की बडी सख्या के कारण ये समस्याये और भी अधिक चुनौती पूर्ण है। सर्दी मे सूर्यास्त के समय पृथ्वी की सतह के पास की हवा तेजी से ठण्डी होती है और पृथ्वी की सतह के पास

ही ठहर जाती है। इस प्रकार वाहनो से निकलने वाला धुँआ ऊपर उठने के बजाए नीचे ही रह जाता है। वायु प्रदूषण के खतरो के सर्वज्ञात होने के बावजूद सरकार वाहन प्रदूषण के लिए कोई जनचेतना नही बना पायी।

विज्ञान और पर्यावरण केन्द्र मे वाहन प्रदूषण से सम्बन्धित शोधकर्त्ता अनुमिता-राय चौधरी के अनुसार सरकार ईधन की गुणवत्ता, वाहनो के रख-रखाव, वाहन प्रबन्धन और भरोसेमन्द सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण मुद्दो पर कोई गम्भीर कदम उठाने मे असमर्थ सिद्ध हुई है। इस दिशा मे जब तक जन चेतना नही होगी, कोई विशेष सफलता सरकार द्वारा लगाये गये अकुशो से मिलने वाली नही है।



"मेरी सोच में अतिआवश्यक कर ही लगाये जाने चाहिये किन्तु इससे अधिक आवश्यक है सरकारें अपने-अपने अन्धाधुन्ध खर्चो पर नियन्त्रण करे जो उसकी आमदनी व खर्च के सन्तुलन बनाने में कारगर सिद्ध होगा। अन्यथा इसके परिणाम बड़े घातक सिद्ध हो रहे है और भविष्य में इसके परिणाम और भी खराब होगे। कब तक सरकार विश्व बैक व अन्य देशों से बडे-बडे कर्ज लेती रहेगी और कर्ज के लिए उनकी शर्तो पर घुटने टेकती रहेगी।"

जिज्ञासा *दश मे चहुँ ओर जो राष्ट्रवाद की भावना का ह्रास हो रहा है उसके लिए जनमानस को आप क्या सदेश देना चाहेगे?*

समाधान स्वाधीनता का अर्थ केवल कोई तारीख नही होता, कपड को प्रतीक बनाकर फहराना नही होता, ना ही राष्ट्रीय धुन का गाना होता है अपितु इसका अर्थ होता है देश की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना का पैदा होना। प्रखर राष्ट्रवाद किसी भी राष्ट्र का सबसे बडा सम्बल होता है। राष्ट्रवाद लोगो मे देशहित को जाति, पथ और क्षेत्रीय हितो पर वरीयता देने की प्रेरणा देता है। राष्ट्रवाद एक एसी सभ्य जीवन शैली है, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति स्वेच्छा से कानून का पालन करता है और अन्य सभी नागरिको के अधिकार का सम्मान करता है। यह एक ऐसी जीवन शैली है जिसमे लोग वार्त्ता, वाद-विवाद और विचार-विमर्श के जरिये अपने मतभेद दूर करते है, हिसा और बल का सहारा लेकर नही। स्वहित से जन-कल्याण को ऊँचा स्थान दिया जाता है और समाज के कमजोर तथा सवेदनशील वर्गो की उन्नति के लिये व्यक्ति अपने हितो का बलिदान

करने को तत्पर रहता है। राष्ट्रवाद का अर्थ है मर्यादा, सहिष्णुता और अविरोध भाव। स्वच्छन्दता राष्ट्रवाद का गला घोट देती है। स्वच्छन्दता आज देश के हर आयु वर्ग मे बढ रही है। देश के नागरिको से मेरा यह कहना है कि सम्प्रदाय, मत, जाति, ऊँच-नीच का भेद भुला कर वात्सल्य भाव उत्पन्न करे और आत्म श्रद्धा के पैरो पर खड़ा होकर देश की बिगडती शक्ल को सुधारने का प्रयास करे।

'यहॉ समसामियक सजीवनी शतक (स्व रचित) परिशिष्ट से दो दोहे प्रस्तुत करता हू -

कर्त्ता तू न बन कभी कर अपना कर्त्तव्य।
उज्जवल निश्चित होएगा तेरा ही भवितव्य।।
सयम भाव जगाए कर समता का कर पान।
जीवन-सुन्दरतम बने मिटे सकल अज्ञान।।

जिज्ञासा *विश्व मे बढ रहे उग्रवाद को देखते हुए उग्रवादियो को छूट देना कहॉ तक उचित है? जेस भारत सरकार की इण्डियन एयरलाईन विमान को अपहरण (हाईजेक) के दबाव मे खतरनाक आतकवादियो को छोड दिया गया। उस समय यात्रियो की जान की रक्षा भी अहम् मुद्दा था किन्तु जो उग्रवादी छोडे गये क्या वह उचित था? उनको छाडना राष्ट्र को घातक नही हुआ?*

समाधान सन् 1999 मे विमान अपहरण काण्ड की घटना ने भारत की चरमराती व लचर सुरक्षा व्यवस्था को उजागर कर दिया है कि वह लाचार व असहाय थी। आतकवादी (नपाल से भारत आने वाली इण्डियन एयरलाईन विमान को अमृतसर उतारकर बन्दूक के बल पर ईधन लेकर कधार ले गये) अगूठा दिखाकर अपने साथियो को भारत की जेला मे बन्द साथियो तक को छुडा ले गये। यदि राष्ट्र के सम्मान, सेना के मनोबल और देश की अखण्डता को सुरक्षित रखना है तो उग्रवादियो के साथ कोई रियायत नही बरतनी चाहिय। राष्ट्र के सभी नागरिको का यह कर्त्तव्य है कि वे सरकार को उग्रवादियो के साथ शिथिलता बरतने के लिए कदापि विवश न करे। सभी भारतीयो को उग्रवाद का डटकर मुकाबला करने के लिए विभिन्न सरकारी तन्त्रो द्वारा बनाई गई नीतियो व उठाये गये कदमो मे पूर्ण सहयोग देना चाहिये। भारतीय नेताओ द्वारा आतकवाद से निपटने के मामल मे जब कभी कोताही बरती गई उसका परिणाम यह हुआ है कि आज वह समस्या एक नासूर का रूप ले चुकी है और हमारी देश की राजधानी एव ससद (पार्लियामेट) तक असुरक्षित महसूस की जाने लगी है। विदेशी धरती पर पनपे व विदेशी समर्थित आतकवादियो से निपटने मे भारत का रूख सदैव इतना लचीला रहा है कि इन आतकवादियो के लिए वार्त्ता के दरवाजे तक खुले रखे गये। जिससे आतकवाद

खत्म होने के बजाय हम पर हावी होता जा रहा हे अत आतकवाद से निपटन क लिय एक जनजागरण व सरकार की स्पष्ट नीतियो की आवश्यकता है।

जिज्ञासा *हर वर्ष प्रदेश सरकारे व केन्द्र सरकार नये-नये कर (टेक्स) लगाकर बढते बजट घाटे को कम करने का प्रयत्न करती है। आखिर यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा। क्या सरकार को चलाने का एकमात्र विकल्प कर बढाना ही है?*

समाधान राजनीतिक मजबूरियो (सहयोगी दला क दबाव) के कारण प्रदेश व केन्द्र सरकारे भारी-भरकम मत्री मण्डलो व राजशाही खर्चो का पूरा करने के लिये अनाप-शनाप टेक्स लागू करती हे। सरकारी कर्मचारियो की बढती मागो के कारण भी सरकार पर आर्थिक दबाव निरन्तर बना रहता है। मेरी सोच म अति आवश्यक कर ही लगाय जाने चाहिये किन्तु इससे अधिक आवश्यक है सरकारे अपन-अपने अन्धाधुन्ध खर्चो पर नियन्त्रण करे जो उसकी आमदनी व खर्च के सन्तुलन बनाने मे कारगर सिद्ध होगा। अन्यथा इसके परिणाम बडे घातक सिद्ध हो रहे है और भविष्य मे इसके परिणाम और भी खराब होगे। कब तक सरकार विश्व बैक व अन्य देशो से बडे-बडे कर्ज लती रहेगी और कर्ज के लिए उनकी शर्तो पर घुटने टेकती रहेगी।

युवक : राष्ट्र का मेरुदण्ड

"

हमे युवको को आगे लाकर अवसर प्रदान करने का जोखिम उठाना ही पडेगा। उन्हें भरोसा तो दिलाना ही होगा कि कठिन प्रयास व पुरुषार्थ के बाद उनका जीवन निश्चित प्रकाशमान होगा। उन्हे सहानुभूति, अवसर व प्रोत्साहन देने के लिए आगे आना होगा। हमारे राष्ट्र नेताओ को अपने आचरणो से उन्हे राष्ट्र प्रेम की सीख देनी होगी।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

श्रुतपञ्चमी 1995, मसूरी "

युवा राष्ट्र के भविष्य है, राष्ट्र निर्माता है, हमे उनकी अपरिमित क्षमताओ को जानकर आगे बढाना होगा। युवाओ की शक्ति के सदुपयोग हेतु साधनो और समृद्ध स्रोतो की नही हमारी सकारात्मक सोच की आवश्यकता है। युवा उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज ने युवाओ का आह्वान किया है कि वे सदाचारी और सस्कारशील होकर अपनी शक्ति अनुसार राष्ट्र निर्माण मे योगदान दे। उपाध्यायश्री से इसी सन्दर्भ मे मै कुछ जिज्ञासाए लेकर उपस्थित हूँ समाधान की अपेक्षा है - **भूपेन्द्र कुमार जैन**।

जिज्ञासा *गुरुदेव! आज की युवा पीढी देश के लिए गम्भीर चुनौती क्यो हो रही है?*

समाधान युवा पीढी की उदासीनता, उनमे बढता आक्रोश, समाज मे उपेक्षित होने की घुटन तथा भविष्य की गारण्टी की चिन्ता राष्ट्र को चुनौती दे रही है। आज देश के युवाओ के सामन रोजगार का प्रश्न चुनोती बन कर खडा हे। न तो उनकी शिक्षा ही देश के ससाधनो, रोजगार के अवसरो या फिर उनके कोई अपना ही धधा चुनने के अनुकूल है, न ही उन्हे उचित दिशाबोध कही से मिलता हे। इसके विपरीत देश के स्वार्थी राजनेता इन नोजवानो का दुरुपयोग अपने तुच्छ स्वार्थो की पूर्ति के लिए करते

है जिससे निराश, उपेक्षित व आक्रोश से भरे युवको के कदम सहज ही बहक जाते है और वे अनुशासनहीनता की सीमा लाघ कर देश की शक्ल सवारने के बजाए देश को तोडने, अराजकता फैलाने व राष्ट्र की सम्पत्ति के स्वाहा करने मे लग जाते है।

जिज्ञासा *इसका अर्थ तो यह हुआ कि आज के युवाओ का मानसिक सन्तुलन बिगडा हुआ है उन्हे कोई स्पष्ट राह नही मिल रही और अभिभावको की अपेक्षाए अधिक है?*

समाधान आप यह क्यो भूल जाते है। कि जिस मनोदशा म आज युवक जी रहे है उस स्थिति मे युवको से अधिक की अपेक्षा नही की जा सकती। पहले शिक्षा के दौरान वह देश की दोहरी शिक्षा नीति की मार को झेलता है और न जाने कितनी कुण्ठाओ से गुजरता हुआ किसी प्रकार डिग्री प्राप्त करता है। इतना करने पर वह पाता है कि उसके लिये सारे मार्ग बन्द है। घर और समाज दोनो जगह उसे तान, उपेक्षा, अन्धकार ही मिलता है। अब देश का हर युवक इतना सोभाग्यशाली तो हो नही सकता कि उसे अपने परिवार के परम्परागत बडे काम धन्धो या उद्योगो मे खपा लिया जाए। उनके सामने रोजगार का प्रश्न जीवन और मरण का प्रश्न बनकर आता है। हमारे देश के कर्णधार उनके लिए कोई रोजगार मुहैय्या नही करा पाते। इस प्रकार उनके भटकाव की यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। दिशाहीन युवा सहज साधन जुटाने की होड मे गलत हाथो मे पडकर नशे का शिकार हो जाता है या फिर अपराधो की डगर पर चल पडता है।



कर्मसिद्धान्त भविष्य के प्रति आशा का सचार करता है। यह मानव पुरुषार्थ को जागृत कर उसे सदेश देता है कि मनुष्य स्वय अपना भाग्य विधाता है। उसका भूत पर तो कोई वश नहीं है किन्तु वर्तमान पर उसे पूरा अधिकार है। वस्तुत कर्मसिद्धान्त से बढकर कोई दूसरा सिद्धान्त जीवन और आचरण में इतना महत्व नहीं रखता।

जिज्ञासा *युवा पीढी मे बढते भटकाव पर अकुश कैसे लगाया जा सकता है?*

समाधान आज सर्वत्र यह देखने मे आता है कि हमारे देश मे तरुणाई की अपेक्षित प्रतिष्ठा नही है। बुजुर्ग उन पर भरोसा करने के लिए तैयार नही। वे उनमे उत्तरदायित्व

की भावना का अभाव बताकर उन्हे आगे बढने देने को तैयार नही होते। युवक का इससे बडा और क्या अपमान हो सकता है। आज के बुजुर्ग यह भूल जाते है कि वे भी कभी युवक रहे होगे। उन्हे भी इसी प्रकार की पीड़ा, क्षोभ और विद्रोह के क्षणो से गुजरना पडा होगा। हो सकता है कि उनके समय मे समस्याओ का रूप इतना विकराल न रहा हो क्योंकि उस समय के लोगो का खाना-पीना और रहना बहुत सादा था। इतनी मारा-मारी, पाश्चात्य सभ्यता का अधानुकरण, बढती आबादी के कारण जीवन के हर क्षेत्र मे कडी प्रतियोगिता और लम्बी कतारे उनके समय मे न रहीं होगी जितना सामना आज के युवको को करना पड रहा है। जब तक यह बात बुजुर्गो के दिमाग मे नही आयेगी, तब तक अकुश से कुछ न होगा। बुजुर्ग युवको का ध्यान रखना प्रारम्भ कर दे फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।

जिज्ञासा *गुरुदेव' विश्व के विभिन्न देशो मे युवाओ की स्थिति किस तरह की है?*

समाधान विश्व के किसी भी उन्नत राष्ट्र को हम देख ले वहाँ के युवको की हालत हमारे देश स भिन्न मिलेगी। वहाँ ऊँचे से ऊँचे पदो पर युवक आसीन मिलेगे। वस्तुत वे लोग मानते हे कि विकासोन्मुख युवक की प्रतिभा मे विद्युत की सी ऐसी त्वरा और प्रेरक शक्ति होती है जो उनमे राष्ट्रीय आदर्शो और उद्देश्य के प्रति लगाव और आकर्षण उत्पन्न करती है। उसके अभिनव सृजक विचारो मे असम्भव और कठिनतम कार्य सम्पादन कर लेने की शक्ति और क्षमता होती हे। हमे युवक को आगे लाकर उन्हे अवसर प्रदान करने का जोखिम तो उठाना ही पडेगा। उन्हे भरोसा भी दिलाना होगा कि कठिन प्रयास व पुरुषार्थ के बाद उनका जीवन निश्चित प्रकाशमान होगा। उन्हे सहानुभूति, अवसर व प्रोत्साहन देने के लिए आगे आना होगा। हमारे राष्ट्र नेताओ को अपने आचरणो से उन्हे राष्ट्र प्रेम की सीख देनी होगी। देश की मिट्टी मे भ्रष्ट राजनीति ने जो बबूल उगाए है उसी से युवा पीढी के जीवन मूल्यो मे नैतिकता और देश प्रेम घट रहा है। यह रिसता हुआ प्रश्न बार-बार सामने आ जाता है कि क्या इस स्थिति के लिए पूरी तरह युवा पीढी ही दोषी है या उनके वारिसो ने जो अपने आचरणो से अपना चरित्र उनके सामने प्रस्तुत किया हे यह भी उनकी उदासीनता का एक प्रमुख कारण है।

पिछले पाच हजार वर्षो की एक समृद्ध सास्कृतिक विरासत पर गर्व करता हमारा देश अपने आपको सहसा ऐसे सकरे गलियारे मे इस युवा पीढी की ज्वलन्त समस्या के कारण पा रहा है कि जिसका कोई ओर-छोर दिखाई नही पड रहा। सबसे खतरनाक बात यह है कि कोरी राजनीति करने वाले इस अहम् मुद्दे का वास्तविक परिणाम और

महत्व या इसकी उपदेयता या ज्वलन्तता को या तो समझने मे असमर्थ है या इसे जानबूझ कर नहीं समझ रहे जिमसे इनकी जिद मे युवा पीढी बुरी तरह पिस रही है।

जिज्ञासा *क्या आज की युवा पीढी अपने कर्णधारो की भूमिका से आश्वस्त है?*

समाधान बेरोजगारी की विकट समस्या को झेल रहे युवा-युवतियो को कही-न-कही यह अहसास तो हो चला है कि उनका दश गलत हाथो क हवाले हो गया है। इस पीढ़ी मे बेचैनी है, अपनी असुरक्षा का बोध है। उसक सामने जीवन यापन के अन्य विकल्पो के दरवाजे बन्द है। वह यह साचने पर विवश है कि आज की लकवाग्रस्त व्यवस्था मे ही उसे शामिल हो जाना चाहिए और सारी सुविधाए उन्ही माधनो से जुटानी चाहिए जैसी आज की व्यवस्था का स्वरूप है।

जिज्ञासा *सत्ता के शीर्ष पर जो काबिज है क्या व इन समस्याओ का निराकरण करने मे सक्षम है?*

समाधान आज की राजनीति एक मखोल बन गई है। भ्रष्टाचार के आरोपो-प्रत्यारोपो, अविश्वास और महाभियोग के प्रस्तावो, एक-दूसरे पर कीचड उछालने की बेहया हरकतो के बीच आज की ससद राज्यसभा और विधान सभाए चल रही है। मुझे नही लगता कि ये लोग आज की युवा पीढी के समक्ष कोई आदर्श, दश प्रेम, कर्त्तव्यबोध या नेतिक चरित्र प्रस्तुत कर रहे है। इनके सारे आचरण स पूरी पीढी की निराशा निरन्तर बढ रही है।

जो लोग वर्तमान की उपेक्षा कर देते है उनके लिए इतिहास बडा सख्त और अनुदार हुआ करता है। फिर भी व्यक्ति को निराशावादी नही होना चाहिए। कठिन पुरुषार्थ से अनेक देशो ने अपनी जर्जर व्यवस्थाओ पर काबू पाकर कायाकल्प की है।

जिज्ञासा *क्या आज की शिक्षा-नीति रोजगार उपलब्ध कराने मे सक्षम है?*

समाधान हमारे राष्ट्र का प्रत्येक शिक्षाविद् और सामान्य नागरिक भी आज यह अनुभव करने लगा है कि हमारी शिक्षा प्रणाली बहुत ही दूषित, अपूर्ण और अनुपादेय है। उसे ग्रहण करने वाला न घर का रहता है न घाट का। अकादमिक अध्ययन पूरा कर छात्र दीक्षान्त समारोह से बाहर निकलते ही नौकरी की तलाश मे जुट जाते है क्योंकि उसके अतिरिक्त उसको अन्य कोई काम जचता ही नहीं। स्वतन्त्र और स्वावलम्बी काम तो उसकी विचार वीथी के सर्वथा बाहर होता है। इधर युवक की फैशन-परस्ती कोढ मे खाज बन जाती है। वह उसके परिवार के लिए असहनीय बोझ बन जाती है।

बाबू बेकार है फिर भी उसको टेरेलिन और ग्रेवडिन के आधुनिकतम चुस्त पतलून और बढिया बुशर्ट, अच्छे से अच्छा और आकर्षक सूट चाहिए। उसका निश्चित विश्वास बन गया है कि उसके बिना वह अपने हमजोलियो मे उपहास का पात्र बन जाएगा, जो वह कभी नही चाहता। इधर घर की हालत ऐसी नही है कि उसके अभिभावक उसकी ऐसी महगी मागो को पूरा कर पाए। नित नए सौन्दर्य प्रसाधन भी तो चाहिए उसे, जिनकी पूर्ति उसकी क्षमता के सर्वथा बाहर की बात होती है। इसी फिक्र मे जवान बूढा हो जाता है, उसके बाल पक जाते है, उसकी हिम्मत दम तोड देती है। भारत जैसे अर्द्ध-विकसित देश मे, जहाँ अभी उसे हर क्षेत्र मे बहुत कुछ करना है, उसके लिए तकनीकी ज्ञान और सहयोग की नितान्त आवश्यकता है, तकनीकी युवको को काम नही मिलता। वे लाखो की सख्या मे आज भी बेकार बैठे है। उस पर भी तुर्रा यह कि हमारे सेकड़ो विश्वविद्यालय बेरहमी और धडल्ले से प्रतिवर्ष लाखो ऐसे बेकारो की फोज खडी करने मे व्यस्त है। इस दिशा मे हमारे देश को गहरे चिन्तन और दायित्व के साथ विचार करना पडेगा।

जिज्ञासा *शिक्षित वर्ग की बेरोजगारी मे कही शासनतन्त्र का भी हाथ है?*

समाधान शिक्षित वर्ग की बेकारी के लिए हमारा शासनतन्त्र भी कम जिम्मेदार नही है। समान स्तर ओर योग्यता की नई पीढी की भीड उपलब्ध होते हुए भी अवकाश प्राप्त लोगो की पुनर्नियुक्ति का क्या प्रयोजन है। यह कम-से-कम सामान्य बुद्धिजीवी की समझ के बाहर है। एक ओर अधिवार्षिकी निश्चित करना और अवकाश प्राप्त लोगो की धडाधड की जाने वाली पुनर्नियुक्ति का भला क्या साम्य है? यह युवको के प्रति अन्याय हे। यह स्पष्टत युवको के अधिकारो का अतिक्रमण हे, उन पर जानबूझकर किया जाने वाला कुठाराघात है। ऐसे अवसर पर अक्सर नये युवको के अनुभव की बात कह दी जाती है। वे इस बात की शिकायत इस प्रकार करते है जैसे कि वे अनुभव लेकर पेदा हुए थे।

जिज्ञासा *युवा पीढी के भटकाव को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?*

समाधान शिक्षा पद्धति मे आमूलचूल परिवर्तन किया जाए तथा शिक्षा ऐसी व्यावहारिक, उपयोगी और उपादेय होनी चाहिए कि अध्ययन पूरा होने के साथ ही युवक को उपयुक्त काम-धन्धा मिल सके, उसे परमुखापेक्षी नही रहना पडे और मात्र नौकरी की तलाश मे भटकने और उसमे होने वाली किल्लत से उसको बचाया जा सके।

इसके लिए दूसरी आवश्यकता है युवको के प्रति बुजुर्गो का दृष्टिकोण बदला जाए। उनकी ईर्ष्यालु मनोवृत्ति समाप्त हो। यह हमारा दुर्भाग्य है कि लम्बी-चौडी बाते

बहुत कही-सुनी जाती हैं, आकर्षक लच्छेदार भाषणो की भी कमी नहीं होती, किन्तु करने योग्य बात के लिए कोई भी सतर्क और प्रयत्नशील नही लगता। इसके विपरीत अपेक्षा की जाती है युवक से कि उसका सुधार वही करे। चिकित्सक यदि रोगी से कह दे कि वही स्वेच्छा से अपना उपचार कर ले, तो क्या यह सम्भव होगा?

तीसरी और अन्तिम आवश्यकता यह है कि हम नि शक होकर युवको पर बोझ डालना प्रारम्भ कर दे, जिससे उनके पास इतना समय ही न बचे कि अनावश्यक खुराफात करने मे लग पाए। तब आप देखेगे कि युवक स्वत अनुशासित हो गया है और राष्ट्र को अपना बहुमूल्य योग देने मे अगुवा बन गया है। बुद्धिमानी इसी मे है कि युवको का सहयोग लिया जाए। तभी अनुभव करेगे कि गहरे दलदल मे फसी हमारे राष्ट्र की गाडी निरन्तर आगे बढ रही है, प्रगति कर रही है।

हमे युवको को आगे लाकर उन्हे अवसर प्रदान करने का जोखिम तो उठाना ही पडेगा। उन्हे भरोसा भी दिलाना होगा कि कठिन प्रयास व पुरुषार्थ के बाद उनका जीवन निश्चित प्रकाशमान होगा उन्हे सहानुभूति, अवसर व प्रोत्साहन देने के लिए आगे आना होगा। हमारे राष्ट्र नेताओ को अपने आचरणो से उन्हे राष्ट्र प्रेम की सीख देनी होगी।

अन्त मे मै यही कहना चाहूँगा कि युवा पीढी की उपेक्षा करने की अपेक्षा उन पर कार्य का बोझ डालना अधिक उचित होगा। उन्हे अवसर देना होगा, भरोसा दिलाना होगा और समय-समय पर उन्हे उचित मार्ग-दर्शन देना होगा।

राजनीतिज्ञ समझें : नैतिक जिम्मेदारियाँ

"

आज देश प्रेम की ज्योति को प्रज्वलित करने की नितान्त आवश्यकता है, हमें अमर शहीदों की कुर्बानी को याद रखते हुए, स्वार्थ लोलुपता से ऊपर उठकर अपने जीवन का प्रथम लक्ष्य देश प्रेम बनाना चाहिए। राष्ट्र प्रेम से ही 21वीं शताब्दी में भारत की अग्रणी भूमिका को सुनिश्चित किया जा सकेगा। हमारा पूरा चिन्तन राष्ट्र व जन-कल्याण को समर्पित होना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र के जन-नेताओं को भी अपने में भारी बदलाव की आवश्यकता है। - उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

वीरशासन जयन्ती, वर्षायोग 2000, गन्नौर (हरियाणा)

इच्छाशक्ति सफलताओ का कल्पवृक्ष है। उसके सामने सभी अवरोध अस्तित्व शेष हो जाते है। हमे राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए अपने व्यक्तिगत हितो का बलिदान करना चाहिए। राष्ट्र सन्त उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज का कथन है कि राष्ट्र के प्रति आत्मीयता स्वय हमारी उन्नति एव सुरक्षा का कारण है। राष्ट्र प्रेम हमारे गौरव मे अभिवृद्धि करता है।

वास्तव मे उपाध्यायश्री का हर शब्द जीवन को दिशा दृष्टि देने वाला है। उनकी मुस्कान मे समाधान है और वाणी मे समन्वय का स्वर है। उपाध्यायश्री से 20वी शताब्दी मे भारत द्वारा भोगी प्रताडना और पराजय व 21वी शताब्दी मे विश्व मे भारत की भूमिका पर हुई चर्चा के प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन।**

जिज्ञासा *21वी शताब्दी मे भारत की भूमिका क्या इतनी ही निराशाजनक रहेगी जैसी 20वी शताब्दी मे रही?*

समाधान · यह तो सच है कि बीते एक हजार साल के काल खण्ड मे बहुत थोडा

समय ही ऐसा रहा जब भारत की जनता स्वाभिमान से सर उठाकर जी सकी अन्यथा भारतीय समाज प्रताडना और पराजय से ही जुडा रहा। पूरा विश्व आज अवमूल्यन की चपेट में है और भारत भी इससे अछूता नही है। 20वी सदी मे स्वतन्त्रता प्राप्ति (1947) के बाद से जहॉ देश मे आर्थिक, सामाजिक व भोग विलास की सामग्री को उपलब्ध कराने के प्रगतिशील प्रयत्न हुए वहीं मनुष्यता का तेजी से ह्रास हुआ। इसका मुख्य कारण नित नए विकास, बढती हुई इच्छाओ की पूर्ति के लिए अन्धाधुन्ध प्रयास, पाश्चात्य भोगवादी सस्कृति का अनुकरण एव विचारो मे स्वच्छन्दता है लेकिन इसका यह अर्थ कदापि न निकाल लिया जाये कि 21वी शताब्दी से भी निराशा ही हाथ लगेगी। यदि पतझड बसन्त का सदेशवाहक हे, निशा-उषा की आगवानी करती है, काले मेघ सुखद मेह बनकर बरसते है, तो आज की दुखदूस्थिति कल का मगलमय विहान भी हो सकता है।

जिज्ञासा *इस सन्दर्भ मे इतिहास की क्या दृष्टि है?*

समाधान इतिहास साक्षी है कि आपदाओ की छाती पर अपनी एडिया रगडकर सत्रस्त मानव के पौरुष ने अपने भाग्य का लेख स्वय अपने ही हाथो और अपने ही रक्त की लाली से लिखा है - इतिहास का पेट सकटो के साथ मानव के फौलादी हौसले व जुझारु प्रयत्नो की गाथाओ से ही भरता हे। यदि देश के राजनेताओ की नीयत और नीति नेक रही तथा वे अपने निजी स्वार्थो से ऊपर उठकर जन-कल्याण व राष्ट्र प्रेम से जुडे इतना ही नही, यदि नौजवान निर्बलता का परित्यागकर पूरी निष्ठा व आत्म श्रद्धा के साथ देश की बिगडती शक्ल सुधारने को खडे हो जाए तो कौन 21वी शताब्दी मे भारत की अग्रणी, महान व सार्थक भूमिका को चुनौती दे सकेगा?

जिज्ञासा *क्या यह सत्य है?*

समाधान हमे इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि आज हम परेशान होने पर भी प्रयत्न और परिश्रम से भागते है। उद्धार का मार्ग पुरुषार्थ है, आराम नही। देश के वीर सपूतो के अमर बलिदानो ने क्या हमारी परतन्त्रता की बेडियॉ काटकर हमे स्वाधीनता नही दिलायी थी? उन्होने भी तो मरणासन्न समाज मे प्राणो का स्पन्दन किया था! तो वर्तमान दुर्दशा पर भी विजय अवश्य पायी जा सकती है। हमे अपनी कर्म चेतना को जगाना व राख मे दबी पडी आग को हवा के झोको से चेताना होगा।

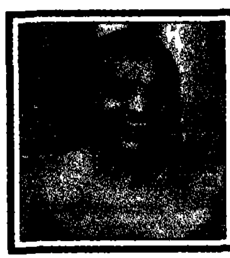
जिज्ञासा *आपने सर उठाकर जीने वाले थोडे समय की बात कही - उससे आपका क्या अभिप्राय था?*

समाधान 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतन्त्रता मिली तब भारतीय नागरिक

स्वाभिमान से सर उठा सका किन्तु इन 50 वर्षो मे जो कुछ भी विकास हुआ वह भ्रष्टाचार की भेट चढ गया। अधिकाश ग्रामीण जनता और आधी से अधिक शहरी जनता आभावो की शिकार है। समाज पर राजनीति का नियन्त्रण है। पुरानी आध्यात्मिक शक्ति के बल पर एक बार फिर इस चुनौती का सामना करे और जो सर उठा कर जीने का अवसर हमे मिला है उसे दुर्गति से बचाएँ। यदि देश के कर्णधारो ने देश की लकवाग्रस्त आर्थिक नीति मे पर्याप्त सुधार व आत्म-निर्भरता को त्याग कर पूजीवादी आर्थिक व्यवस्था के आगे आत्म-समर्पण कर दिया तो अतीत से मिली सामाजिक विसगतियाँ, बढती जनसख्या और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर निर्भरता के कारण देश को सकट के मकडजाल से बचा पाना मुश्किल होगा।

जिज्ञासा *पिछले एक हजार वर्ष मे भारत की सामाजिक शक्ति के दोहन का विशेष काल कौन-सा रहा?*

समाधान लगभग बारह सौ से उन्नीस सौ ईसवी तक के काल को मै भारत की सामाजिक शक्ति के दोहन का काल मानता हूँ।



मै इसे भारतीय राजनीति का कृष्ण पक्ष कहूँगा। इसके शुक्ल पक्ष की सबको बेसब्री से प्रतीक्षा है अन्यथा 21वीं शताब्दी में भारत की भूमिका पर प्रश्न चिह्न लग जायेगा? इस कोढ़ में खाज उठने से पहले ही हमें उपचार पर ध्यान देना चाहिए। जन शक्ति को अपने आप को असहाय न समझकर तथा पलायन की प्रवृत्ति को छोड़कर इन बुराईयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का सकल्प लेना होगा।

जिज्ञासा *विश्व के सन्दर्भ मे स्वतन्त्र देश वास्तव मे किसे कहेगे?*

समाधान आज की दुनिया मे उसी देश को स्वतन्त्र कहा जायेगा जिसे अपनी राष्ट्रीय नीतियो के निर्धारण व कार्यान्वयन की स्वतन्त्रता हो, वित्तीय प्रवाह उसके नियन्त्रण में हो, प्राकृतिक ससाधनो के प्रयोग मे कोई बाहरी हस्तक्षेप न हो, सचार माध्यम उसके कब्जे मे हो और अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए सेना व शस्त्र के सग्रह व निर्माण मे किसी का हस्तक्षेप न हो न ही किसी दूसरे देश पर आश्रित हो।

जिज्ञासा *इस परिप्रेक्ष्य मे भारत सहित तीसरी दुनिया के स्वतन्त्र देश क्या वास्तव*

मे अपनी प्रभुसत्ता कायम रख पा रहे है?

समाधान इस दृष्टि से देखे तो भारत सहित अनेक स्वतन्त्र देशो की स्वतन्त्रता पर प्रश्न-चिह्न लगता नजर आ रहा है। आज किसी देश को गुलाम बनाने के लिए केवल अपनी सेना भेजना ही आवश्यक नही रह गया है। जिस देश को गुलाम बनाना है यदि उसकी राजनीतिक गतिविधियो को अपने चगुल मे कर लिया जाये, वहाँ के व्यापार पर आपका नियन्त्रण रहे, वहाँ की पूजी व श्रम शक्ति का आप जैसा चाहे प्रयोग कर सके, वहाँ की प्राकृतिक सम्पदा पर आपका आधिपत्य रहे, वहाँ आपकी सस्कृति के अकुर उभरे और वहाँ के लोगो पर आपका भय बना रहे तो वह देश राजनैतिक रूप से स्वतन्त्र होते हुए भी स्वतन्त्र नही है। इससे क्या फर्क पडता है कि ससद और विधानसभाओ मे हमारे लोग हे या नहीं। इतने के बाद फिर क्यो यह सब सिर-दर्द मोल लिया जाये। मुझे लगता है कि आज पूरी स्थिति की गहन समीक्षा की आवश्यकता है।

जिज्ञासा *आपका इशारा किस ओर है उपाध्यायश्री?*

समाधान क्या ऐसा नहीं लगता कि आज अनेको देश विश्व बेक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष व बहुराष्ट्रीय कम्पनियो जैसें अनेको सगठनो के माध्यम से भारत को पुन गुलाम बनाने का ताना-बाना बुनने के कुचक्र मे सलिप्त है। क्या ऐसी सस्थाये हमारे कच्चे माल, पूजी और श्रम शक्ति के दोहन के लिए प्रयासरत नही हे? अब तो उन्हे भारत मे उद्योग स्थापित कर मुनाफा ले जाने की गारण्टी के साथ-साथ अपनी सारी सुरक्षित पूजी जब चाहे ले जाने की सुविधा भी उपलब्ध है। आज श्रेष्ठतम तकनीकी व



"अर्द्ध शताब्दी तक गुलामी की असहनीय पीड़ा झेलने के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत गुलामी के फन्दे से मुक्त हुआ तथा 26 जनवरी 1950 को भारत एक स्वतन्त्र प्रभुत्व सम्पन्न लोकतान्त्रिक गणराज्य बना। नारी के रूप में एक सशक्त प्रधानमत्री श्रीमति इन्दिरा गाँधी सामने आयीं। शताब्दी के अन्त में भारत ने परमाणु परीक्षण कर पूरे विश्व को आश्चर्य में डाल दिया। 30 जनवरी 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की हत्या, प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गाँधी (1984) व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी (1991) की हत्या की गयी।"

पूजी पर उन देशों का अधिकार है, जो कल हमारे सम्राट थे। हमें आधुनिक तकनीक के लिए उनके हुजूरी में सिर झुकाना ही होगा। अन्तर्राष्ट्रीय पूजी प्रवाह पर उनका नियन्त्रण है और भारत के पूजी प्रवाह पर अपना नियन्त्रण जमाने मे वे एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। धीरे-धीरे प्राकृतिक ससाधनों का प्रयोग कैसे होगा इस पर भी उनकी पैनी दृष्टि लगी है और वे इसमें हस्तक्षेप के लिए निरन्तर सेध लगाने के प्रयास में है।

जिज्ञासा *अच्छा, उचित है आपका कथन -*

समाधान ज्ञात रहे' आज किसी भी देश के लिए सचार माध्यम उसकी सबसे बडी शक्ति है। अब चाहे इलैक्ट्रानिक मीडिया हो या प्रिट मीडिया, इस पर विदेशी ताकतो का नियन्त्रण हो चला है। इतना ही नही आज इलैक्ट्रानिक मीडिया का प्रसारण व नियन्त्रण विदेशी धरती व आकाश से हो रहा है। जन सस्कृति को बदलने का सचार माध्यम सबसे सशक्त उपकरण है। विदेशी सचार माध्यम इस दिशा मे भारत को जो कुछ परोस रहे है, उससे भारतीय नैतिक मूल्यो का किस प्रकार ह्रास हो रहा है यह किसी से छुपा नही। परिवार मे कलह, सयुक्त परिवार की अवधारणा की समाप्ति, फ्री-सैक्स की ओर बढते कदम, सतान मे मॉ-बाप के प्रति घटता सम्मान, निर्लज्जता, अपराध करने के अति आधुनिक तरीको की जानकारी, बिना परिश्रम के डर और भय उत्पन्न करके रातो-रात करोडो की सम्पदा के स्वामी बनने का स्वप्न, नारी जाति को विज्ञापन व भोग की सामग्री के रूप मे स्थापित कर उसकी गरिमा को कम करने का षड्यन्त्र, भारतीय रसोइयो की सास्कृतिक खुशबूओ को डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थो व मसालो मे बदलने का प्रयत्न क्या इस विदेशी सचार माध्यम की ही कृपा का फल नही है। घातक हथियारो के भी इन देशो के पास भारी जखीरे है। ग्लोबलाइजेशन के नाम पर हमारे पुराने सम्राट के उत्तराधिकारी किस तरह हमारी स्वतन्त्रता पर डाका डाल रहे है इसके प्रति हमे हर क्षण सचेत रहने की आवश्कता है। देश का नेतृत्व आज जिन भ्रष्ट राजनेताओ के हाथो मे है उनका अन्तर्राष्ट्रीय बोध तो प्राय मृत लगता है साथ ही उनका राष्ट्रवाद भी कुण्ठित है।

जिज्ञासा *भारतीय राजनीति का जो निराशाजनक परिदृश्य 20वी शताब्दी मे है उसका असर निश्चित रूप से 21वी* शताब्दी मे भारत की भूमिका पर पडने वाला है। इसके बारे मे आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

समाधान यह देश का दुर्भाग्य है कि राजनीति आजकल व्यवसाय का रूप ले चुकी है। लोक-कल्याण की भावना तो कोसो दूर है। विकास के जो आधे-अधूरे कार्य होते भी है उनका एकमात्र उद्देश्य केवल चुनाव जीतना भर रह गया है। योजनाओ की पूजी

का एक बड़ा भाग भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता, सत्ता पर काबिज होना व भाई-भतीजावाद की आग मे स्वाहा हो जाता है। कुछ स्वार्थी नेताओ ने तो नैतिकताओ की सारी सीमाओ को लाघ कर देश की अस्मिता को बेच दिया है। ऐसी मानसिकता वाले लोगो का आज वर्चस्व है। ऐसा नही कि राजनीति मे हर जन प्रतिनिधि बेईमान ही है और उसे देश की सुरक्षा, आत्म-निर्भरता व राष्ट्रीय एकता की चिन्ता नही है, किन्तु ऐसे मुट्ठी भर लोग विदेशी षड्यन्त्रो और भ्रष्ट नेताओ के वर्चस्व के बीच घिरे अपने को असहाय पाते है।

एक तरफ तो राजनीति का अपराधीकरण हुआ है वही दूसरी ओर अपराध का राजनीतिकरण हुआ है। वर्तमान समय मे भारत का राजनीतिक परिदृश्य पूर्णत निराशाजनक है। देश मे स्वार्थ प्रेरित एक नये तरह की राजनीतिक सस्कृति का विकास हुआ है जो अब फलने-फूलने लगी है। इस नई सस्कृति मे जन-कल्याण, नैतिकता, आदर्श पालन व राष्ट्र प्रेम जैसी किसी चीज के लिए कोई स्थान नही है। दल-बदल, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, वर्गवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, भाई-भतीजावाद, अलगाववाद, भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यो का ह्रास, हिसा, लूट, अपहरण, बलात्कार, आतकवाद, धमकियॉ, प्रतिद्वन्द्वियो की हत्याये, चुनाव मे भ्रष्ट तरीके अपनाना, गठबन्धन की अस्थिर सरकारे, दलो मे अन्तर्कलह जैसी बाते भारतीय राजनीति मे आज सामान्य बात हो गई है।

जिज्ञासा *क्या राजनीति का भविष्य मे भी यही रूप रहेगा?*

समाधान मै इसे भारतीय राजनीति का कृष्ण पक्ष कहूँगा। इसके शुक्ल पक्ष की सबको बेसब्री से प्रतीक्षा है अन्यथा 21वी शताब्दी मे भारत की भूमिका पर प्रश्न चिह्न लग जायेगा? इस कोढ मे खाज उठने से पहले ही हमे उपचार पर ध्यान देना चाहिए। जन शक्ति को अपने आप को असहाय न समझकर तथा पलायन की प्रवृत्ति को छोडकर इन बुराईयो को जड से उखाड फेकने का सकल्प लेना होगा। उन्हे कर्तव्य निष्ठा के साथ स्वतन्त्रता प्राप्ति की मुहिम की तरह एक बार फिर भारत की अस्मिता को बचाने के लिए लामबद्ध होना ही पडेगा। इसी मे देश का व स्वय का कल्याण है। अग्रेजी मे कहा गया है Without duty and discipline the diety of democracy shall be doomed to death and destruction लोकतन्त्र मे कर्तव्यपरायणता और अनुशासनबद्धता के अभाव मे लोकतन्त्र का देवता विनाश अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा।

जिज्ञासा *भारतीय राजनीति मे जाति की भूमिका क्या है?*

समाधान राजनीति मे जाति का प्रभाव अनवरत बढ रहा है। इधर सामाजिक और

धार्मिक क्षेत्र में जाति के बन्धन किंचित शिथिल हुए है वही राजनीतिज्ञो व प्रशासनिक अधिकारियो की कृपा व अँग्रेजो ने भारत छोड़ने से पूर्व जो योजनाबद्ध तरीके से जातिगत बीज बोये थे उनकी फसल अब पककर पूरी तरह तैयार हो चुकी है। राजनीतिज्ञ इस फसल का पूरा लाभ उठा रहे है और देश को लकवाग्रस्त कर रहे है। राजनीति मे जाति अतार्किक इकाई को इतना महत्व देना किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए चिन्ता का विषय है। जातिगत आधार पर चुनाव मे प्रत्याशियो की गुणवत्ता को न दिखाकर उनके जातिगत प्रभाव को मुख्यता से प्रस्तुत कर विभिन्न राजनैतिक दलो द्वारा लडाया जाता है।

जिज्ञासा *भारतीय राजनीति मे नैतिकता की आवश्यकता पर आप किस प्रकार बल देना चाहेगे?*

समाधान भारतीय राजनीति मे आज कतर्व्यहीनता परकाष्ठा पर है घोटालो की लम्बी श्रृखला नैतिकता के ह्रास की कहानी स्वय कह रही है। इसे बार-बार दोहराने की आवश्यकता मै नही समझता। भारतीय राजनीति अगर भ्रष्टाचार, अपराध, धार्मिक उन्माद और जातिवाद से उबरे तो यह कहा जायेगा कि भारतीय राजनीति जन-कल्याण के लिए कार्य कर सकती है। भारतीय राजनीतिज्ञो को अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर अपनी नैतिक जिम्मेदारी का पालन करना चाहिए।

जिज्ञासा *भारत मे लोकतन्त्र का भविष्य क्या है?*

समाधान लोकतन्त्र महज एक शासन प्रणाली ही नही है यह एक जीवन दर्शन भी है। सामाजिक एव आर्थिक लोकतन्त्र के अभाव मे राजनैतिक लोकतन्त्र एक कोरी कल्पना है। लोकतन्त्र की उपर्युक्त कसौटी पर भारतीय लोकतन्त्र खरा नहीं उतर रहा हे। अतएव इसके भविष्य पर प्रश्न चिह्न लगना तो स्वाभाविक ही है।

व्यवहारिक धरातल पर समाज के किसी भी पक्ष मे समरसता नहीं है। जातिगत या धर्मगत वैमनस्यता दिन-प्रतिदिन बढ रही है। धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की दुहाई दी जाती है और समान नागरिक सहिता जैसे मुद्दो को बार-बार उछाल कर पीछे धकेल दिया जाता है। यह दोहरा खेल वोट बैक से प्रभावित है किन्तु इन मुद्दो के चलते साम्प्रदायिक तनाव को बढावा मिलता है। आम आदमी की स्वतन्त्रता का हरण हो रहा है। ससदीय शालीनता और मर्यादाए दम तोड रही है। अनुशासनहीनता अपनी चरम सीमा पर है। जनप्रतिनिधियो द्वारा अपने अधिकारो के दुरुपयोग की बाते रोज सुनने मे आ रही है। भ्रष्टाचार सक्रामक रोग का रूप ले चुका है। सार्थक शिक्षा का अभाव है। पृथक्‌तावादी ताकते सक्रिय है। निर्वाचन प्रणाली मे अनेक दोष है। सत्ता पक्ष व विपक्ष मे कोई

सामजस्य नही है। विपक्ष अपना दायित्व निभाने मे असफल है। भारतीय राजनीतिज्ञो का स्वरूप भी विकृत हो रहा है। भारत की न्यायिक प्रक्रिया एक ऐसी विलम्बित प्रक्रिया का रूप लेती जा रही है जिससे न्याय महगा, उबाऊ एव महत्वहीन होता जा रहा है। कहा गया है - Justice delayed is justice denieed (न्याय मे विलम्ब न्याय न देने के समान है) बेरोजगारो की लम्बी कतारे है। आर्थिक लोकतन्त्र विदेशी अर्थगत नीतियो की बैसाखियो के बल चल रहा है।

भारत क लोकतन्त्र को राजनीतिक प्रदूषण से खतरा उत्पन्न हो गया हे। इसस भारत म लाकतन्त्र की ऊर्जा तो निश्चित स्खलित हुई है।

जिज्ञासा *20वी सदी की उपलब्धियो व समस्याओ (जिनस रु-ब-रु होना पडा) पर कृपया थाड़ा प्रकाश डालने की कृपा कीजिएगा?*

समाधान अर्द्ध शताब्दी तक गुलामी की असहनीय पीडा झेलने क बाद 15 अगस्त 1947 को भारत गुलामी के फन्दे से मुक्त हुआ तथा 26 जनवरी 1950 को भारत एक स्वतन्त्र प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य बना। नारी के रूप मे एक सशक्त प्रधानमत्री श्रीमति इन्दिरा गाधी सामने आयी। शताब्दी के अन्त मे भारत ने परमाणु परीक्षण कर पूरे विश्व को आश्चर्य मे डाल दिया। 30 जनवरी 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की हत्या, 1989 मे प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गाधी (1984) व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी (1991) की हत्या की गयी। विज्ञान, अन्तरिक्ष, खेलकूद, साहित्य, अर्थशास्त्र आदि मे नये-नये प्रतिमान स्थापित हुए। सामूहिक हत्याकाड के रूप मे (1919) मे भारत ने जलियाँवाला बाग हत्याकाड देखा। स्वतन्त्रता आन्दोलन मे देश के अनेक अमर शहीदो ने अपनी शहादत देकर देश के गौरव को बढाया।

1952 मे 20वी सदी का भारतीय लोकसभा का पहला आम चुनाव हुआ। अक्टूबर 1962 मे चीन-भारत युद्ध। 1965 मे पुन भारत-पाक युद्ध हुआ। 1971 मे पाकिस्तान के साथ युद्ध और बगलादेश का अभ्युदय हुआ और एक लाख के लगभग पाकिस्तानी सैनिक बधक बनाये गये। 1999 मे पाकिस्तान से कारगिल मे अघोषित युद्ध हुआ।

100 वर्ष की पूरी घटनाओ के लिए तो एक लम्बी सूची दरकार होगी जो कि यहाँ सम्भव नही। हादसे, प्राकृतिक अपदाये, पनपते अपराध व भ्रष्टाचार, शिक्षा के क्षेत्र मे सुधार के प्रयास आदि न जाने कितनी उपलब्धियाँ और कितनी समस्याये है। भारत की जनसख्या अब बढकर एक अरब के आसपास तक पहुँच गई है।

जिज्ञासा *स्वतन्त्रता पूर्व और स्वतन्त्रता के बाद आपकी दृष्टि मे देश प्रेम की क्या स्थिति रही?*

समाधान · मातृभूमि के प्रति निष्ठा रखना मनुष्य का नैसर्गिक गुण है। देश प्रेम से ओत-प्रोत होकर जिन्होने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था उन अमर शहीदो के प्रति प्रत्येक भारतीय नत-मस्तक है किन्तु देश प्रेम की जो अरुणमय लालिमा स्वतन्त्रता से पूर्व थी वह आज लगभग विलुप्त हो चुकी है। उस समय देश प्रेम लोगो मे कूट-कूट कर भरा था तथा देश की आजादी ही एकमात्र लक्ष्य था। उन्हे धन, सुविधाओ या पदो की इच्छा नही थी। निजी स्वार्थ से तो लोग कासो दूर थे। राष्ट्र प्रेम ही सर्वोपरि था। स्वतन्त्र होते ही न जाने चेतना को कैसा ग्रहण लगा कि देश प्रेम का वह तूफान मन्द पडता चला गया तथा स्वार्थ सिद्धि ने देश प्रेम का स्थान ले लिया है।

जिज्ञासा *गुरुदेव! अन्त मे देशवासियो के लिए आप कोई सदेश दीजिएगा। जिससे उनका भला हो सके।*

समाधान · महानुभाव! प्रत्येक नागरिक को अपनी मानसिकता परिष्कृत और परिवर्तित करनी होगी। आज भारत की अखण्डता के लिए राष्ट्रवाद की भावना के अभाव के कारण भारी खतरा पैदा हो रहा है। प्रखर राष्ट्रवाद किसी भी राष्ट्र का सबसे बडा सम्बल होता है। इस प्रसग मे हमे स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता के अन्तर को समझना होगा, साथ ही अपने देश की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना को जागृत करना होगा। राष्ट्र प्रेम को मात्र मनोहारी नारा न बनाए। हर नागरिक का यह दायित्व है कि उसका हृदय देश प्रेम से ओत-प्रोत हो और वह तन-मन-धन से देश की सेवा मे लीन हो जाये। आज देश प्रेम रूपी ज्योति को प्रज्ज्वलित करने की नितात आवश्यकता है। हमे अपने अमर शहीदो की कुर्बानी को याद रखते हुए स्वार्थ लोलुपता से ऊपर उठकर जीवन का प्रथम लक्ष्य देशप्रेम बनाना चाहिये। राष्ट्र प्रेम से ही भारत की अग्रणी भूमिका को सुनिश्चित किया जा सकेगा। हमारा पूरा चिन्तन राष्ट्र व जन-कल्याण के लिए समर्पित होना चाहिए। राष्ट्र के जन नेताओ को भी अपने मे भारी बदलाव की इस परिप्रेक्ष्य मे आवश्यकता है।

पुरातन मौलिक भारतीय सस्कृति अनेक उत्थान-पतन से गुजरते हुए दस्तक दे रही है। भारत ने विश्व को सदा परस्पर प्रेम, मैत्री और साहचर्य का सदेश दिया है। आज हमारा राष्ट्रीय जीवन असतुलित है और हमे अनेक विसगतियो का सामना करना पड़ रहा है। राजनेता अब और अधिक देश की एकता, अखण्डता और इसकी बहुरगी सस्कृति को चोट न पहुचाये।

सूचना प्रौद्योगिकी : राष्ट्र एवं जन-कल्याणक

❝

योग विद्या के बल पर सूचना उपलब्धि को अलग करके यदि हम केवल मानव खोजी तकनीकी की बात करे तो इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। लम्बी दूरी के दो स्थानों के बीच सचार का सबसे पुराना तकनीकी माध्यम टेलीग्राफ है। वर्ष 1876 मे अलैक्जेण्डर ग्राहम ने टेलीफोन का आविष्कार किया। जिसके द्वारा मनुष्य की आवाज का प्रेषण दूर तक सम्भव हो सका। अब तो इटरनेट सेवा के तहत पूरी दुनियाँ में कहीं भी पलभर में बातचीत की जा सकती है, रिकार्ड देखा जा सकता है, जानकारी पाई जा सकती है। जब से मार्कोनी ने बेतार तकनीक की खोज कर दुनियाँ को आश्चर्यचकित किया है तब से सूचना के क्षेत्र मे अभूतपूर्व प्रगति होती चली गई।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

❞

मुकुट सप्तमी, वर्षायोग 2002, गन्नौर (हरियाणा)

सूचना प्रौद्योगिकी की आदिकाल से अब तक की यात्रा मे आए विभिन्न झझावतो, पडाव, उपलब्धियो पर उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज से वार्तालाप के महत्वपूर्ण अश - **गोपाल 'नारसन'** पजाब केसरी, सहारनपुर

जिज्ञासा *"सूचना" शब्द की शुरुआत कहाँ से हुई और इसका अतीत क्या है?*

समाधान जब से सृष्टि की रचना हुई, तभी से मानव सृष्टि की हर गतिविधि को जानने-समझने की कोशिश करता रहा है। मानव की यही सोच उसे प्रगति पथ पर ले गई और मानव मे उत्तरोत्तर विकास हुआ। यदि ऐसा न होता अर्थात मानव मन मे शका, जिज्ञासा, उत्कण्ठा न होती तो आज मानव जिस रूप मे है, वह रूप न होता यानि वह गुण अस्तित्व मे न आता जो मानव को, अन्य जीवो से अलग विशेषता प्रदान करता है। मानव की यही, कुछ जानने-समझने की सोच उसे आविष्कारो तक ले गई और

ससार में "कहाँ, क्या, क्यो और कैसे हो रहा है।" की जानकारी माध्यम को ही "सूचना" का नाम दिया गया है। आज सूचना प्रौद्योगिकी ससार मे अपने निखार पर है। सूचना के अप्रत्याशित रूप से बढे स्वरूप ने ससार के असीमित क्षेत्रफल को भी सीमित बना दिया है। कभी अपने गाँव तक ही कूपमण्डूक रहने वाला मानव आज पूरे ससार की जानकारी रखता है। ससार मे कहाँ, क्या, क्यो और कैसे हो रहा है? यह सब पलभर मे पता चल जाता है।

जिज्ञासा *क्या प्राचीन शास्त्रो मे भी सूचना जैसा कोई शब्द मिलता है?*

समाधान किसी के अस्तित्व अथवा विलुप्त होने का आभास जब भी किसी माध्यम से होता है, वही सूचना है। प्राचीन धर्मशास्त्रो मे "आकाशवाणी" शब्द का उल्लेख मिलता है। वायुमार्ग से जो भी ध्वनि कानो तक पहुँचती है उसे आकाशवाणी कहते है। वर्नमान मे आकाशवाणी का माध्यम रेडियो, टेलीविजन, दूरभाष बन गए है, परन्तु आदिकाल मे योग साधना के बल पर मानव, ससार मे हो रही घटनाओ को सहज ही सुन लेता था। महाभारत काल मे "धृतराष्ट्र" को युद्धभूमि का आँखो देखा हाल बताने वाले उनके मत्री "सजय" ने भी इसी विद्या का उपयोग किया था।

जिज्ञासा *सूचना तकनीकी विकास यात्रा पर कुछ प्रकाश डालिये?*

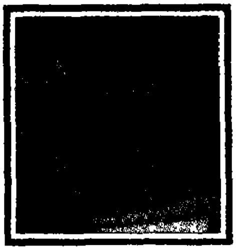
समाधान योग विद्या के बल पर सूचना उपलब्धि को अलग करके यदि हम केवल मानव खोजी तकनीकी की बात करे तो इसका इतिहास भी बहुत पुराना है। लम्बी दूरी के दो स्थानो के बीच सचार का सबसे पुराना तकनीकी माध्यम टेलीग्राफ है। वर्ष 1876 मे अलैक्जेण्डर ग्राहम ने टेलीफोन का आविष्कार किया जिसके द्वारा मनुष्य की आवाज का प्रेषण दूर तक सम्भव हो सका। अब तो इटरनेट सेवा के तहत पूरी दुनियॉ मे कही भी पलभर मे बातचीत की जा सकती है, रिकार्ड देखा जा सकता है, जानकारी पाई जा सकती है। जब से मार्को ने बेतार तकनीक की खोज कर दुनियॉ को आश्चर्यचकित किया है तब से तो सूचना के क्षेत्र मे अभूतपूर्व प्रगति होती चली गई। इसी तकनीक के द्वारा रेडियो व दूरदर्शन का सफल प्रसारण सम्भव हो सका।

जिज्ञासा *दूरदर्शन/इन्टरनेट जैसे माध्यम भारतीय सस्कृति के कितने अनुकूल है?*

समाधान : दूरदर्शन/इन्टरनेट दुनियॉ को जानने व समझने का सशक्त माध्यम है, चूकि जो कुछ हम उक्त माध्यम से देखते सुनते है वह पूरी दुनियाँ का दर्पण है जो भिन्न-भिन्न सस्कृति से सम्बन्धित है। इस कारण सब कुछ भारतीय सस्कृति के अनुरूप ही होगा, ऐसा सम्भव नहीं है। इसलिए होना तो यह चाहिए जो काम की बाते है उन्हे हम ग्रहण करे, आत्मसात करे और जो हमारी धर्म-सस्कृति के अनुरूप नहीं है, जो समाज मे विघटन, भटकाव पैदा करने वालीं है उन पर ध्यान न दे। परन्तु व्यवहारिक

रूप मे ऐसा होना तब तक सम्भव नही है जब तक सभी का बौद्धिक स्तर ऊँचा न हो। अपने अल्प बौद्धिक स्तर के कारण ही मनुष्य अच्छाई के स्थान पर बुराई को अपना रहा है। इसी कारण दूरदर्शन भारत देश मे आम लोगो के लिए विकास का कम व पतन का कारण अधिक बन गया है। दूरदर्शन के माध्यम से पाश्चात्य सस्कृति का जहर घर-घर तक पहुँच गया है। आतकवाद, आत्महत्याए, लूट, अपहरण, चोरी, डकैती सब कुछ दूरदर्शन एव सिनेमा से प्रभावित होकर समाज से भटके लोगो द्वारा किए जा रहे है।

“



सूचना प्रौद्योगिकी विश्व को एक रखने के लिए आवश्यक है। आने वाला समय तो पूरी तरह से सूचना क्रान्ति का ही वाहक है। इसलिए इसे वरदान न मानना भी एक बडी भूल होगी, परन्तु इसका प्रतिकूल प्रभाव समाज पर कम-से-कम हो, इसके लिए प्रयास करने होगे।

”

जिज्ञासा *विदेशी व देशी टी वी चैनल आज जो कुछ जनमानस को परोस रहे है वे भारतीय परिवारो की बुनियाद को किस प्रकार प्रभावित कर रहे है?*

समाधान दूरदर्शन निश्चित ही सामाजिक पतन का बडा कारण बन गया है। पहले गॉव मे चौपाल पर बडे-बुजुर्ग बैठते थे। बच्चे भी उनकी बाते सुनते थे। जो वार्त्तालाप, चौपाल पर होती थी उसमे अधिकाश सत्सग स्वाध्याय से सम्बन्धित, तो कुछ खेत-खलिहान की बाते हुआ करती थीं। दोपहर व शाम के समय एक-दूसरे के निकट बैठकर दु ख-सुख की चर्चा आत्मीयता बढाती थी। एक मर्यादा थी, सद्-आचरण था, छोटे-बडे का लिहाज था परन्तु जब से दूरदर्शन घर-घर पहुँचा है और सभी एक जगह बैठकर मारधाड, हिसा, दुराचार इत्यादि पर आधारित कार्यक्रम देखने लगे है, तभी से समाज मे विकृति आई है, लोग घरो मे ड्राइगरूम तक सिकुड कर रह गये है। छोटे-बड़े के बीच मर्यादा, सीमा समाप्त हो गई है। “माँ” शब्द की जगह “मॉम” और “पिता” शब्द की जगह पहले “डैडी” फिर “डैड” ने ले ली है। ऐसे मे भारतीय सस्कृति सुरक्षित रह पाएगी? इसमे सन्देह होने लगता है। आज पूरा समाज रूग्ण है।

आज के बडे अमीर परिवारो के बच्चो मे दूरदर्शन को देखकर पाश्चात्य सस्कृति की तर्ज पर आधुनिकतम तरीकों से अपराध व फैशन करने की जानकारी के ही फलस्वरूप

खुलकर इनका अनुकरण करते देखे जा सकते हैं। परिवारो पर नित नये फैशनों, साज-सज्जा, ब्यूटी पार्लर आदि के खर्चो का बोझ बढता जा रहा है।

परिवारो में विघटन, बडे-छोटे की मान-मर्यादाओ के अहसास का ह्रास, तर्क-तकरार, कर्त्तव्यबोध के स्थान पर अधिकारो की लडाई आज परिवारों में आम बात है जो इन विदेशी टी वी चैनलो का ही परिणाम है। उनमे जो विषय परोसे जाते है वे अति आधुनिक व बडे धनाढ्य लोगो के इर्द-गिर्द की कहानियो पर ही आधारित होते है जिनका अन्त किसी-न-किसी रूप मे अवैध चारित्रिक सम्बन्धो से जुडा होता है। आम जनमानस जो मध्यम व गरीब परिवारो से जुडा है उनकी जिन्दगियो से यह कहानियॉ कोसो दूर होती है तो इन्हे दिखाने का मकसद क्या एकमात्र भारतीय पर्यावरण को दूषित करना ही नही है? ध्यान रहे! कौन नही जानता, दूरदर्शन की उपभोक्तावादी समानान्तर सस्कृति का विकास देश के लिए निश्चित रूप से घातक है। सामान्यत भारतीय लोग अपने पारिवारिक दु ख-सुख के साथ जुड़े रहते है। पारिवारिक उपभोग को ध्यान मे रखकर आवश्यकताएँ पूरी करते है परन्तु दूरदर्शन नित्य नई-नई उपभोग सामग्री के विज्ञापन देता है जिससे इन वस्तुओ के उपभोग के प्रति दीवाने बने लोग अपने परिवार की उपेक्षा करने लगे है। व्यक्तिगत उपभोग मे सीमित करने वाली एक नई सस्कृति का जन्म हो गया है।

जिज्ञासा *क्या टेलीविजन चैनलो ने हमारी राजनीति को भी प्रभावित किया है?*

समाधान आज टी वी चैनल राजनीतिज्ञो के विपणन का सबसे सशक्त माध्यम बन चुका है। आज के विदेशी चैनल राजनीतिक घटनाओ की रिपोर्टिंग ही नही कर रहे अपितु भारतीय जनमानस को राजनीतिक व्यवस्था, समस्याओ, नेताओ के प्रति दृष्टिकोण को भी गम्भीर रूप से प्रभावित कर रहे है।

जिज्ञासा *क्या दूरदर्शन से स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव होता है?*

समाधान दूरदर्शन एक आणविक यन्त्र है। इस यन्त्र से जो विकिरण होता है, किरणे निकलती है वह हमारे आभामण्डल को छूती हुई भीतर तक पहुॅचती है वैज्ञानिक शोधो से पता चला है कि दूरदर्शन किरणो से मानव शरीर मे कैसर की सम्भावना रहती है तथा स्त्री-पुरुष मे वश-वृद्धि करने वाले क्रोमोसोम व जीन्स प्रभावित होते है, जिससे सन्तान विकलाग या अल्पायु भी हो सकती है। दूरदर्शन किरणो से बच्चो पर भी व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पडता है और उनमे रक्त कैसर तक की सम्भावना हो जाती है साथ ही दूरदर्शन से ऑखो पर तो प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव होता है।

जिज्ञासा *अर्थात् सूचना प्रौद्योगिकी वरदान के वजाए अभिशाप बन गई है?*

समाधान ऐसा कहना तो उचित नहीं होगा। सूचना प्रौद्योगिकी विश्व को एक रखने

के लिए आवश्यक है। आने वाला समय पूरी तरह से सूचना क्रान्ति का ही वाहक है। इसलिए इसे वरदान न मानना भी एक बडी भूल होगी, परन्तु इसका प्रतिकूल प्रभाव समाज पर कम-से-कम हो, इसके लिए प्रयास करने होगे। बच्चो को दूरदर्शन बहुत पास से देखने की अनुमति बिल्कुल न दी जाये तथा परिवारो मे दूरदर्शन देखने का समय कम करने की आदत डाली जाए। सरकारी एव गैर सरकारी दोनो स्तर पर भारतीय सस्कृति, धार्मिकता, राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करना होगा ताकि सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का सार्थक लाभ राष्ट्र एव जनमानस को मिल सके।

जिज्ञासा · *दूरदर्शन की दासता और उसके प्रभाव से हमे कैसे छुटकारा मिले?*

समाधान आज मानव की पूरी जीवनचर्या सुख (जिसे वह आज सुख मानता है) के लिये समर्पित है। इसे पाने के लिए वह नित-नये व्यसनो की दासता स्वीकार करता चला जा रहा है। उनमे एक महत्वपूर्ण व्यसन टी वी (दूरदर्शन) है। दूरदर्शन पर ज्ञानवर्धन व मनोरजन के अतिरिक्त आज विभिन्न विदेशी व देशी चैनलो द्वारा ऐसी सस्कृति परोसी जा रही है जो भारतीय सस्कृति एव सस्कारो के अनुकूल नही है। इसका सीधा प्रभाव युवा पीढ़ी व शिशुओं पर पड रहा है। इस सस्कृति के मूल मे पाश्चात्य सभ्यता का पूरा पुट है। अपराध, चारित्रिक पतन, बड़े-छोटे के आदर, स्नेह की मर्यादाओ का उल्लघन, परिवारो के टूटने, अशान्ति भौतिक सुखो को इकट्ठे करने मे अनैतिक तरीको से धनोर्पाजन आदि अनेकश विकृतियाँ है जो राष्ट्र मे अराजकता, भटकाव, आत्महत्याएँ, डकैतियाँ, अपहरण, गलत समय मे यौन सम्बन्ध को बढ़ावा दे रहीं है और देश इनके मकडजाल मे फँसता जा रहा है। आँखो पर भी इसका दुष्प्रभाव सर्वविदित है। हमे दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले कार्यक्रमो की मानसिकता को बदलना होगा अन्यथा देश पतन के मार्ग पर बढता चला जायेगा। हमे ऐसे कार्यक्रम खुद और परिवारजनो को नहीं देखने देने चाहिये जिनमे चारित्र की शुद्धता न हो तथा जो राष्ट्र व समाज के मानको पर खरे न उतरते हो।

राष्ट्र का विकास: संसाधनों का सदुपयोग

"जातिवाद, धर्म, सम्प्रदाय, जीवन शैली, भाषा या प्रान्तीयता के आधार पर लोगों में भेदभाव करके उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखना या किसी वर्ग विशेष को सम्पूर्ण सुविधाएँ देना किसी भी विकासशील देश के माथे पर काला कलंक है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि"

15 अगस्त 2005, प्रीत विहार, दिल्ली

उपाध्यायश्री आप भारतीय राजधानी दिल्ली मे विराजमान है, लोग आपको राष्ट्र सन्त मानते है। मै आपसे कुछ राष्ट्रिय मुद्दो पर वार्ता करना चाहती हूँ, कृपया आप हमे समाधित कर अनुग्रहीत कीजिए - **सिद्धान्तरत्न ब्र सुमन शास्त्री,** *सम्पादक श्री गुप्तिसन्देश।*

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री! भारत जगत्गुरु कहलाता है, पर यहॉ पिछडापन और निर्धनता क्यो है?*

समाधान भारत आध्यात्मिक दृष्टि से यद्यपि जगत्गुरु है, तथापि ऐसे कई कारण है जो निर्धनता के घटक है (1) महत्वाकाक्षा का अभाव (2) अशिक्षा (3) ससाधनों का अभाव।

इतिहास साक्ष्य है 'आज के वैश्विक नक्शे पर जो भी देश सम्पन्नता से छविमान है उसके पीछे वहाँ के निवासियो की महत्त्वाकाक्षा का हाथ है।' सम्पन्न देशो के निवासी वर्षों तक यही अपेक्षा करते रहे कि उन्हे अपने देश को सर्व शक्तिमान एव समृद्धिवान बनाना है, तभी हम समृद्ध देश के नागरिक का गौरव अर्जित कर खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकते हैं। उनकी यही महत्त्वाकाक्षा उन्हे अनवरत अनथक परिश्रम एव सघर्ष के लिए प्रेरित करती रही और लक्ष्य प्राप्ति मे आगत जोखिमो से वे सहर्ष और

निर्भीक जूझते रहे। अपने आदर्श लक्ष्य की सम्पूर्ति हेतु पर्याप्त अनुशासन एव उपयुक्त कार्यशैलियों का अनुपालन करते हुए वे अपने उद्देश्य मे सफल हुए है।

जिज्ञासा *महत्वाकाक्षा, अनुशासन एव उपयुक्त कार्यशैली मे इन तीनो का बडा सुन्दर समायोजन है। महत्त्वाकाक्षा पर अनुशासन का पहरा जरूरी है अन्यथा वह उच्छृखल हो जायेगी तब उसका 'उपयुक्त कार्य शैली' की स्वच्छ एव स्वस्थ धारा मे प्रवाहित होना मुश्किल हो जायेगा?*

समाधान सत्य, सत्य। अनुशासित महत्त्वाकाक्षा के लिए सैद्धान्तिक नियम है कि वह निजी स्वार्थो से ऊपर उठी होती है। स्वार्थान्वित महत्त्वाकाक्षाएं व्यक्ति के नैतिक स्तर को भी गिरा देती है। विकसित देशो की अपेक्षा अधिकाशत भारतीय नागरिको मे स्वार्थ की भावना प्रबल है, उनकी महत्त्वाकाक्षा स्वार्थ सिद्धि तक सिमट जाती है। समष्टि या सर्वोदय पर बहुत कम लोग पहुँच पाते है। फलस्वरूप प्रतिभा सम्पन्न समग्र चेतना के सामूहिक लाभ से वचित रह जाते है और निर्धनता अपने पेर पसार लेती है।

जिज्ञासा *दूसरा कारण आपने अशिक्षा बतलाया, उस पर भी रोशनी डालियेगा?*

समाधान भारत की मूलभूत आत्मा गॉवो मे बसती है क्योकि देश की कुल आबादी का 70 प्रतिशत गॉवो मे बसा हुआ है, जहाँ आर्थिक विकास की बहुत कम सम्भावनाये होती है। इसमे भी दो बाते है। पहली, भारतीय कृषको की पारम्परिक छवि है कि वे गरीबी के साथ अशिक्षित भी है। इस कम्प्यूटर के युग मे भी वे विकास के नये आयामो से अनजान है। दूसरी ग्रामीणो मे आत्म-विश्वास का प्रतिशत कम है, मै दूसरे कारण का कारण पहला कारण अशिक्षा ही मानता हूँ। अशिक्षा के कारण ही 'प्रथम मै' वाली भावना सहस्रफणी हो ऊर्ध्वित हो उठती है। परिणामस्वरूप एक साथ मिल-बैठकर न तो उनकी कोई रचनात्मक सोच हो पाती है, न ही कोई क्रियान्विति। लोगो को बॉटने-तोडने मे ही उनकी शक्ति एव समय चुक जाता है।

जिज्ञासा *गुरुवर! वर्तमान मे शिक्षित युवा भी बेरोजगार है, रोजी-रोटी की तलाश मे है, ऐसे मे कैसे कहा जा सकता है अशिक्षा ही निर्धनता का कारण है?*

समाधान भारत मे निर्धनता का एक और महत्वपूर्ण व जिम्मेदार पहलू है ससाधनो का अभाव। भारत मे अन्य देशो की अपेक्षा ससाधनो की कमी है। उदाहरण के लिए सर्वाधिक फल उत्पादन मे भारत सभी देशो से आगे है। अभी हॉल मे 2002 मे भारतीय फलो का उत्पादन 4 6 करोड टन था परन्तु ससाधनो के अभाव मे 30 प्रतिशत से अधिक फल बाजार मे न पहुँच पाने के कारण सड गये। अमेरिका मे सशोधित फलो के उत्पादन का प्रतिशत 70 है, मलेशिया का 83 प्रतिशत और भारत मात्र 2 प्रतिशत

फलो को सशोधित कर पाता है। यही स्थिति दुग्ध उत्पाद मे है।

जिज्ञासा · *दुग्ध उत्पाद मे कैसे?*

समाधान · फलो की तरह 'दुग्ध उत्पादक' देशो की दृष्टि से भारत विश्व के सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक देशो मे से एक हैं परन्तु भारत के पास दुग्ध निर्यात की परेशानियॉ है, कारण हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की जीवाणु नियन्त्रक तकनीक को अच्छी तरह नही जानते। दूध को अधिक समय तक रखने के लिए इसे निष्कीटित/कीटाणु रहित रखने की आवश्यकता है जो पर्याप्त मात्रा मे हमारे दुग्ध उत्पादको को उपलब्ध नही हो पाते। फल और दुग्ध के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी कृषि उत्पाद है जो जल्दी खराब हो जाते है, उन्हे अधिक समय तक स्टोरेज नही किया जा सकता क्योंकि उन्हे प्रसशोधित करने की जरूरत होती है जिसकी हमारे यहॉ कमी है और प्रसशोधन के अभाव मे वह खराब हो जाता है।

इस प्रकार महत्त्वाकाक्षा का अभाव, शिक्षा का अभाव एव ससाधनो का अभाव। इन तीन मूलभूतो अभावो के कारण भारत निर्धन है।

" **बढ़ती जनसख्या के साथ बढती हुई जरूरतें, मागें एव फैशन विदेशी वस्तुओं के आयात के लिए मजबूर कर देती है। देश में उत्पादित उत्पाद देश की जनसख्या में ही चुक जाते हैं जिन्हें भारत कम मात्रा में विदेशों को निर्यात कर पाता है। इस प्रकार 'भारतीय राजस्व' विदेशों में पहुँच जाता है और देश की जनता कगाल होने लगती है।** "



जिज्ञासा *इन तीन अभावो के साथ-साथ बढती हुई जनसख्या भी भारत की निर्धनता मे कारण है?*

समाधान अवश्यमेव। आजादी के बाद स्वतन्त्र भारत मे जनसख्या वृद्धि की जो दर बढी है वह चौकाने वाली है। जहॉ 1947 मे जनसख्या 34 5 करोड थी वहीं आजादी के बाद 1960-61 मे 45 6 करोड को पार करती हुई 1999 मे 1,00 करोड तक पहुॅच गई और आज उपलब्ध आकडो के अनुसार 2001-02 मे 102 7 करोड तक पहुॅच चुकी है। हॉलाकि वर्तमान आधुनिक तकनीकी के सहारे साहसी कृषको ने खाद्यान्न की उत्पादित मात्रा मे काफी हद तक वृद्धि की है फिर भी बढती जनसख्या की दर से

उत्पादित खाद्यान्न का मेल कठिन है। दूसरी बात, पेट के अतिरिक्त तन और मन की भी तो हर व्यक्ति की बहुत कुछ मागे है। इस विषम स्थिति मे आम ग्रामीण नागरिक अपने बच्चो को शिक्षा से सस्कारित नहीं कर पाता परिणामत वे अशिक्षित रह जाते है। यही अशिक्षा उनमे आत्म-विश्वास को कम करती है तथा उनकी वैषयिक प्रवृत्ति को हवा देकर जनसख्या वृद्धि मे हाथ बढाती है। बढती जनसख्या के साथ बढ़ती हुई जरूरते, मागें एव फैशन विदेशी वस्तुओ के आयात के लिए मजबूर कर देती है। देश मे उत्पादित उत्पाद देश की जनसख्या मे ही चुक जाते है जिन्हे भारत कम मात्रा मे विदेशो को निर्यात कर पाता है। इस प्रकार 'भारतीय राजस्व' विदेशो मे पहुँच जाता है और देश की जनता कगाल होने लगती है।

जिज्ञासा - *मुनिप्रवर! आपकी दृष्टि मे 'आपका राष्ट्र' कैसा होना चाहिए? अर्थात् आपकी परिकल्पना मे भारत की छवि कैसी होनी चाहिए?*

समाधान - जब भी मै अपने भारत के विषय मे सोचता हूँ तो चार पक्तियॉ मेरे मस्तिष्क मे तैरने लगती है -

सुखी रहे सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे।
वैर पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धरम की दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना मनुज जन्म फल सब पावें।।

जिज्ञासा - *बहुत सुन्दर, उपाध्यायश्री! वैश्विक कल्याण की आपकी इस पवित्र भावना को प्रणाम! आपने इस हरिगीतिका छन्द की तीसरी पंक्ति मे बतलाया 'दुष्कृत दुष्कर हो जाये' कृपया इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ताकि सामान्य जन (श्रावको की ओर सकेत) इसे आसानी से समझ सके।*

समाधान आज हिन्दी समझना भी लोगो को कठिन सा होने लगा है। (हसी), 'दुष्कृत दुष्कर हो जावे' का तात्पर्य है दुष्कृत यानि खोटे पाप कर्म और दुष्कर यानि कठिन अर्थात् जीवो की मति ऐसी पवित्र हो जाये कि उन्हे खोटे पाप कर्म करना कठिन प्रतीत होने लगे। यानी पापो से भीति या ग्लानि होने लगे ताकि लोग बुरे काम न कर सके और यह तभी सम्भव होगा जब घर-घर मे धर्म-चर्चा मुखरित होगी। तो मै कह रहा था 'सुखी रहे सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे।' जीव सुखी तभी हो सकते है जब उनकी इच्छाये सीमित/नियन्त्रित हो तथा अनिवार्य/मूलभूत आवश्यकताओ की सम्पूर्ति हो। मै चाहता हूँ मेरा देश हरा-भरा हो, सुदूर तक पसरी हरीतिमा, फसलो से लहलहाते खेत, खेतो मे मस्ती से मल्हारें गाते हुए हल चलाते कृषक, विभिन्न फलो-फूलो और सब्जियो से लदे पेड़-पौधे, छायादार वृक्षो की कतारे, कलनाद करती मन्थर गति से

प्रवहमति सरिताएँ, झर-झर झरते झरने, उछलती-इठलाती मछलियों और लहरों से शोभित सरोवर-तालाब, स्वच्छ पेय जल, आदि-आदि यह तो मेरी भौगोलिक परिकल्पना है।

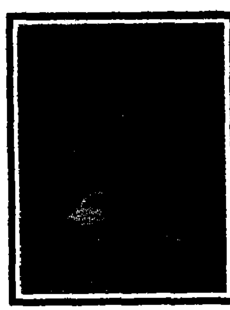
जिज्ञासा *और नागरिको के सम्बन्ध मे आपकी क्या अवधारणा है?*

समाधान भारतीय संविधान मे सभी नागरिको को समानता का अधिकार दिया गया है। उसका सभी को समुचित सदुपयोग करने का अवसर भी मिलना चाहिए। जातिवाद, धर्म, सम्प्रदाय, जीवन शैली अथवा भाषा या प्रान्तीयता के आधार पर लोगो मे भेदभाव करके उन्हे उनके अधिकारो से वचित रखना या किसी वर्ग, विशेष को सम्पूर्ण सुविधाये देना किसी भी विकासशील देश के माथे पर काला कलक है।

ग्रामो मे पसरी अशिक्षा, बढती बेरोजगारी एव नित नई जन्मती बीमारियो की किस्मे भारतीय जनता को निगल रही है। यद्यपि निदान खोजे जा रहे है तथापि आम जनता समुचित रूपेण लाभान्वित नही हो पा रही है। (मै चाहता हूँ प्रत्येक नागरिक को समुन्नत जीवन जीने के पूरे अवसर मिले जिसके लिए अनिवार्य है उन्हे नैतिक व आर्थिक पहलुओ को पोषित करने वाली शिक्षा मिले, चिकित्सा सम्बन्धी सुविधायें उपलब्ध हो, पर्यात खाद्यान्न, वस्त्र, स्वच्छ पेय जल, विद्युत् की पर्याप्त आपूर्ति, यातायात के साधन और सचार सुविधाये उपलब्ध हो ताकि 'प्राथमिक जरूरते' उन्हे घृणित कर्म करने के लिए मजबूर न करे।

“

जल के सम्बन्ध में वर्तमान कृषि तकनीकी के कारण अधिक मात्रा में जल बर्बाद होता है। कृषकों को समझाया जाये कि जल सरक्षण तकनीक को अपनाकर 'सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक सर्किटस्' के जरिये कुशल तकनीक जैसे 'ड्रिप सिचाई, का उपयोग करें ताकि जल बर्बाद न हो। 'ड्रिप सिचाई' नियन्त्रित तकनीक है।



”

जिज्ञासा · *अति सुन्दर। उपाध्यायश्री अभी आपने 'विकसित देश' शब्द का इस्तेमाल किया था। मै जानना चाहूँगी कि आप 'विकसित देश' की क्या परिभाषा और परिकल्पना करते है?*

समाधान · जहाँ तक मैं समझता हूँ विकसित देश का अर्थ केवल भौतिक ससाधनो

की सम्पूर्ति अथवा नए-नए अनुसन्धान मात्र नहीं है। पर्याप्त यातायात के साधन, वाहनो के नये-नये मॉडल, सुन्दर-स्वच्छ चौडी-चौड़ी सडके, सचार की विविध सुविधाएँ, विद्युत् की चमचमाती रग-बिरगी कतारे, चिकित्सा सम्बन्धी परिवर्तित सुविधाएँ, शिक्षा की नई पद्धतियाँ, महीनों की यात्रा को घण्टो मे करने वाले घरघराते वायुयान, छुक-छुक करती रेलगाडियाँ, मेट्रो, ऊँची-ऊँची भव्य बहुमजिली इमारते आदि-आदि विकास नही है क्योंकि प्रत्येक देश मे जीवन की कुछ सुनिश्चित मूलभूत सुविधाएँ तो उपलब्ध होती ही है और होना भी चाहिए किन्तु भूवलीय एव सौर मण्डलीय विकास के साथ-साथ मनुष्य का मानसिक, नैतिक, चारित्रिक एव स्वच्छ वैचारिक विकास भी विकसित देश कहलाने मे अह भूमिका रखता है चूकि इन्हीं से सुख-शान्ति एव आध्यात्मिक समृद्धि विकसित होती हे।

जिज्ञासा *बिल्कुल सत्य कहा आपने। विकास का और भी कोई अर्थ हो सकता है?*

समाधान विकसित देश के सन्दर्भ मे एक बात और कहना चाहूँगा, विकास का मतलब है राष्ट्रिय सम्पदा के साथ उसके आम नागरिक की खुशहाली तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशो के समक्ष उसकी 'स्थिति' भी शामिल है। अफसोस है आज किसी भी देश की विकसित स्थिति का आकलन उसकी आर्थिक शक्ति एव ससाधनो के आधार पर किया जाता है।

जिज्ञासा *तो क्या आर्थिक सम्पन्नता/शक्ति एव ससाधन विकास के घटक नही है?*

समाधान है क्यो नहीं, मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि आर्थिक शक्ति व ससाधनो की उपलब्धि मात्र समुचित विकास नहीं है। सर्वाङ्गीण विकास के लिए उनका सदुपयोग भी जरूरी है। बहुत से विकसित राष्ट्र ससाधनो की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है फिर भी उनकी स्थिति अच्छी नही है। उदाहरण के लिए दक्षिण अफ्रीका को ही ले उसके पास विश्व की आधी स्वर्ण खाने तथा एक बडा हिस्सा हीरो की खानो का है। जिम्बाब्वे, कागो, जांबिया, इथोपिया, खाडा और नामीबिया इन सभी के पास पर्याप्त खनिज ससाधन है। इतनी विशाल प्राकृतिक सम्पदा के बावजूद भी अफ्रीका आज भी गरीब एव पिछडा हुआ है क्योकि यहॉ उपात्त ससाधनो को अपने देश के अन्दर ही विकसित नही किया गया। कच्चे अयस्क विदेशी राष्ट्रो द्वारा खरीद लिए जाते है, पश्चात् वे उन्हे लौह पदार्थो मे रूपान्तरित करके नए उत्पाद तैयार कर पूरे विश्व मे विक्रय कर मूल्यवर्धन प्रक्रिया को बढावा देते है।

जिज्ञासा *मुनिश्री! यह मूल्यवर्धन प्रक्रिया क्या है?*

समाधान कच्चे माल को कम दामो मे क्रय कर उन्हे सशोधित कर पुन उन्हीं से उत्पादित पदार्थो को काफी ऊँचे दामो मे विक्रय करना मूल्यवर्धन प्रक्रिया कहलाती है।

यह प्रक्रिया उन देशों को अमीर बनाने मे मदद पहुँचाती है। किसी चीज को असंसाधित अवस्थामे विक्रय का नियम यह है कि सैद्धान्तिक उसने कम दामो मे स्तर पर वही देश फिर से उसी माल को ऊँचे दामो पर खरीद लेता है जिसे कि बेचा था। जैसे किसी देश ने कच्चे लौह का निर्यात किया, पश्चात् वहीं से कारो का आयात किया। अब देखिये वे कारे जिन्हे वह खरीद रहा है उसी लौह से बनी है जिसका कि उसने निर्यात किया था। समझने के लिए जापान के पास "ना" के बराबर खनिज ससाधन है। वह लौह अयस्क का आयात करता है तत्पश्चात् उसे स्टील के रूप मे निर्यात करने के लिए जहाज बनाता है। यही कारण है कि जापान आज दुनियॉ के आर्थिक व तकनीकी क्षेत्र मे अग्रणी देश है। अत बात ससाधनो की नहीं उसके उपयोग की है जो आर्थिक समृद्धता और विकास का महत्वपूर्ण कारक है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री! एक और जिज्ञासा, आप अपने देशवासियो को देश की समृद्धता व विकासशीलता के सन्दर्भ मे क्या सुझाव देना चाहेगे?*

समाधान जहॉ तक मै समझता हूँ कि जैव तकनीकी, जैव विज्ञान, कृषि विज्ञान एव अन्य उद्योगो के साथ नए-नए अनुसन्धानो के विकास से भारत की समृद्धता मे सहायता तो मिली है और मिलेगी भी किन्तु मेरा देशवासियो को यही सुझाव है कि लोग परस्पर मे एक-दूसरे का अस्तित्व स्वीकार करते हुए सह-अस्तित्व की भावना रखकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थो, हितो एव राजनैतिक प्रभावो से ऊपर उठकर अपने कार्यो के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ हो। व्यावसायिक दृष्टिकोण से समर्पित राजनेताओ और प्रशासको का भी सहयोग ले तथा प्रेम-वात्सल्य के साथ भाईचारे का परिचय दे।

जिज्ञासा *भारतीय कृषको को आपका क्या सन्देश है?*

समाधान उन्हे कृषि के विभिन्न पहलुओ - जैसे भूमि की उर्वरता कैसे बढायी जाये ताकि उत्पाद मात्रा मे वृद्धि हो। अच्छी किस्मो के बीज, उर्वरक खाद्य व जल का उपयोग क्रियात्मक हो। बजर भूमि को खाद्य ससाधन, उद्योग एव भण्डारण सुविधा के रूप मे उपयोग मे लाये इत्यादि जानकारियॉ एव सुविधाये प्रदान की जाये। जल के सम्बन्ध मे वर्तमान कृषि तकनीकी के कारण अधिक मात्रा मे जल बर्बाद होता है। कृषको को समझाया जाये कि 'जल सरक्षण तकनीक' को अपनाकर 'सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक सर्किटस्' के जरिये कुशल तकनीक जैसे 'ड्रिप सिचाई, का उपयोग करे ताकि जल बर्बाद न हो। 'ड्रिप सिचाई' नियन्त्रित तकनीक है।

हम इजराइल से ही सीख ले सकते है, वहॉ सामान्यत वर्षा नही होती फिर भी कुशल तकनीको के सहयोग से वह कई कृषि उत्पादो एव डेयरी उत्पादन मे अग्रणी है। सरकार को चाहिए कि वे ग्रामीण कृषको को कृषि सम्बन्धी साधनो के साथ-साथ

यातायात एव सूचना संचार की सुविधा शहरी स्तर पर दे ताकि वे अपने उत्पाद का समुचित लाभ उठा सके।

जिज्ञासा *मुनि प्रवर! आपकी मेधा स्वच्छ-स्वस्थ एव सुलझी हुई है कृपया विद्यार्थियो के सन्दर्भ मे भी कुछ मार्गदर्शन दीजिये?*

समाधान देश का भावी नागरिक विद्यार्थी ही है, भविष्य मे देश की जिम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर आने वाली है अत गॉव-गाँव मे 'साक्षरता अभियान' चलाये जाने चाहिए ताकि अकुशल ग्रामीण की योग्यता उभर सके। जो विद्यार्थी पारम्परिक रूपेण कॉलेज की डिग्रियॉ नही लेना चाहता है जिनका सीधा सम्बन्ध पैतृक रोजगार या आय से है उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराये जाये। दूरवर्ती शिक्षा/पत्राचार प्रणाली द्वारा उन्हे सभी विकल्पो से परिचित कराया जाये। इस हेतु समय-समय पर सेमिनार आयोजित किये जाये। हमारे ही देश मे फाइबर आप्टिक, केबल, सेटेलाइट सचार, वायरलेस और ब्राण्ड बैण्ड जैसी आवश्यक तकनीके है, इन्हे प्रभावशाली ढग से कम से कम समय मे देश के हर क्षेत्र मे उपलब्ध कराई जाये ताकि हर क्षेत्र का हर जाति का विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

वर्चुअल/साकेतिक कक्षा भी समृद्धि का महत्त्वपूर्ण घटक है क्योंकि इस पद्धति से अपने स्थानीय क्षेत्र मे अध्यापको की कमी होने पर भी दूरस्थ प्रदेशो के अध्यापको से छात्र अपनी जिज्ञासाओ के समाधान पा सकते है।

जिज्ञासा *आपका कहने का मतलब है 'टेली एजुकेशन' (जिसमे दूर शिक्षा द्वारा एक साथ उस क्षेत्र की कई कक्षाओ को पढाया जा सकता है) एव ई लर्निंग (पाठ्य विषय वस्तु को इन्टरनेट द्वारा पहुँचाना) छात्र को 'स्वतन्त्र विद्यार्थी' के रूप मे प्रस्तुत कर सकते है।*

समाधान अवश्य ही, सुमन शास्त्री जी! एक बात और है 'डिजिटल पुस्तकालय' बनाने की जरूरत है जिसमे 'वर्चुअल एव टेली एजुकेशन' के लिए पुस्तके पूरे विश्व मे आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए। ताकि जब भी कोई विद्यार्थी किसी खास पुस्तक को पढ़ना चाहेगा तब 'ऑन लाइन' के माध्यम से उसके कम्प्यूटर की स्क्रीन पर वह पुस्तक दिखने लगती है। इस प्रकार घर बैठे मन चाही पुस्तके पढकर जानकारियाँ हासिल कर सकता है। डिजिटल पुस्तकालय के लिए 'टेली एजुकेशन सॉफ्टवेयर' एक महत्त्वपूर्ण साधन हो सकता है।

जिज्ञासु *प्रणाम उपाध्यायश्री! बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ आपकी स्नेह दृष्टि से। आपने इतने सुन्दर और समृद्ध विचार हमारे देश की समृद्धता एव विकास हेतु दिये। निश्चित ही आपके विचारो मे 'सर्वोदय' की भावना किलकारियाँ ले रही है जो विश्व प्रेम की प्रतीक है।*

एड्स नाशक है ब्रह्मचर्य की टैबलेट

"एड्स अनैतिकता एव अधर्म की उपज है। अधर्म की आँधी को रोककर ही इस व्याधि को रोका जा सकता है। आज सयम के दीपक की लौ खुले आसमान में ड़ोल रही है हमें इसका प्रहरी बनना होगा।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि"

एड्स दिवस, 2004 गुप्तिसागर धाम, गन्नौर (हरियाणा)

वर्तमान मे भोगवादी प्रवृत्ति ने खान-पान, रहन-सहन के साथ स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया है। एड्स के रूप मे विषधर मानव की दुष्प्रवृत्ति के रूप मे उसे ही डस रहा है। इससे इन्सान कैसे बचे इस सन्दर्भ मे तपस्वी, मनीषी सन्त उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी से हुई वार्त्ता के अश - **डॉ नीलम जैन** *'सम्पादक' 'जैन महिला दर्श'*

जिज्ञासा *एड्स किसे कहते है?*

समाधान एड्स एक विषाणु के द्वारा सक्रमित होता है जिसका नाम Human Immulo Defenciy Virus अर्थात् ह्युमन इमयूलो डेफिसियेन्सि वायरस है। यह दो प्रकार के होते है - HIV-1, HIV-2 भारत मे एड्स अधिकतर विषाणु के द्वारा होता है। यह विषाणु शरीर मे प्रवेश कर उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली को लगातार कमजोर करता रहता है।

जिज्ञासा *आम आदमी एड्स की पहचान कैसे करे?*

समाधान मानव शरीर मे इस रोग की पहिचान निम्नलिखित लक्षणो द्वारा होती है -

1 वजन मे अचानक गिरावट आना - एक महीने मे 8-10 किलो वजन कम होना।

2 एक महिने से ज्यादा दस्त होना और उपचार के बावजूद दस्त बन्द नहीं होना।

3. गर्दन, बगल व जाँघो मे गाँठे या सूजन आना।

4 शरीर मे लगातार बुखार आना और दवाओ से आराम न आना।

5 मुँह मे छाले पडना व उसमे आराम न आना।

6 शरीर मे खुजली व दाने होना।

जिज्ञासा *गुरुवर वर्तमान मे एड्स सम्पूर्ण मानव जाति की ओर अपने जबडे फैला रहा है। यह समस्त विश्व के लिए चिन्ता का विषय है। आपकी दृष्टि मे यह बीमारी वस्तुत क्या है और इससे बचने के क्या उपाय है?*

समाधान वस्तुत भूमण्डल पर अगर कोई एक ऐसी बीमारी हे जा असाध्य है और दुनियाँ के चिकित्सा विज्ञान के लिए कठिन चुनौती बनी हुई है तो वह है एड्स (**AIDS**) एक्वायर्ड ईक्यूनो डिफीशयन्सी सिन्ड्रोम। एड्स का रोग मुख्यत एच आई व्ही (**HIV**) अर्थात् ह्यूमेन इम्युनोडिफिशिएसी वायरस से फैलता है। एड्स का यह विषाणु शरीर की प्रतिरोधक प्रणाली को पूर्ण रूपेण ध्वस्त कर देता है। प्रतिरोधक क्षमता समाप्त होने पर व्यक्ति अधिक दिन जीवित नही रह पाता। मे इस बीमारी को आज के युग के मानव की मनोवृत्ति तुल्य समझता हूँ जैसे आज का मानव ऊपर से सरल-सोम्य-सभ्य- अप-टू-डेट दिखता हे, लेकिन भीतर से क्रूर-कुटिल-बर्बर और जर्जर है। वेसी ही व्याधि आ गई हे। बाहर से मरीज इतना सामान्य और स्वस्थ दिखता है कि वर्षो तक पता ही नही चलेगा कि अमुक स्त्री पुरुष को एड्स है। इसी बीच जाने कितने लोगो को उसके सक्रामक सम्पर्क से एड्स हो गया होगा। यह भी क्या व्याधि है। (विस्मित होकर गुरुदेव बोले)

जिज्ञासा *इस सक्रामक रोग का जिम्मेदार अन्तत है कौन?*

समाधान इस रोग के सक्रमण का मुख्य कारण, अप्राकृतिक जीवन शैली, बढता दुराचार व अनाचार है नशे के इन्जेक्शन लेने वाले नशेडी, उच्छ्रखल एव अर्मायादित सम्बन्ध एड्स फैलाने के लिए जिम्मेदार है। **"पुत्रार्थ क्रियते भार्या"** और **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** को पल्लवित करने वाला देश आज कालगर्ल्स/वेश्यावृत्ति और अवैध यौन सम्बन्धो का गढ बन गया है - दी टाइम्स ऑफ इण्डिया (2 1 99) मे लिखा था कि **Breakdown of Integrated Famıly System** (सयुक्त परिवार का विघटन) के कारण क्रिकेटर, डॉक्टर, मन्त्री, व्यापारी, पूजीपति इत्यादि कालगर्ल्स (Call Gırls) से अपनी वासना पूर्ति कर रहे है। हमे इस जीवन शैली का विरोध करना चाहिए इनके घातक परिणाम सामने हे जो लगातार हमे भी चेतावनी दे रहे है हमारे पुरुषार्थ को चेतावनी दे रहे है, लेकिन मदान्ध हो गए स्त्री-पुरुष। विज्ञान का नियम है **"जैसी क्रिया वैसी प्रतिक्रिया"** आप पतन की ओर जा रहे है तो पतन ही होगा।



“ टीका आप बनाए हमें कोई ऐतराज नहीं पर ब्रह्मचर्य की टैबलेट भी साथ हो। टीका सब तक पहुँचे न पहुँचे किन्तु यह टैबलेट तो हर समय हर एक के पास रहे। अभी इन्जैक्शन बनने की प्रक्रिया में है क्या पता क्या परिणाम हो और फिर एड्स अवरोधी टीका बीमारी का इलाज है पर बीमारी हो ही नहीं इसका एकमात्र सकारात्मक और गुणात्मक उपाय है स्वदारा एव स्वपति सन्तोष/ब्रह्मचर्य, मादक एव अनैतिक सम्बन्धों से बचाव। अस्तु पूरे बल और वेग से अपनी युवा पीढी को बचाए, बचाना ही चाहिए। ”

जिज्ञासा *लेकिन गुरुवर! इस व्याधि को रोकने के लिए आविष्कार हो रहे है? क्या व उचित नही होगे?*

समाधान जमाने की यही तो भूल है। व्याधियो को आमन्त्रण दे और उपचार करेगा विज्ञान। बेचारा विज्ञान तो अपना कार्य कर ही रहा है।

आविष्कार वरदान होते है उनके अन्तस मे विकास की अनगिन सम्भावनाएँ होती है, जिनकी अगवानी कर हम सहज ही कुछ विशिष्ट एव अद्‌भुत प्राप्त कर लेते है, लेकिन सोचना यह है आविष्कार का दृष्टिकोण कैसा है - क्या वस्तुत उसका आविष्कार मानवता की रोग मुक्ति है अथवा रोग को बढाकर व्यावसायीकरण करना। आप भी जानते है, न जाने कितने जानवर, कितने निरपराध मनुष्य इस इजेक्शन के आविष्कार की भेट चढेंगे, कितने नयी व्याधिया के शिकजे मे होगे उसके बाद भी इन्जेक्शन का परिणाम रोग मुक्ति न हो तो?

जिज्ञासा *ऐसी स्थिति मे हमे क्या करना चाहिए?*

समाधान किसी भी साध्य को प्राप्त करने के लिए साधनो की पवित्रता, निष्कलकता ओर उनकी साध्य सिद्धि मे श्रेष्ठ व्यक्तित्व की सगति बहुत आवश्यक है, यदि हमे अपने अभियान को एक ठोस आधार देना है तो अहिसा, करुणा, दया, समता, स्वच्छता, सदाचार जैसे उदात्त जीवन्त मूल्यो को मीडिया द्वारा जनता-जनार्दन के द्वार ले जाना होगा और जीवन को रसातल मे ले जाने वाले इस रोग से बचाने के लिए आत्मसयम, इन्द्रिय निग्रह एव सस्कार की शीतल छवि मे धरती की हर धडकन को अभय प्रदान करना होगा। आचार्यो ने तो हजारों वर्षो से ब्रह्मचर्य की महत्ता का गुणानुवाद किया।

ब्रह्मचर्य को ही एकमात्र ऐसा व्रत कहा गया है जिसके धारण करने वाले को देवता भी नमन करते है। कामुक, व्यसनी, लम्पटी, परस्त्री सेवक, वेश्या गमन करने वालो को तो नरकगामी ही बताया गया है

सम्भवत नारी के साथ सम्बन्ध को इसीलिए रोग का मूल कहा गया होगा कि दीर्घ ससारी धर्म की बात न मानते है न ही धर्म को जानते है। ब्रह्मचारी का चमकता मुख, दमकता तेज, दिव्य आभामण्डल मानवता के उर्वरक है जब जीवन से सस्कार भाप बनकर उड रहे है तभी एसी आपत्तियों ने जिन्दगी को कसैला बना दिया है।

समस्त विश्व मे अपन ब्रह्मचर्य एव सयम के लिए विख्यात भारत लगता है, एड्स मे अग्रणी हो जाएगा। (ओलम्पिक मे हो न हो) मैने एक पुस्तक मे पढा था अब तक विश्व के लगभग छह करोड पचास लाख लोग एड्स से ग्रस्त हो चुके है, जिसमे से ढाई करोड लोग मर चुके है आज 4 करोड लोग इससे प्रभावित है। इनमे से 2 करोड 89 लाख अफ्रीका मे है भारत का नम्बर दूसरा है। उत्तर पूर्व मे विशेषत मणिपुर नागालैण्ड मे और दक्षिण मे आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु मे एड्स के रोगियो की सख्या सर्वाधिक है। कुछ विशेषज्ञो ने इसके तेज फैलाव की आशका जताते हुए भविष्यवाणी की है कि वर्तमान स्थिति जारी रही तो 2010 तक भारत मे एड्स से प्रभावित लोगो की सख्या 5 करोड हो जाएगी।

जिज्ञासा *भारत मे वर्जनाहीन समाज नही है। शारीरिक सम्बन्धो की मर्यादा एव लोकलाज है फिर भी भारत इसकी चपेट मे है आपकी दृष्टि मे इसका क्या कारण हो सकता है?*

समाधान एड्स मुख्यत ससर्ग से होने वाला रोग है यौन रोग से ग्रसित वारागनाओ पर एड्स के विषाणु अपना प्रभाव अतिशीघ्र दिखाते है। यौन सुख पिपासा कामान्ध होता है वह वारागनाओ के पास जाता है जहाँ से अनचाहा शारीरिक कष्ट साथ मे ले आता है। वेसे वारागनाएँ अकेले दोषी नही है हमारे यहाँ पेशेवर रक्तदाता जो एड्स विषाणु से रोग ग्रस्त है, भी इस रोग को बढाने है। रक्त की भली-भाँति जाँच न कर सीधे रक्त लेने का दुष्प्रभाव रोगी के साथ-साथ समाज को झेलना पडता है।

जिज्ञासा *समाज किस प्रकार एड्स झेलता है गुरुदेव।?*

समाधान एड्स से पारिवारिक विघटन होता है - पति यदि रोगी है तो पत्नी पृथक रहती है पत्नी को है तो पति को - इससे स्वेच्छाचार भी बढता है। इसका दुष्प्रभाव बच्चो को भी भुगतना पडता है। बच्चो पर एड्स की चौतरफा मार पडती है। ये विषाणु बच्चो मे तेजी से सक्रमित होते है ऐसे बच्चे असमय काल कलवित हो जाते है महिलाएँ

विधवा हो जातीं है और एड्स का शिकार भी बन जाती है। बच्चे बिना माता-पिता के हो जाते है। एड्स सक्रमित महिला-पुरुष लाछन तिरस्कार अपमान के पात्र हो जाते है जिससे सामाजिक बहिष्कार की त्रास्दी सहना पडती है और घुटन तनाव आकस्मिक मृत्यु भय के अवसाद से तनावग्रस्त अथवा अन्य मनोरोगो से भी ग्रस्त हो जाना पडता है। इससे राष्ट्र को भी हानि है।

जिज्ञासा *राष्ट्र को हानि? वह कैसे गुरुदेव!?*

समाधान एड्स का रोगी राष्ट्र पर भार स्वरूप होता है वह देश की प्रगति मे तो कुछ भी भागीदारी नहीं कर सकता उसके उपचार व देखरेख मे देश को भारी धन खर्च करना पडता। दूसरे एड्स रोगी के परिवारजन भी उसकी सेवा सम्भाल मे काफी समय देने को विवश होगे जिससे राष्ट्रीय उत्पादन मे उनका योगदान भी न्यून से न्यूनतर होता जाएगा इससे भी काफी नुकसान होगा। रोगी की मृत्यु के पश्चात् उसके अनाथ बाल-बच्चो पर भी देश को काफी धन वर्षो तक खर्च करना पडेगा जो अर्थव्यवस्था के लिए उसका भार होगा।

जिज्ञासा *गुरुदेव विज्ञान निरन्तर परिवार नियोजन के सफल उपायो की खोज कर रहा है क्या वे सार्थक प्रयास नही हो सकते?*

समाधान हमारे भारत की आचार सहिता इस मामले मे सयम और आत्मनिरोध की राह बताती है। परिवार नियोजन के उपाय समस्या से पलायन और दुराचार को बढाने वाले है। इस समय युवाओ मे सस्कार की वृद्धि देश के लिए पहली प्राथमिकता होना चाहिए इस एड्स के विषधर का नियन्त्रण सयम से ही सम्भव है।

परिवार नियोजन के उपलब्ध साधनो ने ही युवा पीढी को निरकुश कर दिया और वे मर्यादाहीन जीवन शैली पर उतर आए है।

जिज्ञासा *गुरुवर इसका अर्थ है टीके के आविष्कार का भी अपनी दृष्टि मे कोई महत्त्व नही?*

समाधान ऐसा नही है - टीका आप बनाए हमे कोई ऐतराज नही, पर ब्रह्मचर्य की टैबलेट भी साथ हो। टीका सब तक पहुँचे न पहुँचे यह टैबलेट तो हर समय हर एक के पास है। अभी तो इन्जैक्शन बनने की प्रक्रिया मे है क्या पता क्या परिणाम हो और फिर एड्स अवरोधी टीका बीमारी का इलाज है पर बीमारी हो ही नही इसका एकमात्र सकारात्मक और गुणात्मक उपाय है स्वदारा एव स्वपति सन्तोष/ब्रह्मचर्य, मादक एव अनैतिक सम्बन्धो से बचाव। पूरे बल और वेग से अपनी युवा पीढी को बचाना चाहिए।

जिज्ञासा *क्या प्राचीन काल मे यह बीमारी थी ही नही?*

समाधान देखिए वर्तमान मे बीमारियो के नये-नये नाम है। कल्याणकारक आयुर्वेदिक ग्रन्थ मे सैकडो व्याधियॉ एव उनके उपचार है। आचार्यो न शरीर का स्वस्थ रखन हेतु अनेक उपायो का वर्णन किया है। पहले पता था मनुष्य क्या खा रहा हे आर उसको मानवीय रोग ही होगे। अब पशु खा रहा है और ऐसे म बीमारियॉ कोन-सी होगी। कहाँ कैसा उपचार होगा। आप भी सोच सकते है (तनिक मुस्कुराते हुए गुरुदेव बोल)

ऐसा नही है प्राचीन काल मे यह बीमारी नही थी। यह शरीर रोगो की खान है ही, एक छोटी अगुली के ऊपरी पर्व मे ही आचार्यो ने हजारो राग बताये है। इसी बीमारी की भयकरता अवश्य ही पुरा आचार्यो ने अपने सूक्ष्म ज्ञान से दखी होगी तभी तो सयम व ब्रह्मचर्य जीवन के लिए आवश्यक बताया है। अनेक गुप्त रोगो की चर्चा ग्रन्थो मे है। यह रोग सीधा पराश्रित हे पर क सयोग से होता है यदि हम पर को परे कर दे तो बीमारी हो ही नही सकती।

कोई भी बीमारी प्राचीन या आधुनिक नही है - व्याधियॉ तो सदा से हे परन्तु जो व्याधियॉ नियमित आचार-विचार इन्द्रिय विग्रह सयम क कारण कभी-कभार यदा-कदा होती थीं वे आज घर-घर मे पाई जा रही है। चिन्ता का विषय यही हे।

जिज्ञासा *पूज्य गुरुवर! धर्मग्रन्थ मे सर्वदा चार पुरुषार्थो की चर्चा रही है - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष - काम को भी पुरुषार्थ कहा गया है। तब काम को इतनी हेय दृष्टि से क्यो देखते है?*

समाधान आपने ठीक कहा है, धर्मग्रन्थो मे वर्णित है चार पुरुषार्थ किन्तु वहॉ कहा गया है **"धर्मार्थकाममोक्षाणा आरोग्य मूलअन्तरम्"**, धर्म का अनुष्ठान, अर्थोपार्जन, दिव्य कामना से सतति उत्पन्न करना, मोक्ष की सिद्धि इन चतुर्विध पुरुषार्थ की सिद्धि हेतु सर्वतोभावेन स्वस्थ रहना आवश्यक है जो काम रोग दे - उसे आप क्या कहेंगे और रोगी क्या काम पुरुषार्थ करेगा? हमारे यहॉ तीर्थकर आदिनाथ के सुपुत्र बाहुवलि अत्याधिक रूप लावण्य से परिपूर्ण कामदेव थे। उनका अगन्यास चमत्कारिक था जब वे राज विन्यास मे गजारूढ हो नगर भ्रमण करते थ तो नर-नारी उसके लालित्य पर चकित हो ठगे से रह जाते थे। ऐसे कामदेव को ऋषभदेव ने कामकला की शिक्षा दी और स्पष्ट निर्देश दिया काम पुरुषार्थ भोगरस प्रधान न होकर सयम और सदाचार प्रधान होना चाहिए। सृष्टि का सृजन काम पुरुषार्थ से होता है अत मानव यदि यहॉ पतित और कदाचारी हो जाता है तो महान अनिष्ट की सम्भावना है, ऐसे मे अनाचार, कदाचार, अपहरण, बलात्कार, असामाजिक कृत्य और पाप होने लगते हे। कामनीति का सम्यग्ज्ञान मानवता के लिए आवश्यक है।

जिज्ञासा : *इसका अर्थ यह हुआ युवाओ को सैक्स एजुकेशन (काम-शिक्षा) दी जाना चाहिए?*

समाधान काम शिक्षा कब, कहॉ, कैसे दी जाए, कौन दे रहे है पहले यह सहिता बनाना होगी? यह आवश्यक है आप कॉलेज मे जहॉ युवक-युवती साथ बैठे है वहॉ पुस्तको के अध्याय के रूप मे पढा रहे है। तो सोचिए या तो अमर्यादा बढेगी या सकोच। देखने मे आ रहा है कि समलैगिकता की दावेदारी हो रही है। विवाहपूर्व युवक-युवती साथ रह रहे हे जगह-जगह गर्भपात केन्द्र बन गए है। कुवॉरी माताओ को मान्यताएँ मिल रही हे। मॉ-बेटे, पिता-पुत्री, भाई-बहन, देवर-भाभी, ससुर-बहू कोई भी रिश्ता पवित्र नही रह गया, हैवानियत बढ गई है। छोटी-छोटी बच्चियॉ बलात्कार की भेट चढ रही है। आज सीता के चरित्र का ज्ञान हो न हो चित्रपट की तारिकाओ के जीवन चरित्र सबको स्मरण है उन्हे सयम सदाचार सस्कार नैतिकता की शिक्षा दी जाना चाहिए। काम की शिक्षा तो लोग बिना सिखाए भी सीख लेते है।

जिज्ञासा *भारत मे आयुर्वेद के ज्ञान का भण्डार है अनेक प्रबुद्ध चिकित्सक भी है क्या वे* इस ओर कुछ नही कर रहे है?

समाधान आयुर्वेदिक पद्धति की अवधारणा यह है कि अगर उनकी ओषधियॉ शेष बीमारियो के विरूद्ध व्यक्ति की प्रतिरोधक शक्ति को बढा देती है तो वे एड्स के विरूद्ध भी लाभप्रद हो सकती है इससे औषधि व्यक्ति की व्याधियो से लडने की प्रतिरोध क्षमता की कमी को एक सीमा तक दूर कर सकती हे परन्तु बीमारी को जड से उखाड नही पाती, भारत मे जिन सात पौधो से एड्स की औषधि बनाने का अनुसन्धान चल रहा है जो मनुष्य के रोग प्रतिरक्षण तन्त्र को मजबूत बनाते है। वे सात पौधे है - तुलानी, अश्वगन्धा पुनर्नवा, सतावरी, ब्राह्मी, नर-ब्राह्मी, गिलोय। राष्ट्रीय रोग प्रतिरक्षण सस्थान, नई दिल्ली मे इस औषधि पर अनुसन्धान कार्य जारी है। काली शहतूत की जड से निकाले गए डी-आक्सीजीरीमाइन तत्त्व को भी एड्स की रोकथाम मे उपयोगी समझा जा रहा है।

मुझे एक बार "एम्स" के डाक्टर्स बता रहे थे कि उनके यहॉ डॉ प्रदीप सेठ ने एड्स का सफलतम अन्वेषण किया है उनका कहना है कि उनके टीके से दुनियॉ भर के एड्स के दरवाजे स्थायी रूप से बन्द हो सकते है। अब उसकी उपयोगिता मैडिकल साइस ही समझेगा। मेरा कहना है यदि अपने यहॉ किसी ने विष को दग्ध करने वाला अमृत निकाला है तो हमे उसको पूर्ण सहयोग देना चाहिए। विश्व के तो देश अभी प्रयत्नशील ही है। अनैतिकता की इस चौतरफी ऑधी मे दीपक की लौ खुले आसमान

मे डोल रही है हमे इसका प्रहरी बनना होगा। भारत को भी योगदान देना चाहिए।

जिज्ञासा *गुरुवर! आपकी दृष्टि मे एड्स से बचने का समीचीन उपाय क्या है?*

समाधान - एड्स से बचने की तीन सलाह है - प्रथम तो दाम्पत्य जीवन मे सदाचार, विश्वास एव समर्पण हो। विवाहपूर्व विवाहेतर सम्बन्ध सर्वथा अनुचित है। युवा पीढी को सस्कारित अवश्य करे। दूसरे जहॉ तक हो इन्जैक्शन से बचे आवश्यक हो तो रोगाणु रहित सुई का उपयोग करे। नशीली दवाओ का इन्जैक्शन कदापि न ले, सबसे प्रभावी तरीका है - सयमित जीवन शाकाहार भोजन, व्यसन मुक्त जीवन और सयमी जीवन से एड्स से सदा सर्वदा के लिए बचा जा सकता है।

हमारी दृष्टि मे एड्स अनैतिकता एव अधर्म की उपज है। अधर्म की ऑधी को रोककर ही इस व्याधि से बचा जा सकता है। धर्म का जीवन मे समावेश हो, ब्रह्मचर्य पर आस्था हो। सस्कार युक्त क्रियाऍ हो तो कोई कारण नही एड्स का विषधर अपको डस ले। हम जब स्वय ही मौत का ग्रास बनने जा रहे है तब हमे ही उससे बचने का प्रयास करना होगा, इस व्याधि के आप ही कारण है आप ही निवारक है।

यदि मानव को सही रूप से उचित ढग से इस महारोग स निपटना है तो इस रोग से पीडित व्यक्तियो, जो कि अपने कुकृत्यो एव असावधानी का फल भोग रहे है के साथ स्नेह और सौहार्दपूर्ण व्यवहार/वातावरण का निर्माण करना होगा तथा जनता मे जागृति लाकर सयम का महत्त्व बतलाकर चेतना का ज्ञानदीप जलाना होगा तभी आरोग्यता का आलोक प्रकाशित होगा।

जिज्ञासु *बहुत सुन्दर! बिल्कुल ठीक कहा आपने। आपके चरणो मे कौटिश नमन!*

कन्या भ्रूण हत्या : महापाप

"

इस सदी के लोग हो रहे गर्भपात के दर्दनाक आँकड़ों पर किञ्चित् भी चिन्तित नहीं है। बावजूद भारत सरकार इस घिनौने महापातक को वैध करार देकर अपनी प्रगति का फरमान जारी कर रही है। अह का घूट पीकर अपने आपको विकासशील देशों में परिगणित कर रही है। क्या यही है देश का विकास? क्या इसी का नाम है प्रजातन्त्र? क्या इसी को माने हम बुद्धि का विकास? आज सैक्स परीक्षण में मादा भ्रूण का पता चलने पर गर्भ में ही हत्या कर देने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। जो हैं अत्यन्त खतरनाक। पापास्रवक। राष्ट्र को घातक।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

15 जून 2005, सोनीपत (हरियाणा)

इन दिनो 'हम, हमारे दो' की चर्चा चरम पर है किसी व्यक्ति के पहली सन्तान यदि बेटी जन्मे तो आदमी स्वीकार कर लेता है किन्तु यदि दूसरी सन्तान के रूप मे बेटी गर्भ मे आती है तो आदमी उसे पसन्द नही करता, इतना ही नही नारियॉ स्वय उसे 'साफ' कराने उत्साहित रहती है, पति को प्रेरित करती है कि 'वासिग सेन्टर' पर ले चले। कितनी नराधम-बर्बर महिला है वे। जो अपनी भूमि पर आई फसल को बर्बाद करने तुली है। ईश्वर उसे कतई माफ न करेगा। बेटा होता है तो लड्डू बटते है बेटी होती है तो पडोस मे पता ही नही चलता। परम पूज्य उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज का मानना है, उक्त ओछी मानसिकता वाले व्यक्ति कभी क्षम्य नही, बेटा हो अथवा बेटी दोनो को स्वीकारे, गर्भपात महापाप है। समाज के लिए अभिशाप है। एतावता उपाध्यायश्री से कन्या भ्रूण हत्या पर हुई विषद वार्त्ता के कुछ अश यहॉ प्रस्तुत है - **हरेन्द्र कुमार रापरिया,** *ब्यूरो चीफ, अमर उजाला, सोनीपत।*

जिज्ञासा *परम पूज्य गुरुदेव! आप कन्या भ्रूण हत्या को क्या कहेंगे?*

समाधान 'कन्या भ्रूण हत्या' को मै हिसा की चरम सीमा और मानवता का क्रूर उपहास मानता हूँ। मॉ के द्वारा अपने शिशु की हत्या - ऐसी कुमाता की निन्दा करने के लिए विश्व के किसी शब्दकोश मे कोई शब्द नही मिलेगे। यह एक मानवीय कलङ्क है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री कन्या भ्रूण हत्या की पहल आप कहॉ से मानते है?*

समाधान कन्या भ्रूण हत्या की शुरुआत जननी मॉ और डॉक्टर मिलकर करते है। दुखद व शर्मनाक बात यह है कि जिस हत्या मे जन्म देने वाली मॉ और जीवन बचाने वाला डॉक्टर शामिल हो तो उससे महापाप दूसरा और क्या होगा?

"वैसे तो पूरा समाज ही इसके लिए दोषी है। परिवार पाशविक वृत्ति के शिकार होते जा रहे है। घर कत्लखाने बनते जा रहे है। मॉ की पवित्र कोख बूचडखाना बनती जा रही है। पूरा-का-पूरा देश हिसक वातावरण मे नहा रहा है। मानवीय सँवेदनाएँ शून्य होती जा रही है। जब एक मॉ अपने बच्चे तक की रक्षा नहीं कर सकती, तब वह माँ जैसी पवित्र सज्ञा की अधिकारिणी कैसी? इस घिनौने कृत्य में परिवार भी कम दोषी नहीं है। कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को रोकने में परिवार के मुखिया की अह भूमिका हो सकती है।"



जिज्ञासा *क्या नारी को इसके लिए पूरी तरह से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?*

समाधान जो मॉ अपनी सन्तान पर फूल का प्रहार भी बर्दाश्त नही कर सकती और बच्चे को जरा सी चोट लगने पर घर मे कोहराम मचा देती है, दु ख की बात है कि वही मॉ अपनी कोख मे पल रहे अपने रक्त मॉस से निर्मित अपने पति द्वारा रोपे गए वैधानिक शिशु का कत्ल कराने से तनिक भी नही हिचकिचाती। एक मॉ जब ऐसा कुकृत्य करे तो उसे माफ करने की सम्भावना नही रह जाती। पुत्रमोह मे फसी नारी अपने दायित्व को भूल जाती है। अपनी ममता का गला घोट देती है। धिक्कार है ऐसी मॉ को, जो अपने बच्चे की रक्षा के लिए दुर्गा का रूप धारण ही नही करती वरन् अपने ही बच्चे की हत्यारिन बन जाती है।

जिज्ञासा . *उपाध्यायश्री जी! आपको ऐसा नही लगता कि इस प्रकरण मे समाज ने दोहरा चरित्र अपना रखा है?*

समाधान . बिल्कुल ठीक है पत्रकार जी! इस मामले मे समाज का दोहरा चरित्र दिखाई पड़ रहा है। कबूतरो को दाना खिलाते है, चीटियो के बिलो के आसपास आटा डालते है, प्रसूता कुत्तिया या अन्य पालतू जीवो को हलवा खिलाते है, दयाभाव से मछलियो को आटे की गोलियॉ डालते है। जरूरत पडने पर या नाम कमाने की खातिर रक्तदान, नेत्रदान, किड़नी, हार्ट, फेफडे तक दान करने मे तनिक सकोच नही करते। वही अपनी सन्तान की कोख मे बेहिचक हत्या करवा रहे है।

जिज्ञासा *कन्या भ्रूण हत्या के लिए क्या अशिक्षा को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?*

समाधान हॉ, अशिक्षा भी एक कारण हो सकती है। एक अनपढ महिला परिवार के दबाव मे आकर कई बार मजबूरीवश गर्भपात का निर्णय ले लेती है मगर एक पढा लिखा डॉक्टर उसका सहभागी क्यो बनता है। अगर डॉक्टर साथ ही नही देगा तो यह कुकृत्य होगा ही नही। डॉक्टर को तो उनका उचित मार्गदर्शन करना ही चाहिए। आकडे उठाकर देखे तो मालूम पडता है पिछडे इलाको का लिङ्गानुपात शहरी इलाको की तुलना मे बेहतर है। देश के खराब लिङ्गानुपात वाले दस जिलो मे सात पजाब के तथा तीन हरियाणा के है जो कि शिक्षित व समृद्ध माने जाते है। दक्षिणी दिल्ली मे लिङ्गानुपात की स्थिति सबसे खराब है। जबकि सिक्किम, अरुणाचल, छत्तीसगढ़, नागालैड व जम्मू कश्मीर के अनेक पिछडे जिले देश के शानदार लिङ्गानुपात वाले पहले दस जिलो मे शामिल है। हैरानी की बात यह है कि उपरोक्त क्षेत्रो मे साक्षरता दर भी काफी कम है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री! क्या कन्या भ्रूण हत्या रोकने मे शिक्षा कोई भूमिका निभा सकती है?*

समाधान आङ्कडो को देखकर लगता नही। सबसे पहले इसके लिए हमे अपनी मानसिकता बदलनी होगी। ईस्वी सन् 1901 मे देश मे एक हजार पुरुषो के पीछे 972 महिलाए थीं जबकि उस समय साक्षरता दर काफी कम थी चिन्ताजनक बात यह है कि एक तरफ साक्षरता दर बढी तो दूसरी तरफ लिङ्गानुपात बिगडता चला गया। पचास साल बाद 1951 मे यह अनुपात 946 था 1991 मे 945 रहा और 2001 मे यह आङ्कडा 927 तक जा पहुँचा है। तब परेशानी की बात यह है कि जैसे-जैसे साक्षरता बढी है वैसे-वैसे कन्या भ्रूण हत्या बढती जा रही है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री जी' आप कन्या भ्रूण हत्या के लिए महिला व उसके परिवार को कितना दोषी मानते है?*

समाधान · वैसे तो पूरा समाज ही इसके लिए दोषी है। परिवार पाशविक वृत्ति के शिकार होते जा रहे हैं। घर कत्लखाने बनते जा रहे है। माँ की पवित्र कोख बूचडखाना बनती जा रही है। पूरा-का-पूरा देश हिसक वातावरण मे नहा रहा है। मानवीय सँवेदनाएँ शून्य होती जा रहीं हैं। एक माँ जब अपने बच्चे तक की रक्षा नही कर सकती, तो वह कैसी माँ है। इसमे परिवार भी कम दोषी नहीं है। कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को रोकने मे उनकी अहम् भूमिका हो सकती है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री जी' मुझे लगता नही कि चन्द रुपयो की खातिर कुछ कथित डॉक्टर कन्या भ्रूण हत्या को बढावा देने मे नकारात्मक भूमिका निभा रहे है?*

समाधान पत्रकार जी' डॉक्टरो ने व्यक्तिगत मुनाफे के लिए इस प्रथा को बढावा दिया है। वर्ष 1971 मे पारित मेडकिल टर्मिनेशल ऑफ प्रेगनेसी एक्ट का धडल्ले से दुरुपयोग हो रहा है। क्या वे इस बात को नही जानते कि सैक्स का पता लगाने वाली आधुनिक विधियो से गर्भवती महिला और कोख मे पल रहे शिशु के स्वास्थ्य पर कितना गम्भीर असर पड रहा है? कन्या भ्रूण हत्या के लिए किए जाने वाले गर्भपात वाली मौतो की सख्या धरती पर नर्क का दृश्य उपस्थित कर चिन्ताजनक ढङ्ग से बढ रही है।

जिज्ञासा *गुरुवर' क्या अल्ट्रासाउण्ड मशीने इसका कारण बन रही है या लचर कानून?*

समाधान ऐसा नही है। अगर कोई किसी चीज का दुरुपयोग करे तो उसके परिणाम नकारात्मक होगे ही। अपने देश मे शिशु लिङ्ग निर्धारण करने से जुडी अल्ट्रासाउण्ड मशीने ईस्वी सन् 1980 मे प्रकाश मे आई थी। उस समय कोई कानून न होने के कारण गर्भ मे शिशुओ का लिङ्ग जानने के लिए इन मशीनो का खुलकर उपयोग शुरु हुआ। समाज मे घटती लडकियो की सख्या पर सबसे पहले महाराष्ट्र सरकार का ध्यान गया। उसने सन् 1988 को लिङ्ग निर्धारण परीक्षा अधिनियम पारित किया। बाद मे समाजसेवी सङ्गठनो का दबाव पडने पर सन् 1994 मे पीएनडीटी कानून बनाया जिसे सन् 1996 मे लागू किया गया। इसमे सजा का प्रावधन है मगर चिन्ता कि बात यह है कि अधिकाश मामले अर्थदण्ड लगाकर रफा-दफा कर दिए जाते है। मगर इस पर काबू पाने

के लिए कडी सजा का प्रावधन किया जाना जरूरी है। हत्या की सजा फासी या उम्रकैद है तो भ्रूण हत्या के लिए माफी क्यो? हम भ्रूण हत्या को गर्भपात का नाम देकर उसे हल्के से लेते है मगर सही मायनो मे यह भी हत्या है।

जिज्ञासा *गुरुवर! कन्या भ्रूण हत्या की प्रवृत्ति ने कहॉ से जन्म लिया?*

समाधान भारतीय समाज मे पुत्र प्राप्ति की आकाक्षा प्रत्येक कालखण्ड से प्रबल रही है। इतिहास गवाह है कि वैदिक एव उत्तर वैदिक काल को छोडकर शेष कालखण्डो मे बाहरी आक्रमणो, आन्तरिक रक्षा एव सुरक्षा के सघर्षो तथा अस्तित्व के खतरो ने पुरुष को मानव जीवन का नीति नियन्ता बना दिया है। ऐसे मे यहॉ का सामाजिक ढाचा भी पितृ सत्तात्मक बनता चला गया। पुरुषवादी ढाचे के प्रभाव के चलते पुत्र को परिवार का भाग्य विधाता और पुत्री को पर-निर्भर, परावलम्बी बना दिया। कन्या भ्रूण हत्या उसी बीमार मानसिकता एव सकीर्ण सोच का परिणाम है मगर अब समय बदल गया है। समाज को अपनी इस बीमार मानसिकता को बदलना होगा। आज तो लडकियॉ भी लडकों के साथ कदम मिलाकर चल रही है। नारी को पुत्र अथवा पुत्री का पैदा होना कर्म का योग ही जानना चाहिए।

जिज्ञासा *इस विषय पर कोई दु खद व ज्वलन्त प्रसङ्ग हो तो बतलाईएगा?*

समाधान बीबीसी द्वारा निर्मित फिल्म - उसे मरने दो - मे जैसलमेर, राजस्थान के एक गॉव का जिक्र है, जहॉ बच्ची को जन्म लेते ही मार दिया जाता है। दु खद बात है कि यूरोप मे गर्भपात के खिलाफ जङ्ग छिडी है और हमारे दश मे इसे उत्साहित करने के लिए अप्रत्यक्ष तरीके से तरोड-मरोड कर विज्ञापन छापे जा रहे है। 2 अक्तूबर 1993 को महात्मा गॉंधी के जन्म दिवस पर दिखाई गई डाक्यूमेटरी मे जैसलमेर की महिलाओ ने साफ-साफ कहा कि अगर बच्ची पैदा हुई तो उसे मार देने को तवज्जो देगी। इस पर स्वीडन की प्रभावशाली ससदीय विदेश मामलो की समिति की सदस्य एव सासद सुश्री माग्राथा बिकलुण्ड ने कडी आपत्ति जाहिर करते हुए चेतावनी दी कि अगर भारत मे कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए प्रभावशाली कानून नही बने तो स्वीडन आर्थिक मदद देना बन्द कर देगा।

जिज्ञासा *जगतगुरु भारत की धर्म भूमि पर हो रहे इस कुकृत्य को आप किस दृष्टि से देखते है?*

समाधान प्राचीन काल से ही भारतवर्ष विश्व मे धर्मभूमि के रूप मे जाना जाता है।

जहाँ धर्मकर्म को जीवन का आधार माना जाता है। मगर शर्म की बात है कि आज कन्या भ्रूण हत्या इस देश मे घर-घर की कहानी बन चुकी है। इसे रोकने के लिए मानव को धर्म से जोडना होगा।

जिज्ञासा *समाज पर इसका क्या असर पड रहा है?*

समाधान . समाज से जीवन मूल्यो का हनन हो रहा है। लोगो की सम्वेदनाएँ शून्य होती जा रही है। हमे आने वाली पीढी की मानसिकता को बदलकर उनके अन्दर सम्वेदनाओ को जगाना होगा।

जिज्ञासा *इस दु खद प्रसङ्ग के बीच कोई सुख देने वाला प्रसङ्ग?*

समाधान समुदाय के लिहाज से स्त्री-पुरुष अनुपात ईसाइयो मे सबसे अच्छा है बल्कि वे ईसाई महिलाएँ ही है जिन्होने अनुपात मे पुरुषो को पछाड दिया। वर्ष 2001 की जनगणना के मुताबिक देश मे ईसाई महिलाओ की आबादी 1 29 करोड थी जबकि ईसाई पुरुषो की आबादी 1 19 करोड थी। इसके बाद मुसलमानो, हिन्दुओ और सबसे अन्त मे सिखो का नम्बर आता है। देश को इस मामले मे ईसाइयो से सीख लेनी चाहिए।

जिज्ञासु *जय हो गुरुदेव! कन्या भ्रूण हत्या पर आपके श्रीमुख से मिले समाधान इस राष्ट्र के नागरिको को वरदान सिद्ध होगे यदि प्रत्येक नागरिक जागरूक और सम्वेदनामय हो जाए तो कहना ही क्या। आपके समाधानो से मै बहुत प्रसन्न हूँ। वार्त्ता को यही विराम देता हूँ। आपने काफी समय दिया। मै धन्य हो गया। नमोऽस्तु गुरुजी!*

नारी :
मानव सभ्यता की आत्मा भी, शिल्पी भी

प्रकृति रूप से नारी की ऑखों में करुणा है वह स्वभावत किसी भी प्रकार की शत्रुता से अनछुई है। बच्चो को सस्कारवान बनाने, रण क्षेत्र में वीरों को प्रोत्साहित करने तथा भोगों में आकण्ठलिप्त पुरुषों को नारी समाज ने सदा सावधान कर पतन की राह से बचाया है। वस्तुत देखा जाये तो मानव-मात्र का उत्कर्ष-अपकर्ष नारियों की मुट्ठी में है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

राष्ट्रीय जैन महिला सम्मेलन, 17 मई 2005, पीतमपुरा, दिल्ली

वन्दनीय उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनिराज का जीवन प्रतिपल चिन्तन मे व्यस्त रहता है। कोई ऐसा पल नही, जिसमे इन्हे कोई अकारण बैठा पाये। जीवन के लिए कर्त्तव्य का कितना बडा महत्व है, आत्मावलम्बन किसी भी पुरुषार्थी के लिए कितना महत्व रखता है इसका उपाध्यायश्री प्रत्यक्ष उदाहरण है। उनकी साधना की थाह पाना दुष्कर कार्य है। प्रत्येक क्षण अपने चिन्तन को लिपिबद्ध कर वे मानव-समाज को दिशा बोध देकर उपकृत कर रहे है।

इसी क्रम मे विश्व मे नारी के स्थान व भारत मे नारी शिक्षा से सम्बन्द्ध विभिन्न पहलुओं पर मैंने अनेक प्रश्न उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनि से किये, प्रस्तुत है उनके प्रमुख अश - **भूपेन्द्र कुमार जैन** *।*

जिज्ञासा · *भारतीय सस्कृति मे नारी का स्थान क्या रहा है?*

समाधान · भारतीय सस्कृति मे नारी को जो गौरव व सम्मान प्राप्त रहा है वह विश्व मे अन्यत्र कही देखने को नही मिलता। उसके दो कारण हो सकते हैं।

प्रथम, प्राचीन समय मे मानव सभ्यता का इतना विकास नहीं हुआ था तथा

उसके जीवन निर्वाह की शैली गुफाओ, वनो से प्रारम्भ होकर नये-नये आयामों की यात्रा के साथ विकसित हुई, जिसमे स्त्री-पुरुष दोनो की समान भूमिका होती थी, लैगिक भेदभाव नहीं था।

द्वितीय, नारी को 'मातृशक्ति' के रूप मे स्वीकारे जाने से वह गौरव की पात्रा रही होगी वैदिक व बौद्ध सस्कृति मे भी नारी की शिक्षा, शील, गुण, कर्त्तव्य, ममता और अधिकारो का विशद् विवरण मिलता है। ससार की अभिकल्पना मे नारी की शाश्वत प्रतिष्ठा रही है।

नारी मानव जाति की जन्मदात्री ही नही **मानव-आत्मा की शिल्पी** भी है। नारी वास्तुकार के रूप मे मानव शरीर की रचना तो करती ही हे, उसमे सवेदनशील हृदय तथा मानवीय भावनाओ की चेतना का सृजन भी करती है। भारतीय सस्कृति मे नारी को 'सस्कृति निर्मात्री' की सज्ञा से अभिहित किया गया है चूकि वह स्वय बच्चो मे अच्छे सस्कार निर्माण करने वाली एक सस्था है। प्राचीनकाल से ही नारी राजनीतिक, सामाजिक तथा प्रशासनात्मक कार्यो मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती आयी है। जिस प्रकार शीतल समीर के मृदु झोके मन-प्राणो को सुख पहुचाते है किन्तु प्रचण्ड पवन क चक्रवात जैसे सवर्तक वायु के सम्मिश्रण से वही झोके विनाशकरी रूप ले लेते हे, उसी प्रकार नारियो मे भी सुख देने (अमृत) एव दु ख देने वाले (विष समान) दोनो तत्व विद्यमान होते है। नारी वास्तव मे मृदुता और क्रूरता का कुल जोड है।

जिज्ञासा *किन्तु क्या कारण है समाज व धर्मग्रन्थो ने नारी का सही मूल्याकन नही किया?*

समाधान सौन्दर्य की अभिव्यक्ति मनुष्य की मूल प्रकृति है किन्तु पाश्चात्य सभ्यता ने नारी की ममता, शील, धैर्य, सयम एव दृढता आदि का ठीक मूल्याकन न कर उसे केवल पुरुष के भोग की वस्तु के रूप मे उपयोग किया है, तथा हर स्तर पर उसका शोषण किया है, उस पर वर्चस्व बनाये रखा है। नारी को पुरुष समाज ने स्त्री, महिला, अबला, कुमारी, सुता, दुहिता, वधू, पत्नी, भार्या, कामुकी, वल्लभा, देवी, प्रिया, अगना, जाया, माता इत्यादि अपनी सुविधानुसार अनेक नामो से अलकृत किया है। पुरुष के कर्मठ पौरुष ने सदा उसके ममतामयी मृदु हृदय पर शासन किया है। उसकी इच्छा मॉ को स्वेच्छाओ मे केन्द्रित किया है। नारी को मत्री तो बनाया है किन्तु उसे कभी स्वतन्त्रता का खुला अवसर नही दिया।

जैसे वायु की अपनी कोई सुगन्ध नहीं होती वह जैसा सम्पर्क पाती है वैसी ही सुरभित-दुरभित होकर बहती है, उसी प्रकार नारी की स्थिति है। वह स्वत कुपथ पर नहीं चली उसने पुरुषो से बाध्य होकर कुपथ पर चलना सीखा है। प्रकृति रूप से नारी

की ऑखो मे करुणा है वह स्वभावत किसी भी प्रकार की शत्रुता से अनछुई है। बच्चो को सस्कारवान बनाने, रणक्षेत्र मे वीरो को प्रोत्साहित करने तथा भोगो मे आकण्ठलिप्त पुरुषो को नारी समाज ने सदा सावधान कर पतन की राह से बचाया है। वस्तुत देखा जाये तो मानव-मात्र का उत्कर्ष-अपकर्ष नारियो की मुट्ठी मे है।

धर्मग्रन्थो मे नारी के कुलटा रूप की निन्दा है तो मातृरूप की वन्दना भी है। माँ मरुदेवी की आचार्यो ने भरपूर प्रशसा की है।

जिज्ञासा *जैनागमो मे नारी की क्या स्थिति है?*

समाधान जैनागम मे नारी की सम्मानजनक स्थिति है। भगवान ऋषभदेव ने नारी को अक व अक्षर की अधिष्ठात्री बनाया अपने चतुर्विध सघ मे श्राविका व साध्वी दोनो रूपो मे बराबर का स्थान दिया। यही परम्परा चौबीस तीर्थकरो से होती हुई आज तक विद्यमान है। जैन ग्रन्थो मे नारी के विविध रूपो की विस्तृत चर्चा है। धार्मिक दृष्टि से नारी समादृत रही, हॉ चारित्रक निकृष्टता के आधार पर स्त्री हो या पुरुष जैनागम मे उसकी निन्दा गर्हा ही की गई है।

महावीर के समय मे नारी के प्रति सामाजिक सोच मे युगान्तरकारी बदलाव आया और उसे दासी या भोग्या न समझकर स्वतन्त्र व्यक्तित्व की स्वामिनी समझा गया। महावीर के आत्म स्वातन्त्रय ने भी नारी-मुक्ति के आन्दोलन को नया रूप दिया। शारीरिक सरचना से नारी भले ही पुरुष से दुर्बल हो, पर आत्मिक विकास के द्वार तो उसके लिये भी खुले है। चन्दनबाला से महामुनि महावीर ने आहार ग्रहण कर उसे ऐसी ऊँचाई दी जिस पर सदा गर्व किया जायेगा। यहाँ तक कि भगवान के समवसरण मे भी श्रावको की अपेक्षा प्राय तीन गुनी सख्या श्राविकाओ की थी और प्राय तीन गुनी ही सख्या मुनियो की अपेक्षा आर्यिकाओ की वर्णित है। राज्यसभाओ मे, युद्धस्थली मे, साहित्य निर्माण मे, गृहसचालन मे सर्वत्र नारी का सर्वोपरि स्थान रहा है। महावीर के काल मे नारी शिक्षा की पूर्ण अधिकारिणी रही है। मुस्लिम काल मे अवश्य ही पर्दा प्रदान कर नारी-शिक्षा प्रचार को कुण्ठित किया गया।

जिज्ञासा *स्वतन्त्रता आन्दोलन मे किन जैन महिलाओ ने सक्रिय भूमिका निभाई?*

समाधान स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भी जैन महिलाओ का पूरा योगदान रहा है। कुछ महिलाये जहाँ इस आन्दोलन से बाहर जुडी रहीं, वही कुछ ने जेल की कठोर यातनाये भी सहीं। विदेशी वस्त्रो का बहिष्कार, नमक आन्दोलन, सत्याग्रह आन्दोलन, शराब की दुकानो का विरोध, धरना आदि मे जैन महिलाओ ने बढ-चढकर भाग लिया। श्रीमती अगूरी देवी जैन (धर्मपत्नी महेन्द्र जी जैन, आगरा) जेल गई। श्रीमती कमला देवी जैन (प परमेष्ठी दास जैन की पत्नी, ललितपुर) जेल गई। काचन जैन मुन्नालाल शाह

(चखोदरा, गुजरात) ने कारावास भोगा। श्रीमती केसर बाई (ललितपुर निवासी श्री मोतीलाल की पत्नी) भी जेल गई। श्रीमती गगा बाई जैन (पत्नी वैद्य कन्हैया लाल जैन, कानपुर) भी जेल गई। श्रीमती गोविन्द देवी पटवा (कलकत्ता) ने जेल मे भारी यातनाये सही। जयावती सघवी (अहमदाबाद), श्रीमती धनवती बाई, राका, श्रीमती नन्ही बाई जैन (सिहोरा, जबलपुर), श्रीमती प्रभा देवी शाह, ब्रह्मचारिणी पण्डिता चन्दाबाई (जैन बालाश्रम, आरा), श्रीमती प्रेम कुमारी विशारद (नागपुर), श्रीमती फूलकुवर बाई चोरडिया (अजमेर), मृदुला बेन साराभाई (गुजरात), श्रीमती माणिक गौरी, श्रीमती राजबाई पाटिल (महाराष्ट्र), श्रीमती लक्ष्मी देवी जैन (सहारनपुर), श्रीमती लीला बहन एव रमा बहन (डॉ प्राणजीवन मेहता की पुत्री) की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। श्रीमती लेखवती जैन को पूरे भारत मे चुनाव मे निर्वाचित पहली महिला सदस्य होने का गौरव प्राप्त हुआ। श्रीमती विद्यावती देवडिया (नागपुर), श्रीमती सज्जन देवी महन्तो, श्रीमती सरला देवी साराभाई, श्रीमती सुरेन्द्र देवी जैन इसी प्रकार न जाने कितनी लम्बी सूची जैन महिलाओ की है, जिन्होने स्वतन्त्रता आन्दालन मे सक्रिय भूमिका निभाई।



“मेरी दृष्टि में इसका कारण यही है कि अभी भी समाज में महिलाओं की स्थिति शोचनीय है यद्यपि वे शिक्षित भी है जागरूक भी है पर सामाजिक परिवेश मे रुढ़ियॉ अभी भी व्याप्त है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज की प्रथा, पुत्र को ही वशाधार का माना जाना ऐसे कुछ कारण है जिनके कुचक्र मे नारी आज भी पिस रही है। अनुपात का इस तरह घटना समाज के लिए शुभ सकेत नहीं है। बेटी और बेटे को समान रूप से ही देखते तो सम्भवत यह अनुपात न घटता।”

जिज्ञासा *स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समाज मे नारी का क्या स्थान देखने को मिलता है?*

समाधान हमारे सविधान मे नारियो को पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त है, किन्तु वे केवल नाममात्र को है। इस समय मे भी पति की इच्छा के अनुरूप जीवन व्यतीत करना ही उसकी नियति है। दहेज की माग, सौन्दर्य के प्रति विलासिता की भावना, विवाह विच्छेद, विवाह निषेध आदि दुर्दशाओ से नारी आज भी कष्ट उठा रही है। भारतीय महिलाओ की आर्थिक पराधीनता तथा पुरुष का इस क्षेत्र मे सर्वोपरि होना नारी के पतन का कारण बन गया है।

महिलाओ मे त्याग तपस्या, बलिदान, घर-परिवार, खानदान, समाज के लिये मर मिटने की अदभुत शक्ति है इसलिये प्रसाद जी ने नारी की महिमा मे कहा है -

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

नारी की विवाह समस्या, नित्य प्रति होने वाली आत्म-हत्याएँ, बलात्कार, दहेज आज भी नारी समाज की ज्वलत समस्याये हे।

जिज्ञासा *नारी समाज की जहॉ अनेकश उपलब्धियॉ है वही पाश्चात्य सभ्यता का प्रतिकूल प्रभाव उसे पतन के रास्ते पर ले जा रहा है। इस विषय मे आपकी क्या प्रतिक्रिया है?*

समाधान देश मे महिला शिक्षा के स्तर मे अपेक्षित सुधार नही हुआ, देश के नारी समाज का बहुत बडा प्रतिशत तो साक्षर तक नही लेकिन हमे गौरव है भारतवर्ष मे सबसे ज्यादा साक्षर जैन महिलाए है जो परिवारो को श्रेष्ठ सस्कार दे रही है। उच्च शिक्षा की तो बात ही क्या की जाये। जा महिला वर्ग आज शिक्षित हे उनमे जागृति आयी है। वे पुरुष की तर्ज पर ही आर्थिक रूप से स्वावलम्बी होना चाहती है तथा विभिन्न सेवाओ मे कार्यरत है। मध्यम वर्ग की शिक्षित महिलाये परिवार का आर्थिक भार कम करने के लिए विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी सस्थाओ मे कार्य कर रही है। जिन्हे प्रशासनिक अधिकार प्राप्त हे तथा जो राजनीति आदि मे प्रमुख पदो पर है ऐसी अल्पसख्यक महिलाओ को छोडकर प्राय अन्य महिलाये पुरुष शोषण की शिकार है।

जिज्ञासा *वह कैसे?*

समाधान पुरुष अक्सर उनके शील को न पहचान कर उन्हे गुमराह करने की कोशिश करता रहता है। उन पर फब्तियॉ कसी जाती है और उन्हे बडे मानसिक तनाव की स्थिति मे अपने कार्यो का सम्पादन करना पडता है। उनके नौकरी करने से अनेक परिवार टूटते भी है, क्योकि नारी को भोग्या समझने वाली पुरुष सस्था की सोच मे कोई विशेष परिवर्तन नही आया है। कई बार ऐसी नारियॉ बहक भी जाती है। ऐसा वे स्वेच्छा से नही करती अपितु यहॉ भी उन के पतन का कारण पुरुष वर्ग ही होता है। इस भौतिकवादी युग मे अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की चाह और बढती हुई महत्वाकाक्षा के कारण नारी समाज अपने कर्तव्यो से विमुख होती जा रही है। व मोज-मस्ती की जिन्दगी को प्राथमिकता देने लगी हे। और घर-परिवार के दायित्व को भुला बैठी है।

जिज्ञासा *कुछ नारियॉ मर्यादा की लक्ष्मण रेखा पार कर रही है उससे परिवारो पर क्या प्रभाव पड रहा है।*

समाधान जब-जब पुरुष की हठधर्मिता या अपने अविवेक के कारण नारी ने अपनी मर्यादाओ की लक्ष्मण-रेखा पार की हे तब-तब सिर्फ नारी को ही नहीं बल्कि पूरे समाज को कष्ट उठाना पडा है। जीवन के भौतिक सुख एकत्रित करते-करते जब उसकी ऑखे खुलतीं है तो उसे पता चलता है कि उसकी सतान नशे की लत मे चूर पॉप-म्यूजिक के शोर पर थिरक रही है और बात उसके काबू के बाहर हो गई है तब उसे जीवन की भौतिक उपलब्धियॉ बेकार लगने लगती है।

जिज्ञासा *बदलते जीवन मूल्यो के सदर्भ मे नारी ने क्या खोया और क्या पाया है?*

समाधान नारी भले ही किसी काल विशेष मे उपेक्षित रही हो किन्तु आज वह समाज का महत्वपूर्ण अग है। यहॉ यह भी सत्य है कि भारतीय समाज मे आज के बदलते जीवन मूल्यो ने एक आर जहॉ नारी जीवन को परिष्कृत किया है वही दूसरी ओर किसी हद तक उसे विकृत भी किया है। इसका कारण है परिवर्तनो को एक सीमा तक समायोजित रूप मे न स्वीकार कर पाना। आज की नारी अपने अधिकारो के प्रति पूर्णत सजग और सचेष्ट है। क्लर्क से लेकर केन्द्रियमत्री, आई ए एस , आई पी एस अधिकारी, पायलट आदि बनकर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही है। दूसरी ओर नारी अपने अधिकारो की दौड मे शामिल होकर उदारता, मातृत्व आदि कोमल भाव से रिक्त होती जा रही है। अपनी प्रतिभा के दम पर अपना समग्र विकास तो ठीक है किन्तु उन्हे अपने को एक सीमा तक सतुलित और नियत्रित रखना चाहिये क्योकि नारी से घर आगन चहकता-महकता है इन सब मौलिक तथ्यो को भूलकर केवल फैशन परस्ती से हाथ मिलाकर चलने वाली नारियो ने अभी तक पाया कम खोया अधिक है।

जिज्ञासा *स्वय नारी-ही-नारी की प्रगति मे बाधक है। आपकी इस विषय मे क्या प्रतिक्रिया है?*

समाधान नारी का भारतीय समाज मे सदैव सम्मानजनक स्थान रहा है। उसे देवी तुल्य स्थान मिला है, किन्तु देखा जाता है कि एक नारी सास/जेठानी/ननद के रूप मे जब दूसरी नारी पर कहर ढाती है तब नारी राक्षसी नजर आती है दहेज के आकर्षण मे पुरुष की अपेक्षा नारी ही अपनी बहुओ को अधिक पीडा देती है, यहॉ तक कि उन्हे जिन्दा जला डालती है। यह नारी द्वारा नारी पर अत्याचार की पराकाष्ठा ही है। नारी ही सन्तान के रूप मे लडके की चाह मे मादा भ्रूण को समाप्त करा देती है। "कन्या पराई धरोहर है" ऐसी सकुंचित मानसिकता की शिकार माताऍ कन्या और पुत्र के पोषण पहनावे एव शिक्षादि मे भेदभाव कर कन्या रूप नारी का नारी होकर शोषण करती है उपर्युक्त तथ्यो से यह निष्कर्ष निकलता है कि नारी भी नारी की प्रगति मे किसी हद तक बाधक तो है ही।

जिज्ञासा *नारी की महानता क्या है?*

समाधान नारी की महानता यह है कि प्राकृतिक रूप मे उसमे सूर्य जैसा तेज, चन्द्रमा जैसी शीतलता, समुद्र जैसा गाम्भीर्य, पर्वत जैसी दृढता, पृथ्वी जैसी क्षमा, आकाश जैसी विशालता और वृक्षो जैसा त्याग है। उसमे पति के लिए शील, सतान के लिये ममता, समाज के लिये नैतिक सदाचारपूर्ण गौरव है। वह अपनी अस्मिता को पहचाने इसी मे उसकी महानता है।

जिज्ञासा *नारी की सार्थकता परिवार मे कब सिद्ध होती है?*

समाधान केवल घर मे रहने से कोई गृहस्थ नही होता। नारी की सार्थकता इसी मे है कि उसकी सतान यदि पुत्र हो तो बुद्धिमान हो, पुत्री प्रियवदा हो। पति के प्रति उसमे सम्मान, सहयोग व परस्पर मैत्री भाव हो, अतिथि सत्कार, देव-पूजन, प्रतिदिन मधुर सात्विक भोजन, सत्-पुरुषो के सग-सत्सग हो। परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ यथोचित सम्मान, श्रद्धान, ममता और कर्त्तव्य हो।

जिज्ञासा *पुरुष वर्ग ऐसा क्या करे कि नारी को उसका उचित सम्मान प्राप्त हो?*

समाधान पुरुष, नारी की अस्मिता को पहचाने और उसे अखण्डित, सुरक्षित रखते हुए उसके रिक्त आचल को मान-सम्मान से आपूरित कर स्वय के, नारी एव देश के मस्तक को स्वाभिमान से समुन्नत करे। नारी को भोग की वस्तु न समझकर उसे परिवार, समाज व राष्ट्र की सहयोगिनी समझ कर आचरण करे चूकि नारी ने सदैव ही जीवन के प्रति उदासीन पुरुष के बुझते शौर्यदीप मे सदा ही साहस और उत्साह की घृताहुतियॉ दी है, उनका मूल्याकन करे।

जिज्ञासा *भारत मे नारी शिक्षा की दिशा मे हमारे ऋषियो व राष्ट्र नेताओ का क्या दृष्टिकोण रहा?*

समाधान भारत मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा के क्षेत्र मे और विशेषकर नारी शिक्षा के क्षेत्र मे व्यापक तथा गुणात्मक प्रगति हुई है। स्त्रियो की शिक्षा की स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गॉधी व पडित जवाहर लाल नेहरु सभी ने पुरजोर हिमायत की।

जिज्ञासा *स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सरकारी स्तर पर इस दिशा मे क्या-क्या कदम उठाये गये?*

समाधान सरकार द्वारा नारी शिक्षा का आकलन, औचित्य व उपाय की दिशा मे गठित विभिन्न आयोग ने नारी शिक्षा के महत्व को पुष्ट करने के साथ-साथ विभिन्न सुझाव, उपाय व सर्वेक्षण प्रस्तुत किये।

विश्वविद्यालय आयोग (1948-49), श्रीमती हसा मेहता आयोग (1962), शिक्षा आयोग (1964-66) सभी ने नारी शिक्षा की पूरी वकालत की तथा नारी शिक्षा को पुरुष शिक्षा के ऊपर रखने की सस्तुति की। उन्होने अपनी रिपोर्ट मे नारी शिक्षा के लाभ बताते हुए कहा कि स्त्रियो को शिक्षा देना इसलिए आवश्यक है क्योकि उनके द्वारा ही भावी सन्तान को शिक्षा दी जा सकती है। समाज का निर्माण ठोस आधार पर करने के लिए नारी शिक्षा की उपयोगिता है। स्त्री शिक्षा का मानवीय ससाधनो के पूर्ण विकास मे एक महत्वपूर्ण स्थान है। स्त्री शिक्षा से घरो का सुधार होता है। स्त्रियो की शिक्षा का शैशव के सस्कारमय वर्षो मे चरित्र के निर्माण मे अपना विशेष स्थान है। स्त्रियो की शिक्षा 'प्रसवन-दर' को घटाने मे काफी सहायता कर सकती है।

1981 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे शैक्षिक तथा सामाजिक दृष्टि से समान स्तर पर लाने के लिए नारी शिक्षा का महत्व बताया गया तथा इस दिशा मे व्यापक कार्य-कलाप करने का मशवरा दिया गया।

16 दिसम्बर 1993 को नौ देशो के "सभी के लिये शिक्षा" सम्मलन के अवसर पर डॉ शकरदयाल शर्मा तत्कालीन राष्ट्रपति ने महिलाओ व लर्डाकयो को शिक्षा देने पर विशेष बल दिया।

सम्मेलन मे दिये गये आकडो के अनुसर अशिक्षित स्त्री की प्रसवन दर 5 1 प्रतिशत है। आठवी तक पास की प्रसवन दर 4 0 प्रतिशत, दसवी पास तक की 3 1 प्रतिशत तथा स्नातक पास की दर 2 1 प्रतिशत है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि शिक्षित महिलाओ की प्रसवन दर कम रही।

नारी शिक्षा के ऐतिहासिक सर्वेक्षण के अनुसार अग्रेजी शासन मे 1881 से 1902 तक को देखे तो प्रथम बार सन् 1883 मे पहली बार दो भारतीय महिलाओ ने कॉलेज की परीक्षा पास की। इस काल मे माध्यमिक शिक्षा मे पाच गुना वृद्धि हुई तथा प्राथमिक शिक्षा की भरती भी 1 24 लाख से बढकर 3 45 लाख तक पहुँची। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

सन् 1902 से 1922 इन दो दशको मे माध्यमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे सक्रियता और बढी। 1913 के बाद महिला शिक्षा मे उत्तरोत्तर विकास हुआ। भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1916 मे मुम्बई मे हुई।

1922 से 1947 के दौर मे नारी शिक्षा का सर्वागीण विकास हुआ अभी भी लडको की तुलना मे लडकियो का नामाकन कम रहा। प्रति 100 लडको की तुलना मे लडकियो का नामाकन 36 (22 मिडिल स्कूल एव 14 माध्यमिक) था।

संविधान में पुरुष और स्त्री को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार, पुरुषो और स्त्रियो को समान कार्य के लिये समान वेतन। नगर पालिका के चुनाव मे आरक्षण आदि के अधिकार दिये गये। इकलौती बालिका सन्तान को सम्पूर्ण शिक्षा नि शुल्क कर सरकार ने स्त्री शिक्षा की दिशा मे अच्छा कदम उठाया है।

जिज्ञासा *नारी शिक्षा के क्षेत्र मे क्या स्थिति सन्तोषजनक है?*

समाधान नारी शिक्षा के प्रसार तथा गुणात्मक सुधार के क्षेत्र मे तेजी से प्रगति हुई है, परन्तु इस प्रगति को बहुत सन्तोषजनक नही कहा जा सकता। ससार के उन्नतशील देश हम से इस क्षेत्र मे बहुत आगे है। उपलब्ध (प्रमाणिक) आकडो के अनुसर 1996-97 मे छात्राओ की सख्या 22 लाख के आसपास पहुँच गई जो कि कुल छात्र सख्या का 34 10 प्रतिशत है। 1995-96 तक कुल 9 हजार 278 कॉलेजो मे 1 हजार 146 कॉलेज महिलाओ के है।

नारी प्रौढ शिक्षा के क्षेत्र मे लगभग 130 देश हम से आगे है। नारी शिक्षा के क्षेत्र मे हर स्तर पर अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री सन् 2001 की जनगणना मे महिलाओ की सख्या का अनुपात पुरुषो की तुलना मे काफी कम है, इसका क्या कारण है?*

समाधान मेरी दृष्टि मे इसका कारण यही है कि अभी भी समाज मे महिलाओ की स्थिति शोचनीय है यद्यपि वे शिक्षित भी है जागरूक भी है पर सामाजिक परिवेश मे रुढियॉ अभी भी व्याप्त है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज की प्रथा, पुत्र को ही वशाधार का माना जाना ऐसे कुछ कारण है जिनके कुचक्र मे नारी आज भी पिस रही है। अनुपात का इस तरह घटना समाज के लिए शुभ सकेत नहीं है। बेटी और बेटे को समान रूप से ही देखते तो सम्भवत यह अनुपात न घटता। अभी भी समय है समाज को भी सचेत होना होगा और महिलाओ को भी दृढता से इन परम्पराओ का चक्रव्यूह भजन करना होगा।

तपस्या :
शान्ति का मूलमन्त्र

"

प्रत्येक प्राणी अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन के लिए निष्ठापूर्वक जो कार्य करता है वह उसकी तपस्या ही तो है। यदि एक सफाई कर्मचारी सड़क साफ करता है तो यह भी तपस्या ही है। जीवन के हर क्षेत्र में तपस्या तो होगी। सम्यक् अर्थो में लें तो तपस्या से मुक्ति का द्वार खुलता है। तपस्या में शरीर और इन्द्रियाँ दोनों तपते है। जैसे-जैसे सयम सधता है मन भी स्थिर होने लगता है और आत्मा से साक्षात्कार होने लगता है। निराशा में आशा, बिखराव में एकता और अशान्ति में शान्ति का प्रादुर्भाव करती है - तपस्या। सत्यत तपस्या शान्ति का मूल तन्त्र है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

ग्रीष्मयोग, 1997, शिमला (हिमाचल)

उन्नत ललाट, सुडौल शरीर, तेजस्वी और शान्त ऑखे, ओजस्वी वाणी, आगमचर्या मे समर्पण, निष्कपट बातचीत देखकर सहज ही आध्यात्मिक दिगम्बर जैन राष्ट्र सन्त उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी की उपस्थिति का अहसास हो जाता है। उपाध्यायश्री कालजयी काव्य कृतियो के सृर्जनकर्त्ता व तत्त्व चिन्तक है। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण व्यक्ति, परिवार व राष्ट्र को सबल व प्रामाणिक बनाने मे तत्पर है। वे विषय की गहराई मे उतरकर तलस्पर्श करने की प्रवृत्ति के धनी है तथा उनकी अभिव्यक्ति की बहु आयामी विधाऍ है। अपनी कुछ जिज्ञासाओ को लेकर समाधान के कुछ अश प्रस्तुत है - **बाल ब्रह्मचारिणी रजना शास्त्री**, *सह सम्पादक श्री गुप्तिसदेश*

जिज्ञासा *वर्तमान समय मे मानव की जीवनचर्या मे जो कथनी और करनी का विचित्र असतुलन है अर्थात् हर व्यक्ति एक साथ अनेक मुखौटे लगाए घूमता है - आप जैसे त्याग और तप से स्पन्दित सन्त वर्तमान विसगतियो एव विषमताओ को किस प्रकार देखते है?*

समाधान कुछ इस तरह उपाध्यायश्री जी ने उत्तर दिया -

''विधाता
कैसा वैचित्र्य है यह?
समय ने कैसी करवट ली, कि
प्रकाश अन्धों के घर पानी भर रहा है
और चाँदनी
जुगनू के
पैर दबा रही है।''

जिज्ञासा *जैन दर्शन मे क्षमा का गौरव पूरी गुरुता के साथ उद्‌गीत हुआ है। इसे वीरो का आभूषण भी कहा गया है - क्यो?*

समाधान - क्षमा जीवन का तेज है, ओज है, ब्रह्म है और सत्य है। क्रोध विभाव भाव है, इस क्रोध को - क्रोध से नही जीता जा सकता, उसे केवल क्षमा से ही जीता जा सकता है।

तप कर्ता तो श्रेष्ठ है इसमे नहीं सन्देह।
इनसे पहले श्रेष्ठ जो करे क्षमा से नेह।।
शक्ति क्षमा अजेय है धारक है बड़ भाग।
विजय-वैजयन्ती फहरती जाय-पराजय भाग।।

जिज्ञासा *आत्मोन्नति के लिए सुसाहित्य की क्या भूमिका है?*

समाधान जिस प्रकार आदित्य अन्धकार को दूर भगाता है उसी प्रकार श्रेष्ठ साहित्य समाज व राष्ट्र के अविवेक-अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करता है। साहित्य समाज का दर्पण है। यदि दर्पण टूटा-फूटा या मैला हो तो उसमे प्रतिबिम्ब भी वैसा ही दिखाई देगा। यदि साहित्य-सत्साहित्य नहीं होगा तो मनुष्य आत्मोन्नति के मार्ग पर अग्रसर नही हो पायेगा। आत्मोन्नति के मार्ग मे सुसाहित्य की महती भूमिका है।

जिज्ञासा *आज के धनाढ्य व राजनेताओ से आप क्या कहना चाहेगे?*

समाधान इस बात को मैने 'सजीवनी शतक' मे दोहो के माध्यम से कही है - देखिए।

धन वैभव साम्राज्य सब जब तक तेरे साथ।
जब तक तेरे पुण्य का उदय प्रबल है तात।।
पग-पग पर व्यवधान लख जागृत रह इन्सान।
न जाने किस याम में निकल जाए तव प्राण।।
सत्य अहिसा शक्ति से, झुकता सकल जहान।
इसका पालन जो करे, उसका हो उत्थान।।

जिज्ञासा : *मानी/अभिमानी/प्रमादी व्यक्ति के क्या लक्षण है गुरुदेव?*

समाधान महाराजश्री की वाणी मे -

नयन-नीर जिनके नहीं, उनका दिल पाषाण।
वदन मधुरता न झरे, निश्चित है अभिमान।।



"यदि माया-मोह का त्याग हो जाये तो न सिर्फ मानव-मानव के बीच की दूरी कम हो जाएगी बल्कि मानव में अधर्म की बजाए धर्म के प्रति रुचि बढेगी और वह जन-कल्याण के विषय में सोचने लगेगा। अब माया-मोह का बन्धन कैसे छूटे? इसके लिए सद्पुरुषों का सान्निध्य और जीवन के यथार्थ से रु-ब-रु होना होगा कि इस ससार में सिवाय कर्म के कुछ भी तो अपना नहीं है फिर माया मोह का बन्धन कैसा? यह समझ में आ जाए तो जन ही नहीं जग कल्याण हो जायेगा।"

जिज्ञासा *माया-माह के चक्रव्यूह से कैसे निकला जा सकता हे, जबकि हर तरफ अधर्म का बोलबाला हो?*

समाधान यदि मानव-मानव के बीच अज्ञान, सन्देह, माया-मोह की विकृति न होती तो प्रेम की अमृतधारा बहती दिखलाई पडती ओर मानव-मानव के बीच व्याप्त खाई को पाटा जा सकता था, परन्तु विपरीत परिस्थितियो के कारण सब कुछ उल्टा हो रहा है। प्रतिवर्ष बुराई के प्रतीक रावण को जला दिया जाता है, परन्तु बुराई फिर भी नही जलती वह और दशमुखी होकर यानि अराजकता धार्मिकता का घटता अस्तित्व, झूठ, फरेब, मक्कारी का बढता वर्चस्व मानव के लिए कष्टप्रद हो गया है। इन सबका कारण माया-मोह ही तो है। इन सब से बचने सत्सग मे जाना होगा, तपस्या करना होगी। यदि माया-मोह का त्याग हो जाये तो न सिर्फ मानव-मानव के बीच की दूरी कम हो जाएगी बल्कि मानव मे अधर्म की बजाए धर्म के प्रति रुचि बढेगी और वह जन-कल्याण के विषय मे सोचने लगेगा। अब माया-मोह का बन्धन कैसे छूटे? इसके लिए सद्पुरुषो का सान्निध्य और जीवन के यथार्थ से रु-ब-रु होना होगा कि इस ससार मे सिवाय कर्म के कुछ भी तो अपना नही है फिर माया मोह का बन्धन कैसा? यह समझ मे आ जाए तो जन ही नही जग कल्याण हो जायेगा।

जिज्ञासा : *तपस्या से क्या अभिप्राय है? जीवन को सार्थक बनाने मे इसकी भूमिका क्या है?*

समाधान · तपस्या के बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नही की जा सकती। तपस्या से शरीर की स्थिरता सधती है। प्रत्येक प्राणी अपने कर्त्तव्यो के निर्वहन के लिए निष्ठापूर्वक जो कार्य करता है वह उसकी तपस्या ही तो है। यदि एक सफाई कर्मचारी सड़क साफ करता है तो यह भी तपस्या है। जीवन के हर क्षेत्र मे तपस्या तो होगी भले ही उसकी दिशा-दशा सासारिक हो। सम्यक् अर्थो मे ले तो तपस्या से मुक्ति का द्वार खुलता है। तपस्या मे शरीर व इन्द्रियॉ दोनो तपते है। जैसे-जैसे सयम सधता हे मन भी स्थिर होने लगता है और आत्मा से साक्षात्कार होने लगता है। निराशा मे आशा, बिखराव मे एकता और अशान्ति मे शान्ति का प्रादुर्भाव करती है। तपस्या - वस्तुत शान्ति का मूलमन्त्र है।

जिज्ञासा *क्या धर्मावलम्बी होने के लिए तपस्या करने की अनिवार्यता है?*

समाधान जिसे सत्य-असत्य, अच्छे-बुरे, ऊँच-नीच का विवेक हो जाता है वह व्यक्ति आत्मा के निकट आने लगता है। तपस्वी अधर्मी हो ही नही सकता, वह सदा धर्ममार्गी ही होगा। जो व्यक्ति व साधु केवल तपस्या करने का ढोग करते है और अधर्म के मार्ग पर चलते है वे कभी भी आत्म-कल्याण व लोक-कल्याण नहीं कर सकते। धर्म और तपस्या दोनो एक दूसरे के पूरक है। तपस्या ही एकमात्र ऐसा मार्ग है जिससे मन, शरीर व इन्द्रियॉ पूर्णत शुद्ध होने लगती है और व्यक्ति का श्रद्धान धर्म के प्रति बढने लगता है।

जिज्ञासा *क्या रात्रि भोजन त्याग भी तपस्या की श्रेणी मे आता है?*

समाधान हॉ, रात्रि भोजन त्याग भी एक तपस्या है। जैन आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी तो यहॉ तक कहते है कि अपनी सामर्थ्यानुसार त्याग-तपस्या अवश्य करनी चाहिए। यह सम्यक्त्व की परिचायक है। धर्म का अर्थ है धारण करना और तपस्या धारण की जाती है कराई नही जाती। रविषेणाचार्य के अनुसार रात्रि मे पूर्ण आरम्भ त्याग के साथ चतुर्विध आहार का त्याग श्रावक की तपस्या है। एक वर्ष रात्रि भोजन त्याग करने पर छह माह के उपवास रूप तपस्या का फल मिलता है।

जिज्ञासा *क्या धर्म जीवन को पतन के मार्ग से बचाने मे सक्षम है?*

समाधान धर्म ही पतन के मार्ग से बचाने वाला है। धर्म जीवन पद्धति है, अत वह जीवन मे उतरना ही चाहिए किन्तु शर्त यह है कि उपासना मे आडम्बर न हो क्योकि धर्म मनुष्य को सत्पथ पर ले जाने वाला मार्ग है। दु ख-दर्दो से दूर कर सशक्त सुख को

दिलाने वाला है। निश्चित ही धर्म जीवन को पतन के मार्ग से बचाने मे पूर्ण रूपेण सक्षम है। जीवन मे धर्म का प्रश्न जब उठता है तो अनायास ही उत्तर मिलता है कि जो अपने कर्मो की भूमिका का निर्वाह कर रहा है वह धर्मात्मा है। चाहे वह सीमा पर बन्दूक लिये खडा हो या अपने दफ्तर मे कार्य देख रहा हो या फैक्ट्री मे श्रमिक को रोजगार दे रहा हो अथवा सडक पर झाडू लगाता बढ रहा हो वह निश्चित ही अपने कर्त्तव्यो को पूर्ण कर धर्म का आचरण कर रहा है। मात्र मन्दिर मे घण्टियॉ बजाना धर्म नही है। वर्तमान विश्व मे जो भी अपने कर्त्तव्यो को पूर्ण कर रहा है वह अपने धर्म का पालन कर रहा है।

जिज्ञासा *इस भौतिक चकाचौध के युग मे हर व्यक्ति दूसरे से आगे निकल जाना चाहता है क्या वह राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए अच्छे लक्षण है? व्यापक भौतिक उपलब्धियो के बाद भी व्यक्ति अपने भविष्य के लिए इतना चिन्तित क्यो है? यदि आज की भोगवादी जीवनशैली सार्थक है तो चहुँ ओर इतना असन्तोष क्या व्याप्त है?*

समाधान - हमे अपने भविष्य की थोडी भी चिन्ता है तो वर्तमान को उजालो से भरना होगा। स्वस्थ चिन्तन, प्रशस्त व्यवहार, उदात्त चरित्र ही उज्ज्वल भविष्य द सकत है। भविष्य सदा वर्तमान का ऋणी होता है जिसका वर्तमान नही, उसका भविष्य कैसा? इस सिद्धान्त के आधार पर जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को आलोकित करता है उसके आसपास आलोक बिछ जाता है। कर्त्तव्य को उजालने या पुरुषार्थ को जगाने मे 'आस्था' की मुख्य भूमिका है। आस्था मजबूत हो जाए तो जीवन का भविष्य प्रकाशमान होगा। कुछ लोग सोचते है कि वे भविष्य की चिन्ता क्यो करे हमे जीना ही कितना हे? ऐसे लोगो को सोचना चाहिए कि उनके पुरखो ने जो पुरुषार्थ किया था उसका फल उन्हे मिल रहा है। यदि वे आने वाली पीढी के लिए कुछ करना चाहते है तो पुरुषार्थ का मार्ग अपना ले, तभी उनका व आने वाली पीढी का भविष्य स्वर्णिम हो सकता है। सही अर्थो मे जो व्यक्ति का भविष्य होता है वही भविष्य है, वही समाज का भविष्य है और वही राष्ट्र व ससार का भी, इसलिए सब कुछ हमारे हाथ मे है जैसा हम चाहे वैसा बन सकते है, वैसा ही अपनी पीढी, समाज, राष्ट्र व ससार को बना सकते है।

जैन और बौद्ध धर्म में निर्वाण की अवधारणा

❝

जिसके जीवन मे वैराग्यानुभूति हो जाती है वह भले ही सिद्धान्त शास्त्र का मर्मज्ञ एव विशेषज्ञ न हो लेकिन उसकी साधना अप्रतिम हो सकती है क्योंकि उसके वैराग्य पौध को सिचन मिलता है आस्था और सहिष्णुता के पावन नीर का। वैराग्य जल से वासना की आन्तरिक अर्चिष शान्त होती है, विषय ईधन से नहीं। विषयों की अन्धी दौड में धावमान चेतना को अन्तर्मुखी बनाने का एकमात्र साधन है वैराग्य।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

❞

निर्वाण कल्याणक 23 फरवरी 96, भजनपुरा, दिल्ली

जेन ओर बौद्ध धर्म को लेकर मेने कुछ जिज्ञासाओ का समाधान मर्मज्ञ तत्व-वेता उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी मुनिराज से किया। चर्चा के महत्वपूर्ण अश प्रस्तुत है - **भूपेन्द्र कुमार जैन** */*

जिज्ञासा *विदित विश्व मे जितने धर्म जीवित और प्रचलित है या जिनका थोडा बहुत इतिहास मिलता है उन्हे मुख्यत कितनी श्रेणियो मे विभाजित किया जा सकता है?*

समाधान ऐसे सब धर्मो के आन्तरिक स्वरूप का अगर वर्गीकरण किया जाये तो उन्हे मुख्यत तीन भागो मे बॉटा जा सकता है। प्रथम, वे है जिसमे मौजूदा जन्म का ही विधान है। दूसरे, जिनमे मौजूदा जन्म के अतिरिक्त जन्मान्तर का भी विधान है और तीसरे वे, जो जन्म-जन्मान्तर के बाद उसके अस्तित्व का भी विचार करते है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री कृपया इसकी स्पष्ट व्याख्या करे?*

समाधान प्रथम वह धर्म जिसमे 'वर्तमान जन्म का ही विधान है' खाओ, पियो और मोज उडाओ। उनका ध्येय वर्तमान जीवन का सुख भोग मात्र जिनका सिद्धान्त है।

'पुनर्जन्म की जिनके यहाँ कोई अवधारणा नहीं है।' यही वर्ग कालान्तर मे चार्वाक कहलाने लगा। वे इसी ध्येय की पूर्ति के लिये साधन जुटाते थे क्योकि उनकी मान्यता थी कि हम जो कुछ है इसी जन्म तक है। मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नही होता। जीव तत्व अनन्त आकाश मे विलीन हो जाता है। ऐसे वर्ग को नास्तिक कहा गया। उनका लक्ष्य सुख भोग अर्थात् काम-पुरुषार्थ और अर्थ पुरुषार्थ तक ही सीमित था।

दूसरे विचारक जो वर्तमान जन्म के अतिरिक्त जन्मान्तर का भी विधान करते है उन्हे 'प्रवर्तक धर्मवान' कहा गया है। प्रवर्तक धर्म वाले धर्म, अर्थ और काम इन तीनो पुरुषार्थो को मानते है किन्तु उन्होने चौथे "मोक्ष पुरुषार्थ" की कोई कल्पना ही नहीं की है।

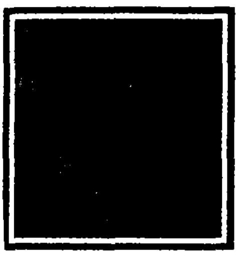
प्रवर्तक धर्म, प्रवर्तक धर्म समाजगामी था। वैदिक दर्शनो के अनुयायी ही प्रवर्तक धर्म के जीवित रूप है। प्रवर्तक धर्म के अनुयायियो का मत था कि "प्रत्येक व्यक्ति समाज मे रहकर ऐसे सामाजिक कर्त्तव्यो का पालन करते हुए जो वर्तमान जीवन से सम्बन्ध रखते हो", के साथ-साथ ऐसे धार्मिक कर्त्तव्यो का भी पालन करे जो पारलौकिक जीवन से सम्बन्ध रखते हो। ऐसा व्यक्ति ऋषिऋण (विद्याध्ययन आदि), पितृऋण (सतति जननादि) और देवऋण (यज्ञ-यागदि) से जुड़ा होता है। व्यक्ति के लिये सामाजिक और धार्मिक कर्त्तव्यो का पालन करके अपनी कृपण इच्छा का सशोधन करना तो अच्छा है किन्तु उसका निर्मूल नाश करना न शक्य है न इष्ट, एतदथ प्रवतक धम के लिये गृहस्थाश्रम जरूरी हो गया। जिसे उसे लाघकर पूर्ण निवृत्ति के मार्ग पर चलना उन्हे अशक्य हो गया और गृहस्थाश्रम मे अटककर ही जीवन की इतिश्री समझने लगे।

निवर्तक धर्म, निवर्तक धर्म व्यक्तिगामी है। वह आत्म साक्षात्कार की उत्कट वृत्ति मे से उत्पन्न होता है। निवर्तक धर्म के लिये गृहस्थाश्रम का बन्धन था ही नही। वह गृहस्थाश्रम के बिना भी व्यक्ति को सर्वत्याग की अनुमति देता है क्योकि उसका आधार इच्छा का सशोधन नहीं, उसका निरोध है। आत्म शुद्धि ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है, न कि ऐहिक या पारलौकिक किसी भी पद का महत्व। इस उद्देश्य की पूर्ति मे बाधक आध्यात्मिक मोह - अविद्या और तज्जन्य तृष्णा का मूलोच्छेद अनिवार्य है। आध्यात्मिक ज्ञान और उसके द्वारा सारे जीवन व्यवहार को पूर्ण निस्तृष्ण बनाना प्रमुख लक्ष्य है। योग्यता और गुरुपद की कसौटी एकमात्र जीवन की आध्यात्मिक शुद्धि है न कि जन्म सिद्ध वर्ण विशेष। इस दृष्टि से स्त्री और शूद्र तक का धर्माधिकार उतना ही है जितना एक ब्राह्मण और क्षत्रिय का। कमोबेश उक्त लक्षणो के धारण करने वाली अनेक सस्थाओ और सम्प्रदायो मे एक ऐसा पुराना निवर्तक धर्म सम्प्रदाय था जो तीर्थकर महावीर के पहले बहुत शताब्दियो से अपने खास ढग से विकास करता जा रहा था।

उसी सम्प्रदाय मे पहले नाभिनन्दन ऋषभदेव, यदुनन्दन नेमिनाथ और काशी राजपुत्र पार्श्वनाथ हो चुके थे।

जिज्ञासा *जैन शब्द का अर्थ क्या है?*

समाधान जैन शब्द सस्कृत की "**जिन**" धातु से बना है, जिसका अर्थ है जीतना, धन और धरती को नही, स्वय को। इस दृष्टि से जैन दर्शन मे आत्मानुशासन एव प्रति पग इन्द्रिय-निग्रह की बात पर जोर दिया गया हे।



"महावीर ने निर्वाण की प्राप्ति के लिए 'प्रथम भूमिका आत्मज्ञान' को माना क्योकि आत्मा ही न हो तो फिर दु.ख से मुक्त कौन होगा। उन्होंने कहा - एक आत्मा को जानो, उस एक आत्मा को जानने से ही सब कुछ जाना जाता है। उन्होंने कहा कि हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति ऐसी होनी चाहिए जिससे दूसरे जीवो को पीडा न पहुँचे क्योंकि वे भी हमारी तरह सुख शान्ति चाहते है।"

जिज्ञासा *महावीर को जैन धर्म का प्रवर्तक बताया गया है अर्थात् जैन धर्म लगभग सवा पच्चीस सौ वर्ष का है, जबकि जैनो का दावा है कि यह वैदिक काल से भी पूर्व का है। ऐसी भिन्नता क्यो है?*

समाधान जेन धर्म अनादि अनिधन धर्म हे। महावीर से पूर्व भी तेईस तीर्थकर हुए है। इस क्रम मे महावीर 24वे तीर्थकर थे। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव थे। जहॉ तक जैनधर्म की प्राचीनता का प्रश्न है तो सिन्धु घाटी के उत्खननो से इस तथ्य को स्थापित कर दिया है कि जैनधर्म एक प्राचीन धर्म है। प्राय सभी इतिहासकारो ने भगवान आदिनाथ/ऋषभदेव को मान्यता दी है। वेद मनुस्मृति, विष्णु पुराण, शिव पुराण, वायु पुराण, श्रीमद् भागवत गीता म भी आदिनाथ को सस्कृति के प्रणेता के रूप मे प्रतिष्ठित किया है।

जिज्ञासा *वैराग्य का अर्थ जैन दर्शन मे क्या है? क्या केवल घर-बार छोड देना ही वैराग्य है? वास्तव मे वैरागी कौन है?*

समाधान जैन दर्शन मे वैराग्य व्यापक अर्थो मे लिया गया है। राग के अभाव मे जो मानसिकता निर्मित होती है उसका नाम वास्तव मे वैराग्य है। वैरागी वही हो सकता है

जिसका भोगों के प्रति अनाकर्षण हो। केवल भगवे व शुभ्र वस्त्र पहनकर घर-गृहस्थी से विमुख हुआ व्यक्ति जो निरन्तर भोगो मे लिप्त है वैरागी नहीं हो सकता। इन्द्रिय और मन पर पडने वाली मोह-सस्कार की काली छाया से दूर खडे हुए बिना, वैरागी होना वैसे ही असम्भव है जैसे ज्येष्ठ की चिलचिलाती धूप मे श्यामल निशा का अस्तित्व। जिसके जीवन मे वैराग्यानुभूति हो जाती है वह भले ही सिद्धान्त शास्त्र का मर्मज्ञ न हो लेकिन उसकी साधना अप्रतिम हो सकती है क्योकि उसके वैराग्य पौध को सिचन मिलता है आस्था और सहिष्णुता के पावन नीर का। वैराग्य जल से वासना की आन्तरिक अर्चिष शान्त होती है, विषय ईधन से नही। विषयो की अन्धी दौड़ मे धावमान चेतना को अन्तर्मुखी बनाने का एकमात्र साधन है वैराग्य।

जिज्ञासा . *भारतीय जैन दर्शन व बौद्ध धर्म मे निर्वाण की क्या परिकल्पना है?*

समाधान निर्वाण शब्द मूलत श्रमण परम्परा का है। निर्वाण की परिकल्पना विशुद्ध भारतीय है। बौद्ध विचारधारा मे जैसा कि विदित है बौद्धो मे हीनयान और महायान दो भेद हैं। 'हीनयान' मे आस्था रखने वालो की मान्यताए है - निर्वाण दु खो का अभावरूप है। निर्वाण एक लोकोत्तर दशा है। क्लेशावरण हटते ही निर्वाण हो जाता है जबकि महायानियो की मान्यता है कि निर्वाण सत्य, नित्य अनिर्वचनीय है। निर्वाण प्राप्तव्य नहीं एक सम्भावना है। यह प्राप्त नहीं किया जाता, हो जाता है। भिक्षु और निर्वाण समान है। जैसे साधु बनाये नही जाते, स्वय आत्म प्रेरणा एव विरक्ति से बनते है तद्वत निर्वाण प्राप्त नहीं किया जाता - स्वयमेव उपलब्ध हो जाता है।

महावीर ने निर्वाण की प्राप्ति के लिए 'प्रथम भूमिका आत्मज्ञान' को माना क्योकि आत्मा ही न हो तो फिर दु ख से मुक्त कौन होगा। उन्होने कहा - एक आत्मा को जानो, उस एक आत्मा को जानने से ही सब कुछ जाना जाता है। उन्होने कहा कि हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति ऐसी होनी चाहिए जिससे दूसरे जीवो को पीडा न पहुँचे क्योकि वे भी हमारी तरह सुख शान्ति चाहते है। जैनदर्शन कहता है कि जब जीव अपनी अनर्गल/अनर्थदण्डात्मक प्रवृत्तियाँ सकुचित करके यह सोचता है कि मेरी प्रवृत्ति से किसी भी जीव को पीडा न पहुँचे। इस स्थिति मे वह 'सत्वेषु मैत्री' का सूत्र गुनगुनाता हुआ प्राणिमात्र का मित्र बन जाता है। वह किसी से स्वार्थ सम्बन्ध नहीं रखता मोहात्मक दृष्टि से न वह किसी का होता है ऐसी स्वस्थ, स्वच्छ, सुलझी मानसिकता कौटुम्बिक चक्रव्यूह मे न फसकर सहजरीत्या आत्म निरीक्षण के पथ पर अग्रसर हो जाता है और वैराग्य उसका टार्च बेअरर बनकर पथ प्रदर्शक बन जाता है। वैराग्य की रोशनी से आभामयी सयम की वीथियो पर निर्भीक बढता हुआ आत्मान्वेषी उग्र तपस्या की अग्नि मे कषायो की किट्टिमा को गला-गलाकर पृथक्कर शुद्ध स्वर्ण की मानिन्द आत्मा को

कुन्दन बना कृत्कृत्य हो जाता है। यही निर्वाण है।

जिज्ञासा *तब क्या तथागत बुद्ध का निर्वाण मार्ग आत्मविज्ञान से पृथक् है?*

समाधान बुद्ध ने अपना निर्वाण मार्ग आत्म-विज्ञान के जीवन पर स्थिर नहीं किया। उनका कहना था कि आत्म-विज्ञान मे कोई लाभ नही। उन्होंने इतना तो अवश्य माना कि जब मनुष्य अपने स्वतन्त्र अस्तित्व को "मै हूँ" इस प्रकार समझ लेता है तब इस "मै" से ममत्व की सृष्टि होती है और इससे राग-द्वेष बढता है ओर मनुष्य बुरी तरह ससार के चक्र मे फस जाता है। इस चक्र से निकलने का उपाय उन्होने वैराग्य भावना बतलाया है उनके अनुसार इस उपाय से प्राणी "मै" से मुक्त हो जाता है और जब वह इस "मै" के अहकार से मुक्त होकर सब का मित्र हो जायेगा ऐसी समभाव से ओत-प्रोत मानसिकता मे कोई किसी का नही रह जाता। सारे सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाते है। सम्बन्धो के अभाव मे आखिर कोई ससार मे क्यो रुकेगा। उसे नो घर छोडना ही उचित होगा अपनी इसी प्रज्ञा को प्रकर्ष ध्यान द्वारा प्राप्त करना ही उसके लिये निर्वाण है।

जिज्ञासा *सरल शब्दो मे जैन दर्शन/धर्म मे अहिसा की मर्यादा क्या है?*

समाधान जेन सस्कृति मे अहिसा प्रमुख है। विश्व बन्धुत्व की भावना बिना अहिसा के प्राप्त नही हो सकती। जैन धर्म प्राणिमात्र की रक्षा की बात करता है। जैन सस्कृति मनुष्य मात्र के प्रति समदृष्टि रखना चाहती है। इसी समदृष्टि मे लोक कल्याण की भावना अन्तर्हित है। जैन सस्कृति के अनुसार उसके श्रावक (सम्यक् दृष्टि) इहलोक और परलोक, हानि-लाभ व जीवन-मरण आदि किसी भी स्थिति मे कोई भय नही रखेगे वे नि शक होगे और ममता, मोह से परे अपनी इच्छाओ पर नियन्त्रण रखने वाले होगे।

जैन सस्कृति मे अहिसा को मुख्यत दो धाराओ म बॉटा जा सकता है -

पहली धारा - पहली धारा मे श्रमण साधु हे जो दुनियॉ से मोह-ममता नही रखते, ममता और क्षमा ही उनकी सम्पत्ति है। वह अहिसा महाव्रत पालते है - आततायी के उपसर्ग को भी समता से सहते है। शरीर भले ही मिट जावे, परन्तु वे आततायी का बुरा नही चाहते। वे जीव मात्र का भला चाहते है - किसी भी जीव की मनसा-वाचा-कर्मणा हिसा नही करते। यह 'अहिसा की पूर्णता' की पुनीत धारा है।

दूसरी धारा - जैन तीर्थकर आध्यात्मिक विज्ञानी थे, वे जानते थे कि सभी मनुष्य मोह-ममता के त्यागी और वासना विजयी नही हो सकते। उन्होने सोचा था कि सघ की स्थिरता के लिये उनकी चरित्र मर्यादा भी निर्दिष्ट की जाना चाहिये। इसके लिए उन्होने गृहस्थियो के लिए भी अहिसा व्रत का विधान बनाया। जिनके अनुसार गृहस्थ लोग सकल्पपूर्वक किसी को न मारे। क्रोध, मान, माया व लोभ के वश होकर किसी की हत्या

न करे। किसी पर आक्रमण न करे। इस तरह हम देखते हैं कि महावीर ने आत्म विज्ञान के विस्तार से निर्वाण का मार्ग बताया और बुद्ध ने आत्म विज्ञान के सकोच से निर्वाण माना।

सात्विक जीवन बिताने के लिए उन्होने अहिसा की मर्यादा निश्चित कर दी। गृहस्थी चलाने के लिए किए गये उद्योग व घर-परिवार की रक्षा करने मे जो हिसा अनिवार्य रूप से होगी तथा जिसे रोक पाना उनकी शक्ति के बाहर है उससे उन्हे मुक्त रखा गया है किन्तु इस स्थिति मे भी उन्हे निर्देश है कि वे हिसा न करने के प्रति सदा सजग रहे और ऐसा प्रयास करे कि जीवन यापन मे होने वाली हिसा भी कम-से-कम हो। इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए इसे भाव हिसा और द्रव्य हिसा के रूप मे बताया गया। जहॉ भावो मे हिसा नही होगी वहॉ अहिसा ही मानी जायेगी।

एक कृषक जो मीलो जमीन जोतकर कीडो-मकोडो और पृथ्वी कायिक जीवो की विराधना करके द्रव्य हिसा करता है, परन्तु फिर भी उसे उस मछुयारे से कम पापबन्ध होता है जो बराबर बसी डाले हुए नदी, तालाब आदि के किनारे मछली पकडने की हिसक भावना लिये बेठा रहता है और पकड एक भी नही पाता। यहॉ कृषक के भाव मे हिसा नही वह तो अन्न उपजाकर अपना व औरो का पेट भरता है किन्तु मछुयारे भाव हिसा से ओत-प्रोत है। जैन सस्कृति म हिसा-अहिसा का माप भाव है इसलिये गृहस्थ जैनी देश और प्रियजनो की रक्षा करने मे हर समय तैयार रहता हे। पूर्व भारत मे जैन अहिसा मर्यादा के पालक एक नही सहस्रो राजा-महाराजा, सेनिक और सेनापति हो चुके है। साराश यह कि जैन सस्कृति प्रत्येक परिस्थिति मे यथाशक्ति अहिसक रहने का ही उपदेश देती हे।

जिज्ञासु *जय हो गुरुदेव! आपने जैन और बौद्ध मे निर्वाण की आवधारण से सम्बन्धित बहुत सारे समाधान दिए। मै धन्य हो गया। आशीर्वाद दे।*

आत्माभिषेक का हेतु : महामस्तकाभिषेक

भगवान बाहुबलि हमें जीवन जीने की कला सिखाते है। परिवार के मध्य सामजस्य की उपयोगिता को रूपायित करते हैं बाहुबलि के जीवन दर्शन को समझे तो टूटते परिवार और बिखरते रिश्तो की डोर को जोड़ा जा सकता है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

2 फरवरी 2006, जैनतीर्थ सर्वोदय, पलवल (हरियाणा)

भगवान गोम्मटेश बाहुबलि की 58 फुट 8 इच उत्तुङ्ग प्रतिमा विश्व की अद्भुत कलाकृति है ही, स्वय उनका जीवन दर्शन भी अपराजित युग चेतना का सवाहक रहा है उन्होने हिसक विचारधाराओ को अहिसा की ओर मोडने का साहसपूर्ण पराक्रम एव पुरुषार्थ किया था उनकी तपश्चर्या का भी कोई उत्तर हमारे पास नही है। वे नि शस्त्रीकरण एव अयुद्ध सस्कृति के प्रणेता रहे है। वर्तमान मे जो दिशाहीन ऊर्जा हमारे सम्मुख है विश्व पर प्रतिपल युद्ध के बादल मण्डरा रहे है, चतुर्दिक हिसा एव असुरक्षा व्याप्त है, समस्त नैतिक स्रोत सूख गए है ऐसे भी मस्तकाभिषेक की जलधारा प्राणिमात्र के लिए किस प्रकार जीवनदायिनी हो सकती है इसी विचार को लेकर प्रबुद्धचेता मनस्वी गुरुवर उपाध्याय गुप्तिसागर जी से हुई वार्त्ता प्रस्तुत है - **डॉ नीलम जैन** *'सम्पादक' 'जैन महिला दर्श'*

जिज्ञासा *परम पूज्य गुरुदेव आज सर्वत्र गोम्मेटेश बाहुबलि के महामस्तकाभिषेक की चर्चा है। अभिषेक का अर्थ क्या है? क्यो करते है अभिषेक?*

समाधान अभिषेक का शाब्दिक अर्थ है जलाभिसिचन, प्रतिमा के शिरोभाग पर जब जल या अन्य कोई द्रव्य भक्तिभाव पूर्वक छोडते है, उत्सव मनाते है तब इस क्रिया को अभिषेक कहते है। वृहद स्तर पर सम्पन्न विशाल प्रतिमाओ का अभिषेक महामस्तकाभिषेक

कहलाता है यह एक मगल अनुष्ठान है प्रतिमा का मस्तकाभिषेक होता है और अभिषेक **की पवित्र धारा भक्तो के भी मस्तक व चित्त को पवित्र कर देती है प्रतिमा की वाह्य** स्वच्छता हमारी आन्तरिक निर्मलता मे कारण बनती है।

जिज्ञासा *तब यह बारह वर्ष बाद क्यो किया जाता है ऐसा पवित्र अनुष्ठान तो जल्दी-जल्दी होना चाहिए?*

समाधान अन्तराल की कोई निश्चित अवधि नहीं है। स्थानीय जिनालयो की प्रतिमाओ के नित्य अभिषेक होते है किन्तु जो विशाल प्रतिमाए है जिनका अभिषेक करने से पूर्व काफी व्यवस्थाएँ करना पडती है उनका प्रतिवर्ष अभिषेक होता है। भगवान बाहुबलि का मस्तकाभिषेक बारह वर्ष बाद होता है। भगवान बाहुबलि की प्रतिमा विश्व का आठवॉ आश्चर्य है। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर इसका भव्य आयोजन होता है तथा दीर्घावधि की प्रतीक्षा से उत्सुक नयन अभिषेक से अतीव सुख और आनन्द प्राप्त करते है। (हसकर) कुछ विचित्र सयोग है यहॉ बारह का। अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु जिन्होने श्रवणबेलगोला मे ही समाधि की थी बारह वर्ष के दुर्भिक्ष को जानकर ही उधर गए थे उनके साथ बारह हजार ही साधु थे। इस प्रतिमा के निर्माण मे भी बारह वर्ष लगे।

जिज्ञासा *भगवान बाहुबलि की महत्ता का मूलभूत कारण क्या है? तीर्थकरो के पुत्रो मे भरत बाहुबलि ही सर्वाधिक चर्चित हुए - कारण?*

समाधान यह पूर्णत सत्य हे कि भरत बाहुबलि सर्वाधिक चर्चित हुए कारण इन दोनो का प्रसग सामाजिक जीवन के अधिक निकट है। कौरव-पाण्डव युद्ध महाभारत मे कारण बनता है पर इन दोनो का युद्ध महाभारत को बचाने मे कारण बनता है।

बाहुबलि जैसे भाई का जीवन ही भाईचारे का सन्देश देता है। आज देश का ऐसे मनीषी चिन्तनशील भाई की आवश्यकता है जो धन के लिए उत्पन्न लालसा को विराम दे। विश्व मे आज जब मुन्ना भाई, दाऊद भाई बढ रहे है तब भरत बाहुबलि जेसे भाईयो का जीवन प्रसग एक उदाहरण है। क्रूरता, हिसा, युद्धो का अभिषेक जब करूणा, प्रेम और मनवीयता से होगा तभी जीव मात्र का कल्याण होगा। तीर्थकरो ने धर्मतीर्थ का प्रवर्तन किया वीतरागता का सन्देश दिया। भगवान गोम्मटेश बाहुबलि का भरत से युद्ध एक क्रान्तिकारी निर्णय था इससे सामान्य जन-धन की हानि नही हुई परस्पर ही जय-पराजय का निर्णय हुआ। चक्रवर्ती को पराभूत करने का केवल यही एकमात्र प्रसग ग्रन्थो मे आता है।

जिज्ञासा *वर्तमान मे भगवान बाहुबलि के जीवन दर्शन की क्या महत्त्वपूर्ण प्रासगिता हमारे जीवन मे है?*

समाधान क्रूरताएँ, अब भीषण/घनघोर हिसाओ मे बदलने लगी है। हम प्रत्येक स्थल पर वैयक्तिक और सामुदायिक स्तर पर बेहद क्रूर हुए है। चारो ओर दहशत और आतक का दौर है, उसने मानवीय मूल्यो का घनीभूत अवमूल्यन किया है और हमे ऐसे सास्कृतिक दौराहे पर खडा किया है जहॉ वत्सलता खरगोश के सिर पर सीग की कल्पना जैसे लगने लगी है। तमाम नैतिक मूल्य खून मे लथपथ है, ऐसे मे हम अपनी अहिसा की वसुन्धरा, गगन और क्षितिज को समेट पाएगे या नही। वह तो भविष्य के गर्भ मे है किन्तु अहिसा के बिना न भारत, न विश्व शान्ति और न सुरक्षा की कल्पना की जा सकती है। भगवान बाहुबलि हमे जीवन जीने की कला सिखाते है। परिवार के मध्य सामजस्य की उपयोगिता को रूपायित करते है। बाहुबलि के जीवन दर्शन को समझे तो टूटते परिवार और बिखरते रिश्तो की डोर को जोडा जा सकता है।

जिज्ञासा *तब तो उनके सन्देश का व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिए?*

समाधान भगवान बाहुबलि के सन्देश का प्रचार निर्भर करता है हमारे उपक्रम-पराक्रम पर, हमारे प्रचार-प्रसार पर, हमारी सास्कृतिक निष्ठा और आस्था पर। हमे समग्रता से एकजुट होकर भाईचारे, विश्व बन्धुत्व, अयुद्ध एव अपरिग्रह का जयघोष करते हुए सभी प्रचार माध्यमो द्वारा प्रयोजनशील प्रयत्न करना होगा तथा उदारता से सकारात्मक कार्य करने होगे। इन महापुरुषो की अद्‌भुत और अपूर्व विरासत पर हमारी दृष्टि हर पल रहना चाहिए। समाज को घुप्प अन्धेरे से निकालने का सार्थक प्रयास ही हमारी प्राथमिकता होना चाहिए। ऐसे विराट वृहद् स्तरीय आयोजन युगधर्म पर छाये धुन्ध-धुए को हटाकर हमे एक उजली डगर पर स्थापित करते है। हमे और हमारे सहवर्तियो को आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करते है। अहिसा और त्याग के इस महान यज्ञ मे सभी को अपनी सहयोगाजलि समर्पित कर व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के गौरव की रक्षा करना चाहिए। महामस्तकाभिषेक के निमित्त से बाहुबलि द्वारा अपनाई गई मर्यादाओ का जन-चेतना मे निवेश होगा तो वह जैन जीवन शेली के प्रचार का अद्वितीय प्रयत्न होगा। ज्येष्ठ भ्राता अनुज का उसके गुणो के कारण वन्दन करे।

जिज्ञासा *कहते है भगवान बाहुबलि के हृदय मे कोई चुभन (शल्य) थी इसीलिए उन्हे पूर्णज्ञानी बनने मे विलम्ब हुआ?*

समाधान भगवान बाहुबलि तृतीय काल के अन्त मे जन्मे थे और ध्यान मे लीन हुए थे तथा मुक्ति भी तृतीय काल के अन्त मे प्राप्त की थी। अत उनमे एक वर्ष के ध्यान की योग्यता होना कोई बडी बात नही है। पुन शल्य थी इसलिए केवलज्ञान नही हुआ यह कथन तर्कसगत प्रतीत नही होता।

आचार्यो ने भी आगम मे उनकी तपस्या करते समय केवलज्ञान का उल्लेख किया

है। कई लोग कहते है भरत के साथ ब्राह्मी-सुन्दरी बहनों ने भी जाकर उनको सम्बोधा। तब उनकी शल्य दूर हुई। यह कथन भी नितान्त असगत है क्योंकि भगवान ऋषभदेव को केवलज्ञान होने के बाद पुरिमताल नगर के स्वामी भरत के छोटे भाई वृषभसेन ने भगवान से दीक्षा धारण कर ली थी और प्रथम गणधर हो गए। ब्राह्मी और सुन्दरी ने भी दीक्षा ले ली इसके बाद चक्रवर्ती ने घर आकर चक्ररत्न की पूजा करके दिग्विजय के लिए प्रस्थान किया जहाँ उन्हे साठ हजार वर्ष लग गए अनन्तर आकर बाहुबलि के साथ युद्ध हुआ है। इसमे शल्य की तो बात ही नही है बाहुबलि सदृश नीतिज्ञ शल्य मे नही समाधान मे जीते है। वे क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे सर्वार्थसिद्धि से आए थे। गुणस्थान गिरने का प्रश्न ही नहीं उठता, शल्य मिथ्यात्व के साथ चलती है इसलिए शल्य कहना/मानना भ्रम है।

“

माता-पिता बालक के प्रथम गुरु होते हैं - माता-पिता की धर्मज्ञता के कारण ही महामानव बाहुबलि ऐसे सीप बने जिनमें गुण-रूपी स्वाति का बिन्दु दैदीप्यमान मुक्ता बनकर निकला उन्होंने जीवन को कलकित नहीं अलकृत किया। वे नीतिवान नृपति, नि स्पृही सत्ताधारी, शक्तिशाली बलवान होते हुए भी सदाचारी, सस्कृति, धर्म और नीति के रक्षक और निर्लिप्त वैरागी बने।



”

जिज्ञासा *गुरुदेव! बाहुबलि का इतिवृत्त उनके परिवार से जुडा है - विश्व उनसे क्या शिक्षा ले सकता है?*

समाधान यह धरती एक विशाल कुटुम्ब है इसकी वृहत् परिधि है इसमे सभी बिना किसी भेदभाव के भाईचारे का जीवन व्यतीत कर सकते है। परिवार समाज की एक छोटी इकाई है। परिवार ही सस्कारो की प्रथम पाठशाला है। इसीलिए तो परिवार के बीच रहकर ही अपने आचार-विचार परिपुष्ट करते है। परिवारजनो का चरित्र ही समाज का आदर्श होता है। परिवार से प्राप्त बीज ही समाज की धरा मे बोए जाते है। माता-पिता बालक के प्रथम गुरु होते है - माता-पिता की धर्मज्ञता के कारण ही महामानव बाहुबलि ऐसे सीप बने जिनमे गुण-रूपी स्वाति का बिन्दु दैदीप्यमान मुक्ता बनकर निकला उन्होने जीवन को कलकित नहीं अलकृत किया। वे नीतिवान नृपति, नि स्पृही सत्ताधारी, शक्तिशाली बलवान होते हुए भी सदाचारी, सस्कृति, धर्म, नीति के रक्षक और निर्लिप्त

वैरागी बने।

यह भारतीय चरित्र का अभूतपूर्व उदाहरण है। भौतिकता की चकाचौध मे हिसा और मनोमालिन्य की ऑधियो के बीच अडिग खडे हुए गोम्मटेश्वर विश्व के समस्त प्राणियो को नि शस्त्रीकरण, अभय, अहिसा, करुणा, ध्यान तथा योगसाधना का प्रसाद बॉट रहे है।

जिज्ञासा *गुरुवर आप इस महोत्सव मे नही पधारे?*

समाधान सत्यत हम प्रत्यक्षत इस महामहोत्सव मे नहीं जा सके - कारण इधर कई पूर्व निर्धारित कार्यक्रम मे उपस्थित रहना आवश्यक था। पलवल मे पचकल्याणक था। इधर अप्रैल मे जागृति एन्क्लेव मे पचकल्याणक है। कुछ स्वास्थ्य की प्रतिकूलता भी रही। उधर जाने का अर्थ है उधर ही रहना (हसते हुए बोले) अभी कुछ और भ्रमण कर ले। चन्द्रगुप्त, भद्रबाहु उधर गए तो बस उधर ही रह गए। हॉ, महामस्तकाभिषेक की जन-प्रभावना हेतु हमने यथासम्भव प्रयास किया। स्वय हमारी सघस्थ ब्र रजना जी 8 फरवरी को वही रही। अनेक भक्तगणो को भी प्रेरणा दी कि सब लोग अभिषेक करे। अगला अभिषेक किसने देखा।

हम जहॉ भी रहे वही से गोम्मटेश्वर के सन्देश को सर्वत्र प्रसारित कर सकते है। अपने प्रवचनो मे भगवान बाहुबलि के जीवनवृत्त को उनके सन्देश को हमने मुख्य विषय बनाया। सूक्ष्मता से उनकी व्याख्या की। "श्री गुप्तिसन्देश" के "दो विशेषाक" भी भगवान गोम्मटेश पर ही केन्द्रित रहे।

जिज्ञासु धन्य है आप! आपने ठीक कहा हम जहॉ भी रहे वहीं रहकर अपने आचार-विचार से गोम्मटेश बाहुबलि का प्रचार कर सकते है। प्रणाम करते हुए यही प्रार्थना है आगामी महामस्तकाभिषेक तक आपके द्वारा इसी प्रकार ज्ञान गगा प्रवाहमान रहे।

प्रणाम गुरुवर!!

धर्म क्रियाकाण्ड नहीं: जीवन जीने की कला

"धर्म समाज को जोडता है, बाँटता नहीं है। धर्म बडा व्यापक है, मानव जीवन का अस्तित्व धर्म के बिना सम्भव ही नहीं है। धर्म तो सत-चित-आनन्द है, जीवन की प्रेरणा है। धर्म का स्थायी भाव है प्रेम, सेवा, पवित्रता। धार्मिक व्यक्ति में ये तीनों गुण होना जरूरी हैं। कर्मकाण्ड का ढोंग करने से कोई धार्मिक नहीं हो जाता, धर्म तो अन्तरात्मा की पहचान है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि"

10 जुलाई 2006, गन्नौर (हरियाणा)

राष्ट्र सन्त, शाकाहार प्रवर्तक मुनि प्रवर उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी न केवल धार्मिक, बल्कि जीवन के विविध पक्षो के प्रति वैज्ञानिक चिन्तन के लिए सुप्रसिद्ध है। वे जितने ज्ञानसम्पन्न है, कला के भी उतने ही पारखी है। सोनीपत जिले के गन्नौर मे उनकी प्ररणा से बन रहा गुप्तिसागर धाम जहाँ धार्मिक आस्था का शीर्ष केन्द्र बनेगा, वहीं वह स्थापत्य कला का एक नायाब नमूना होगा जो गन्नौर की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करेगा। देशभर से ही नही, कई विदेशी आर्किटेक्ट व स्थापत्य कलाकार वहा दिन-रात कला का इतिहास रचने मे लगे है। दिल्ली के जागृति एन्क्लेव में उपाध्यायश्री की प्रेरणा से महज नौ माह मे निर्मित जैन मन्दिर अपने आप मे एक उदाहरण है। जैसे माँ के गर्भ मे नौ माह मे भ्रूण से लेकर रूपाकार ग्रहण करने तक बालक का जन्म हो जाता है, उसी अवधारणा पर इस मन्दिर की स्थापना की गई, वहाँ प्राण प्रतिष्ठित भगवान पार्श्वनाथ का विग्रह दर्शन के बाद मानो श्रद्धालुओ के अन्त करण मे जीवन्त हो उठता है। मन्दिर की कलात्मक कारीगरी तो देखते ही बनती है उपाध्यायश्री की

अग्निमय तपश्चर्या से उद्भूत ज्ञान अनन्त है। वह कोटि-कोटि हृदयो को अनुप्राणित करे, इस उद्देश्य से आज धर्म को लेकर फैली भ्रान्तियो पर उपाध्यायश्री से चर्चा की गई ताकि लोगो को धर्म के बारे मे सही मार्गदर्शन मिल सके और धर्म तत्व उनके लिए कल्याणकारी हो। प्रस्तुत है उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनिराज जी से बातचीत के प्रमुख अश - **बलदेव भाई शर्मा**, *डिप्टी एडीटर, अमर उजाला, नोएडा।*

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री धर्म को आजकल समाज मे बखेडा करने वाला तत्त्व माना जाता है, धर्म के नाम पर लोग लडते है, फसाद होते है, आखिर धर्म का स्वरूप क्या है?*



“ सन्त तुलसीदास ने कहा है - ‘जड़ चेतन जल जीव नभ सकल राममय जान’, यानि धर्म व्यक्ति को सिखाता है कि सबमें परमात्मा का वास है, इसलिए सदस किसी की भी सेवा व भलाई के लिए तत्पर रहो, किसी को न सताओ। भगवान महावीर का सन्देश ‘अहिसा परमोधर्म यही सिखाता है, तो धर्म के कारण टकराव, सघर्ष की बात ही कहाँ उठती है। एकता और प्रेम ही धर्म का सन्देश है। हाँ, जो नासमझ हैं, वे इस अर्थ को ग्रहण नहीं कर पाते है और धर्म के नाम पर झगड़-फसाद करते-कराते हैं। ”

समाधान , धर्म समाज को जोडता है, बॉटता नही है। धर्म बडा व्यापक है, मानव जीवन का अस्तित्व धर्म के बिना सम्भव ही नहीं है। धर्म तो सत-चित-आनन्द है, जीवन की प्रेरणा है। धर्म का स्थायी भाव है प्रेम, सेवा, पवित्रता। धार्मिक व्यक्ति मे ये तीनो गुण होना जरूरी है। कर्मकाण्ड का ढोग करने से कोई धार्मिक नहीं हो जाता, धर्म तो अन्तरात्मा की पहचान है, लेकिन लोग अपने स्वार्थो के लिए धर्म को आधार बनाकर लोगो को लड़ाते है, बॉटते है। दुर्भाग्य से राजनेताओ ने यह काम सबसे ज्यादा किया है।

जिज्ञासा *लेकिन जब सबके धर्म अलग-अलग है तो लोगो मे एकता कैसे रहेगी, लोग धर्म के नाम पर जुडेगे कैसे?*

समाधान · देखो! लोगो की आस्थाऍ, पूजा पद्धति जरूर अलग-अलग है। धार्मिक

विश्वास अलग है, लेकिन सबका उद्देश्य मानव कल्याण है। सभी के भीतर एक मानवीय चेतना सचरण करती है। यह चेतना ही सबको मानव समाज के रूप मे जोडती है। धर्ममय हुए बिना व्यक्ति मनुष्य नहीं बन सकता। व्यक्ति एक इकाई मात्र है और मानव एक समूह का द्योतक है, धर्म का तत्व ही व्यक्ति को मानव बनने की ओर अग्रसर करता है, उसके 'मै' को 'हम' मे परिवर्तित करता है। जीवन का एक चक्र है व्यष्टि-सृष्टि-समष्टि-परमेष्ठि। व्यक्ति (व्यष्टि) का मै जब धरातल पर उपस्थित सभी जीवो यानि प्राणिमात्र के समूह (सृष्टि) से जुडता हुआ अखिल ब्रह्माण्ड (समष्टि) के साथ एकाकार होकर परमात्मा मे विलय हो जाता है, तब वास्तव मे वह धार्मिक कहा जा सकता है। सन्त तुलसीदास ने कहा है - **'जड़ चेतन जल जीव नभ सकल राममय जान'**, यानि धर्म व्यक्ति को सिखाता है कि सबमे आत्मा, परमात्मा का वास है, इसलिए सदा किसी की भी सेवा व भलाई के लिए तत्पर रहो, किसी को न सताओ। भगवान महावीर का सन्देश 'अहिसा परमोधर्म यही सिखाता है, तो धर्म के कारण टकराव, सघर्ष की बात ही कहॉ उठती है। एकता और प्रेम ही धर्म का सन्देश है। हॉ, जो नासमझ है, वे इस अर्थ को ग्रहण नही कर पाते है और धम के नाम पर झगडा-फसाद करते-कराते है।

जिज्ञासा *उपाध्यायश्री क्या पूजा-पाठ करने से जीवन धर्ममय बनता है? कई लोग तो पूजा-पाठ को कर्मकाण्ड व ढकोसला कहते है।*

समाधान जैसे निराकार ईश्वर की साधना करना कठिन है, साकार रूप मान लेने से ईश्वर से प्रत्यक्ष जुडाव महसूस करना आसान हो जाता है, उसी तरह पूजा-पाठ करने से धर्म के लिए जीवन मे भावभूमि तैयार होती है। यह ऐसे ही है जैसे अच्छी फसल के लिए बीज बाने से पहले खेत मे खाद डालकर खूब जुताई की जाए। पूजा-पाठ से मन पवित्र होता है, सद्भावनाऍ जागृत होती है, ऐसे मे धर्म की ओर बढने का मार्ग खुलता है। दरअसल पूजा-पाठ कर्मकाण्ड होते हुए भी धर्म की ओर ले जाने वाला मार्ग है, इसे ढकोसला कहना नादानी है। हॉ, यह भी जरूरी है कि पूजा-पाठ करने वाले मन को उससे जोडे, दिखावा न करे। भगवान की पूजा करते-करते स्वय मे भगवान की अनुभूति करना ही सच्ची पूजा है।

जिज्ञासा *स्वय मे भगवान की अनुभूति का क्या तात्पर्य है?*

समाधान ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान व वैराग्य ये ईश्वर के लक्षण है। ये लक्षण धीरे-धीरे व्यक्ति के मन व जीवन मे प्रकट हो, यही भगवान की अनुभूति है। भारत मे नर से नारायाण बनने की कहावत प्रचलित है, नर यदि इन लक्षणो से युक्त बने तो वह

नारायण बनने की ओर अग्रसर होता है। भगवान महावीर ने इसी तरह अहिसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह की बात कही, ये सस्कार मन व जीवन को प्रभावित करे, यही भगवान की अनुभूति है। पूजा का सही तात्पर्य यही है। साधारणत पूजा करते समय लोगो के मन मे रहता है कि भगवान उनकी समस्याओ का समाधान करे, उनकी चिन्ताएँ दूर करे तभी वे लोग पूजा के द्वारा भगवान को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करते है, यह पूजा का सही तरीका नहीं है, भगवान को अपने अनुकूल बनाने की बजाय हम भगवान के अनुकूल बने। सद्कर्मो ने मनुष्य जन्म देकर हमे जो सुअवसर दिया है, हम उस कसौटी पर खरे उतरे, यही है भगवान के अनुकूल बनना।

जिज्ञासा ´ *उपाध्यायश्री आम आदमी तो जिन्दगी की परेशानियो से बेहाल रहता है फिर उसके पास जीवन को बदलने व सोचने का समय ही कहाँ है, तो वह भगवान के अनुकूल कैसे बने?*

समाधान · जीवन अपने आप मे कोई गतिविधि नही है, वह तो मन का रूपान्तरण है। मन के सकल्प-विकल्प ही जीवन मे रूपान्तरित होते है इसलिए मन को साधना जरूरी है। कहा गया है **'सुख की कलियाँ-दु ख के कांटे, मन सबका आधार'** इसलिए मन को साधना जरूरी है। जीवन के आवश्यक कर्म करते हुए भी मन के भाव को शुद्ध व सयमित रखना चाहिए। मन का सस्कार व अनुशासन ठीक बना रहे तो जीवन उत्कर्ष को प्राप्त होता है, जबकि मन की अनियत्रित स्थितियाँ जीवन को पतन की ओर ले जाती है। एक सूत्र को हमेशा याद रखे **'ईट राइट, एक्ट राइट, थिंक राईट'**। ईट राइट माने सही अर्थात् शुद्ध-सात्विक खाना खाओ, शाकाहार मन और जीवन की शुद्धि व आरोग्य का सबसे सशक्त माध्यम है, सूक्ति **जैसा खाओ अन्न - वैसा बने मन,** जिस धन से तुम्हारा खानपान चल रहा है वह अगर पापकर्म से या दूसरो को सताकर कमाया जा रहा है तो वह भी मन को शुद्ध नहीं रहने देगा। इसी तरह एक्ट राइट का अर्थ अच्छे और सद्कर्म करो जिनसे अपने साथ-साथ दूसरो को भी खुशी मिले, हमारे मन-वाणी-कर्म से किसी को तकलीफ न पहुँचे और थिंक राइट यानी मन मे अच्छे विचार आए, उपनिषद में कहा गया है **'तन्मे मन शुभ सकल्पमस्तु'** मन के शुभ सकल्प व सकारात्मक विचार जीवन को शक्ति देते है। अब तो वैज्ञानिक व डॉक्टर भी कहने लगे है कि नकारात्मक विचारो का शरीर व स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है और व्यक्ति गम्भीर रोगो से ग्रस्त हो सकता है इसलिए अच्छे व सकारात्मक विचारो का सचरण मन मे होना चाहिए जिससे व्यक्ति के अन्दर भक्ति, प्रेम, सेवा, परोपकार के भाव दृढ हो। इसी तरह व्यक्ति भगवान के अनुकूल बनेगा और उसका जीवन बदलेगा। शुभमस्तु ।

जीवन का उद्देश्य: पवित्रता

"

मनुष्य जीवन अनमोल है इसे सफल व सार्थक बनाने के लिए प्रत्येक प्राणी को चाहिए कि अपने विचारों और बाह्य-अभ्यन्तर ऊर्जा को पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए खर्च करें क्योंकि उद्देश्य की पूर्ति के लिए समर्पित पुरुषार्थी ही सफलता पाता है। ज्ञात रहे' पुरुषार्थी चरणों में वार्धक्य भी घुटने टेक देता है। मन के निकम्मेपन और अभिमान को निकाल फेकना ही सन्ताचरण है। प्रसन्नता, आनन्द व उन्नति का पथ है।

हे आत्मन' झूठे उद्यम से विराम ले और सच्चा परिश्रम-पुरुषार्थ कर यही जीवन की सफलता का सूत्र है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

20 अगस्त 2004, गुप्तिधाम, गन्नौर, हरियाणा

समय-समय पर सन्त-भक्त-महात्मा-दार्शनिक-धर्म गुरुओ ने समाज के सम्मुख कल्याणकारी मार्ग प्रस्तुत किया। यही कारण है कि सन्तो को सबसे अधिक सम्मान दिया गया है। उनके मङ्गल प्रवचन व ब्रह्मविद्या का सन्देश लिपिबद्ध किए गये धर्मग्रन्थ बन गये। जो कालान्तर मे सन्तकाव्य कहलाए। उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज इसी श्रृखला मे एक नया अध्याय बन कर प्रकट हुए है। जिन्होने मानव जीवन की दुर्लभता और महत्ता, ज्ञान, विराग, नीति, सामाजिक दायित्व, धर्म, परोपकार, पाखण्ड निवारण आदि अनेक विषयो पर विश्व के प्रत्येक मनुष्य के लिए दिव्य सन्देश दिया है। इस महामानव के जीवन मे ज्ञान की गम्भीरता, विनयशीलता, अहिसा, सच्चरित्रता, मर्यादा-पालन का व्यवहारिक पक्ष देखने और समझने को मिला है। वर्ष 2004 मे गुरुवर से हुई वार्त्ता को संक्षिप्त मे पाठको के लिए बातचीत के प्रमुख अश - **नरेन्द्र शर्मा 'परवाना'**, *पत्रकार - दैनिक भास्कर, गन्नौर (हरियाणा)*

जिज्ञासा *जीवन जीने का उद्देश्य क्या है?*

समाधान जिस प्रकार से मिट्टी अग्नि, जल, वायु, आकाश से मनुष्य के भौतिक शरीर का निर्माण हुआ है उसी प्रकार से दिव्य गुणो, सिद्धान्तो के साथ धैर्य अपनाएँ। कार्य को करते चले। जिस प्रकार से जीभ दाँतो के बीच सुरक्षित रहती है, उसी प्रकार से जीवन मे आलोचक व समीक्षक साथ रहने से जीवन निखरता है। किसी की कमी की ओर इशारा करे तो इस पर चिन्तन, मनन, मन्थन करे और उसके बाद निष्कर्ष ले क्योकि उबलते हुए पानी मे चेहरा नहीं दिखाई देता। उसी प्रकार से गुस्से मे कोई भी निर्णय सही नहीं होता। शीतल शान्त जल मे आप चेहरा देख सकते है। उसी प्रकार से शान्त चित होने पर आप जीवन मे सही निर्णय लेगे। सन्तो की वाणी सुन्दर मार्गदर्शन प्रदान करती है इन्हे केवल शब्द ही न माने वरन इनको आत्मसात करे। समाज मे नारी का सम्मान हो। नारी मातृ शक्ति है। नारी पैर की जूती नहीं सिर का ताज है। यह जन्मदात्री है। दुनियॉ मे यदि मॉ न होती तो किसी का जन्म न होता। इसलिए मॉ को हृदय से सम्मान दे क्योंकि नारी को बदौलत ही आप ससार मे सुन्दर दृश्य देखने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे है इसलिए मर्यादा के साथ जीवन जीने वाले अनुकरणीय बनते है।

“

नैतिकता की सूरत अपने व्यवहार के आईने में देखी जा सकती हे। नैतिकता एक सुन्दर फूल हो सकता है, सुन्दर शब्द हो सकता है, सुन्दर विचार भी हो सकता है लेकिन सुन्दर व्यवहार बिना इसको सार्थक नहीं कहा जा सकता है। सर्वमान्य सिद्धान्त है इसे झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि गन्धहीन फूल रङ्ग, रूप, सुन्दर शक्ल के बावजूद भी महत्त्व नहीं पा सकता जो खूशबूदार फूल पाएगा। यह विचारणीय है कि आप नैतिक कहलाने के इच्छुक हैं, धर्मी बनना चाहते हैं, देशभक्ति का लेबल लगवाना चाहते हैं, अच्छे साहित्कार, गीतकार, पत्रकार, नेता, अभिनेता, अधिकारी, चिकित्सक, वकील की डिग्री डिपलोमा आदि के अलकरण से विभूषित होना चाहते हैं लेकिन इच्छा मात्र से ऐसा होना सम्भव नहीं है आपको औरों के कर्त्तव्य की चिन्ता छोड़कर अपने कर्त्तव्यों का पालन करना होगा।



”

जिज्ञासा *जीवन मे मर्यादा के महत्व की मार्मिक जानकारी दे?*

समाधान मर्यादा मे रहने वाले सदा सुखी रहते है। मानव रूपी महल के चारों ओर मर्यादा की बाऊण्डरी बनाएँ। इसमें जीवन रूपी इमारत का निर्माण होगा तो वह सुन्दर बनेगी। ऋषि-मुनियो ने जीवन निर्माण के लिए ऐसी व्यवस्था बनाई है, जिससे आप अपना और समाज का हित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे महल बनाते है तो उसमे निर्धारित मापदण्ड अपनाते हुए निर्माण कार्य करते है। महल मे मनुष्य को हवा, रोशनी की सुविधाएँ प्राप्त होती है। इसी प्रकार मानव का जीवन मर्यादाओ मे रहने से सुख का अहसास करता है। जिन्होने मर्यादाओ को तोड़ा उनके जीवन मे ऐब व रोग आते है। मर्यादाएँ टूटती है तो झगडे होते है। जब कोई किसी भी तरह सीमा लाघता है तो परेशानी का कारण बनता है। भगवान महावीर ने इसलिए यही सन्देश दिया कि हर चीज की मर्यादा रखो जैसे खाने की, जमीन की। धन की जितनी इच्छाएँ बढेगी उतना ही दु ख का कारण बनेगी। दो किनारो के बीच नदी बहती है, किनारे टूट जाए तो तबाही मचती है। पानी मर्यादा मे बहे तो उससे खेतो मे हरियाली पैदा होती है पेयजल की आपूर्ति की जाती है। इसी प्रकार मर्यादा का पालन करने वाले को सुख-ही-सुख मिलता है। रावण ने मर्यादा तोडी तो लोग अपने बच्चो का नाम रावण रखना उचित नही समझते है। मर्यादा निभाने वाले श्रीरामचन्द्र जी की लोग पूजा करते है। भारत मे सबसे ज्यादा नामो मे राम आता है यह सम्मान का सूचक है। मर्यादा मे रहकर चलना ही वास्तविक धर्म है। आय कम खर्च ज्यादा, ऐसा करने से परिवार मे कलह होता है। कार चालक मर्यादा तोड़ेगा तो दुर्घटना होगी, केस बनेगा, उसका चालान कटेगा इसी प्रकार घर, परिवार, समाज, देश धर्म की सूची से मर्यादा तोडने वालो का नाम कट जाता है। पाचो इन्द्रियॉ अपनी सीमा मे रहे तो मानव कभी दु खी नहीं होगा। यह नियम है मर्यादा का पालन करने वाले का नैतिक जीवन सुखमय होता है।

जिज्ञासा *जीवन मे नैतिकता का स्वरूप कैसा हो?*

समाधान · नैतिकता की सूरत अपने ब्यवहार के आईने में देखी जा सकती हे। नैतिकता एक सुन्दर फूल हो सकता है, सुन्दर शब्द हो सकता है, सुन्दर विचार भी हो सकता है लेकिन सुन्दर व्यवहार बिना इसको सार्थक नहीं कहा जा सकता है। सर्वमान्य सिद्धान्त है इसे झुठलाया नहीं जा सकता क्योकि गन्धहीन फूल रङ्ग, रूप, सुन्दर शक्ल के बावजूद भी महत्त्व नही पा सकता जो खूश्बूदार फूल पाएगा। यह विचारणीय है कि आप नैतिक कहलाने के इच्छुक है, धर्मी बनना चाहते है, देशभक्ति का लेबल लगवाना चाहते है, अच्छे साहित्कार, गीतकार, पत्रकार, नेता, अभिनेता, अधिकारी, चिकित्सक, वकील की डिग्री डिपलोमा आदि के अलकरण से विभूषित होना चाहते है लेकिन इच्छा मात्र से ऐसा होना सम्भव नहीं है आपको औरो के कर्त्तव्य की चिन्ता छोडकर अपने कर्त्तव्यो का

पालन करना होगा। आपका व्यवहार हमारी नैतिकता का आईना है इसलिए अपने कर्त्तव्यो को निभाते हुए जब कार्य करते आगे चलेगे तो आप नैतिकता की पर्याय बन जाएगे। एक छोटी लेकिन गम्भीर भूल जो की जा रही है जिसमे अपनी कमी को छोडकर दूसरो की कमियो को छॉटना शामिल कर लेते है इसी भूल को सुधार करने की आवश्कता है। आत्म निरीक्षण करे अपनी-अपनी जिम्मेदारियो को निभाएँ। वास्तव मे यही नैतिकता है।

जिज्ञासा *जीवन मे छोटे-बडे सबको समदृष्टि से कैसे देख पायेगे?*

समाधान जीवन मे छोटे बड़े सबको समान रूप से सम्मान दे। यह अध्यात्मभाव से सम्भव है दृष्टि तो प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होती है परन्तु समदृष्टि सम्यग्दृष्टि को प्राप्त होती है इसलिए समदृष्टि श्रेष्ठ है। समदृष्टि के द्वारा मनुष्य अन्तरमुखी होता है। समदृष्टि के मायने झोपडी और भवन मे समानता, मिट्टी और स्वर्ण में समानता, शत्रु-मित्र मे समानता का व्यवहार। इसे यू समझिए कि विपरीत तत्त्व से प्रेरित न होकर तटो के बीच बहने वाली नदी की स्थिति है। समदृष्टि से ही समाज का विकास है क्योकि एक से प्यार, दूसरे से घृणा करने वाला व्यक्ति कभी समाज का उत्थान नही कर सकता है। दृष्टि सौम्यता ही समाज के सुन्दर ढॉचे को बनाती है। सन्त की शरण मे आने के बाद साधारण व्यक्ति भी सन्त की श्रेणी मे आ जाता है क्योकि वह शाश्वत सत्य से जुडता है इसलिए सन्त मत समदृष्टि की पूरक है। जहॉ सन्त है वहाँ समदृष्टि है और जहॉ समदृष्टि हे वहॉ समत्व अर्थात् मानवता जीवित है। सन्त शीतल शान्त स्वभाव मे समदृष्टि अपनाता है। इसका उसे कभी भी नुकसान नही होता, यह स्पष्ट है कि समदृष्टि ही साधु के जीवन का लक्ष्य बन जाता है। साधु इसे आभूषण के रूप मे स्वीकार कर श्रृङ्गारित होता है। मुनियो की असीम कृपा से मनुष्य ने यह अहसास किया है कि आत्म विकास के लिए समदृष्टि ही सार्थक है।

गृहस्थ जीवन मे मनुष्य किसी-न-किसी बन्धन मे बॅधा होता है इसलिए वह समदृष्टि नही रख पाता। समदृष्टा होने के लिए एक ही ऑंख ये से देखना होगा, जो गृहस्थ मे कई बार सम्भव नहीं हो पाता है, इसमे महत्वपूर्ण बात यह है कि सन्त शाश्वत सत्य से जुड कर समदृष्टा हो जाते है इसलिए इनके लिए यह सम्भव है। परमात्मा निष्पक्ष होने के कारण किसी को, किसी प्रकार की समस्या का शिकार नही बनाता वरन मनुष्य अपने-अपने कर्मानुसार जीवन का विकास अथवा विनाश स्वय करता है जिस प्रकार से बिजली से कूलर तो ठण्डक देता है जबकि हीटर से गर्मी मिलती है। परमात्मा ने सबको एक जैसी ही दृष्टि प्रदान की है यह अच्छी और खराब दृष्टि इन्सान के अपने हृदय की उपज है। अध्यात्म क्षेत्र मे कोई रिश्ते नहीं होते और व्यवहारिक जीवन मे मनुष्य जब जीवन व्यतीत करता है तो उसे अपनी दृष्टि विराट बनाकर चलना

होता है क्योकि छोटी दृष्टि से विश्व के प्राणी को वह समान दृष्टि से नहीं देख सकता है। समदृष्टि के मायने अध्यात्म है यह सन्तति मनुष्य के भीतर प्रकट होती है इसका ससार से कोइ लेना-देना नही है। ससार के विभिन्न रूप है जबकि मोक्ष का एक ही रूप है इसलिए मनीषियो मुनियो के सविधान अनुसार जीवन को व्यतीत करे तो यह लौकिक जीवन स्वर्ग से सुन्दर लगे समदृष्टि आएगी इससे मानव का कल्याण होगा क्योकि समदृष्टि अध्यात्मिकता का सम्पन्न गुण है।

जिज्ञासा *जीवन मे सफलता का रहस्य क्या है?*

समाधान मनुष्य का जीवन अनमोल है इसको सफल व सार्थक बनाने क लिए, जीवन के इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए मनुष्य का चाहिए कि अपने विचारो आर बाह्य-अभ्यन्तर ऊर्जा को पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए समर्पित करे क्योकि उद्देश्य की पूर्ति के लिए समर्पित होकर पुरुषार्थ करने से सफलता मिलती है। किसी भी कार्य म सफलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर उज्ज्वल पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पुरुषार्थ के आग बुढापा भी हार जाता है। मन से निकम्मेपन को सर्वथा दूर करना ही महापुरुषा का लक्षण है। उद्देश्य की पूर्ति के लिए जब एक बार मन मस्तिष्क मे प्रसन्नता, आनन्द और उन्नति का चित्र बनने का स्वभाव बन जाता है तो जीवन आदर्शो पर भारी प्रभाव डालता है। यदि एक बार बच्चे ऐसा पवित्र अभ्यास करना प्रारम्भ कर दे तो सारे समाज की शक्ल ही बदल जाएगी जबकि बिना परिश्रम और प्रयत्न के सारी आँकाक्षाएँ जल बुलबुल के समान है। जब आप अपन को परम पिता महावीर की सन्तान मानते हे ता उनकी शक्तियो का कुछ अश भीतर अवश्य ही आएगा। निर्बल कैसे हो सकते है। जा लोग भौतिक वस्तुओ के पीछे धावमान हे वे हिरन की तरह व्यर्थ ही परेशान है। यह चिरन्तन सत्य है कि जो मनुष्य दृढतापूर्वक पुरुषार्थ पर विश्वास करता है, वह जीवन मे खरा उतरता है। मे आपसे प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि शीत ऋतु मे पक्षी दक्षिण की ओर क्यो भागते है? उत्तर है, उनको हृदय से दक्षिण की ओर जाने की प्रेरणा होती है तब व स्वत ही सर्दी से बचने के लिए दक्षिण की ओर उडान भरते है। दक्षिण म उष्णता होती है इसलिए उनकी भीतरी शक्ति उन्हे बतलाती है कि उधर चलो। वहाँ सुख-समृद्धि है। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपनी भीतरी शक्ति से प्रेरणा लेनी चाहिए कि भीतर सुख है, शान्ति है, समृद्धि है। हे आत्मन्! बाहर के झूठे उद्यम से विराम ले और सच्चा प्रयत्न-पुरुषार्थ करे यही जीवन की सफलता का रहस्य है।

साधु-संस्था: प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभाये

"

21वीं सदी में जब हम प्रवेश करें तो हमें अहिसा और वात्सल्य की भूमिका प्रस्तुत करते हुए उसका स्वागत करना चाहिये, क्योंकि भगवान् महावीर में अपरम्पार वात्सल्य था, उनके वात्सल्य-भरे आभा-मण्डल से हिसक लोग भी प्रभावित होते थे और उनकी सन्निधि को पा वे जन्मजात बैर-क्रोध तक विस्मृत कर देते थे। ऐसे ही हमें 21वीं शताब्दी में प्रवेश करते वक्त लोगों के प्रति एक बहुत अच्छा सोच/सद्विचार रखने की आवश्यकता है।

- उपाध्याय गुप्तिसागर मुनि

"

21 अगस्त 1999, वहेलना, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

आज मै आपसे -विस-ए-विस' (मुखातिब) हूँ ताकि आप यह बता सके कि आने वाली शताब्दी के प्रति हम कैसा रूख अपनाये, उसे देखते कैसी जीवन-शैली का अनुसरण करे ताकि समाज मे कोई सार्थक बदलाव आ सके। चूँकि यह एक बहुत महत्व का प्रस्थान-बिन्दु है, पूरे देश के लिए, सम्पूर्ण विश्व के लिए क्योकि आने वाले दिनो मे उसका चेहरा, उसकी शक्ल, उसकी मुख छवि इसी सब पर निर्भर करेगी। इसे ले कर मै तो चिन्तित हूँ ही, समाज के विवेकवान लोगो को भी इस पर विचार करना चाहिये और सामाजिको का मार्गदर्शन करना चाहिये। तो सबसे पहला सवाल यह, कि इक्कीसवी सदी की अगवानी जैन कैसे करे? किस चित्तवृत्ति मे करे? इसका स्वागत कैसे करे? अर्थात् उसे अपनी सास्कृतिक भुजाओ मे कैसे समेटे? गुरुवर उपाध्यायश्री गुप्तिसागर जी महाराज से हुई वार्त्ता को सक्षिप्त मे पाठको के लिए बातचीत के प्रमुख अश - **डॉ नेमिचन्द**, सम्पादक - मासिक तीर्थङ्कर, इन्दौर।

जिज्ञासा : *'वात्सल्य' से आशय आपका एक व्यापक भाईचारे से है -*

समाधान हॉं, भाईचारा, जागतिक भाईचारा, विश्वव्यापी बन्धुत्व -

जिज्ञासा *जो पूरी दुनिया पर छा जाए ऐसा व्यापक, विस्तृत और उदार भाईचारा आप चाहते है।*

समाधान बिल्कुल।

जिज्ञासा *और यही पूरी सदी का स्वागत हो, तो आप चाहेगे कि इस शताब्दी को 'वात्सल्य-शताब्दी' का नाम दिया जाए?*

समाधान 'वात्सल्य-शताब्दी' के रूप मे इसे मनाया जाए ताकि भगवान् महावीर के सन्देश को एक नया विस्तार मिल सके।

जिज्ञासा *कम-से-कम गत दो दशको मे जो परिवर्तन हुए है, उन्हे तो आपने खुद अपनी ऑखो से देखा है, और परिवर्तनो के इस पर्यवलोकन से आने वाले परिवर्तनो का कोई पूर्वाभास भी आपके मन पर उभरा होगा, क्योंकि जो समय का साक्षी होता है वह आने वाले वर्षो को लेकर कोई भविष्यवाणी भी अवश्य कर सकता है। आपको क्या लगता है, कि जो आने वाले वर्ष होगे उनमे जैनधर्म की कोई स्वच्छ/स्वस्थ छवि लोगो के सामने आ सकेगी?*

समाधान वैसे तो मेरा यह मानना है कि जो वर्तमान है वही कालान्तर मे भविष्य बनता है और मनुष्य की वेचारिक उज्ज्वलता यदि आज बढत पर है तो उसी तरह से वह आगे बढेगी, अत इस मायने मे हम वर्तमान को ही भविष्य कहते है तो आज सस्कार अहिसा के, वात्सल्य के, प्रेम के, शाकाहार के रोज-ब-रोज बढ-पनप रहे है तो 21वी शताब्दी मे प्रवेश करते हुए इन सबका एक विराट वितान फैलेगा और एक अहिसामय वातास निर्मित हो जाएगा।

जिज्ञासा *लेकिन अभी तो आज चारो ओर वातावरण युद्ध का है, आतक का है, मारकाट का है, भय और दहसत का है अत पहले हमे इनसे निबटना होगा।*

समाधान ठीक है, कारगिल का माहौल हिसा से भरा हुआ है - वह रक्षा के लिए है।

जिज्ञासा *और-और मुल्को मे भी वैसा है। इस वक्त मेरे साथ एक विख्यात भौतिकी-विद् डॉ मदन मोहन बजाज बैठे हुए है, जिन्होने रेखांकित किया है कि यदि हिसा कम हो, या बिल्कुल न हो तो भूकम्प, चक्रवात इत्यादि नही आयेगे और ऐसी तमाम घटनाएँ नही होगी। इन्होने इसे ले कर 'बिसोलॉजी' नाम से एक विज्ञान-शाखा*

भी उद्घाटित की है - तो इस सिद्धान्त मे भी उन्होने यही कहा है, अत युद्धो को तो कम करना ही पडेगा कही-न-कही जा कर, अर्थात् हिसा का दबाव तो कम करना ही है।

समाधान ठीक बात है।

जिज्ञासा *तो इस दबाव को कम करने मे जैनधर्म की क्या भूमिका हो सकती है?*

समाधान हिसा का दबाव कम करने का सबसे बडा माध्यम हो सकता है वात्सल्य और वह महावीर के अलावा कही अन्यत्र प्राप्त नही है।

जिज्ञासा *अन्यत्र कही प्राप्य हो तो उसे वहॉ से भी प्राप्त करना चाहिये।*

समाधान क्यो नही, लेकिन विशेष यह, कि महावीर मे वात्सल्य-भरा भाव होने के कारण उनका रक्त श्वेत था, इसी तरह यदि हमारा तन-मन शुभ्रता से भर जाए तो दुनिया की काया पलट सकती है।

जिज्ञासा *देखिये। रक्त मे क्या होता है? दोनो किस्म के कण होते है - श्वेत और लाल। श्वेत कण जो होते है, वे प्रतिरक्षा का काम करते है। वे शरीर की प्रतिरक्षा-पक्ति है, यानि हम एक सामाजिक/सास्कृतिक प्रतिरक्षा-पक्ति की रचना करे।*

समाधान प्रतिरक्षा - पक्ति -

जिज्ञासा *तैयार करे, यह उनका सन्देश है, और वह भी अहिसा और वात्सल्य के माध्यम से।*

समाधान बिल्कुल ठीक।

जिज्ञासा *रक्त सफेद होता है, यह प्रतीकात्मक है, आलकारिक है, इस ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिये।*

समाधान हॉ।

जिज्ञासा *अर्थात् हम एक कवच बनाये, एक सामाजिक और नैतिक कवच बनाये ताकि हिसा के दबाव को थामा जा सके, उसे तर्कसङ्गत ढग से घटाया जा सके।*

समाधान बिल्कुल।

जिज्ञासा *तो उपाध्यायश्री, आने वाली शताब्दी को आप जैनधर्म का क्या सन्देश देगे?*

समाधान आने वाली शताब्दी को जैनधर्म का सन्देश होगा, कि हम सबसे पहले

हृदय मे इस भावना को जगाय कि दूसरे की पीडा हमारी अपनी पीडा है, और दूसरे का सुख हमारा अपना सुख है। जब दूसर की पीडा हम अपनी पीडा महसूस होने लगगी, तब हम अपने कदम आगे बढा सकेगे ओर जहॉ दु ख है, पीडा है, परेशानियॉ है उन्हे दूर करने का पुरुषार्थ करेगे, यही पुरुषार्थ 'अहिसा' है, क्योकि हमारे रक्त मे अहिसा घुली हुई है, हमारे बोलन मे, हमारे सोचने मे, हमारे चलन मे इसलिए हमारा हर 'एक्शन' (क्रिया) अहिसा से ओतप्रोत है - होती है।

जिज्ञासा *रक्त मे तो घुली हुई है, पर बोध नही है।*

समाधान बोध हमे कराना पडेगा।

जिज्ञासा *अहिसा है, हमारे रोम-रोम मे, कण-कण मे, शरीर मे, तन मे, मन म चेतना म अहिसा की व्याप्ति तो है, लेकिन व्याप्ति है इसका बोध नही है लोगो का, वह विस्मृत हुआ है।*

समाधान बोध कराने के लिए शाकाहार-क्रान्ति प्रतिपल सक्रिय है, और मै शक्तित लोगो को जगाने की कोशिश कर रहा हूँ, क्योकि आज के सन्दर्भ मे बिना प्रोत्साहन के शक्तियो का जागरण असम्भव हो गया है।

जिज्ञासा *अन्त शक्तियो को जगाया जाए।*

समाधान *अन्त शक्तियो का व्यापक, दिग्दिगन्त व्यापी जागरण बहुत जरूरी है।*

जिज्ञासा अब देखिये कि हम लोग एक तीर्थ पर अवस्थित है। यहॉ आपका वर्षावास है। यह सुखद/उत्साहवर्द्धक है कि हम प्रकृति के सुरम्य, स्वस्थ, स्वच्छ वातावरण मे है तो मे यहा एक सवाल करना चाहता हूँ कि देश के जो 'जन तीर्थ' है, आने वाली शताब्दी म उनकी क्या भूमिका होनी चाहिये?

समाधान आने वाली शताब्दी को लेकर जो अनुभव हो रहा है वह यह कि लोगो मे होड है पैसा खर्च करने की, यशोलिप्सा के कारण। आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है कि 'आज मनुष्य धर्म भी भोग के निमित्त कर रहा है, कर्मक्षय के लिए नही, अत उसका यह त्याग त्याग नही है। मे चाहता हूँ कि लोग जब शाश्वत पद पाना चाहते है, सुखद क्षणो को चाहते है, तब भीतर से त्याग-की-भूमिका को क्यो नही अपनाते?

जिज्ञासा *इन सबकी पृष्ठभूमि पर त्याग की प्रबल भूमिका होनी चाहिये, लेकिन इस सबमे तीर्थ क्या करे? क्या लोग तीर्थ मे आ कर त्याग करे?*

समाधान तीर्थ तो हर जगह है, जिस तीर्थ की चर्चा कर रहे है, उसे हम 'जड तीर्थ'

कहेगे। जहाँ आप-हम बैठे है, वह जड तीर्थ है।

जिज्ञासा *लेकिन यह निमित्त तो बन ही सकता है?*

समाधान बिल्कुल सही कहा आपने। निमित्त बन सकता है, लेकिन नये तीर्थ बनाने मे जो लोग-भागदौड कर रहे हैं, वह भी मेरे विचार मे गलत नही है। बनना ही चाहिए अन्यथा नये इतिहास का सृजन कैसे होगा।

जिज्ञासा *फिर पुराने तीर्थ?*

समाधान पुराने तीर्थो की सुरक्षा की जाए और भगवान् महावीर के प्रशस्त सन्देश को जन-जन तक पहुँचाया जाए।

जिज्ञासा *उनका कायाकल्प किया जाए।*

समाधान कायाकल्प हो -



"साधु को गहन स्वाध्याय करना होगा। ज्यादातर साधु क्रियाकाण्डो में उलझ जाते हैं और अपने प्रति भी आँखें मूँद लेते हैं, और दूसरों के सामने आडम्बरों का एक बहुत बड़ा अम्बार खडा कर देते हैं, जिससे उन्हें स्वय भी नुकसान होता है और दूसरो को भी। वस्तुत ईमानदारी आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने बार-बार कहा है कि हम पहले स्वय को देखें। असल में यदि ऐसा सम्भव हो तो ही साधु-सस्था एक लाइट हाउस की भूमिका निभा सकती है।"

जिज्ञासा *आध्यात्मिक, नैतिक और सास्कृतिक तथा उनमे ऐसा कुछ जोडा जाए जिससे अहिसा को प्रतिष्ठा मिले - उसकी व्याप्ति विस्तृत हो।*

समाधान बिल्कुल, यही मेरी सोच है।

जिज्ञासा *तो यह जो आने वाली सदी है, इसमे समाज की शिक्षा-धार्मिक और आचारमूलक - का क्या स्वरूप होगा क्योकि आज धार्मिक पाठशालाएँ करीब-करीब बन्द है, पण्डित-परम्परा लुप्तप्राय है। साधुओ की चित्तवृत्ति उत्सव-प्रिय हुई है शिक्षा जैसे महत्व के काम मे उनकी दिलचस्पी बहुत कम है, ऐसी विषम स्थिति मे शिक्षा का क्या होगा, इस पर थोडा चिन्तन कीजिये।*

समाधान . मै सोचता हूँ कि नितप्रति पाठशालाओ का लाभ लोगो को नही मिल पा रहा है तो उन्हे 'साप्ताहिक पाठशालाओ' का लाभ दिया जाए। इन्हे शुरू किया जाए, क्योकि जब इस तरह की पाठशालाएँ शुरू होगी तो लोग सप्ताह मे एक दिन अवश्य आयेंगे और सम्पूर्ण मन-प्राण से जो भी उन्हे मिलेगा उसे ग्रहण करेगे। इस तरह उनकी ज्ञान-ग्राह्यता बढेगी। लोग ज्ञान के लिए कम-से-कम साप्ताहिक पुरुषार्थ अवश्य करेगे।

जिज्ञासा *इन पाठशालाओ मे आधुनिक विज्ञान द्वारा विकसित सूचना तकनीक (आईटी) का उपयोग भी किया जाए ताकि आगम को अधिक रोचक और सुग्राह्य बनाना सम्भव हो।*

समाधान हॉ।

जिज्ञासा *क्योकि जैनधर्म का जोर अच्छाई पर है, इसलिए जैन शिक्षा-प्रणाली को कुछ इस तरह सयोजित किया जाना चाहिये कि वह बुराईयो से जूझ कर अच्छाईयो की आबरू कायम कर, उनकी सामाजिक साख को लौटाये।*

समाधान सत्य वचन।

जिज्ञासा *हम देख रहे है कि एक अत्यन्त सवेदनशील काल-सन्धि हमारे द्वार पर आ खडी हुई है। दो शताब्दियॉ ठीक आमने-सामने है, वे एक-दूसरे को नमस्कार कर रही है। ऐसे क्षणो मे आपके मन मे क्या प्रतिक्रिया जागती है - आप तो कवि है, क्या सोचते है?*

समाधान शताब्दियॉ जाने-जाने के दौर मे हे

'बॉट दे हर्ष अपना सभी के लिए,
है उचित बस यही आदमी के लिए,
दे सके, प्रेम दे, ले सके, प्रेम ले,
प्रेम सम्पत्ति है जिन्दगी के लिए।'

जिज्ञासा *बहुत अच्छी पक्तियॉ हे, इनमे महान् सन्देश सन्निहित है। यदि इसकी हरेक पक्ति 25-25 वर्ष बन जाए ता इस तरह एक सम्पूर्ण शताब्दी निरापद हो सकती है। एसे सम्वेदनशील मोड कर जैन साधु-सस्था की क्या भूमिका हो सकती है?*

समाधान साधु यदि अपने प्रति पूरी तरह ईमानदार है तो वह समाज और राष्ट्र को बहुत कुछ द सकता है।

जिज्ञासा *मेरी धारणा तो यह हे कि हमारी साधु-सस्था एक प्रकाश स्तभी की भूमिका*

निभा सकती है और हमे अनेक सास्कृतिक-सामाजिक दुर्घटनाओ से सुरक्षित रख सकती है। जैसे एक प्रकाश-स्तम्भ-लाइट हाऊस - समुद्र मे जहाजो को दुर्घटनाओ से आगाह करता है, उन्हे बचाता है, ठीक वैसे ही हमारी साधु-सस्था हमे अनेक आपदाओ से बचा सकती है जैसा कि बीसवी सदी दुर्घटनाओ की एक अभागत सदी रही है, अत साधु-सस्था अपने इस सहज दायित्व का निर्वाह कर समाज की विकास-यात्रा को बहुत आसान/निर्विघ्न कर सकती है।

समाधान इस भूमिका के लिए साधु को गहन स्वाध्याय करना होगा। ज्यादातर साधु क्रियाकाण्डो मे उलझ जाते है और अपने प्रति भी ऑखे मूँद लेते है, और दूसरो के सामने आडम्बरो का एक बहुत बडा अम्बार खडा कर देते है, जिससे उन्हे स्वय भी नुकसान होता है और दूसरो को भी। वस्तुत ईमानदारी आज की सबसे बडी आवश्यकता है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने बार-बार कहा है कि हम पहले स्वय को देखे। असल मे यदि ऐसा सम्भव हो तो ही साधु-सस्था एक लाइट हाउस की भूमिका निभा सकती है।

जिज्ञासा *आत्मवलोकन कदम-दर-कदम जरूरी है।*

समाधान आत्मावलोकन।

जिज्ञासा *वस्तु-स्वरूप का ज्ञान।*

समाधान ये दोनो बहुत जरूरी है।

जिज्ञासा *चूँकि आज तथाकथित साधु इन दोनो से विमुख है, यदि वह इनके सम्मुख हो जाएँ तो कालपुरुष हृदय से उनके प्रति कृतज्ञ होगा। यदि सम्मुख्य हो जाएँ तो परिवर्तन को एक सही दिशा मिल सकती है। बहुत-बहुत आभार आपका, कि अपने इतने कम समय मे समाज को इतना विपुल मार्गदर्शन दिया है। मेरी सविनय प्रणति स्वीकार कीजिये।*

उपाध्यायश्री गुप्तिसागर मुनि की मौलिक कृतियाँ :

काव्य	विद्याजलि
	माँ भारती
	शिवशाला
	हिमालय मे सजीवनी शतक
	वीरोदय शतक
	वैराग्य शतक
खण्ड-काव्य	पुरुषार्थ की विजय
	दहेज न सहेज
कविता सग्रह	खुली किताब
	लौट आ, नि स्वार्थ की निश्रा मे
	बिम्ब प्रतिबिम्ब
निबन्ध	व्यसनो के पार
ललित निबन्ध	किसने मेरे ख्याल मे दीपक जला दिया?
	महावीर समय के हस्ताक्षर
	नापाक इरादो को मजिल नही मिलती
	मै अकेला ही चलूँगा मजिलो तक
बातचीत	साक्षात्कार (बातचीत)
	अनुभव की आँखे (बातचीत)

विविध	हिमाचल की वादिया मे जैन मुनि
	पर्युषण, आत्म प्रकाश की दीप मालिका
	तीर्थङ्कर ऋषभ का अनन्य अवदान जीवन की सम्पूर्ण कलाए
	आगम के आलोक मे भक्ष्याभक्ष्य
	शाकाहार समाधान
	दीपावली क्या? कैसे?
	अहिंसा आईना
	मगलाचरण
	पारस पुरुष
	रत्नगर्भा
	इनर लाईट (अंग्रेजी) 5 खण्ड
	मयक लेहा चरिउ (हिन्दी)
	शारदा स्तुतिरियम् (हिन्दी)

त्रिलोकसार आचार्य नमी चन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती

ये सभी साहित्य एव ग्रन्थ **"जैन आर्किबाईस एण्ड लायब्रेरी" 'श्री गुप्तिसागर धाम, गन्नौर'** से आप पत्र-व्यवहार द्वारा प्राप्त कर सकते है।